श्री श्रीगणेश महिमा

राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित
महाश्वेता देवी की अन्य कृतियाँ :

1084वें की माँ
चोट्टि मुंडा और उसका तीर
जंगल के दावेदार
घहराती घटाएँ
अग्निगर्भ
भारत में बंधुआ मजदूर

# श्री श्रीगणेश महिमा

महाश्वेता देवी

हिन्दी रूपान्तर
रीनावास



राधाकृष्ण

# एक

आज से चालीस वर्ष पहले मुँह में एक दाँत लिये त्रितीर्थ नारायण ने जन्म लिया था। बेशक, वह एक असाधारण घटना थी, पर इसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। वह बरसात की एक शाम थी और आसमान काले बादलों से भरा था। लगभग अँधेरे कमरे में प्रसूता ने अपनी क्षीण आवाज़ में जानना चाहा था कि उसे लड़का पैदा हुआ है या लड़की?

उसकी यह उत्सुकता बड़ी स्वाभाविक थी। पति मेदिनी नारायण जरी के फूलों से सुशोभित नागरा पहनकर आँगन में बेचैनी के साथ टहल रहे थे। जूते से चर्र-चर्र की आवाज़ आ रही थी। "अगर फिर लड़की जनी तो भगा दूँगा।" वह अत्यंत भयभीत थी। भगा देने पर कहाँ जायेगी? वह फ़र्श पर चटाई के ऊपर एक गुदड़ी बिछाकर लेटी थी। दोनों सौतें गिद्ध की तरह दरवाज़े पर बैठी थीं। वे भी बेटियों की माँ थीं, मौन रही थीं कि अगर छोटी को लड़का पैदा हो गया तो उनकी हालत और भी संगीन हो जायेगी। प्रसूता अपने को काफी बेसहारा महसूस कर रही थी।

"लड़का या लड़की?" दाई से उसने उत्कंठापूर्वक पूछा।

"*लड़का।*"

"देखूँ," काफी कष्ट से प्रसूता ने करवट बदली। रोते बच्चे के खुले मुँह में एक नुकीला दाँत देखकर प्रसूता के गले से आतंक-भरा स्वर फूटा *और वह बेहोश हो गयी। फिर उसे होश नहीं आया।* अगर जीवित रहती तो लड़के में और भी असाधारण बातें देख सकती थी। गाल और कान के बीच मस्सों का गुच्छा, पैर का अँगूठा बेहद लम्बा। फिर भी बच्चा हृष्ट-पुष्ट था।

जब माँ बेहोश हुई तब आसमान में बड़ी तेज़ बिजली चमकी थी तथा गाज भी गिरी थी। फलस्वरूप एक क्षण में खबर फैल गयी है कि

देह-ज्योति विजली की चमक में विलीन हो गयी। वेटा ही पैदा हो, इसके लिए इतना जप-तप किया, तीन तीर्थों का पानी पिया और इसके बाद एक असाधारण पुत्र को जन्म देकर माँ स्वर्ग सिधार गयी। वाढ़ा-नवागढ़ में ऐसी कहानियाँ वहुत जल्द फैल जाती हैं। सुवह आँगन में भीड़ उमड़ पड़ी। मेदिनी नारायण सर मुँडाकर शव के साथ गये।

दाह-संस्कार के वाद मेदिनी नारायण ने दाई को वुलवाया। दाई का काम करती है गुलाल। नाम काफ़ी रंगीन होने के वावजूद वह एक हद तक पुरुषों जैसे स्वभाव वाली कर्मठ महिला है। एक के वाद एक मेदिनी नारायण की शादियों की विफलता पर उसके दिल में मेदिनी के लिए सहानुभूति भी है और इसी कारण उसने मेदिनी नारायण के लिए गदराये वदन वाली अपनी समर्थ नतिनी का जुगाड़ किया था।

मेदिनी ने उससे कहा, "लड़के को पालना होगा। वड़की और मझली पर मुझे भरोसा नहीं है।"

"नहीं, नहीं, वे उसे मार डालेंगी।"

"छोटकी में ताकत नहीं थी।"

"कहाँ ताकत ! तीन हमल में ही खलास।"

"लछिमा को ले आ। तू भी आ जा। यहीं रह और लड़के को पाल-पोसकर वड़ा कर दे।"

"आदमी तरह-तरह की वातें करेंगे।"

मेदिनी आनंदित नहीं हो पाता है, वस हँसता है।

"आदमी ! आदमी तो मैं हूँ, ये सव जानवर हैं। थू ! इन्होंने ही अफवाह फैलायी थी कि मेरे ऊपर महावीर जी का शाप है। लड़का नहीं होगा। मेरा वंश नहीं चलेगा। किसलिए कहा था ? विसुन अहीर के साथ झगड़ा-फसाद हुआ था, इसीलिए न ? कितना हरामीपन किया था उसने।"

"यह सव मैं नहीं जानती क्या ?"

"उसमें तू भी तो शामिल थी। वाढ़ा गाँव में कोई भी हरामीपन ऐसा नहीं, जिसमें तू शामिल न हो।"

"तो क्या जात-विरादरी के खिलाफ़ जाती ?"

"लेकिन तब भी लछिमा मेरी रखैल थी। मैंने उसे हँसुली, बाजूबद, झुमका बनवाकर दिया था।"

"चाँदी का।"

"तुझ जैसों के लिए यही काफी है।"

"अब काम की बात करो, मालिक!"

"तुम लोगों को तीन बीघा जमीन दूँगा और दस रुपया महीना। जाते समय गाय भी दूँगा।" यह बात मेदिनी ने लम्बी साँस भरते हुए कही, क्योंकि जमीन और गाय मे मेदिनी के प्राण बसते थे।

गुलाल अच्छी तरह समझ रही थी कि मेदिनी इस समय काफ़ी मुसीबत मे है, नही तो इतना सब देने का वायदा वह नही करता। कुछ क्षण आँखें मूँदे वह चुपचाप बैठी रही। फिर बोली, "काम की बात पहले कर लें—अभी लडका मेरे पास ही रहे, जब तक अशौच रहे बकरी का दूध पिला रही हूँ, पिलाती रहूँगी। इसके बाद नामकरण और पूजा करा लो। कुछेक दिन मे सभी बवाल कट जायेंगे, फिर लछिमा आ जायेगी।"

लडका गुलाल की गोद मे ही था। उसने कहा, "तखत दो। जमीन में सोने से लड़के को सर्दी लग जायेगी। और सवा रुपया भी देना। सरसतिया का पता लगाओ, काम है?"

"क्यों? क्या काम है?"

"पूजा करानी होगी।"

"किसलिए?"

"माँ लडके के आस-पास चक्कर लगा रही है। उसकी नजर से इसे बचाना है।"

"अच्छा।"

"और मालिक, छोटी बहू की लडकियों को कोई तकलीफ न हो, नही तो माँ की आत्मा दुखी होगी। सभी को छोटी उमर मे छोड़कर चली गयी।" गुलाल ने उसाँस भरी। लडके का दाँत देखकर डर गयी।

"ऐसा?"

"हाँ मालिक, तुम गया जी मे जब तक करमकाज नही करा

तक उसे शांति नहीं मिलेगी और वह किसी को चैन से नहीं रहने देगी। देखो क्या होता है !"

"तू पूजा करा दे।"

"सरसतिया करेगी।"

लड़के के मुँह में दाँत देखकर डर गयी छोटकी ! मेदिनी नारायण के मन में लगातार एक अशुभ चिंता घुमड़ती रहती है। क्या यह लड़का मन-हूस, अभागा जन्मा है ?

गुलाल उसके मन की बात समझती है। बोली, "तुम्हीं अब इसके माँ-बाप हो, मालिक ! शेर-दिल मरद हो। डरने से काम कैसे चलेगा ? तखत, आग, तसला — सब भेज दो। एक तो बिन माँ का बच्चा, ऊपर से बरसात का मौसम। सेंक-ताप कर इसको बचाना होगा।"

मेदिनी नारायण जरूरी बंदोबस्त करने के लिए चले जाते हैं। जाते-जाते बड़ी और मझली से कहते जाते हैं, "लड़के के कमरे में अगर तुम लोगों की परछाई भी पड़ गयी तो काटकर फेंक दूँगा। सरजू और सीता को कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। अगर कुछ हुआ तो तुम्हारी खैर नहीं।"

दोनों तरह के अशौच कट जाते हैं—जन्म-अशौच और माँ के कारण मृत्यु-अशौच। इससे पहले ही सरसतिया काले कुत्ते की पूँछ के बाल, श्मशान की मिट्टी, तिमुहानी के बेल के पेड़ की छाल आदि जरूरी सामान जुटाकर माँ की कोप-दृष्टि से छुटकारा दिलाने के लिए गुप्त पूजा करती है। ये सब हो जाने के बाद पुरोहित जी आये। उन्होंने कल्याण-होम आदि किया। हवन की भस्म को मकान के चारों कोनों में गाड़ दिया और फिर वे मेदिनी नारायण की ओर मुड़े, "मेदिनी नारायण, तुम बहुत भाग्यशाली हो। इस लड़के को तुम्हारे घर में जन्म नहीं लेना था। इसे तो किसी राजा के घर में पैदा होकर सोने की कटोरी में मट्ठा-मक्खन खाना-पीना था। तभी ठीक होता।"

"हम खिलायेंगे।"

"जन्म से पहले की सारी पूजा भी मैंने ही की थी। इसका नाम त्रितीर्थ नारायण रखना ही होगा, नहीं तो माँ ने जो तीनों तीर्थों का पानी पिया वह बेकार जायेगा। किन्तु कौन जन्मा है; जानते हो क्या ?"

"कौन जन्मा है, देवता ?"

पंडित जी जानते हैं कि कुछ समय तक के लिए सब पर उन्हीं का अधिकार है। एकत्रित पड़ोसियों की ओर देखकर वे बोले, "मेदिनी सिंह का घर अब परमतीर्थ हो गया। यहीं गया, यहीं वाराणसी। किसने जन्म लिया है, आप लोग नहीं जान सके। इससे मेरे मन को बहुत चोट पहुँची है। धरम तो कलयुग में रहा ही नहीं। गाँव के लोगों तक में गियान की कमी देखकर मन को और ज्यादा ठेस लगती है। सज्जन हैं आप लोग, अब सोच देखें।"

"का सोचें, देवता ?"

"देवी पार्वती ने कौन-से देवता का सृजन अपने अंगों में किया था और कौन लड़ा था शिव और विष्णु के साथ ? वेदव्यास बनकर महाभारत किसने लिखा था ? किसकी पूजा सबसे पहले की जाती है ? किसने केवल मात्र अपने माता-पिता का चक्कर काटकर प्रमाणित किया था कि माता-पिता ही विश्व और ब्रह्माण्ड हैं ? वे कौन-से देवता हैं ?"

"हाय राम ! गणेश जी महाराज !"

"मेदिनी सिंह, गणेश महाराज की भी इच्छा होती है कि धरती पर जन्म लें और मनुष्यों को अज्ञान से उबारें। इस लड़के में भी गणेश जी का अंश है, नहीं तो एक दाँत वाला शिशु कहीं होता है ?"

इस तरह पंडित जी अपने वाक्चातुर्य से सभी को आश्चर्यचकित करते हैं।

"यह बालक बनेगा अक्षय कीर्तिवान। देवता और बाम्हनों का मान बढ़ायेगा, कुल का नाम रोशन करेगा। कान के ऊपर मास, लम्बा अँगूठा— ये सभी देवता के लक्षण हैं। इस लड़के की जो सेवा करेगा, उसका भला होगा। उसके लिए जो बुराई सोचेगा, उसका बुरा होगा।"

मेदनी कह बैठता है, "बड़की और मझली ने लड़के को कुछ किया तो उन्हें काटकर फेंक दूँगा।"

इस तरह त्रितीर्थ नारायण का चालू नाम गणेश बन जाता है और गाँव के सभी लोग भर-पेट दही-चिउड़ा, गुड़, केला-पेड़ा खाकर [illegible] जाते हैं। अब गणेश के नाम पर सभी अस्वाभाविक हरकतों को

की तरफ़ से स्वीकृति मिल जाती हैं। इसीलिए गुलाल नाइन और उसकी नतिनी लछिमा देवता की सेविकाओं की हैसियत से मकान के एक अच्छे कमरे में ठौर पाती हैं। बड़की और मझली बहुएँ, घर-गृहस्थी का अपना हक़ खो बैठती हैं। खाने-पीने की तकलीफ़ नहीं देता है मेदिनी, लेकिन पत्नियों को सहवास का सुख नहीं देता, कहता है कि 'रखा क्या है तुम लोगों में? खा-पहनकर भी चेहरा देखो! लछिमा को देखा है? हाँ, उसे कहा जाता है औरत।'

पाँचों लड़कियों को देखते ही मेदिनी का पारा चढ़ जाता है। वे भी उनके सामने नहीं फटकतीं। मेदिनी सिंह लड़के को लछिमा और गुलाल के जिम्मे छोड़कर अपने काम पर जाता है।

नवागढ़ के जमींदार का अंगरक्षक है वह। आजकल के मस्तान लीडरों को जो सर्विस देते हैं, वैसी ही मेदिनी सिंह ज़मींदार को देता था। जमींदारी को बनाये रखने के लिए, बंदूक चलाकर औरों का विनाश करने में वह बड़ा ही तत्पर था। जमींदारी में लड़ाई-दंगा तो लगा ही रहता था। इनाम-स्वरूप उसे तीस बीघा उपजाऊ जमीन मिली। फ़ौजदारी के एक लम्बे मुक़दमे का फैसला हो जाने पर बाढ़ा गांव में नयी प्रजा लाकर वहीं बसाता है। वहाँ भी उसे दस बीघा जमीन और मिलती है। मेदिनी सिंह शुरू में नवागढ़ के सिपाहियों को, बाद में बाढ़ा और दूसरी जगह के लोगों को ब्याज पर रुपये उधार दे-देकर एक छोटी-मोटी महाजनी जमींदारी स्वयं चलाता है।

प्रभावशाली, सम्पन्न व्यक्ति है मेदिनी सिंह। कच्चा दूध लोटा-भर पी जाता है। पूरी खस्सी (बकरी) का गोश्त खाकर दस मील तक दौड़ता है। लेकिन खुदा जिसको देता है, कभी-कभी छप्पर फाड़कर नहीं भी देता है। मेदिनी सिंह के भाग में बेटे वाली बीवी नहीं थी। अपने देस-गांव की रीत से उसकी दो शादियाँ हुईं। दोनों ही बेटियां पैदा करने वाली निकलीं। छोटकी के हाथ में पुत्र की रेखा होने के कारण ब्याह कर लाया। फिर भी एक अच्छा काम कर गयी। दो लड़कियों को जनने के बाद, मेदिनी के दिल को चोट पहुँचाकर गणेश-जननी बनकर वह स्वर्ग सिधार गयी।

नवागढ़ के सभी लोग मेदिनी के पुत्र वाली बात जान गये। जमींदार

को कुछ दिन हुए 'राजा' का ख़िताब मिला है। उसने कहा, "क्यों मेदिनी, एक बार अपने लड़के को नहीं दिखाओगे? ले आओ उसे एक बार।"

"ले आऊँगा हुजूर, पर पाँच साल से पहले नहीं ला सकता, पंडित जी ने मना किया है।"

"यह तो बहुत ही सौभाग्य की बात है कि तुम्हारे घर पर देवता की कृपा हुई है।"

कुछ भी हो, आखिर मेदिनी सिंह है तो नौकर, उनका हैड-सिपाही। इसलिए राजा जी को उस पर देवता की कृपा-दृष्टि कुछ नहीं लगी। खबर पाते ही उनके सारे सिपाही गये थे और रुपया चढ़ाकर उन्होंने लड़के के दर्शन किये थे। रानी साहिबा ने भी उसी पंडित को बुलवाया था। कहा था, "देवता, आप ही के जागजग के कारण, उसके घर गणेश जी की कृपा हुई? तो महाराज, मेरे ऊपर भी कृपा करवा दीजिये।"

पंडित जी ज्ञान के भक्त हैं, अज्ञान के नहीं। उन्होंने रानीमाँ को सारी बातें समझा दीं, युक्ति से। "संतानहीन या बेटी पैदा करने वाली औरतें लड़के की आशा में हमेशा भगवान की चौखट पकड़ती हैं। देवता की कृपा होगी, देवता जन्म लेंगे, ऐसा होता है हजारों बरसों में एक बार। देवता का मन होगा, तभी तो?

"गणेश के अंश ने मेदिनी के घर जन्म लिया, अच्छी बात है। लेकिन फिर से पूजा-जाग करके गणेश जी को सिर्फ सूँड तथा चौड़े-चौड़े दोनों कान पृथ्वी पर भेजने के लिए कहना ठीक नहीं होगा। गणेश क्रोधी देवता हैं। रानी माँ अगर चाहें तो वे जागजग कर सकती हैं। लेकिन 'देवता चाहिए' जैसी नाजायज माँग मन में रखकर पूजा-पाठ करना अच्छी बात नहीं। देवता लोग मतलबी व्यक्ति पसंद नहीं करते। और फिर रानीमाँ क्या पुत्रहीन हैं?"

"नहीं देवता, दो लड़के हैं।"

पंडितजी व्यथित-से दिखते हैं। कहते हैं, "माँ, उसी की मनोकामना पूर्ण होती है जो बेटे की माँ नहीं है। देवता के अंश वाले लड़के की चाह लेकर अगर पुत्रवती नारी व्रत करती है तो उसे पुत्र-वियोग होता है। महाभारत में कुंती और कर्ण की बात को जरा याद करें।"

इस प्रसंग का अंत यहीं होता है। फिर भी रानीमाँ का कौतूहल कम नहीं होता। आखिर में वाढ़ा गाँव के पास के शिव-मंदिर के कुंड में शिव-रात्रि के अवसर पर जब वे नहाने गयीं तो पालकी का रास्ता बदलकर मेदिनी के लड़के को भी देख आयीं। आज तक वाढ़ा गाँव में ऐसी उत्तेजक घटना कभी घटित नहीं हुई थी। मेदिनी का आँगन लोगों से भर जाता है। रानी देखना चाहते हैं सभी, लेकिन रानी साहिबा को देखकर सभी का उत्साह ठंडा पड़ जाता है। जितनी काली उतनी ही मोटी। तम्बाकू खाने से होंठ भी एकदम काले। बदन पर लगभग आठ-दस सेर सोने के गहने। रानी माँ उदासीन चेहरा लिये उतरकर एक चौकी पर बैठती हैं। लड़के को प्रणाम कर गोदी में लेती हैं और उसके हाथ में एक सोने की अशर्फी देकर वापस पालकी में जा बैठती हैं।

बाद में अपनी नौकरानी से पूछती हैं, "लड़के की माँ तो जीवित नहीं है, किसकी गोद में था ? कौन है वह लड़की ?"

"मेदिनी की रखैल।"

"लड़का काफी स्वस्थ है।"

"क्यों न होगा हजूराइन, देवांशी लड़का है।"

नौकरानी चुप हो जाती है। नौकरानी तथा और लोग भी जानते हैं कि रानी माँ जादू-टोना करती हैं। बाद में नौकरानी मेदिनी सिंह को भी सावधान कर देती है। कहती है, "मोहर को अलग रखना। छप्परगढ़ की लड़की हैं हजूराइन। वहाँ जादू-टोना काफी चलता है।"

इस चिंता के कारण मेदिनी सिंह समय से पहले ही अपने घर वापस आ जाता है। लड़के की उम्र दो साल होगी, उसकी अपनी लगभग पचास है।

लड़के को स्वस्थ और तगड़ा बनाना है। फिर शादी। और उसके बाद लड़के के घर में लड़का होगा। वंश में दीपक जलता रहेगा। कुछ कम नहीं छोड़ जायेगा वह लड़के के लिए। लछिमा और गुलाल की जरूरत उसे उतने ही दिन तक है, जब तक लड़का बड़ा नहीं हो जाता। लड़के की सेहत देखकर वह समझ लेता है कि लड़के की देखभाल अच्छी तरह से हो रही है। जिस कारण वह सबसे ज्यादा खुश होता है, वह यह है कि

लछिमा लड़के के प्रति नौकरानी की हैसियत में ही बरताव करती है।

एक दिन अचानक वापस लौटने पर मेदिनी सिंह दरवाज़ा बंद पाता है। खटखटाने पर गुलाल दरवाज़ा खोलती है और उसका चेहरा देखते ही मेदिनी समझ जाता है कि कुछ गड़बड़ है। लछिमा की गोद में सोया है लड़का।

"क्या बात है?"

बिना कुछ बोले गुलाल मिट्टी-भरे एक तमले की तरफ़ इशारा करती है। आलता (महावर) में डुबोया एक आटे का गुड्डा तथा उस पर एक लाल धागा।

"यह क्या है?"

गुलाल कहती है, "बड़की और मझली की करतूत है।"

"क्या कर रही थी?"

"देख नहीं रहे हो? जाने कब लड़के के कपड़े में का धागा निकाल लिया? मारने के लिए टोना कर रही थी। न, छूना मत मालिक! मैंने उस पर पिशाब कर दिया। सारा असर ही खतम हो गया है। मैंने उन्हें पूजा भी नहीं करने दी। उठा लायी। मालिक, तुम घर हरदम रहते नहीं हो, हमारे लिए तो बड़ी मुसीबत हो गयी है।"

मेदिनी गुस्से से आगबबूला हो उठता है। वह बेसहारा है, सहारा चाहता है, इस जनम में ही नहीं, अगले जनम में भी। ज़मीन एक सहारा है। जिसके पास ज़मीन है, उसके पास बहुत-कुछ है। लेकिन जिसके पास पुत्र है उसके पास सब-कुछ है। इतनी आशा-आकांक्षा, अर्चना-पूजा, हवन-यज्ञ का फल यह लड़का है। उसे मारने के लिए जादू-टोना! पीतल की मूंठ वाली लाठी लेकर दौड़ पड़ता है और पागल भैंस की तरह धक्का मारकर दरवाज़ा तोड़ देता है। औरतों की 'मार डाला' की चीखें सुनकर लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मेदिनी तमला दिखाकर कहता है, "डायन हैं, डायन! लड़के को मारने के लिए टोना किया था।" गाँव की जनता घटना की गम्भीरता समझती है। वे एक-दूसरे के चेहरे देखने लगते हैं। आखिर में इस गाँव के राजपूत तबके का प्रधान बरकदाज़ सिंह बोल उठता है, "अभी छोड़ दो भैया, तुम्हारे लड़के के लिए बुरा सोचना भी महापाप है।

भगवान खुद उनको सजा देंगे। ठंडे दिमाग से इसका फैसला करो।"

मेदिनी सिंह कहता है, "इसी डर से इनको मैंने अपना लड़का नहीं सौंपा। इनको क्या नहीं दिया? रोटी कपड़ा-लत्ता, गहना---किसी भी चीज की कमी हो तो पूछो? एक सौ एक रुपया नगद भी देता हूँ। गाँव में अगर सूद का धंधा चलाना चाहती हों तो वह भी चला सकती हैं।"

"आज शांत हो जाओ, भैया! कल कुछ बंदोबस्त कर लेना।"

जनता का झुंड धीरे-धीरे इधर-उधर बिखर जाता है।

मेदिनी सिंह अपने कमरे में चला आता है। गम्भीर होकर बैठ जाता है। फिर खुद से ही बातें करने लगता है, 'जिन्दगी भर जिसकी चाहत थी, वह मैंने अब पायी है। अब मैं किसी को अपने गरम दूध में गाय का पिशाब नहीं मिलाने दूंगा। अब कोई मेरे घी में जहर नहीं मिला सकता।'

लछिमा मौका देखकर कह उठती है, "मैं इसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार से रखती हूँ। नानी की गोद में डालकर नहाने जाती हूँ।"

"जानता हूँ, मैं सब समझता हूँ।"

"चांद देखना चाहता है, लेकिन मैं बाहर नहीं लाती, रात की हवा लग जाने के डर से। कितनी निर्दयी हैं वे...माँ की ममता नहीं है!"

मेदिनी इस बारे में सोचता है और फिर अगले दिन दो किसानों को साथ में भेजकर अपनी दोनों बीवियों को उनके गाँव भिजवा देता है। सरयू और सीता यहीं रह जाती हैं। हाथ के हाथ फल मिलता है। बड़की का बड़ा भाई और मझली का चाचा आ पहुँचते हैं। दोनों के सिरों पर पगड़ी, कानों में पीतल की बालियाँ, पैर में तिल्लेदार नागरा और हाथ में पीतल की मूंठ वाली छड़ी है। दोनों ही बड़े ध्यान से मेदिनी की बातों को सुनते हैं। उसकी सभी शिकायतों को सही मानते हैं। वे खुद भी आख़िर मर्द हैं। मेदिनी सिंह ने जो कुछ भी किया, वे उसे न्यायसंगत मानते हैं।

बड़की का भाई बोला, "मेदिनी सिंह, तुम हमारे समाज के न्यायप्रिय आदमी हो। तुम ही कहो, मेरी बहन की ओर से इस तरह हाथ धो लेना क्या ठीक होगा? तुम जो भी कहोगे, मैं मानने को तैयार हूँ।"

मेदिनी सिंह गहरी साँस छोड़ते हुए बोला, "भैया, अपनी बहन के तन पर गहने देखे हैं। सूद के धंधे के लिए कितना पैसा दिया है उसे! क्या-क्या

वे अपने साथ ले गयी हैं—मैंने उन्हें कुछ भी ले जाने से नहीं रोका। मेरा फैसला सही है या नहीं, अब तुम्हीं बताओ? आप लोग ही समझाओ कि आपकी बहन और आपकी भतीजी ने मेरे साथ क्या सलूक किया है?"

"भारी गलती की उन्होंने।"

"ऐसों को लेके घर करूँ? क्या तुम लोग ऐसा कर सकते थे?"

मामला काफी नाजुक है। ऐसी घटना से काफी कम गुरुतापूर्ण घटनाओं को लेकर विवाद और विरोध पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है। कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने पड़ते हैं। कभी-कभी तो खूनी इतिहास रचा जाता है।

मसली के चाचा ठंडे दिमाग के बुजुर्ग आदमी हैं। कहते हैं, "हम तीनों ही मर्द आदमी हैं। दुनिया के हाल-चाल समझते हैं। एक-न-एक फैसला तो करना ही होगा।"

"मुझे माफ करें, चाचा! उन्हें साथ रखने से मेरा कुल नहीं बच पायेगा। देवाशी लड़का है मेरा। ऐसे लड़के को मारने पर उतारू हैं वे। नहीं, कतई नहीं। मैं अगर बुरा आदमी होता तो उन्हें गहने-कपड़े छीनकर भेजता। क्या इज्जत के साथ खर्चा देकर अपने आदमियों के साथ गाड़ी में भेजता?"

चाचा ने कहा, "मंदिनी, मेरी और रूपलाल, दोनों की हालत ऐसी है कि उन्हें रखने में कोई दिक्कत नहीं। भगवान की दया से अमीन हैं, ठाकुर हैं। लेकिन बड़े शरम की बात हो गयी!"

"लेकिन यह लज्जाजनक स्थिति किसने पैदा की है, बताओ?"

"यह भी सच है।"

"वे अगर वैसी होतीं तो क्या गुलाल को सड़का सौतेला पड़ता? कहीं ऐसा होता है क्या? मेरे पिता की भी दो शादियाँ थीं। मैं छोटी माँ का लड़का हूँ। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जवान होने तक मुझे पता नहीं चला था कि मेरी असली माँ कौन है। मेरा ही दुर्भाग्य है!"

"ठीक है, उनको नहीं रखना तो मत रखो। अपनी छोटी लड़की से लगन करवा दूँ? बड़ी शान और सुशील लड़की है। अपनी ही जाति के हाथों लड़का पले तो ठीक है।"

मेदिनी दुख-भरी हँसी हँसता है। "नहीं चाचाजी, भगवान ने मेरे भाग्य में पत्नी-सुख लिखा ही नहीं है। नफरत हो गयी है मुझे। बड़ा घर देखकर पिताजी बड़की और मझली को लाये थे और यह भी सच है कि आज तक मुझे इन दोनों ने कोई तकलीफ नहीं दी। छोटकी तो नौकरानी की तरह रहती थी। सारा घर इन्हीं के हाथों में था, मैं तो नवागढ़ में रहता था। मेरा ही नसीब खराब है। अच्छी बीवियाँ भी बिगड़ गयीं।"

दोनों आदमी बुरी तरह फँस गये थे। मेदिनी की बातों से दुख तथा निराशा झलक रही थी। इन बातों को लेकर कोई झगड़ा-फ़िसाद नहीं किया जा सकता था। वैसे भी इन बातों में सच्चाई भी थी। बड़की और मझली ने घोर अन्याय किया है, इसमें कोई संदेह नहीं। और कोई मामला होता तो वे लड़की वाले होने के नाते माफ़ी माँग लेते और वापस बुलाने के लिए कहते। लेकिन इकलौते लड़के की हत्या करने जा रही थीं वे दोनों। टोना-टोटका करना तो हत्या के बराबर ही है। अब किस मुँह से कहें यह सब ?

मेदिनी सिंह ने कहा, "मुझे आप लोग माफ कर दें। लड़कियों का रिश्ता पक्का होने पर खबर करियेगा। सारा खर्चा मैं करूँगा और दोनों को दस-दस बीघा जमीन भी दूँगा। जिन्दगी कट जायेगी।"

"तुम्हारी उम्र के आदमी फिर से शादी कर सकते हैं।"

"भैया, मेरा नसीब ही खराब है। नहीं तो लड़का जन के माँ मरती हैं कहीं ? लड़का जन के वह अगर जिंदा रही होती तो यह झमेला क्यों होता ? तुम लोगों को भी भागकर आना पड़ा...।"

मेदिनी बातें बनाने में उस्ताद था। उसकी सूझबूझ से दोनों ही अत्यंत प्रभावित थे। नौकर दूध और मिठाई ले आया था। न खाने का कोई कारण नहीं दिख रहा था उन्हें। लड़की के भाई ने कहा, "क्या जमाना आ गया है ! अरे भई, लड़कियों की माँ हो तुम...फिर भी किसी तरह की तकलीफ में नहीं रखा। गहना, कपड़ा, बरतन, रुपया...और खाना-पीना तो मैंने अपनी आँखों से देखा है। आपने भी देखा ही होगा। नहीं, इस मामले में मेदिनी की कोई गलती नहीं है।"

उसके बाद दोनों ही राम-राम कर विदा लेते हैं। मेदिनी कहता है,

"लडकियों के लिए वर खोजिए । छोटकी की लड़कियों की शादी करूँगा । इसके बाद लड़के को बड़ा करने पर मेरा काम खतम ।"

दोनों ही लोग चाँदी का सिक्का देकर लड़के का मुँह देखते हैं और मेदिनी से कहते हैं कि "कोई काम पड़े तो हमें याद करना, वर्ना हम सोचेंगे कि हमसे भी आप नाराज हैं ।"

"आप मेरे चाचा लगते हैं और ये बड़े भाई, किससे नाराज होऊँगा ? यह नाराज होना तो अपने दोनों हाथों पर नाराज होना हुआ । ऐसा काम कौन मूर्ख करता है ?"

यह कहकर मेदिनी ने दोनों का ही मन मोह लिया । दोनों ने शपथ ली कि जीने जी वे इस महान वाक्य की मर्यादा को बनाए रखेंगे । और अगर नहीं रख पाये तो वे चदेला और गहलोत राजपूत नहीं ।

लड़कियों की शादी के लिए मेदिनीसिंह ने उनसे जोर देकर कहा कि भगवान ने अगर चाहा तो वह पाँचों लड़कियों की शादी एक साथ करेगा ।

इसके बाद मेदिनी नवागढ़ वापस आता है । राजा को अपनी दुख-भरी कहानी विस्तार से सुनाता है, कहता है, "तीस साल तक आपकी सेवा की, हजूर ! अब मुझे छुट्टी दीजिये । नहीं तो मेरा लड़का बेबाक मर जायेगा । हुजूर, लड़का जिन्दा रहेगा तो सब-कुछ रहेगा । इस पार की लाठी, उस पार की नाव । मुझे छुट्टी दे दें, मालिक !"

राजा उसकी यह बात सुनकर अभिभूत हो उठे । अभी कितने सारे कुकम कराने बाकी हैं । हाथियों से कितने ही प्रजा का घर तुड़वाना है । हाकिम के शिकार खेलने आने पर जंगल के भीतर कितने ही आदिवासियों को खदेड़ना बाकी रहा । बागानों से जंगल में आदमियों को उजड़वाना का काम भी बाकी है । मेदिनी तो उनका दाहिना हाथ है । हाकिमों की मेम के शरबत के साथ मिलाकर उन्हें पिलाना था, उनका [illegible] के लिए । लेकिन अब वह जैसा कह रहा है, उन्हें वह भी मानना पड़ेगा ।

राजा ने कहा, "नहीं आ सकोगे क्या ?"

"नहीं हुजूर, यही जमीन है ।"

"फिर से शादी करोगे ?"

"नहीं हुजूर, लेकिन अगर मर गया तो देखियेगा, लड़के को हुजूर सरकार के यहाँ नौकरी पर रखा जाये।"

"यह भी कोई कहने की बात है !"

एक बंदूक, एक सौ एक रुपया और नये वस्त्रों की भेंट लेकर मेदिनी सिंह वापस आ जाता है। दुख से उसका मन भारी हो उठता है। लड़के को अगर ज़िन्दा रखना है तो नौकरी पर रहना ठीक नहीं, नौकरी पर रहा तो लड़का मर जायेगा। दूसरे सिपाही उसे काफ़ी दूर तक छोड़ने आते हैं। वे उसके बर्तन-भाँडे, बक्सा-चौकी—सभी घर तक पहुँचा देना चाहते हैं।

सामान घर तक पहुँचाने आये तीन सिपाही काफ़ी देर तक बातचीत करते हैं, पूरी और पेड़े खाते हैं। कुछ देर बाद कुछ संकोच के साथ युगल सिंह कहता है, "भैया, हम लोग और भी पक्के बंधन में बँध सकते हैं। मेरे बड़े भाई के दो लड़के हैं, तुम्हारी छोटी बहू की दो लड़कियाँ...।"

"भैया, बड़की और मझली की लड़कियाँ बड़ी हैं। इनकी उम्र कम है। मैं उनके लिए लड़कों की बात कर रहा हूँ। वैसी तुम्हारी बात तो ठीक है, लेकिन वे लड़कियाँ ? उनके लिए भी अगर लड़का ढूंढ़ दो तो मैं जिन्दगी भर एहसानमंद रहूँगा।"

मेदिनी सिंह कह रहा है, एहसानमंद रहेगा। जिसके घर रानी जी कुछ दिन पहले पधारी थीं, वह मेदिनी सिंह ऐसी बातें कह रहा है। सिपाही लोग निहाल हो गये।

वे वचन देते हैं कि वे मेदिनी की लड़कियों के लिए जी-जान से लड़के तलाश करेंगे।

बाद में बातचीत चली तो बरकंदाज सिंह ने भी कहा, "जैसा भी लड़का मिलता है, शादी कर दो। तुम्हारी तीनों लड़कियों की माँ के बारे में गलत बातें फैल जाने पर लड़का मिलना मुश्किल हो जायेगा। सीता और सरयू के लिए चिंता की कोई बात नहीं। जानते हो, वे किसकी बहू हैं ?"

मेदिनी 'जैसा भी लड़का मिले' वाली बात पर पहले तो कुछ नाराज़ होता है, 'ये भी कोई बात हुई।' लेकिन सोचता है, इस बात में काफ़ी दम है। ज़रूर कहीं कोई बात हुई होगी। ग्राम-समाज में ऐसी कुटनीपने

रिश्ता टूटता है। मेदिनी ने खुद गुरबचनसिंह की लड़की के बारे में ऐसा ही घोटाला किया था।

वह कहता है, "शादी मैं करूँगा। हुजूर सरकार से कहकर देखो, तुम सभी के लिए मैंने कितना कुछ किया। अब तुम्हीं लोगों को देखना-सुनना है, मैं अकेला आदमी हूँ। मेरा लड़का अगर शुभ शकुन का है तो इसमें तुम्हें ही फायदा होगा। क्यों, होगा न ?"

"जरूर-जरूर।"

यह कहकर मन में ताज्जुब लिये वह घर लौटा और अपने लड़के से कहने लगा "ताज्जुब की बात है! पता नहीं मेदिनी सिंह को कैसे पता चल गया है कि मैं ही कुछ गड़बड़-घोटाला करने जा रहा था। हुजूर सरकार के पास हैड-सिपाही था, दिमाग भी ठंडा रखना सीखा है उसने। लड़कियों के लिए रिश्ते ढूँढने का काम मुझको ही सौंप दिया!"

लड़के ने कहा, "आप ढूँढेंगे ?"

"जरूर।"

"बड़की और मझली की लड़कियों के लिए ?"

"क्यों नहीं ? क्या गलती है उनकी ?"

"क्या कह रहे हैं आप, पिताजी ?"

'यही न कि सौत के लड़के को मारने के लिए टोना किया था।' बरकदाज सिंह भौंह चढ़ाकर सोचता है। फिर कहता है, "मेरी बुआ ने तो सौत के लड़के को काट डाला था, परब के दिन। औरतों के दिल में कब क्या होता है ?"

"फिर भी ?"

'फिर भी क्या ? तेरे दोनों सालों को राजा जी के साले का सिपाही बनाया है कि नहीं ? उसी के कहने पर जाति-समाज के कितने ही लड़कों को नौकरी मिली। राजा को भाँग घोटकर पिलाता था। नहीं, कतई नहीं, कुटुम्ब-कुनबे में झगड़ा, मन-मुटाव क्यों नहीं चले ? जरूर चलेगा और कुटुम्ब-कुनबे का काम भी उठाना होगा। यह मत भूलो कि उसका लड़का देवांशी लड़का है।"

बरकंदाज सिंह हँसता है और कहता है, "क्यों? मुझे तो डर नहीं लगता। क्रोधी देवता है। पंडित जी का कहना है कि शिवजी को भी इन्होंने ही भरोसा दिया था।"

मेदिनी सिंह की लड़कियों का रिश्ता ढूँढ़ने के लिए बरकंदाज सिंह पगड़ी बाँधकर आगे आता है, फलस्वरूप इस कार्य को यथोचित सम्मान और मर्यादा मिलती है। बरकंदाज ने ही सलाह दी कि "एक ही घर में दोनों बहनों का रिश्ता ठीक नहीं। दोनों के लिए थोड़ा दूर-दूर लड़का देखते हैं। जाने कब क्या झगड़ा उठ खड़ा हो, कब कौन-सी बात सामने आ जाये?"

मेदिनी ने गुलाल से कहा, "सरयू और सीता को जरा अच्छी तरह खिलाओ-पहनाओ। क्या देखकर शादी होगी उनकी?"

गुलाल को जब से मेदिनी ने वचन दिया है, तब से वह मेदिनी के लिए कुछ भी कर सकती है। लछिमा से कहती है, "जितने दिन हूँ, इनकी भी देखभाल कर जाती हूँ। लड़का बड़ा होते ही लात मारेगा।"

लछिमा कहती है, "मैं बाहर नहीं निकल सकती, तू जमीन में अरहर बुवा दे। जमीन रही तो सब-कुछ रहेगा।"

"वैसे वह गाय भी देगा।"

"रुपया एक भी मत खर्च करना।"

"पागल हूँ क्या? तेरी शादी नहीं करनी ..?"

गुलाल ने काफ़ी दूर की सोच रखी है। मालिक जिस दिन छोड़ देगा, उस समय भी लछिमा बुढ़िया नहीं होगी। उसे बाक़ी ज़िन्दगी भी बितानी है। बाल-विधवा है वह। बीच में वह मालिक की रखैल रही, और फिर मालिक के लड़के की आया। उसके बाद? गुलाल ने मोहरकरण को वचन दे रखा है। मोहर की बीबी गुजर गयी है। वह दो-चार साल और इंत-ज़ार कर सकता है। इसलिए मोहर उनकी जमीन जोत रहा है। लछिमा भी इस बंदोबस्त से खुश है। वह शांत, सहिष्णु लड़की है। गोल-मटोल चेहरे पर छोटी-छोटी आँखें। मेदिनी के घर में वह ज़िन्दगी-भर नहीं रह सकती, यह उसे अच्छी तरह पता है और इसमें उसे कोई बुराई भी नहीं दिखती। नानी पर उसे पूरा भरोसा है। आख़िर उसकी स्थायी जगह मोहरकरण

का घर ही होगी। मेदिनी के साथ रहने से उसकी कीमत कम नहीं होगी, क्योंकि मेदिनी ने उसे जमीन दी है।

लछिमा और गुलाल इस मकान में आश्रितों की तरह रहने लगीं। सरयू और सीता को वे खूब सम्मान देतीं। लछिमा कहती, "लड़के के साथ-साथ इनकी देखभाल मुझसे नहीं होगी। इन्हें तू ही सम्हाल।"

खाना पकाने का काम मेदिनी सिंह की बिरादरी की एक गूँगी और प्रौढ़ लड़की करती थी। यह बंदोबस्त भी बरकंदाज सिंह का ही बंदोबस्त है। गूँगी दो वक्त खाना पकाती, चौका लगाती, खाना परोसती, अपना खाना ले जाती।

सरयू और सीता चौके से आगे आँगन में गुड़िया से खेल रही थीं। गुलाल थोड़ी देर उन्हें देखती रही। फिर बोली, "उठो दीदी जी, गुड़ियों का खाना पकाने की जरूरत नहीं है। अब अपनी गृहस्थी शुरू होगी। चलो, तेल मल दें।"

बालों में तेल लगाना, बदन में दूध की मलाई की मालिश करना और इसी तरह से लड़कियों की देखभाल करते-करते एक दिन उनका रिश्ता पक्का हो गया। इससे पहले ऐसी घटना किसी ने न तो देखी थी और न सुनी थी। बाढ़ा ग्राम में यह बात कहानी बनकर रह गयी। बरकंदाज सिंह के उद्यम से एक साथ पाँच लड़के जुट गये। वैशाख में एक दिन शादी हो गयी पाँचों की। काफी बाजे-गाजे के साथ शादी सम्पन्न हुई। नवागढ़ के राजमहल से आया घी, चावल, चीनी और पाँचों लड़कियों के लिए नाक-नथनी। सिपाही लोगों ने चार घोड़ियों के पैरों में घुंघरू पहनाकर उन्हें नचाया। इस शादी में नवागढ़ के लोगों ने पहली बार जगमग-जगमग 'एसिटिलिन' गैस बत्ती देखी। काफी लोगों को छिककर जिमाया गया। शादी के दूसरे दिन भी बरातियों को भोजन दिया गया।

फिर डोली चली। बरकंदाज सिंह ने पहले ही कह रखा था कि इनका गौना भी एक साथ किया जायेगा। लड़कियाँ बड़ी होने तक पीहर में नहीं रह सकतीं, क्योंकि कोई भी बुजुर्ग औरत घर में नहीं है। सभी कुछ सम्पन्न हो जाने के बाद बरकंदाज सिंह ने कहा, "भैया! मैंने वचन दिया था, वचन निभाया। अब एक बात है।"

"कहो, जो भी कहोगे मानूंगा।"

"अगर सभी जीते-जागते रहे तो मेरी पोती को तुम अपनी बहू बनाना। कह सकते हो कि यह भिक्षा माँग रहा हूँ।"

मेदिनी ने कहा, "अगर सभी जीते-जागते रहे तो...।"

# दो

शादी की घटना गणेश को याद नहीं। याद रहने की बात ही नहीं है, क्योंकि वह उस समय काफ़ी छोटा था। वैसे भी मेदिनी ने अपनी लड़कियों को कभी पीहर बुलवाया भी नहीं। नाति-नातिन होने पर सगुन भेज कर अपना कर्त्तव्य और लोकाचार कर दिया। लड़कियों की ससुराल वाले इधर का सारा हाल जानते थे। वे मेदिनी से इससे ज्यादा अपेक्षा भी नहीं रखते थे।

सीता और सरयू ने सुना कि पिताजी गणेश को अपने साथ खेत में ले जाते हैं। उसे अपनी आंखों से ओझल तक नहीं होने देते। इसी कारण उन्होंने अपने घर में ही पाठशाला खुलवायी है। लड़के पढ़ने आते हैं। मास्टर साहब उन्हीं के घर में रहते हैं, खाना खाते हैं। ब्राह्मण हैं, पूजा-पाठ भी करते हैं। गूंगी मर गयी है। पिता और भाई ब्राह्मण का प्रसाद पाते हैं। मास्टर जी ने कहा है कि पिताजी शंकर भगवान जैसे हैं। दुर्गा घर में नहीं है, अकेले ही गणेश को पाल रहे हैं। गणेश काफ़ी जवान हो गया है। इतना ताक़तवर है कि आठ साल की उम्र में ही दस साल के लड़के को उठाकर पटक देता है।

सीता और सरयू अपने-अपने घरों में बैठकर गहरा सांस छोड़तीं। सौतेली बहनों की उनकी मां और मामा ख़बर लेते हैं। उनके सातों कुल में कोई नहीं। उनका ब्याह करके पिता ने तो हाथ धो लिया है। कितना भी चाहें, एक बार फिर से वाढ़ा गांव में वे नहीं जा सकतीं। हाँ, एक बार गुलाल आयी थी। मेदिनी जिस समय लड़के को लेकर तीरथ कर वापस आये थे तो लड़कियों को भेजा था काशी की बनारसी साड़ी-ओढ़ना,

गया जी की पथरी, चुनार का नक्काशीदार लोटा। बस, उसके बाद उन्होंने फिर कभी लड़कियों को याद नहीं किया।

गुलाल को देखकर सरयू रो पड़ी थी। पीहर का आदमी मिलने पर रोने का ही रिवाज है। नहीं तो यह लगता है कि ससुराल आकर लड़की पीहर को भूल गयी। लेकिन सरयू दिल से ही रोयी थी। कहती थी, "कितनी दूर रहती हूँ, गुलाल ! काले कौओं से भी खबर नहीं लेते तुम लोग !"

गुलाल ने धीरज बंधाया था और कहा था, "कितना बढ़िया घर-वर मिला है। कितनी सुन्दर दिख रही हैं ये मकई की बालियाँ, घी भरा मर्तबान, घेर में भैंस, निखरा हुआ यह रूप तुम्हारा, कोख रोशन करने वाला लड़का—यही सब तो लड़कियों के लिए परम सुख है, दीदी ! रोती क्यों हो ?"

गाँव के सभी लोगों के बारे में पूछा सरयू ने। उसके बाद कहा, "सीता के पास जाओ तो कहना, दीदी खुद अपनी मालिक नहीं है। ये लोग जैसा कहते हैं वैसा ही करना पड़ता है। कहना कि छठ के मेले में अगर आयी तो मिलूँगी। जरूर कहना, गुलाल !"

गुलाल दीदे फाड़कर चारों तरफ देख रही थी। आखिरकार उसने पूछ ही लिया, "सास अच्छी है न ? तकलीफ तो नहीं देती ?"

सरयू हाथ हिलाकर चुप हो जाती है। वैसे भी क्या कहती वह गुलाल से ! सास नया कुछ नहीं करती। सभी बहुओं के साथ सभी सासें जैसा करती हैं, वैसा ही वह करती है। जैसे—टोहका देना, लड़की की माँ को गालियाँ सुनाना, पित्ती उछल आने पर खाना देना, अनावश्यक काम कराना। हो सकता है कि उसकी सास उसे कुछ कम ही तंग करती हो; सरयू का भाई है श्री श्रीगणेश की महिमा से।

भाई के बारे में पूछने पर गुलाल ने कहा, "देवाशी लड़का है। लड़कपन है अभी। दीदी जी, भंगी लोग जब सुअर मारते हैं तो वह बहुत खुश होता है, हँसता है। उसको हँसाने के लिए मालिक खेत के कामगार किसानों को फटाफट नागरा से मारते हैं।"

सीता का परिवार छोटा है। प्यारी बहू है वह सब की। आज़ादी भी

उसे कुछ ज़्यादा दी गयी है। गुलाल ने महसूस किया कि सरयू जितना सीता-सीता कहकर तड़पती है, सीता के मन में वैसा कुछ भी नहीं होता। परिवार में उसका मन रमा हुआ है। सीता के गाँव में मेले की शान भी कुछ ज़्यादा है। सीता ने गुलाल को दो रुपये दिये और एक साड़ी। छूट न रहती तो न दे पाती। सीता की सास कानी है। दोनों बहुएँ जो कुछ कहती हैं, वही होता है। फलस्वरूप सीता अच्छी तरह से है। दो विधवा बुआ-सास इन्हीं लोगों के पास रहती हैं। अन्न का उधार चुकाने के लिए ज़्यादातर काम वही करती हैं। सीता को खटना नहीं पड़ता। गुलाल यह सब देखकर खुश होती है।

तीरथ करने गये थे मेदिनी सिंह। वापस आकर गुलाल को भेजा था सीता-सरयू के पास। दोनों जगह होकर वापस लौट आयी गुलाल। मिशिर जी भी गये थे मेदिनी के साथ। मिशिर जी इसी गाँव के सरकारी विद्यालय के मास्टर हैं। आजकल वे मेदिनी के घर में ही रहते हैं। आँगन की दूसरी तरफ़ उनका अलग कमरा-दलान है। वहीं उनके लक्ष्मी-जनार्दन भी हैं। खाना पकाने में हाथ अच्छा है। क्योंकि मेदिनी के ख़र्चे से ही खाते हैं इसीलिए बाप-बेटे का खाना वही पका देते हैं। फ़िलहाल वे मेदिनी का ध्यान धरम-करम की तरफ़ ज़्यादा खींचने की कोशिश कर रहे हैं। हमेशा कान के पास जपते हैं—"लड़के का ब्याह कर दो, लेकिन इससे पहले मकान से कूड़ा बाहर फेंको।"

मेदिनी अपनी निजी ज़िन्दगी में किसी का भी दख़ल पसंद नहीं करता। फिर करे भी क्यों! लछिमा लड़का संभाल रही है। गुलाल गिद्ध नज़र से मकई, ज्वार, गेहूँ-धान, गुड़, दूध-मट्ठा के साम्राज्य पर निगाह रख रही है। मेदिनी की उम्र साठ के क़रीब है। लेकिन वह दो सेर गोश्त, एक कटोरी घी, बीस रोटी खाता है और पचाता है। गोश्त और घी काम को बढ़ाता है। इसलिए लछिमा मेदिनी के बिस्तर पर सोती है। लेकिन सभी जानते हैं कि यह कार्नवालिसी व्यवस्था नहीं है। जब गणेश की दुल्हन 'केला बहू' आयेगी, तब लछिमा को घर से निकलना होगा और तभी मोहरकरण उसका पति होगा। मेदिनी बड़ा समझदार आदमी है। इसीलिए उसने ऐसा बंदोबस्त किया है। मेदिनी की जीवन-पद्धति काफ़ी तर्कसंगत है। दो बीवी

हैं, लेकिन होकर भी नही हैं। छोटकी परलोक सिधार गयी। वह बेचारा क्या करे? क्या सिर्फ माला जपे?

मेदिनी ने इसलिए मिशिर से कहा, "देवता! तुम कुछ नही समझते। लड़के की शादी होने पर दुल्हन आयेगी। छोटी उम्र में क्या वह सारा काम सभाल सकेगी? लड़का जवान होगा, बहू का गौना करेंगे। तभी इन्हें भगाएँगे।"

मिशिर के सिर पर गाज गिरी। गणेश का ब्याह होने पर लछिमा को छोड़ दिया जाये, यह अर्जी लछिमा की तरफ से ही थी। साफ़-साफ़ कहने का साहस न जुटा पाने के कारण ही घुमा-फिरा कर अर्जी पेश करनी चाही थी मिशिर ने। मोहरकरण ने लछिमा से कहा है, "काफी दिन बीत गये हैं इनजार करते हुए।" लछिमा भी कुछ नही तो तीस की तो होगी। मोहरकरण की उम्र चालीस साल है। मेदिनी की गृहस्थी सभालना और लड़के को बड़ा कर देना निहायत जरूरी काम सही, लेकिन मोहर भी तो कुछ लछिमा के शरीर और परिवार का सुख भोगना चाहता है। इसीलिए लछिमा ने मिशिर से विनती की थी कि वह मेदिनी के सामने यह प्रस्ताव रखे। लेकिन मेदिनी का जवाब सुनकर अपने को मुसीबत में महसूस कर रहा था वह। लछिमा से बोला, "गणेश की शादी होने से क्या होता है? गौना न होने तक तुझे छोड़ने वाला नही।"

लछिमा ने सुनकर केवल इतना ही कहा, "मोहरकरण और आठ साल इतजार नही कर सकता। मेरी गृहस्थी कभी नही बनेगी। तुम बाह्मन देवता हो। तुम्हारी जाति को सात खून भी माफ हैं। तुमने जरा जोर देकर अपनी बात क्यों नही मनवायी?"

"क्या करूँ? मेरा अन्नदाता भी तो वही है। वही मेरा भी मालिक है।" लछिमा अपने आपसे कहती है, "जब मैं आयी तो सौतिया डाह के कारण कोई भी काम तरीके से नही हो पाता था। घर की हालत क्या ऐसी थी? लीप-पोत कर मैंने मकान का चेहरा ही बदल दिया। बड़े-बड़े डोलों को गोबर-मिट्टी से लीपकर रखनी। मकई का दाना भी चिड़ियों को नहीं चुगने दिया।"

"अब भिन-भिन मत कर।"

"दो साल की उम्र तक मैंने उसे जमीन पर नहीं उतारा। लड़के के कपड़े सूखने को डाले तो बैठकर पहरा दिया, ताकि कपड़ों को काग-चील की हवा न लगे। बरसात के मौसम में तसले में आग जलाकर कपड़े सुखाती रही। आज इतना बड़ा हो गया। उसे कभी सर्दी-जुकाम नहीं लगा। माँ की गोद में पलने वाले लड़के को भी ठंड लग जाती है, बुखार आ जाता है।"

यह कहकर लछिमा जल्दी-जल्दी चली जाती है। सीने में जलन लिये। बड़ी आशा थी कि अब मेदिनी उसे मुक्ति देगा। क्या मोहर उसका इंतज़ार करेगा? गणेश को खोजने चल पड़ी। बाहर एक पेड़ के नीचे मेदिनी बैठा हुआ किसानों को उनके काम बता रहा था। उसकी तरफ़ बिना देखे वह बोली, "छोटे मालिक को बुलाने जा रही हूँ।"

"कहाँ गया है?"

"मुझसे कहा कि...।"

"क्या?"

"मैदान की तरफ जायेगा। हरोआ को साथ ले जाऊँ क्या?"

"क्यों?"

"धूप निकल आयी है। क्या वह पैदल आयेगा? छतरी लिये हूँ।" मेदिनी की आँखों में लछिमा का पद दूसरे किसानों से कुछ ऊँचा है। मेदिनी ने इसीलिए कहा, "तू उसे बहुत लाड़-प्यार करती है। हरोआ, तू साथ चला जा।"

हरोआ काफ़ी ताक़तवर प्रौढ़ आदमी है। उसे छोड़ और कोई भी गणेश को कंधे पर बिठाकर नहीं ला सकता। लछिमा को वह बहुत मानता है। क्योंकि उसे बहुत भूख लगती है। उसकी भूख कभी नहीं मिटती। लछिमा उसे भर-पेट रोटी और सत्तू खिलाती है। हरोआ किस जाति का है, कोई नहीं जानता। वह तीन साल पहले बाढ़ा गाँव में आया था। उसके यह कहने पर कि खाने के बदले काम करूँगा, मेदिनी ने अपने घर में रख लिया था। मेदिनी ही इतने हट्टे-कट्टे जवान से काम ले सकता है, उसे डरा-धमका सकता है।

हरोआ मंदबुद्धि का सीधा-सादा आदमी है। उसने एक दिन कहा था,

"मोहर के बदले अगर लछिमा की शादी उसके साथ होती तो वह अकेले ही सारी जमीन जोत सकता है। उसके बाद मालिक की जमीन जोतकर अपनी रोटी कमाता।" गुलाल ने उसकी बातों को कोई महत्व नहीं दिया था और कहा था कि अगर मालिक के कानों में भनक पड़ गयी तो तेरी जान ले लेंगे।

हरोआ तब चुप कर गया था, लेकिन बाद में कहा था, "मैंने किसी बुरे इरादे से नहीं कहा। मेहनत के लिए भी तो आदमी चाहिए, क्यों ?"

इस समय हरोआ, लछिमा से थोड़ी दूरी बनाये हुए, पीछे-पीछे चल रहा है। ऐसी औरत को मालिक क्यों छोड़ देगा? यह वह नहीं समझ पाता और फिर अगर छोड़ना ही है तो औरत की जवानी रहते-रहते उसे क्यों नहीं छोड़ती ? उन लोगों में मेदिनी, लछिमा और मोहर को लेकर काफी बातें चलती हैं।

हरोआ ने बड़ी इज्जत के साथ पूछा, "हम भंगी टोले की तरफ क्यों जा रहे हैं ?"

हरोआ ने गुलाल के सामने जो प्रस्ताव रखा था, वह जानती थी। वह उसकी बातों से परेशान होने लगती है। और परेशानी को छुपाने के लिए बेरुखी दिखाती है। इस समय वैसे ही पारा गरम है।

लछिमा गुस्से से बोली, "उधर मेरी ससुराल था ! भंगी सूअर मार रहे हैं, यह बात छोटे मालिक को आकर बताने की क्या जरूरत थी ?"

"न बताता तो भी उसे बाद में पता चल ही जाता। फिर वह मुझे मारता।"

*"भंगी लोग ! कौन लोग जाते हैं उनकी बस्ती में ?"*

"सूअर का गोश्त खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है, तुमने कभी खाया है ?"

"तुम्हारे साथ बक-बक करने का मेरे पास समय नहीं है।"

तभी मिली-जुली आवाजें सुनायी देती हैं। कोलाहल धीरे-धीरे नजदीक आता जाता है। चारों तरफ बबूल के पेड़ों से घिरे एक मैदान में वे लोग पहुँच जाते हैं। ट्रेन की सीटी की तरह तीखी चीख। सूअर के शरीर को गरम सलाखों से बींधा जा रहा है, सलाखें निकालकर और तपाकर फि

वींधा जा रहा है। सबसे आगे गणेश खड़ा है। उसके चेहरे पर अमान-
ीय खुशी और तृप्ति झलक रही है।

लछिमा खड़ी हो जाती है। उसे पता है कि जानवर जब तक मर
नहीं जाता, वह वहाँ से हिलने वाला नहीं। सूअर के मर जाने पर लछिमा
उसे बुलाती है, "छोटे मालिक !"

गणेश चौंककर वास्तविक दुनिया में वापस आता है। हरोआ झुकता
है, वह उसके कंधे पर चढ़ता है। लछिमा छतरी उठाकर उसके सिर पर
तान देती है।

गणेश छोटा मालिक है, इसका ख़याल रखते हुए लछिमा कहती है,
"इतनी धूप में कौन आता है भंगी टोला में? फिर यह काम देखना भी
अच्छी बात नहीं।"

"क्यों ?"

"यह बड़ा निर्दयी काम है।"

"क्यों ? मुझे तो अच्छा लगता है।"

"अब तुम पढ़ाई-लिखाई सीख रहे हो। यह देखना अच्छा नहीं।"

उस समय तो लछिमा चुप हो जाती है, लेकिन रात को मेदिनी के पैर
दबाते हुए कहती है, "छोटे मालिक का यह काम अच्छा नहीं। इतना-सा
लड़का, सूअर मारते देखकर इतना खुश क्यों होता है ?"

"किसका अंश है वह ? वे क्रोधी देवता हैं।"

मेदिनी कुछ देर चुप रहता है, पैर दबवाने के सुख को भोगता हुआ
फिर कहता है, "छोटे मालिक की शादी होने पर कैसा रहेगा ? सोच
हूँ, दस साल का होते ही शादी कर दूँ।"

"अच्छा रहेगा," लछिमा का स्वर मंद और अस्पष्ट है।

"जब वह 18 साल का होगा, दुल्हन घर करने आयेगी। फिर ते
छुट्टी।"

लछिमा इस बात का कोई जवाब न देकर पैर दबाती रहती
लेकिन उसका सिर और भी झुक जाता है। फिर मेदिनी के पैरों में
छिपाये आकुल हो रो उठती है। "मालिक, मुझे भगाना तो है ही! मुझे
छोड़ दें, मालिक ! मेरी जिन्दगी का भी कुछ सहारा हो, नहीं तो च

साल की उम्र में मैं कहाँ जाऊँगी ? पहले तुम्हारी सेवा की, फिर छोटे मालिक की सेवा की। अब आठ साल और करूँ ? इन्सान नौकरानी भी तो रख लेता है।"

"तू रो रही है ?"

"तुम इतने समझदार हो। वे तुम्हारे लड़के को मारना चाहती थीं। भगवान जानता है, कोई भी मर्द ऐसी बात माफ नहीं कर सकता। लेकिन तुमने कितनी समझदारी और सहनशीलता से काम लिया। मुझ पर भी रहम करो, मालिक !"

मेदिनी सिंह पैर खींच लेता है और एक लात मारकर लछिमा को परे हटा, उठ बैठता है। कहता है, "छोटी जात को बिस्तर पर बिठाने से वे अपना आपा भूल जाते हैं। किनकी बात कर रही है तू ? वे मेरी धर्म-पत्नियाँ हैं। नमकहराम और किसे कहा जाता है ? तुझे जमीन लिखकर नहीं दी क्या ?"

लछिमा सिर थामे बैठी रहती है। मेदिनी सिंह कहता है, "लड़के की खातिर तुम लोगों को पाल रहा हूँ, यह तू भी जानती है और मैं भी। गणेश की शादी होते ही दुल्हन नहीं आने वाली। जब वह आयेगी तो तेरी छुट्टी। मोहर क्या तब तक इंतजार नहीं करेगा ?"

लछिमा नाक सुड़ककर, आँखें पोंछकर, सम्भलकर कहती है, "भूल जाओ, मालिक ! मुझसे गलती हो गयी थी। माफ कर दो।"

मेदिनी की लात लगने से उसके कान की बाली टूट गयी थी। कान से खून बहने लगा था। मेदिनी कहता है "कान धोकर दीये से गरम तेल लगा ले।"

सुबह होने पर मेदिनी ने सारी बातें मिसिर से कहीं। मिसिर गंभीर होकर कहता है, "यह बात कुछ अच्छी नहीं हुई, मालिक !"

"कैसे ?"

"जिसके हाथों में तुम्हारे लड़के के पालने की सारी जिम्मेदारी है, उसी का अगर मन उचट जाये तो क्या उसे छोड़ देना ठीक नहीं रहेगा ? छोटी जात की बात है, पता नहीं गुस्से में क्या कर गुजरे ! तुम्हारे लड़के की भलाई के लिए ही कह रहा हूँ।"

मेदिनी के मन में वहम पैदा हो जाता है। सुबह से वह कमरे में बैठ जाता है और लछिमा पर निगाह रखता है। वह यहां से जाना चाहती है, इस गृहस्थी से उसका मन उचट गया है। इस नयी वात की रोशनी में वह पहली वार लछिमा को काम करते हुए देखता है। लछिमा बड़े कुंड में कुएँ से पानी भरती है। गणेश उससे नहायेगा। फिर कुंड पर पतला कपड़ा ढँकती है ताकि धूल से पानी गंदा न हो। लछिमा गणेश के कपड़ों की तह लगाकर रखती है। विस्तरे, चादर, तकिये का गिलाफ़ धोती है। मलाई का लड्डू और परांठा बनाकर जाली से ढँककर रखती है। गणेश कहीं से दौड़कर आता है। लछिमा पहले बैठकर उसे पंखा झलती है, फिर उसे खाना देती है। गणेश पतंग माँगता है। लछिमा कहती है, "मैं काम कर लूं, फिर चरखी थामूंगी। तुम पतंग उड़ाना। शक्करपारे वनाये हैं माँ ने, तुझे दूंगी।"

शक्करपारा लेकर गणेश कूदता हुआ चला जाता है और लछिमा तिल कूटने बैठ जाती है। फिर जैसे हवा से वात कर रही हो। कहती है, "मेरे ऊपर नजर रखने की जरूरत नहीं। मैं उसका कोई नुकसान नहीं कर सकती। मेरी देह में जव तक जान है किसी को नुकसान पहुँचाने भी नहीं दूंगी।"

मेदिनी के घर में लछिमा ठीक उसी तरह रहने लगती है, जैसे पहले रहती थी, लेकिन कहीं कुछ परिवर्तन अवश्य आ जाता है। प्राणहीन गुड़िया की तरह लछिमा निभाती है दिन का कार्यक्रम और रात की भूमिका। तिस पर भी मेदिनी क्रोधित होता है। आठ साल इंतजार करने के लिए कह-कर क्या कोई भारी ग़लत वात कही है उसने? क्या आठ-दस साल और इन्तजार नहीं कर सकता मोहर? वह इन्तजार न भी करे तो भी लछिमा की शादी, घर-गृहस्थी वनना वड़ी वात है कि मेदिनी की सुविधा, सुख-आराम? मेदिनी कहता है, "अगर वह इतने दिन तक इन्तजार न भी करे तो भी कोई वात नहीं। तीन वीघा जमीन दे चुका हूं। दो वीघा जमीन और दे दूंगा। गणेश के मालिक वनने पर उसके पैर पकड़कर रहने से क्या दो जून की रोटी नहीं मिलेगी तुझे?"

लछिमा सिहर उठती है, "नहीं-नहीं, और जमीन मत देना, मालिक!

और जमीन नहीं चाहिए।"

देर तक मेदिनी के पैरों को सहलाती रहती है। फिर कहती है, "छोटे मालिक की शादी से पहले मकान में कलई, रंग-रोगन करवाओ। बड़े कमरे की मरम्मत करवाओ। लोग-बाग आयेंगे।"

"यह तुमने ठीक कहा।"

"मैं चाहती हूँ, नानी का कमरा ठीक करवा लूं।"

"क्यों?"

"मालिक, आप इज्जतदार आदमी हो। तुम्हारे लड़के की शादी है। कितने नाते-रिश्तेदार आयेंगे। यहाँ रहकर हम क्या तुम्हारी हँसी करायेंगे? दस दिन हम लोग वहीं रहेंगे।"

"यहाँ का क्या होगा?"

"देवता को सब-कुछ समझा दूंगी। तुम ही कहते थे कि नवागढ़ के मिथिला सिंह भी इस तरह का बंदोबस्त अच्छी तरह करते हैं। उसे ही बुलवा लो।"

"गुलाल का कमरा क्या ढह गया है? हरोआ को वहाँ सोने के लिए कहा था, क्या वह वहाँ नहीं सोता?"

"पुराना तो है ही। हाँ, वह सोता है।"

"अभी मरम्मत करायेगी? पता है, कितना खर्चा आयेगा?"

"तुम जो रुपया देते हो उसी में करवाऊँगी।"

"जैसा तू ठीक समझे।"

लछिमा ने यह सोचा तक न था कि मेदिनी ऐसी बात कहेगा। वह सोचती थी कि उसके ऐसा कहने पर मेदिनी कहेगा, 'नहीं लछिमा, ऐसा मत कह। तेरे बिना गणेश की शादी कैसे होगी? तुम जैसा अपना और कौन है?'

लेकिन मेदिनी ने ऐसा नहीं कहा। यह सुनकर वह तो और आश्वस्त महसूस करता है।

दूसरे दिन मिशिर कहता है, "इसे तुम छोटी जात कह रहे थे, देवता? देखा, उसकी समझ कितनी ऊँची है। शादी का जितना भी भारी काम है, वह खुद करेगी; लेकिन सामने नहीं पड़ेगी।"

गाँव के राजपूत तवक़े ने उनकी काफ़ी प्रशंसा की। उच्च वर्ण के राजपूतों का खून काफ़ी गरम होता है, इसलिए घरवाली के होते हुए भी गाँव में, छोटी जाति की रखैल रखकर वे इस समस्या का समाधान करते हैं। लेकिन मेदिनी जैसा भाग्यवान मर्द किसने देखा है! एक वीवी मर गयी, दो को भगाना पड़ा। गृहस्थी वरवाद हो जाने की वात थी। सभी सोच रहे थे कि अव मेदिनी गुड़-गोवर करेगा। किन्तु 'भाग्यवान की वीवी मरती है' वाला मुहावरा मेदिनी के संवंध में सही सावित हुआ है। तीन सौतों की गृहस्थी में न तो सुख था, न ही कोई श्री। गुलाल और लछिमा ने अपना खून-पसीना वहाकर उसकी गृहस्थी को संभाला।

सभी ने अपनी-अपनी रखैल से कहा, "देखा!"

"मालिक ने उन्हें जमीन दी है।"

"ज़मीन देने से ही सव जान नहीं दे देते।"

इसका जवाव किसी भी रखैल से देते नहीं वना। वे अपनी भूमिका अपने-आप नहीं चुनतीं। इस इलाक़े में राजपूत ही ऊँची जाति के हैं। संख्या भी इन्हीं की ज्यादा है। नीच जाति के नारी-पुरुष की भूमिका कव भूमिदास की, कव मजदूर की, कव उजड़े किसान की और कव रखैल की होगी—वही लोग यह तय करते हैं।

वे कहते हैं, ये सुनते हैं। इस वात को भी औरतों ने चुपचाप सुन लिया। जमीन न मिलने पर भी वे सेवा और अधीनता स्वीकार करते हैं, अव भी किया।

आश्वस्त होने के कारण मेदिनी ने उदारता से छप्पर के लिए वाँस और खपरैलें देनी चाही थीं, लेकिन लछिमा ने नहीं लीं। कहा, "नहीं मालिक, आप जो रुपया देते हैं, उसी से वना लेंगे।"

गुलाल ने कहा, "यह कौन-सी अकल की वात की तू ने?"

"नहीं, नहीं लूंगी।"

"क्यों?"

"नहीं लूंगी, वस।"

हरोआ मरम्मत करने के लिए आया। लछिमा ने कहा, "मुझे एक दिन की छुट्टी चाहिए।"

"क्या करेगी ?"

"एक बार मौसी के पास जाऊँगी। वहाँ के गैबीनाथ के मंदिर में पूजा चढ़ाऊँगी। मनौती मान रखी है।"

"कैसी पूजा ?"

"गणेश की शादी पक्की हो जाने पर पूजा की मनौती की थी।"

मेदिनी अभिभूत हो उठा। कहने लगा, "गाड़ी में बैल जोतने के लिए कहता हूँ। रास्ता काफी लम्बा है।"

"नहीं, नहीं, इससे पुण्य नहीं होगा।"

"गुलाल साथ में जायेगी ?"

"बुड्ढी वहाँ जाकर क्या करेगी ?"

"साथ में नौकर ले जा।"

"क्यों ?"

लछिमा अकेली ही जाती है। गुलाल से मोहरकरण को कहलवा रखा था। गाँव के बाहर से वह लछिमा के साथ हो लिया। जाते समय लछिमा ने कोई खास बात नहीं की। सिर्फ कहा, "मन ठीक नहीं। जिस काम से जा रही हूँ, पहले वह कर आऊँ। वापस आते समय बात करूँगी।"

कभी गैबीनाथ की बहुत ही मानता थी। एक बार पुरोहित ने गुस्से से गाय की रस्सी को अचानक ऐसे खींचा कि एक बूढ़ी गाय मर गयी। भक्तगण काफी नाराज़ हो उठे। मौक़े का फ़ायदा उठाकर एक अन्य ब्राह्मण ने गड्ढे में पहले चना डालकर और ऊपर शिवलिंग रखकर पानी छिड़का और फिर गड्ढा पाट दिया। बाम्हन को स्वप्न में 'भुँईफोड़' शिव मिलता है। नये शिवजी में अभी काफी गर्मी है। दूध से नहाना। चाँदी की नाग-लपेट, ताँबे की गौरी-पट—सभी कुछ मिल चुका है। लेकिन अभी भी लोग मनौती मानते हैं।

पूजा हो जाने पर लछिमा दुकान से चिउड़ा और तिलकुट खरीदती है। उसके बाद दोनों दुकान में बैठकर खाते हैं और पानी पीते हैं पेट भर। फिर लछिमा कहती है, "आओ चलें।"

"अभी से, आज तो तेरी छुट्टी है।"

"रास्ते में कहीं बैठेंगे।"

एक आम के पेड़ के नीचे दोनों वैठते हैं। प्रत्याशा से मोहरकरण उसे निहारता है। लछिमा सिर झुकाकर जमीन में कुछ लकीरें खींचती है। फिर अचानक धीरे से कहती है, "तुम शादी कर लो। धनपतिया अच्छी वीवी सावित होगी। नानी वात तय कर देंगी।"

"मालिक ने तेरी वात नहीं मानी ?"

"नहीं।"

लछिमा नकेल से वँधी गाय की तरह सिर हिलाती है और कहती है, "मालिक ने तीन वीघा जमीन देकर मुझे खरीद रखा है। जैसे वैल और भैंस वांध रखे हैं वैसे ही मुझे भी वांध रखा है। लड़के की शादी हो जाने पर भी मुझे छुट्टी नहीं देगा। उसके वाद भी आठ साल मुझे वहाँ रहना होगा। फिर कहीं मेरी छुट्टी होगी। यही कहा है उन्होंने।"

"भाग चलें, लछिमा ?"

"कहाँ जायेंगे ? वह पकड़ लेगा।"

"यदि जवरदस्ती शादी करूँ तो ?"

"तो वह पूरा टोला जला देगा। तुम्हें मार डालेगा।"

मोहरकरण चुप हो जाता है। फिर कहता है, "तव क्या करें ? और आठ साल इंतजार। तेरा क्या होगा ? मेरा क्या होगा ?"

लछिमा ने कहा, "इसी वात के लिए तुम्हें बुलाया है।"

"क्या कहती है फिर तू ?"

"तुम शादी कर लो।"

"और तू ?"

"मेरा जो होना है, होगा। आठ साल वाद मैं होऊँगी चालीस की। तव कैसी शादी और कैसी गृहस्थी ? धनपतिया की वात मैंने इसीलिए कही है। छोटी उमर में व्याही थी। आदमी ने घर में नहीं रखा। अव मर भी चुका है, उसके भाई वरकन्दाज सिंह की जमीन जोतते हैं। तुम भी जोतोगे और...।"

एक थैली उसकी ओर वढ़ाती है और कहती है, "वीस रुपये हैं।"

"क्यों दे रही है ?"

लछिमा मुसकराने की कोशिश करती है लेकिन सफल नहीं होती।

गला रुँध जाता है। फिर कहती है, "दो बकरियाँ खरीद लेना। काफी मुनाफा है इस काम में। मान लो, रुपया तुम्हारी शादी पर दिया है। मेरा इंतजार करने के कारण ही तुम्हारे इतने साल बरबाद हुए। शादी तुम पहले भी कर सकते थे।"

"नहीं लछिमा, मैंने क्या तेरा रुपया चाहा था ?"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा है। मैं तो जानती हूँ तुम मेरे सिवाय... खैर, होता तो अच्छा होता, लेकिन नहीं हुआ।" लछिमा की आवाज फिर रुँध जाती है।

वह फिर कहती है, "तुम्हारे पास है भी क्या ? मुझसे सौ रुपया उधार ही ले लेना। कुछ जमीन अगर जमा लेकर जोत सको...।"

मोहर रूखी हँसी हँसता है। कहता है, "ये सब बातें रहने दे।"

"मना मत करो।"

लछिमा कुछ देर तक सोचती रहती है। फिर कहती है, "मैं भी आस लगाये थी...।" फिर आक्रोश के साथ कहती है, "बुड्ढा मुर्दा कहीं का ! उसकी गृहस्थी, उसका लड़का, उसकी पत्नी ! वह ठीक तो सब ठीक। भगवान जानते हैं, कोई बेईमानी नहीं की और न ही करूँगी। लेकिन दिल चाहता है कि सब-कुछ जलाकर यहाँ से चली जाऊँ।"

"ऐसा मत सोच लछिमा, दुख बढ़ जाता है।"

"वह लड़का कहाँ से देवता का अंश है ! सूअर मरता देखकर हँसता है। गाभिन भैंस को साँप ने काटा। भैंस जितना छटपटायी, वह उतना ही जोर-शोर से हँसा। मालिक जब हरोआ को मारता है, देखकर खुश होता है। बरकदाज सिंह की पोती बड़ी भोली-भाली है। वह जरूर उसे तकलीफ देगा।"

"ऐसा मत बोल, लछिमा ! चिंता बढ़ जाती है।"

"चलो, अब चलें।"

"चलो।"

"और हम नहीं मिलेंगे। मिलने से होगा भी क्या ?"

इस तरह लछिमा और मोहरकरण का संबंध खत्म हो जाता है। गैबीनाथ की पूजा से वापस आती है पत्थर की मूर्ति बनी। गुलाल से भी

नहीं बोलती। मेदिनी से भी कुछ नहीं कहती।

मेदिनी सिंह कहता है, "दूसरे घर में सोयेगी कहाँ? तख्त भिजवा दूं? जमीन पर सोने से तबीयत खराब हो गयी तो असुविधा किसे होगी... मुझे ही न?" मेदिनी हँसता है। लछिमा कहती है, "हरोआ से कहा है कि बांस का मचान बना देना।"

उसके बाद सारे रिश्ते-नातेदार आ धमकते हैं। मेदिनी की एक बीवी का नाना, एक का बड़ा भैया पहले से दिये हुए वचन निभाने के लिए सपरिवार आ धमकते हैं। लछिमा और गुलाल मेदिनी को सब-कुछ समझा-कर दूसरे घर में चली जाती हैं। ढोलक पर थाप पड़ती है। औरतों के गीत गूँजते हैं। लछिमा अपने बिस्तर पर लेटी रहती है। गुलाल इस मौके पर बाहर निकलती है और ख़बरें इकट्ठा करके वापस लौटती है और नतिनी से कहती है, "यह क्या सुनकर आ रही हूँ मैं!"

"क्या सुनकर आयी हो? क्यों आँखें तरेर रही है?"

"सुना, मोहर को तूने शादी करने के लिए कहा?"

"कहा है।"

"तूने मेरे बारे में कुछ नहीं सोचा?"

"तू मेरे बारे में जितना सोचती है, उससे ज्यादा सोचती हूँ। अपने मन में झाँककर देख।"

"क्या बोल रही है, लछिमा?"

"मत पूछो।"

"क्यों?"

"मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।"

"क्या हुआ? मुझसे भी नहीं कहेगी?"

"क्या कहूँ?"

"मोहर के साथ तेरी शादी कराऊँगी, यह आस लेकर...।"

लछिमा अपने स्वभाव के विपरीत कड़वाहट और जलन से कहती है, "अरे! दिल ही टूट गया। ऐसा दिखा रही है कि जैसे मोहरकरण नहीं, मालिक मेदिनी सिंह ही छूट गया।"

"हाय राम! मैंने क्या कहा और तूने क्या समझा!"

"सब समझती हूँ। अब मेरी भी सुन ले। तूने मुझे बचपन से पाल-पोश कर बड़ा किया। उसी अधिकार से तूने यह तय किया कि मैं मालिक के लड़के को पालूंगी, मालिक की सेवा करूँगी।"

"झूठ मत बोल, लछिमा ! मालिक का तेरे साथ पहले से ही सम्पर्क था। नहीं था क्या ?"

"हाँ-हाँ, था। गाँव में ऐसा संबंध हर मालिक का होता है, लेकिन फिर भी उन लड़कियों की शादी होती है, गृहस्थी भी करती हैं वे। सब-कुछ गिरवी नहीं रखता कोई।"

"मैंने क्या वैसा ही किया है ?"

"चुप रह तू ! जमीन, गाय और रुपये के लालच में तूने ही तो मुझे गिरवी रखा है। तेरा खयाल न होता तो अब तक मोहर को लेकर कहीं और चली गयी होती। तुझ पर चोट आयेगी, यही सोचकर मैंने कुछ नहीं किया। अभी भी आठ-दस साल के लिए मैं गिरवी हूँ, समझी ?" लछिमा भयानक आक्रोश से गुलाल के चेहरे के सामने हाथ नचाकर कहती है, "गिरवी हूँ मैं ! बूढ़ी गाय की तरह जब पूरी तरह से नाकारा हो जाऊँगी, तब छोड़ेगा वह मुझे। क्यों बैठा रहेगा तब तक मोहर ? तब मुझे लेकर क्या करेगा वह ? तेरा क्या ? जमीन भी मिली, गाय भी मिलेगी। रुपया तो है ही। चिंता किस बात की ? छुटपन से पाला-पोसा था, इसलिए बड़ी होकर भी तेरे बारे में ही सोचा मैंने।"

बाहर खड़ा हरोआ सारी बातें सुन रहा था। वह स्तंभित हो जाता है। फिर खँखारते हुए कहता है, "सीधा लाया हूँ। ले लो, बर्तन वापस ले जाऊँगा।"

"ले रही हूँ।"

गुलाल मुँह बिगाड़कर चावल-दाल-तेल-नमक से भरी परात लेते हुए कहती है, "घूम आ, फिर ले जाना...।"

फिर लछिमा से कहती है, "मैं जरा मुहल्ले में चक्कर लगाकर आती हूँ।"

क्षण-भर में सुनसान हो जाता है लछिमा का नया घर-आँगन। फलने वाले आम के पेड़ से झर-झर पत्ता झड़ता है। पैर फैला

बैठी रहती है। क्या सोचा होगा हरोआ ने, पता नहीं? रात को यहीं तो सोता है। पता नहीं कब आँगन के चारों तरफ घेरा लगाया है मनसा के पेड़ से! हट्टा-कट्टा जवान मरद। बाँस का मचान बनाया है मज़बूती से। सारा बंदोबस्त इस तरह किया है, जैसे अभी-अभी ही कोई यहाँ रहने के लिए आ रहा हो।

लछिमा ने जम्हाई ली। "मैया री! बेवक्त जोरों से नींद आ रही है।" उसने सुना है कि जिस जगह पर कोई लगातार रहता है, वहाँ उसका अधिकार हो जाता है। हरोआ, तू मेरे घर-बार की खूब देखभाल करना। रात को सोता है, सोता रह। पहले मेरी नानी मरेगी। फिर मैं मरूँगी। तू यहीं रहना, पहरा देना। यह घर एक दिन तेरा होगा।

गुलाल की हंसी और बातचीत की आवाज़ से नींद टूटी तो शाम होने वाली थी। हड़बड़ा के उठ बैठी लछिमा। गुलाल दाल चढ़ाकर हरोआ के साथ किस्सा जोड़े बैठी थी। बुड्ढी का शौक देखो! दाल की महक से सारा आँगन महक रहा था। गुलाल चौंककर कहती है, "सोयी थी, इस-लिए जगाया नहीं।"

"पानी कहाँ से मिला? खाना पकाने का पानी?"

"हरोआ ले आया था।"

"हूं!"

"अभी खायेगी।"

"तू खा ले, उसे भी दे दे।" लछिमा जम्हाई लेकर कहती है, "मैं नहाकर खाऊँगी।"

"कहाँ जायेगी?"

"पहले हम लोग कहाँ जाते रहे हैं?"

"धनपतिया के तलाव पर।"

"और कहाँ जाऊंगी?"

"क्या ले रही है?"

"बेसन। मैल छुड़ाऊँगी बदन से।"

लछिमा को इस समय कुछ भी ख़राब नहीं लग रहा है। कुछ दिनों की छुट्टी-मुक्ति, चाहे पल के लिए ही सही। वैसे हरोआ के साथ वह

ज्यादा बातें नहीं करती, लेकिन जैसे इस समय वह यह भी भूल गयी।

"क्या तुम्हारे सातों कुल में कोई नहीं है तुम्हारा ? यहाँ मरने के लिए आये ?"

"लम्बी बात है।"

"यहाँ क्यों आये ?"

"मालिक को पता है।"

"घर कहाँ है, घर ?"

"नहीं बताऊँगा।"

"दगाबाजी किये हो ?"

"नहीं, कतई नहीं।"

"क्या देता है यह तुम्हें ?"

"कुछ नहीं, पेट-भर खुराकी।"

"बस ?"

लछिमा पहली बार महसूस करती है कि हरोआ के साथ उसकी कहीं पर समानता है। जैसे मालिक ने उसे अपने कब्जे में कर रखा है, ठीक उसी तरह हरोआ भी उसके कब्जे में है। किसी गोपनीय बात या कोई कमजोर नस का पता चल गया होगा उसे। इसलिए इस तरह से गुलाम बना रखा है इसे।

अचानक लछिमा के मन में एक भयानक संदेह उत्पन्न होता है।

"क्यों हरोआ, कोई खत तो नहीं लिख दिया था तुमने ?"

"कैसा खत ?"

"कैसे बुद्धू हो तुम ! ये भी नहीं जानते कि खत लिखकर आदमी अपने आपको बेच देता है। तुम जितने भी इस तरह के नौकर हो, सभी के पुरखों ने कभी कर्ज लिया था, खत लिखकर। चुका न पाने के कारण, अभी भी मजूरी करते हैं। एवज में कुछ फसल मिल जाती है। ऐसा ही बंदोबस्त है क्या तुम्हारे साथ भी ?"

"हुजराइन !"

"जा !"

"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं। बता, मैं हुजूराइन हूँ क्या ?"

"फिर क्या कहूँ ?"

"नाम लेकर बोल, गिद्धड़ ! पीछे से क्या बोलता है ?"

"किसी बुरे नाम से तो नहीं बुलाता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सभी को पता है।"

"क्या पता है ?"

"मालिक ने जो किया, वह ठीक नहीं है।"

"तुम्हारे ऊपर उसका क्या अधिकार है ?"

"मैंने कोई खत नहीं लिखा। लेकिन मैं उनसे भी ज्यादा बंधुआ गुलाम हूँ। यही समझो और ज्यादा मत पूछो।"

लछिमा गहरा साँस छोड़ती है। दग्ध वंचित दिल को जैसे क्षणिक संतोष का ठंडा लेप मिला हो। कोई बुरे तरीक़े से उसका नाम नहीं लेता। हरोआ जैसे लोग भी सोचते हैं कि मालिक ने जो किया, वह सही नहीं है।

लछिमा ने कहा, "हरोआ, घर की खूब देखभाल करना। मालिक के मकान में मेरे साथ बात मत करना, क्योंकि यह मालिक को अच्छा नहीं लगेगा, छोटे मालिक के सामने भी नहीं।"

"नहीं, मैं नहीं बोलूँगा। कभी बोला हूँ क्या ?"

दोनों चुप हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद हरोआ कहने लगा, "एक बात कहूँ। यह जो तुम्हारी जगह है, कहो तो यहाँ दो-चार नींबू के पेड़ लगा दूँ। बरसात के शुरू में लगाने से जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं।"

"क्या होगा उनसे ? कौन देखभाल करेगा उनकी ?"

"मैं करूँगा।"

उत्साह के साथ हाथ हिलाकर कहता है, "क्या होगा, कहती हो। जानती हो, शरबती नींबू कितना अच्छा होता है ? एक-एक नींबू में कितना रस होगा। मैं वह नींबू बेच दूंगा। बुढ़िया को पैसा मिल जायेगा। यहाँ दिन में कोई रहता नही। नहीं तो मिर्च, प्याज भी लगाता। फल का पेड़ ही अच्छा है। नींबू, अमरूद—यह सब खूब फलेंगे। काँटे वाली बाड़ का घेरा

चना दूंगा, खूब अच्छी तरह से।"

यह कहकर वह अपने मन को और उजागर कर रहा है। लछिमा समझती है, इस मकान को लेकर उसका सपना रचित हो रहा है।

"खैर, लगा लेना। मैं रोज-रोज आ नहीं सकती, पिंजरे का पंछी बन जाऊँगी फिर से। ऐसा-वैसा पेड़ मत लगाना कि मालिक के मन में खटके और वह नाखुश हों।"

"नहीं, नहीं। मैं ऐसा कभी कर सकता हूँ?"

शादी का उत्सव खत्म हो जाता है। रिश्तेदार विदाई लेते हैं। एक-एक करके। मेदिनी का चचिया ससुर कहता है, "शादी का पानी बदन पर गिरा। चौदह साल में ही लड़की गृहस्थी सम्भालने लायक हो जायेगी। तभी गौना करा लेना। लड़का भी तब सोलह साल का हो जायेगा। भगवान ने चाहा तो साल-भर में पोते का मुँह देखोगे।"

मेदिनी खड़ा रहता है, चेहरे पर हँसी लिये। बरकंदाज कहता है, "भैया, मेरी उम्र तुम्हारी उम्र से काफी ज्यादा है। दामाद को बुलाऊँगा कभी-कभी। अब मैं और कितने दिन का हूँ?"

रिश्तेदारों के विदा होने के साथ ही लछिमा और गुलाल वापस आ जाती हैं और अपनी भूमिकाएँ सम्हाल लेती हैं। रात को मेदिनी सिंह लछिमा से कहता है, "पुराने जूतों में ही पैर को ज्यादा आराम मिलता है। ये मुझे बड़े जतन से रखते थे, पर तेरी तरह से नहीं।"

"मालिक की किरपा!" लछिमा बोली।

"यह धोती ले लो। एक गुलाल को भी दी है।"

छापे की एक धोती निकालता है और कहता है, "चाहता था कि इस मौके पर तुझे और भी कुछ दूँ, लेकिन हो नहीं सका। उन लोगों ने जैसा दहेज दिया, वैसी खातिर भी करनी पड़ी।"

"और भी कुछ, क्यों?"

"लड़के को पालकर बड़ा किया...।"

"कपड़ा तो दिया।"

"हरोआ, गोविन, देतारों को भी कपड़ा दिया। तुम लोगों को भी। मिशिर को चाँदी की जनेऊ दी।"

लछिमा ने मशीनी आवाज में कहा, "सभी कपड़े एक कीमत के ?"

"उन्नीस, बीस होंगे।"

"चलो, अच्छा रहा। लड़के को पाला, इसलिए तुमने जमीन दी। रुपया देते हो। नानी को एक गाय भी दोगे।"

"दूंगा, जरूर दूंगा।"

मेदिनी ने सोचा, 'बेकार ही वह लछिमा के स्वभाव के बारे में तरह-तरह की बातें सोचता रहता है। लछिमा जरूर निहाल हो गयी होगी।' अपनी चाहत मिट जाने पर कहता है, "अहा! अभी भी मुझ में घोड़े जैसी ताकत है। अच्छा ही हुआ कि मोहरकरण छूट गया। नाई का बच्चा क्या मेरा मुकाबला करता ?"

लछिमा कुछ नहीं कहती।

मेदिनी फिर कहता है, "तेरी शादी-वादी नहीं होगी। बहू घर आने पर बल्कि मैं यहीं जाया करूंगा। जिन्दा न रहा तो तू गणेश का पैर पकड़ कर यहीं पर रहना। खाना-कपड़ा जरूर मिलेगा।"

"तुम नहीं मरोगे।"

"अयं! तू नहीं चाहती कि मैं मरूं?" मेदिनी उठकर हंसने लगता है। फिर कहता है, "बरकंदाज सिंह ने पटना से जाने तसवीरों की कैसी किताब मंगवायी है। कहता है, तसवीरें विलायती हैं, देखने से ही मरद में काफी गरमी आ जाती है।"

लछिमा को डर लगने लगता है। 'मेदिनी सोता क्यों नहीं ? उसने अपना दैनिक हिसाब तो चुकता कर लिया है।'

आखिर मेदिनी सो जाता है।

अंधकार लछिमा को कुछ आश्वस्त करता है। रोशनी में होती है वह निरावरण, नग्न, मेदिनी की रखैल, गणेश की दाई, नानी की गिरवी रखी सम्पत्ति। अंधकार ही उसकी लज्जा ढांपता है, काफ़ी रात गये। प्रौढ़ मेदिनी के गले से थकके से निकली इन अश्लील बातों ने अंधकार को और अधिक मांसल और दंतुला कर दिया है आज।

लछिमा चुप हो रहती है।

# तीन

चाढ़ा गाँव के नक़्शे में, हरिजनों का अस्तित्व एक तरफ़ तो गौण है, क्योंकि यहाँ पर राजपूत समाज ही मुख्य है। दूसरी ओर, उनका होना आवश्यक भी है, क्योंकि मुख्य जीवों के विविध प्रयोजनों को वे ही पूरा करते हैं। क्योंकि यह गाँव मेदिनी सिंह जैसे राजपूतों द्वारा बसाया गया है, इसीलिए नौ हिस्सा ज़मीन उनके क़ब्ज़े में है। बाक़ी लोग यानी कि बहुसंख्यक तबक़ा अल्पसंख्यकों की ज़मीन जोतते हैं।

यहाँ ज़मीन जोतने और खेतीबाड़ी करने की शर्त और बंदोबस्त कई तरह से है। लेकिन मुख्य रूप से वे इसी नियम से ज़मीन जोतते हैं—ये हैं मालिकों की ख़रीदी प्रजा।

सभी मालिक कभी-न-कभी इलाकों की फ़ौजों में सिपाही थे। आंच-लिक राजा भी इन पिछड़े इलाकों में एक दिन के लिए ख़रीदी गयी प्रजा से खेतीबाड़ी करवाते थे। ये सब राजा इतने छोटे हैं कि सरकारी कागज़ों में इनका नाम नहीं, लेकिन अपने-अपने साम्राज्य में सभी हैं सम्राट !

बंदा या दास प्रथा है या नहीं, इस बारे में इन मजदूरों को किसी ने कभी भी बताया नहीं। इनके वसाघरों के समय मालिकों को और अधिक सुविधा मिल जाती है। ज़मीन जोतते हैं अधिक कर देकर। अधिक उप-जाऊ साल में ख़ुराकी अनाज भी नहीं बचता। सूखा, अजन्मा और बाढ़-पानी में उधार चुकाने का नियम है खाते पर अँगूठा-छाप। फ़सल का सबसे बड़ा हिस्सा तो देंगे ही और वक़्त-बेवक़्त बेगार भी खटेंगे। इसी तरह कचहरी के सर्वशक्तिमान लाल-बही में बँधुआ हैं ये लोग।

ये ही हैं ख़रीदी बंदों की प्रजा।

"ख़रीदी क्यों ?"

"एक दिन के लिए ख़रीदे गये बंदों के वंशधर हैं, इसीलिए।"

इन सभी राजाओं के बीच आपस में मुक़दमा चल सकता है, लेकिन एक विषय में इनमें काफ़ी समझौता है। इस सब प्रजा के इस लोक और परलोक के मालिक ये ख़ुद हैं और इस नियम को सभी मानकर चलते हैं। इसीलिए एक की प्रजा, दूसरे के यहाँ जाने पर पकड़कर लौटा देते हैं

असली-मालिक को। आज़ादी के बाद, सभी राजा हैं जोतदार, लेकिन ख़रीदी प्रजा वाला नियम उसी तरह बरक़रार है। ये क़ानून वैध नहीं हैं। इससे क्या ?

बेगारी प्रथा क़ानून-सम्मत है क्या ? इन सब इलाक़ों में जो प्रथा है, जो मालिकों को सुविधाप्रद है—वही क़ानून है।

बाढ़ा गाँव में भी यही नियम चलता है। यहाँ के मुखिया भी कभी राजा की फ़ौज में सिपाही रहे हैं। उसी ज़माने के मालिक का बनाया क़ानून यहाँ अभी भी चलता है—ख़रीदी प्रजा। गाँव एक है, मालिक नौ। सारी प्रजा ख़रीदी हुई। भंगी, हज्जाम, धोबी वग़ैरह अपना-अपना पैतृक काम तो करते ही हैं, इसके अलावा कोई-कोई बटाई पर खेती भी करता है। बटाई पर ज़मीन देने में मालिक को कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि बटाई की ज़मीन पर काम करके भी इनके पास खाने लायक़ कुछ नहीं बचता। तब यह लोग कर्ज़ लेते हैं। कर्ज़ लेकर ये बँध जाते हैं। कर्ज़ का ब्याज चुकाने में इनकी अपनी ज़मीन का छोटा-मोटा टुकड़ा चला जाता है। वैसे अब ये लोग भी समझ गये हैं कि कर्ज़ से बचने के लिए बटाई पर ज़मीन लेने से नौकर बनना ही अच्छा है। मालिक के रूप में इन्हें बरकंदाज़ सिंह जैसा मालिक पसन्द है। वह दयावान नहीं है, बल्कि उधार-कर्ज़ के मामले में कई गुना ज़्यादा शातिर है। लेकिन प्रजा के साथ सम्पर्क अच्छा बनाकर चलता है। पोती की शादी में उसने अपनी समूची प्रजा को भरपेट खाना खिलाया था।

वही इस समाज का प्रधान है। धनपतिया का बाप भी एक दिन उस के पास गया। कहा, "मालिक, कुछ कहना है।"

"क्या बात है ? बड़ी भैंस का ज़ख्म तो तू अभी तक ठीक नहीं कर पाया।"

"क्यों ? देखिये कितना सूख गया है। वह बार-बार कुंड में उतर जाती है। कीचड़ और कीड़ों से घाव फिर बढ़ जाता है।"

"कुछ दिन बांधकर रख।"

"रखूंगा।"

"क्या कहना है ?"

"मोहर को बटाई पर जमीन देनी होगी।"

"कौन मोहर?"

"मोहरकरण।"

"काहे को? उसे तो जमीन मिली हुई है और वह खेती भी करता है।"

"न मालिक, बात यह है कि वह शादी अब नहीं हो रही है।" अपने बचाव के लिए मेदिनी का नाम नहीं लेता वह, लेकिन कहता है, "लछिमा अभी शादी नहीं करेगी। मोहर मेरी लड़की से शादी करना चाहता है। उसके पास तो खाली एक झोंपड़ी है, वह भी टूटी-फूटी। कहता है कि मालिक की कृपा हुई तो सब-कुछ बना लेगा धीरे-धीरे। मालिक, आप किरपा करें।"

"हूं! मोहर किसी की खरीदी प्रजा तो नहीं?"

"नहीं, हुजूर!"

"आ, हो जायेगा। फिलहाल अपने साथ ही ले ले उसे।"

"तो ठीक है, मालिक!"

"हां, हां। मेदिनी को तो पता है न? वह नाराज तो नहीं होगा!"

"लछिमा उससे शादी नहीं करेगी।"

शाम को बरकदाज सिंह थोड़ा-सा नशा करते हैं। पुरानी आदत है। नशा अपने घर में नहीं, रखैल मोरी के घर में करते हैं। बंदोबस्त अच्छा है। मोरी, बरकदाज सिंह की प्रजा बिलुलाल की औरत है। दो लड़कों की मां है। बरकदाज सिंह के आने से पहले ही बिलुलाल लड़कों को लेकर आंगन के पार दूसरे कमरे में चला जाता है।

बरकदाज ने पुकारा, "मोरी!"

"क्या, मालिक?"

"मोहर धनभनिया से कैसे शादी कर रहा है?

"शादी तो करनी ही पड़ेगी। नहीं तो क्या उसे सारी जिन्दगी दुखी रहना है। इसीलिए वह शादी कर रहा है।" मोरी झाड़-पोंछ करती है। उन सबको मोहर और लछिमा से हमदर्दी है।

"लछिमा से शादी नहीं करेगा?"

"नहीं।"

"आहा ! मैंने तो सुना है कि लछिमा ही शादी नहीं करेगी उससे।"

"बात एक ही है।"

"सुना है, लछिमा और आठ साल शादी नहीं करेगी।"

"कौन जाने, मालिक ? छोड़िये यह बात।"

बरकंदाज़ सिंह को लगा कि जैसा उसने सुना है, मामला वहीं तक नहीं है। मामला कुछ गड़बड़ है, सारी बातों का पता नहीं चल रहा है। गाँव के जीवन में तरह-तरह के क़िस्से, कच्चे चिट्ठे या निंदा-बुराई काफ़ी महत्व रखते हैं। इन्हीं से जिन्दगी का स्वाद बदलता है। घर में बैठे-बैठे मोहर की शादी के रहस्य को फैलने से नहीं रोका जा सकेगा।

ऐसे विषयों पर अकसर भंगी लोग गाना बना लेते हैं। इस तरह की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता गाँव की जीवन-पद्धति में स्वीकृत है। यह लोग अकसर किसी भी विशेष घटना को लेकर गाना-बजाना करते हैं। चेहरे पर रंग मल कर बाज़ार में घटना को गाकर पैसा लेते हैं। इस पर रोक लगाने पर वे काम नहीं करेंगे और उनके काम न करने से गाँव नरक बन जायेगा। इसके पीछे कई कारण हैं। बाढ़ा गाँव से सटा एक गो-भागाड़ (जहाँ मरी हुई गाय रखी जाती है सड़ने के लिए) है। तोहरी के बाजुलाल ठेकेदार यहाँ हड्डियाँ इकट्ठा करते हैं। सरकारी फ़ार्म में इन हड्डियों की खाद डलती है। इसलिए इस भागाड़ की देखभाल इन भंगी लोगों के हाथ में है। सड़-गलकर, कीड़े-मकौड़ों से खाये जाकर जब पशुओं की लाशें कंकाल बन जाती हैं तो डंडे से पीट-पीटकर हड्डियों को तोड़ा जाता है और बोरियाँ भरकर भेज दिया जाता है। सड़ी हुई लाशों को सरकारी चूने वाली मिट्टी से ढँका जाता है।

गाने-बजाने पर रोक लगाने पर बदमाशी पर उतारू ये लोग अगर जानवरों पर चूना-मिट्टी न डालें तो सारे गाँव पर गिद्ध मँडराने लगेंगे और बदबू के कारण रहना मुश्किल हो जाये। भागाड़ यहाँ से नहीं हटाया जा सकता। बाजुलाल ने रुपया लगाकर अच्छी जगह ज़मीन ली है।

एक बार बरकंदाज़ सिंह ने कहा भी था कि भागाड़ हटाना होगा।

"क्यों ?"

"गंदी चीज है। घर में बैठकर देसी घी में पका खाना खा रहे हों तो

उसमें भी बदबू आने लगती है।"

"मैं क्या करूँ? भागाड़ तो यहाँ पहले से था।"

"अरे वे लोग आजकल कुत्ता-बिल्ली जो भी मर रहा है, सब को यहीं डाल जाते हैं, इसलिए ऐसी बदबू...!"

"चूना-मिट्टी भी डालते हैं।"

"भागाड़ हटाना होगा।"

"मुझे सालाना फ़ायदा कितने रुपये का है, पता है आपको? सब हिसाब लगाकर, नवागढ़ की कचहरी से लिखा-पढ़ी करके ठेका लिया है। फ़ायदे की चीज़ को कोई छोड़ता भी है?"

"मरे जानवर से फ़ायदा?"

"तुम्हें क्या पता? क्या केवल ज़मीन, भैंस और ख़रीदी प्रजा ही फ़ायदे की चीज़ है?"

बरकंदाज़ सिंह को बड़ी हैरानी हुई, लेकिन वह बेवकूफ़ नहीं बनना चाहता था इसीलिए कहता है, "यह सब-कुछ पहले नहीं था। आज़ादी मिलने पर ही यह सब-कुछ हो रहा है।"

भंगी लोगों को बाजूलाल कभी-कभी रुपया भी देता है। तब वह लोग सूअर मारते हैं और शराब पीकर गीत गाते हैं।

बाढ़ा गाँव में भंगियों की औकात बढ़ने का मुख्य कारण है बरकंदाज़ सिंह के भतीजे चन्द्रभान का पत्नी-प्रेम। असल में बरकंदाज़ के भतीजे की बीवी अनुपम सुन्दरी या गुणवती नहीं है, पर है बड़े खानदान की। अच्छे सरायों की एकलौती लड़की है, और बाढ़ा गाँव के सभी लोगों के लिए गर्व का कारण भी है, क्योंकि वही एकमात्र ऐसी स्त्री है जो शहर में दस साल रहकर आयी है, चाहे वह छपरा ही क्यों न हो। उसके जैसे रूप का इक्का किसी के पास नहीं है। न किसी मर्द के पास, न किसी औरत के पास। फलस्वरूप उसके हज़ारों नखरे हैं। उसे लालटेन नहीं, बड़ा नक्काशीदार लैम्प चाहिए। नहाने के लिए बेसन नहीं, खुशबूदार साबुन चाहिए। गर्मी में छापे की पतली धोती भी चाहिए।

बाद में वह सास से बड़ी गोपनीय, दुख की बात कहती है, लेकिन अनेक पूछताछ के बाद। वह शहर की लड़की है। उसकी आदत है, पर वे

अन्दर बनी टट्टी में जाने की। सास, ननद और जेठानी के साथ लोटा लेकर, मकई के खेत में जाकर प्रातः-क्रिया निपटाने और बतियाने में वह असमर्थ है।

सास इस बहू का पक्ष हमेशा लेती है। लेकिन यह बात उसकी भी समझ से बाहर है।

"क्या कह रही है, बहू ?"

बहू फिर वही बात दोहराती है।

सास पहले तो हँसती है, फिर अपनी राजपूतानी आन और तेज के गर्व से गंभीर होकर कहती है, "ऐसी बात मत कर। हम हमेशा मैदान में जाते रहे हैं और अभी भी जाते हैं। शहर की सारी आदतें अच्छीं नहीं।"

लेकिन बहू की तकलीफ़ और परेशानी भी ठीक है। समझ आती है।

चन्द्रभान की दुल्हन मकान के अहाते में टट्टी चाहती है। वह काफी परेशानी में है। पहले तो इसे बेशर्मी, नायायज माँग, फैशन और सिनेमा देखने का बुरा नतीजा माना जाता है। इसी दौरान बरकंदाज किसी एस० डी० ओ० को अपने घर में पोते के लगन-टीका के अवसर पर बुलाता है। हाकिम कहता है, "नहीं-नहीं, मैं नहीं आ सकूंगा।"

"क्यों सरकार ?"

क्लर्क कहता है, "आप लोगों के यहाँ न तो गुसलखाना होता है, न संडास। इसलिए अफ़सर लोग वहाँ नहीं जाना चाहते।"

तो यह बात है !

दुनिया में इतना कुछ होते हुए भी शौचालय को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है ? बात उसे समझ में नहीं आती, लेकिन दो और दो जोड़कर वह चार कर लेता है। अब जमाना बदल गया है। धीरे-धीरे हाकिम, अफ़सर और मंत्रियों के साथ संबंध बढ़ाना होगा।

उत्साह के साथ कहता है, "संडास बनवा दूं ?"

"बनवा दीजिये।"

बरकंदाज सिंह मजदूर और मिस्त्री लेकर वापस आता है। संडास बनाना ही है तो एक ही क्यों, एक से ज्यादा बनवाने में ही शान है, कम में नहीं। कई शौचालय एक ही पंक्ति में बनवाये जाते हैं। कुएँ के क़रीब

गुसलखाना भी बनवाया जाता है, मिस्त्री के सुझाव से।

गुरू में तो कोई इनका इस्तेमाल नहीं करता। लेकिन सबसे पहले चन्द्रभान की दुल्हन उनमें जाने लगती है। अब कोई इस काम में उससे पीछे न रह जाये, इसलिए घर की सारी औरतें उनमें जाने लगती हैं।

मद्रास की महिमा से एक बार एक डिप्टी-मजिस्ट्रेट, एक रात ठहर-कर होली का न्योता खा जाते हैं।

फलस्वरूप गाँव में बरकंदाज सिंह की इज्जत बढ़ जाती है। दूसरे मालिक लोग भी केवल बेवकूफ महाजन बने नहीं रहना चाहते। इसलिए वे भी अपने-अपने अहातों में वैसा ही दड़बा बनवाते हैं।

शौचालय साफ करना और उनमें से मलाधार को बाहर फेंकने का काम भंगियों के लिए नियत हो जाता है। इस काम में बेगार चलने से रही, इसलिए भंगी लोग तनख्वाह पाने लगे। भंगियों की भूमिका काफी महत्व-पूर्ण होती गयी। क्योंकि अगर वे टट्टी साफ न करें तो मकान में रहना ही मुश्किल हो जाये।

लेकिन मेदिनी सिंह ने यह काम नहीं किया।

लछिमा मोहर से शादी क्यों नहीं करेगी, इसका रहस्य मोरी ने किसी तरह से भी नहीं बताया। इस पर बरकंदाज सिंह का संदेह और भी बढ़ गया है। क्या इस मामले में मेदिनी सिंह का हाथ है?

"मुझे कुछ नहीं मालूम, मालिक!"

उत्सुकता के कारण बरकंदाज सिंह का बुरा हाल था। मेदिनी सिंह के लड़के के साथ उसकी पोती की शादी हुई है। यह मेदिनी सिंह के लड़के का सम्बन्धी है। मेदिनी की रखैल लछिमा मोहर से शादी नहीं करेगी, इससे उसे कुछ नहीं लेना-देना। लेकिन मोहर अब उसकी खरीदी प्रजा बिगुलाल का दामाद होने जा रहा है, इसलिए वह जान लेना चाहता है कि कहीं मामला कुछ गड़बड़ तो नहीं।

अगर कुछ गड़बड़ हो तो? मेदिनी नाराज हो जाये तो? बिगुलाल को 'हाँ' कहकर कहीं उसने गलती तो नहीं की?

बरकंदाज अपने सुयोग्य पुत्र नाथू से पूछता है। नाथूसिंह अपने बाप से जुबान नहीं लड़ाता है। गणेश को दामाद बनाने की उसकी कतई इच्छा

नहीं थी। लेकिन लड़का देवांशी है और तिस पर पिता का आदेश, इसीलिए राज़ी हो गया। मेदिनी के रहन-सहन का तरीक़ा उसे पसंद नहीं। उसकी हवेली में लछिमा के रहते वह अपनी लड़की नहीं भेजेगा। रखैल रहती हैं घर से वाहर। घर में कौन ले आता है उन्हें ?

पिता की वात सुनकर थोड़ी देर तक सोचता है। धनपतिया की वहन लखपतिया उसकी कृपापात्री है। धनपतिया की शादी मोहर से करायी जायेगी। वह अपने पिता से कहने लगा, "छोटी जात की बात है। मोहर किस से शादी करता है या किससे नहीं—इससे आपको क्या लेना-देना ? आप समाज के प्रधान हैं, उनके वारे में आप क्यों सोचेंगे ? छोटे लोग आपको मानते हैं, आपकी जुवान के कारण। विगुलाल आपकी प्रजा है। उसे आपने जो जुवान दी है, उसे पूरा करें।"

"मेदिनी से न कहूँ ?"

"वह भी माने हुए आदमी हैं। क्या करेंगे यह वात जानकर ? वैसे भी गाँव की सारी वातों का पता चल ही जाता है। उन्हें भी चल जायेगा।"

"जैसा ठीक समझो। तुम समझदार हो, ठीक ही कह रहे हो।"

नाथूसिंह समझदार लड़का है, लेकिन मोहर समझदार नहीं। यह वात विगुलाल समझता है और समझकर घवराने लगता है।

मोहर उससे कहता है, "रुपया देकर जमीन वटाई पर लूंगा।"

"रुपया मिलेगा कहाँ से ?"

"कर्ज़ा लूंगा।"

"व्याज नहीं देना पड़ेगा ?"

सूखी हँस हँसकर कहता है, "नहीं।"

मालिक की इच्छा पर उनका जीना-मरना टिका होता है। इसलिए वचाव की कूटनीति इन्हें भी सीखनी-जाननी पड़ती है।

इसी कूटनीति से काम लेते हुए विगुलाल समझ जाता है सारी वातें। भावी दामाद से कहता है, "लछिमा-गुलाल से लोगे ?"

"हाँ !"

"चलो, दूकान पर चलें।"

दूकान के नजदीक एक पेड़ के नीचे मोहर के साथ बिगुलाल बैठता है। अँगोछे से हवा करते हुए कहता है, "मोहरकरण, तुम मेरे लड़के की उम्र के हो। लड़के की जगह पर ही होगे तुम। मैं सोचता हूँ कि मेरे तीन नहीं, चार लड़के हैं। पंच भी हमसे खुश हैं।"

"जी हाँ!"

"तुमने मुझसे जो कहा, और किसी से मत कहना। क्यों, यह मैं समझाता हूँ।"

"जी, मैंने कुछ गलत कहा है?"

"नहीं, कतई नहीं! पर अब मैं तुम्हें समझाऊँ कैसे?"

उद्वेग में बिगुलाल बीड़ी सुलगाता है और फिर कहता है, "लछिमा के साथ शादी हुई या नहीं हुई, फिर भी बरकदाज सिंह तुम्हें जमीन दे रहा है। मैं उनकी प्रजा हूँ। तुम इस गाँव के नहीं हो। बाहर से आये हो, यहाँ के सारे रीति-रिवाज तुम्हें मालूम नहीं।"

"आप बता दीजिए।"

मोहर की दृष्टि अनुभव, नम्रता, गहरी चोट खाने से उत्पन्न उदासीनता और ठहराव लिये है। जैसे वह अभी भी अपने ही जख्मों के घेरे में बंद है। उस शीशे के घेरे को तोड़कर दूसरे लोगों से सम्पर्क कर पाने में वह असमर्थ है।

बिगुलाल ने कहा, "चिंता मत करो। हाँ, मैं कह रहा था...।"

"कहिये।"

"यहाँ पर कोई नियम, कानून, अदालत, अफसर, कचहरी नहीं है। यह मालिक लोग ही यहाँ के राजा-महाराजा हैं। करज लेकर तुम बटाई पर जमीन लेते हो। फसल पर लगान देते हो, जरूरत पर मालिक से उधार लेते हो। मालिक ही इसका हिसाब रखते हैं। मालिक मोहर जैसे लोगों पर नाराज नहीं होते हैं।"

"करज तो नहीं मिटता?"

"नहीं। इसीलिए हम लोग खरीदी प्रजा कहलाते हैं।"

"और आगे कहिए।"

"लेकिन जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि तुम रुपया देकर जमीन लेना

चाहते हो, वैसे ही उनकी आँखें लाल हो जायेंगी और वे कहने लगेंगे, इतनी हिम्मत ? रुपया देकर जमीन लोगे ? हम पता करेंगे कि रुपया तुम्हारे पास आया कहाँ से ? तब तुम फँस जाओगे । मैं भी फसूंगा । और फिर लछिमा को क्या मेदिनी सिंह छोड़ देगा ?"

लछिमा से शादी न हो पाने के कारण वह अभी गहरे दुख में है । कहता है, "यह तो जुलुम है । क्या कोई उपाय नहीं है ?"

"उपाय ? तुम पागल हो, गये हो ,मोहर ? अभी तीन महीने भी नहीं हुए, मेदिनी सिंह को खबर मिली थी कि नवागढ़ की आदिवासी प्रजा रुपया देकर चीज खरीद रही है। फसल बेचकर चीजें ले रहे हैं । बस उसके इशारे पर उसके सिपाहियों ने पूरी आदिवासी बस्ती को जला दिया । नहीं, नहीं मोहर, ये सब बड़े भयंकर लोग हैं । ऐसी बात कभी मत सोचना ।"

"ठीक है, नहीं सोचूंगा ।"

लेकिन फिर भी मोहर की शादी के मामले में मेदिनी सिंह फँस जाता है । परिणाम मोहर के लिए अच्छा नहीं हुआ । रुपया देकर ज़मीन नहीं लेगा, बिगुलाल की सिफ़ारिश से लेगा । इसलिए लछिमा से उधार भी नहीं लेता, लेकिन लछिमा के दिये हुए बीस रुपये से बकरी ज़रूर ख़रीदेगा । अच्छी तरह देखभाल करने पर बकरी बच्चे भी जल्दी-जल्दी देती है, जिन्हें बेचा जा सकता है। नयी दुल्हन के लिए बकरियाँ अच्छा उपहार रहेंगी ।

सब-कुछ पर अच्छी तरह सोच-विचार कर लेने के बाद अपने भावी सालों की मदद से वह अपनी झोंपड़ी ठीक करता है। बकरी की खोमड़ी बनाता है । मिट्टी की दीवारों की लिपाई-पुताई करवाता है । इसके बाद पारशर के घर जाता है और एक बकरी ख़रीद लाता है ।

बाजार से लाल-पीले रंग की एक धोती और जस्ते की चूड़ियाँ भी लाता है। बिगुलाल उससे कहता है, "बकरी अभी हमारे पास ही रहने दो । तुम्हारे घर में देख-भाल कौन करेगा ?"

लखपतिया अपनी बकरियों के साथ उसे भी चराने ले जाती है । एक दिन घोड़े पर सवार मेदिनी सिंह की नज़र बकरी पर पड़ती है। एकदम

सफेद नाचती हुई उस बकरी को देखते हुए कहता है, "सुन्दर है। तुम्हीं लोगों की है?"

लछपतिया शरमाकर हँसके कहती है, "हाँ!"

लगाम खींचकर घोड़ी को खड़ा करता है। और पूछता है, "तेरी दीदी है न धनपतिया? मोहर उसे खिलायेगा क्या?"

"मालिक बटाई पर जमीन देगा।"

"अच्छा!"

मेदिनी वापस लौटता है। उसे यह बात अच्छी नहीं लगती। क्यों, पता नहीं। शाम को बहू को देखने के बहाने बरकन्दाज सिंह के घर जाता है और कहता है, "क्या तुमने यह काम ठीक किया?"

"कौन-सा?"

"मोहर को बटाई पर जमीन देना?"

"भैया, वह बिगुलाल की लड़की से शादी करेगा और बिगुलाल तीन पीढ़ी से मेरा खेत जोत रहा है।"

"आदमी अच्छा नहीं है। इसलिए लछिमा ने उससे शादी नहीं की। वैसे अभी शादी हो भी नहीं सकती। मेरा लड़का बड़ा हो जाये और तुम्हारी पोती भी। आठ-दस साल का मामला है। इतना बेईमान है कि इन्तजार भी नहीं कर सकता।"

"भैया, उनकी समझ उनके पास। औरत चालीस की और मरद पैंतालीस होने पर शादी कैसे करेगा? तब तो साधु बनेंगे, साधु!" बरकंदाज सिंह अपने मजाक पर आप ही हँसने लगे।

मेदिनी सिंह को याद आया कि ठीक यही बात कहकर लछिमा ने उससे छुट्टी माँगी थी। वह गहरी साँस छोड़कर बोला, "खेत-बधार, गाय-भैंस, ज्वार-मक्का, बर्तन-बिस्तर, किसान-मजदूर, बाग-बगीचा, गृहस्थी बहुत ज्यादा फैल गयी है। बच्चा बैल क्या खेत जोत सकता है? छोटी-सी बहू क्या घर सम्हाल सकेगी? बहू को भेज दो। सारा काम समझ ले। लछिमा को निकाल दूँगा। हाँ, अगर वह बहू का पैर पकड़कर रहना चाहे तो रह सकती है। काम करेगी तो खाना भी मिलेगा। सोच-विचार कर ही मैंने ऐसा बदोबस्त किया था।"

"नहीं, तब नहीं। घर के काम के लिए नौकरानी रख दूंगा।"

"उसे बटाई पर जमीन मत देना।"

"जब तुम मना कर रहे हो तो...।"

"नहीं, आदमी अच्छा नहीं है।"

मेदिनी सिंह के चले जाने पर नाथूसिंह ने कहा, "और लीजिये एक ही गाँव में रिश्तेदारी का फल। साला बदजात! अपनी हवस में लछिमा को घर में रखा। बीवियों को भगाया, अब हम लोगों की प्रजा के साथ भी...। आपने वचन दिया है न बिगुलाल को? नीच जाति को हाथ में भी रखना होता है, नहीं तो काम कैसे चलेगा? यह आदमी कैसा है? मोहर-करण क्या उसकी बराबरी का आदमी है? उसकी शादी में टांग अड़ा रहा है?"

"अब क्या करें?"

"मुझे नहीं पता। अब अगर आप मोहर की शादी में दस रुपया भी देंगे तो वह नाराज हो जायेगा और बहू को नहीं ले जायेगा। ले गया तो पीहर नहीं भेजेगा।"

अंत में बरकंदाज सिंह ने बिगुलाल को बुलाया और साफ़-साफ़ सब-कुछ कह दिया। दुख की बात है, लेकिन वह समधी को नाराज भी नहीं कर सकता। बरकंदाज समझते हैं कि यह काम अच्छा नहीं हो रहा है। बिगुलाल जैसे लोग जरूर तरह-तरह की बातें बनायेंगे। उसने मेदिनी सिंह के सामने बहाना क्यों बनाया? क्यों बाद में हाथ खेंच लिया? क्या वह अब मेदिनी सिंह के अधीन हो गया है?

बरकंदाज ने काफ़ी सोच-विचार करके कहा, "जमीन नहीं दे सकता, पर धनपतिया को चार साल के लिए एक भैंस दे रहा हूं। उसे चरायेगी। अगले साल बच्चा होगा, बच्चा रख लेगी। आधा दूध देगी, आधा बेचेगी। तीसरे साल भी यही बंदोबस्त रहेगा। चौथे साल बच्चा हुआ तो ठीक, नहीं तो साल गये भैंस लौटा देगी।"

पुराना मालिक, पुरानी प्रजा। बिगुलाल ने कहा, "मालिक भैंस को खिलाऊँगा क्या?"

"बिगुलाल, तू बड़ा हरामी है। खूब जानता है, वह मेरी भैंसों के साथ

चरेगी। गाय को एक बार तो चारा डालना पड़ेगा। घास छीलकर दोनों जने बेचें। भैंस को भी घास मिल जायेगी। धन, पाँच रुपये भी दूँगा।"

बिगुलाल फिर भी नहीं मानता। बकर-बकर करता है। कहता है, "कुछ रुपया उधार दे दो, मालिक!"

"अभी तो तू जा। हिसाब देखकर बताऊँगा।"

"मेहनत करके चुका दूँगा, मालिक!"

"अब तू भाग जा।"

जमीन नहीं मिलेगी, सुनकर मोहर खीसों-सी हँसी हँसता है।

धनपतिया कड़ा [illegible] हुई अपनी माँ से कहती है, "जमीन नहीं मिली तो क्या हुआ? बकरी पालेंगे, उसके बच्चे बेचेंगे। भैंस लिए रही है, उसका दूध बेचेंगे। कुछ भी हो, मालिक तो हमें दुत्कार नहीं रहे हैं।"

धनपतिया की माँ अपने होने वाले दामाद को भी यही बातें कहकर धीरज बंधाती है। मोहर समझ नहीं पाता कि मेदिनी सिंह उससे किस बात का बदला ले रहा है? जमीन पाने का उसके मन में बहुत लोभ था। कहने लगा, "जैसा तुम लोग ठीक समझो, वही करो।"

इसी तरह शादी का दिन आ जाता है। [illegible] मोहर हरौआ और एक किसान को न्यौता दे आता है।

गुलाल कहती है, "मैं नहीं आऊँगी?"

"किस मुँह से तुम्हें बुलाऊँ? आओगी तो [illegible]।"

गुलाल उम्र बढ़ने के कारण [illegible] नहीं हुई। [illegible] सम्पति है — [illegible] वाली एक पीतल की हाँड़ी। [illegible] मन भर हाँड़ी भर देती है। [illegible] समय सिर्फ इतना कहती है, "[illegible] वह नाराज होगा।"

कहती है, "छुट्टी तो लूँगी।"

मेदिनी सिंह को इतना नहीं [illegible]। [illegible] पास आकर कहता है, "यह हरामी [illegible] सका। धनपतिया से शादी कर रहा है। [illegible] है?"

"मुझे क्या पता ?"

"फिर किसे पता होगा ?"

"मुझे नहीं पता, मालिक ! बुढ़िया मेरी तरह से तुम्हारी नौकरानी है। वापस आने पर डांट देना। गलती हो गयी उससे।"

गणेश कहता है, "पिताजी वह हँडिया-भर गुलगुले भी ले गयी है।"

"हँडिया ? घर का वर्तन ?"

लछिमा बिना किसी प्रतिक्रिया के कहती है, "हँडिया की मालकिन बुढ़िया ही है। उसी का वर्तन-भांडा है।"

'इसका पता कैसे चलेगा ?"

"मैं हाथ जोड़ती हूँ। आप सारे वर्तनों का हिसाव लगाकर देख लें। छोटे मालिक को पता है कि मैं किस तरह हिसाव रखती हूँ।"

"हाँ पिताजी, लछिमा को लिखना नहीं आता, पर वह दीवार पर निशान लगाकर हिसाव रखती है, रोज हिसाव मिलाती है।"

मेदिनी सिंह चुप हो जाता है। अगले दिन गुलाल को देखकर भी नहीं देखता। तोहरी चला जाता है।

तोहरी क्यों गया है ? उसके दिल मे क्या है ? मेदिनी बहुत ही वहमी और तिकड़मी आदमी है। मोहर की तरह साधारण आदमी कैसे उसके क्रोध का निशाना बना, किसी को पता नही चला।

मोहर हल्दी-रँगी धोती पहन कर औरतों का गाना सुन रहा था और बारात का इंतजार कर रहा था।

वहीं से थाने के सिपाही उसे पकड़ कर ले जाते हैं। मुद्दई स्वयं मेदिनी सिंह है। जुर्म है, मेदिनी सिंह के वर्तनों की चोरी का। तोहरी पहुँचकर मोहर और भी इलजाम सुनता है। मेदिनी की नौकरानी लछिमा को शादी का लालच दिखाकर वह वर्तन वगैरा चोरी कर लाया है और शादी तोड़कर भाग गया है।

विरोध करने पर बुरी तरह पीटा जाता है और हवालात में बंद कर दिया जाता है।

अंत में उस पर कोई केस नहीं बनता। लेकिन छूटकर मोहर गांव वापस नहीं आता। तोहरी से कहीं और चला जाता है। कहाँ चला गया

है, किसी को भी पता नहीं लग पाता है।

बिगुनलाल के कारण बरकन्दाज सिंह को भी तोहरी की हवालात और मेदिनी सिंह के बीच दौड़ना पड़ा है। आखिर में धनरनिया को पता चलता है कि मोहर छिटाडोर चला गया है। सिर पर हाथ मारकर वह रोने लगती है। मखरनिया उसके मुंह पर हाथ धर देती है और डांटने लगती है, "अब रो मत। तेरी ही बदनामी होगी। तेरी किस्मत ही खराब है, नहीं तो ऐसा क्यों होता ?"

बाप बिगुनलाल कहता है, "अच्छा ही हुआ, शादी नहीं हुई। मेदिनी का गुस्सा तो रहता ही और मालिक भी समधी से बिगाड़कर मेरी भलाई नहीं सोच पाता। समधी के साथ कभी भी नहीं झगड़ते वे।"

इस घटना से प्रजा में असन्तोष फैल जाता है। कोई भी शादी न होने पर धनरतिया को कुछ नहीं कहता। कोई भी इस बात को नहीं मानता कि मोहर ने चोरी की है। मोहर सीधा-सादा आदमी था। छप्पर डालने में, बेड़ा लगाने में, मेड़ बांधने में, वह सभी के लिए जी-जान से जुटता था। बिगुनलाल सांस छोड़कर मोहनप्रसाद से कहता है, "मालिक लोग अगर हमारे शादी-ब्याह में भी टांग अड़ाने लगे तो जीना ही मुश्किल हो जायेगा।"

मोहन दुसाध जमीन पर थूककर कहता है, "सभी गड़बड़ की जड़ है यह शैतान, मेदिनी का लड़का।"

"वह भला कैसे ?"

"अरे महाहरामी है।"

"क्या किया उसने ?"

"उसी ने यह बात कही थी कि गुलाल बर्तन लेकर मोहर के घर गयी है। मेदिनी तो बहाना ढूंढ ही रहा था, उसे बहाना मिल गया।"

"राम, राम ! देवताओं का अंश है यह लड़का !"

"वह अगर देवता है तो मैं गंबीनाथ हूँ, समझे ?"

मोहन दुसाध इतनी बड़ी बात कह जाता है। इस गांव के दुसाधों की बातचीत का ढंग काफी दिनों से बिगड़ा हुआ है। कर्ज के कारण सभी अपनी-अपनी जमीन से हाथ धो बैठे हैं। अब वे सोच मन विभाग से पर-

मिट लेकर लकड़ी बटोरते हैं और बेचते हैं। वन विभाग की ज़मीन पर ही वे कच्ची झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। शाल के पौधों की कलम लगते समय वहाँ से हट जाते हैं। जब इनके सिर पर कर्ज था तो ये भी मालिक से डरते थे। अब नहीं डरते। नंगे और कंगाल डाकू से नहीं डरते। दुराध लोग आज़ादी के साथ अपनी जड़हीन ज़िन्दगी में तरक़्क़ी किये जा रहे हैं।

गुलाल शरम से गड़ जाती है। अपने-आपको पापिन समझने लगती है। लछिमा भी उससे बात नहीं करती। आख़िर में हरोआ से ही पूछती है, "मैंने क्या गलती की है?"

"मुझे क्या पता?"

"मेरे साथ वह बात क्यों नहीं करती?"

"दिल में गम बैठ गया होगा।"

"वह तो बैठेगा ही।"

"जो बीता सो बीता।"

हरोआ अत्यंत दुखी और अचंभित होकर सिर हिलाता है। लछिमा पत्थर बन जाती है। उसका दिल जलता रहता है। सब-कुछ छोड़-छाड़कर एक आदमी चला गया! मेदिनी सिंह ने उसे भगा दिया!

लछिमा को पता है कि मेदिनी की ज़रूरत पूरी होने तक उसकी मुक्ति नहीं। उड़ती बातों से पता चलता है कि मेदिनी सिंह के जीवित रहते नाथू सिंह अपनी लड़की नहीं भेजेगा। अगर मेदिनी और चालीस साल ज़िन्दा रहा तो?

धनपतिया की हालत के बारे में सोच-सोचकर मर जाने को दिल करता है। उस बेचारी की क्या ग़लती थी!

अपने दिल की बेचैनी और दुख के कारण वह मेदिनी से कहती है, "अपने घर जाऊँगी। बीच-बीच में अपना घर देखने का दिल करता है।"

"चली जा!"

अपने घर में आकर भी उसे अच्छा नहीं लगता है। हरोआ का काम देखकर उसे हँसी आती है। नींबू, पपीते के पेड़ लगाकर उसने घेरा बनाया है। औरतों की तरह निपुण हाथों से आँगन को लीपा है। सूखी लकड़ी का गट्ठर! कौन खाना बनाता है यहाँ? ख़ाली कमरे में पत्तों की मर्मर

ध्वनि। उसकी आँखें लग जाती हैं। अचानक किसी की तेज साँस से वह चौंक उठती है।

"धनरनिया!"

"लछिमा, तूने मेरा ऐसा सर्वनाश क्यों किया?"

"मैंने किया?"

"तूने ही उसके साथ शादी तय की, तूने ही मालिक को शिकायत लगायी। तूने उसे चोरी का इलजाम लगाकर पकड़वाया।"

"नहीं धनरनिया, मैंने नहीं किया कुछ भी।"

"तूने ऐसा काम क्यों किया?"

"चिल्ला मत, मेरी बात सुन।"

उसने धनरनिया का हाथ पकड़कर उसे अपने करीब करने की कोशिश की।

"मुझे मत छू, डायन! तेरी साँस में भी जहर है।" यह कहकर रोती हुई धनरनिया चली जाती है। दुख और अपमान से लछिमा का सारा बदन काँपने लगता है। लेकिन उसी पल महसूस होता है कि धनरनिया को उसे कोसने का हक है। ठीक ही किया है धनरनिया ने। लछिमा महान बनने गयी थी। भलाई तो कर नहीं सकी, लेकिन उसने उसकी किस्मत बिगाड़ दी। मोहर को देश-निकाला करा कर ही छोड़ा।

डरकर हवेली लौट आती है लछिमा। वह फिर कभी अपने घर जाने का नाम नहीं लेती। अचानक एक दिन बाजा बजता है। शादी के गीत सुनायी देने लगते हैं। उन्हीं की जाति का कामता साव चुगल के कारण एक साल की सजा काटकर बाहर आया है। नाथू सिंह ने उससे बात की।

"जेल जाने पर जो प्रायश्चित्त करना पड़ता है उसका खर्चा मेरा। धनरनिया से तेरी शादी है। बीबी के मर जाने पर तेरी आदत बिगड़ गयी है। मेरी पड़ोसी सदा होकर तूने खानदान की नाम डुबादी।"

"शादी करेगा, मालिक?"

"हाँ, हाँ! सुना नहीं तूने?"

ऐसे ही अचानक अधेड़ साव-चोर कामता का धनरनिया से ब्याह हो

जाता है। गाय की चोरी महापाप है, इसलिए कामता को गाँव में सभी जगह हीन नज़र से देखते थे कभी, और वह प्रायश्चित करने के डर से मरा जा रहा था। अब उस बात को किसी ने नहीं उठाया। धनपतिया मोहर की दी हुई साड़ी और जस्ते की चूड़ियाँ पहनकर, बकरी की रस्सी थामे कामता के घर में आ गयी।

सभी कहते हैं, गाँव में अगर कोई इंसान है तो नाथू सिंह। प्रजा की लड़की की शादी के लिए इतनी कोशिश कौन मालिक करता है!

रिश्ते में नाथू सिंह मेदिनी का समधी है, पर उम्र में उससे छोटा है। बरकंदाज सिंह ही मेदिनी की उम्र का है। मेदिनी नाथू सिंह से कहता है, "भैया! मालिक लोग कब से खरीदी प्रजा की शादी का रिश्ता कराने लगे? यह क्या कोई नया फैशन चला है? मैं तो गँवार राजपूत हूँ, मुझे कुछ पता नहीं है।"

नाथू ने हाथ जोड़कर सम्मान के साथ कहा, "शादी का पानी पड़ा और शादी नहीं हुई, इससे औरत बिगड़ जाती है। खरीदी प्रजा अपनी सन्तान के बराबर होती है। है कि नहीं, कहिए?"

यहीं पर सारा मामला ख़त्म हो जाना चाहिए था, लेकिन ख़त्म नहीं हुआ। इसी घटना को केन्द्र बनाकर बिलकुल दूसरी तरह की घटनाएँ घटित होने लगीं। परिणाम यह हुआ कि बरकंदाज सिंह मर गये और मेदिनी के दिमाग़ की नस फट जाने के कारण उसे लकवा मार गया। सर्व-सम्मति से बाड़ा गाँव में राजपूत-समाज के प्रधान नाथू सिंह बन जाते हैं।

होली का त्यौहार आ गया था।

होली का त्यौहार हरेक जाति अपने-अपने तरीक़े से मनाती है। होली की पहली रात को, होली जलायी जाती है। त्यौहार के दिन शिकार करने के लिए आदिवासी जंगल में जाते हैं। राजपूत मालिक इस दिन रंग खेलते हैं, शराब पीकर घोड़ो नचाते हैं और अफ़सरों को खाने पर बुलाते हैं। चन्द्रभान के घर, कुल-मर्यादा के अनुसार तलवार की पूजा की जाती है। इतर जाति के लोग रंग खेलते हैं, शराब पीते हैं, और गाना गाते हैं। पन्द्रह दिन तक सभी फाग खेलते हैं।

भंगी लोग शराब पीते हैं। गुलाल और कीचड़ से भूत बनते हैं। स्वाँग

गजाते हैं, स्वांग निकालते हैं। गीत बनाते हैं—नये कानून को लेकर, घूस खराबे को लेकर, हवालात के अत्याचार को लेकर, मालिकों के गुप्त क़िस्सों को लेकर। वास्तव में मालिकों से शासित बाढ़ा गाँव में, प्रजा के शोषण और अत्याचार का इतिहास इन्हीं भगियों के माध्यम से प्रकाश में आता है। गीत गाकर, स्वांग दिखाकर मालिकों के घर से आकर पैसा लेते हैं। भगियों की होली का त्योहार एक या दो सूअर मारकर ख़त्म होता है। शराब पीकर, मांस खाकर सारी रात नाचते हैं और हल्ला मचाते हैं।

यहाँ के दुसाध लोग उखड़े हुए हैं अभी। अपने प्राचीन मूल्यों और संस्कारों से दूर हो गये हैं वे। आजकल वे निकम्मे जुटाने के साधनों में लगे हैं। फलस्वरूप दो-एक साल से होली पर वे भी भगियों के साथ हो-हल्ला करते हैं। दूसरे गाँवों के दुसाधों को यह गवारा नहीं है। "दुसाध ने भगियों का त्योहार कब से मनाना शुरू किया ?" पूछने पर मेहतर दुसाध बेवकूफ बन जाता है।

मोहन दुसाध जवाब देता है, "अब से खेती का काम छूटा।"

"छूटने पर मालिक के पैर पकड़ कर रह जाते हैं दुसाध लोग।"

"किसलिए ?"

"नागरा जूते की धूल भी मिल जाये तो उसमें भी फायदा है।"

"हाय रे मेहतरी बाबा ! हमारे बाढ़ा गाँव में जितने मालिक, उतने ही नागरा जूते। धूल भी उतनी ही ज्यादा। धूल लेने वाले आदमी भी ज्यादा।"

"फिर भी क्या यह काम दुसाधों का है ?"

"हम परमिट लेकर लकड़ी बटोरते हैं। हाट में बेचते हैं, घास छील-कर बेचते हैं। अब भी क्या हम दुसाध रह गये हैं ?"

"अपना घर क्यों छोड़ा ?"

"घर छुड़ाया मालिकों ने, केवल जमीन ही नहीं, झोपड़ी तक ले ली। जब घर गया तो क्या करें ? 'फारेस' की जमीन पर हैं।"

"हूँ ! इस तरह क्या जंगली बन जाओगे ?"

"कैसे ?"

"आदिवासियों की तरह।"

"नहीं। उनके समाज में भी गये थे। उन्होंने शामिल नहीं किया। समझाकर कहने लगे, 'मोहन ! आदिवासी क्या कोई धर्म है ? मिशन में जाकर 'किस्चन' वन सकते हो। सुना है, मुसलमान भी वना जा सकता है। जागपूजा कर हिंदु भी बना जा सकता है, लेकिन ओराँव, मुंडा किस तरह वनोगे ? वगैर उनके कवीले में जन्म लिये ? दिल में गम लेकर जव आये ही हो तो लो, शराव-ठो पी लो।'"

इस तरीक़े से मोहन अपने जैसे दो-चार दुसाधों के घरों की समस्या के वारे में समझाता है। कहता है, "'फारेस' की जमीन पर से उठा देने पर और भी 'फारेस' हैं, वहीं चले जायेंगे।"

मेतरि दुसाध अपने गाँव टाहाड़ वापस जाकर समाज से कहता है, "मन उनके लिए वहुत दुख मानता है, वे सभी जंगली वन जायेंगे।"

मोहर-लछिमा-धनपतिया ! इनकी जिन्दगी के वेहद जायज़ अधिकारों को, इनके साधारण सुखों को, मेदिनी सिंह ने अपनी सत्ता के घमंड में चूर होकर जिस तरह नष्ट किया है—यह घटना नीच जाति वालों के मध्य वातचीत का विषय वन गयी है, इसका पता मेदिनी को चल नहीं पाता है। वह अपने लड़के से कहता है, "छोटे आदमियों को इस तरह जूती से दवाकर रखना। रख सकेगा न ?"

"जरूर रख सकूँगा, पिताजी !"

"अव मैं तुझे वंदूक चलाना सिखाऊँगा।"

"जी, ठीक है।"

इस वार होली के दिनों में क्या-क्या स्वाँग वनेंगे ? किसे लेकर गाने-गीत वनाये जायेंगे ? इसकी चिंता में राजपूत समाज भीतर-ही-भीतर उत्तेजित महसूस करता है। यह स्वाँग और गीत राजपूत समाज के लिए कम आनन्द का विषय नहीं। सर्वशक्तिमान, वड़े-वड़े राजपूत राज्यों में, करोड़ों रुपयों के मालिक राजा-रजवाड़े भी जव गुप्त हत्याओं, उप-पत्नियों के खून, जमीनों के लिए क़त्ल जैसे अच्छे-अच्छे काम करते हैं, चारणकवि नहीं भंगी लोग इन्हीं विषयों को लेकर राजधानी में गाना गाते हुए घूमते हैं। किसी को नहीं मालूम, वर्ण-शासित भारत में, इंसान की तरह जीने के सारे हक़ छीनकर इन भंगियों को इस तरह के गीत वनाने और

गाने का अधिकार किसने दिया? महात्मा गांधी को गाली देने से कोई फ़ायदा नहीं। उनसे भी बहुत पहले से, यह समय-सम्मानित ऐतिहासिक अधिकार उनके पास है।

होली की शाम मेदिनी सिंह और गणेश बरकदाज के घर निमंत्रित थे। शरबत में भांग छन रही थी। मौज में थे सभी! मेदिनी सिंह नवरतनगढ़ के राजाओं का होली के त्योहार का किस्सा सुना रहे थे। चन्द्रभान, गजमोती सिंह, आदि मालिक लोग भी मौजूद थे।

भंगी मशाल जलाकर ढोलक बजाते हुए चले आते हैं। उनसे दूर रह कर गांव के दूसरे लोग भी उनका तमाशा देख रहे थे। हर साल ऐसा ही होता है। लेकिन शराबी-कबाबी भंगी लोग जब सामने आते हैं, तभी बात समझ में आती है।

स्वांग रचने से क्या हुआ! स्वांग में मेदिनी और गणेश साफ़ पहचान में आ जाते हैं। मेदिनी और लछिमा, लछिमा और मोहर, मोहर और धनपतिया, मोहर और थाने का दरोगा। हर घटना को छंद में बांधकर रस से भरपूर भाषा में गाया जाता है। हँसी का फव्वारा छूटता है।

स्वांग को समझकर मेदिनी सिंह उन्मत्त हो उठते हैं। वे गणेश के साथ भंगियों के बीच कूद पड़ते हैं और बिजली की तेजी से उन्हें मारने लगते हैं। खास दूरी पर जाकर भंगी लोग फिर मेदिनी को चिढ़ाते हुए नाचते हैं, गाना गाते हैं। इस समय बाकी राजपूत हँसी से फट पड़ते हैं। साधु सिंह चिल्लाते हैं, "चले आइये। अब न अछूत आपको छू देंगे।"

बरकदाज सिंह हँसी रोकते हुए चिल्लाते हैं, "चले आओ मेदिनी, मैं इन्हें देख लूंगा।" वे और भी कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन छाती पर हाथ रखकर चीख उठते हैं। साथ ही उन्हें उल्टी हो जाती है। मेदिनी उल्टी की आवाज को भीषण हँसी समझते हैं और उनके सिर के भीतर कुछ फट जाता है। 'गणेश!' कहकर वे अपनी विशाल देह लेकर धाड़ से गिर पड़ते हैं। यह देखकर भंगी और गांव के दूसरे लोग दो गुटों में भाग खड़े होते हैं।

राजपूत कूदकर उतर पड़ते हैं बरामदे से। नौकर दौड़ आते हैं। दो-दो वज्रपात होते हैं एक साथ।

हार्ट फ़ेल होने से बरकंदाज सिंह मर जाता है। मेदिनी के दिमाग़ की नस फट जाती है, सेरिब्रल थ्रम्बोसिस से। आख़िर में चन्द्रभान की सलाह से नाथू सिंह तोहरी से डॉक्टर बुलाते हैं। फिर चन्द्रभान से कहता है, "मेदिनी को तुम देखो। अब मुझे अपना कर्त्तव्य देखना है। वह अकेला आदमी था। दामाद अभी बच्चा ही है।" इस तरह पट-परिवर्तन होता है।

गाज गिरना ही समझो। बरकंदाज सिंह अपने गुण-अवगुणों के बावजूद थे एक ग्रामीण व्यक्ति ही। वह अपने गाँव में ही रमे रहते थे। नाथू सिंह अब गाँव के प्रधान बन जाते हैं। शुरू में प्रधान बनने से नाथू मना करते हैं और कहते हैं, "बाद में देखा जायेगा। वैसे गजमोती जी बुजुर्ग आदमी हैं।"

चन्द्रभान कहता है, "भैया, तुम सिसोदिया राजपूत हो। तुम तैयार नहीं होगे तो खून की नदियाँ बह जायेंगी। गजमोती जी में मुसलमानी दोष है। हम उनका शासन स्वीकार नहीं करेंगे। वे मुसलमानों के घर का खाते हैं और प्रायश्चित भी नहीं करते।"

मेदिनी सिंह बिस्तर पर पड़ जाते हैं। उनके बायें हिस्से को लकवा मार जाता है। साफ़-साफ़ नहीं बोल पाते हैं।

भंगियों को किसी ने कुछ नहीं कहा। इस तरह बाढ़ा गाँव में लछिमा के जीवन के एक अध्याय का अंत होता है।

## चार

मेदिनी के अस्वस्थ होने पर शुरू में गाँव के सभी लोग आते हैं उनका हाल-चाल पूछने। नाथू सिंह रोजाना नियमित रूप से आते हैं। नाथू की बीबी और माँ कहती हैं, "अब तो लछिमा और गुलाल सारा सामान गायब कर देंगी। उन्हें हटाकर अपने घर से कोई ईमानदार नौकरानी भेज देना अच्छा रहेगा।"

नाथू जैसा कुटिल और कुचक्री आदमी भी यह कहने पर मजबूर होता

है, "नहीं, मेदिनी होश में है। बातचीत भी करता है, लेकिन साफ-साफ नहीं। लछिमा जिस तरह उसकी सेवा कर रही है, वैसी सेवा कोई और नहीं कर सकता।"

"गणेश?"

"वह बाप से दूर भागता है।"

"क्या मेदिनी बिस्तर से नहीं उठ सकता?"

"नहीं, एकदम नहीं। हरोआ उसे पेशाब कराता है, टट्टी फिराता है।"

"उसकी दोनों बीवियाँ अगर लौट आयें तो?"

"मैं जो हूँ।"

समाचार पाकर एक पत्नी के चाचा और दूसरी के बड़े भाई आ पहुँचते हैं। नापू की मौजूदगी में मेदिनी अटक-अटककर कहता है, "नहीं, कतई नहीं। वे मेरी सेवा करेंगी? आते ही जहर पिलायेंगी, जहर!"

चचिया ससुर कहने लगा, "लड़कियों को खबर कर दें?"

"नहीं, कतई नहीं।"

चचिया ससुर और साला बाहर निकलकर आपस में बातचीत करते हैं। "मेदिनी के ऊपर भरोसा नहीं करना चाहिए। लछिमा ने जरूर कोई जादू-टोना कर दिया है उस पर। अरे ब्याह कर लायी बीवी जहर देगी, इसी बात को लेकर डर रहा है! ऐसी बीमारी लगी ही क्यों? हाथी जैसा डीलडौल, ढाई सेर दूध पीकर पानी पीता है। सेर-भर गोश्त और आधा सेर घी रोज खाता है। रात को कटोरा भर मलाई, पेड़ा, पूरी-कचौरी, हलुवा । जहर दिया है कि जादू किया है, कौन जाने?"

साले ने कहा, "जी, धर्मपत्नी को बिना वजह त्याग देने से कभी किसी का भला हुआ है क्या? सौत के सदमे को कौन सहन कर सकता है?"

"यह बात तो है। अब तो नापू सिर ही मालिक बनकर रहेगा। खुश है कि दोनों लड़कियों ने अपने दिमाग से काम लिया और अपने जेवर-जेवर साथ ले गयीं। इतना ही मिल सका उन्हें। लड़कियों के भाग्य तो शादियों के बाद से ही रिक्ता गया।"

"यह लड़का गणेश जी का अंश? देखने में तो राक्षस लगता—"

अगर वह देव-देवता ही है तो बाप की बीमारी ठीक क्यों नहीं हो रही है ?"

"हां, बात तो सही कहते हो ।"

दोनों कहने लगे, "इतना खाना-पीना, फिर भी ऐसी बीमारी क्यों हुई ? बहुओं को नहीं भेजेंगे । नाथू के हाथों अपमानित होंगी ।"

डॉक्टर देख-सुनकर, हैरान होते हुए कहता है, "क्या इस हाथी जैसे शरीर पर इतना ज़्यादा खाना ?"

लछिमा ने धीरे से कहा, "ताकत बहुत थी ।"

"उम्र कितनी है ?"

"लगभग साठ ।"

"नहीं, यह अच्छी बात नहीं । ब्लडप्रेशर बढ़ने के कारण ही...। बाल-बाल बच गये हैं । हार्ट फ़ेल हो सकता था ।"

मेदिनी अटक-अटककर बोलता है, "अंग्रेजी बीमारी मुझे क्यों होगी ? जिन्दा देवता मेरे घर में है ।"

लछिमा ने कहा, "थोड़ा अच्छा कर दीजिये । ऐसी दवा दीजिए कि मालिक उठकर बैठ सकें, अपना काम-काज संभाल सकें । घर में केवल छोटा लड़का है ।"

"वह तो बाद की बात है । अभी तो काफ़ी दिन तक लेटे रहना होगा । किसी भी तरह की उत्तेजना इनके लिए ठीक नहीं । ऐसा कोई भी खाना मत देना, जिससे चर्बी या ताक़त बढ़ती हो । दवाई ठीक समय पर देना ।"

"मालिश करने से कुछ फर्क पड़ेगा ?"

"नहीं, नहीं, वैसी बीमारी नहीं है ।"

लछिमा भारी उलझन में पड़ जाती है । मेदिनी बीमारी में भी मेदिनी ही है । प्रजा के साथ अलग-अलग बंदोबस्त । किसको क्या देना है, हिसाब रखना होगा ।

नाथू सिंह कहता है, "चिंता मत करो, भैया ! आपकी जमीन की जिम्मेदारी मुझ पर है ।"

नाथू के हाथों में अपने हिसाब की बही देखकर मेदिनी सिंह इतना उत्तेजित हो उठता है कि उसे दोबारा दौरा पड़ जाता है ।

मेदिनी पूरी तरह से अपंग हो जाता है । बातचीत बंद हो जाती है

और लछिमा नाथू सिंह से कहती है, "सब देखभाल आप कीजिए, मालिक! मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं दस रुपया लेती थी महीने में, बस। मैं और नानी खाना-कपड़ा लेती हैं। खाना मिशिर जी पकाते हैं। आप सब काम की देखभाल कीजिए।"

"मुझे पता है। मेदिनी ने भी मुझसे कहा है।"

"मैं केवल मालिक की सेवा करूँगी। अब तो इनका बचपन जैसे फिर आ गया है। हे भगवान, मैं फिर बँध गयी!"

"तुम चली मत जाना, लछिमा!"

"नहीं।"

लेकिन अब की बार डॉक्टर बुलाने की गरज नहीं रही नाथू को। दवाई भी कौन लाये लोहरो से?

आखिर में लछिमा ने गणेश से कहा, "छोटे मालिक, तुम अपने ससुर से कहो कि डाक्टर ले आयें। पिता तुम्हारे हैं, उनके नहीं। तुम्हारे लिए अपने मन में कितनी आशा सँजोये हुए थे!"

बारह साल की उम्र में ही सोलह साल का लगता है गणेश। कुटिल हँसी हँसता हुआ कहता है, "ससुर जी कहते हैं, पिताजी अब ज्यादा दिन नहीं बचेंगे।"

"राम, राम!"

"बहू आयेगी, तब देखना तुम लोगों को कैसे भगाता हूँ।"

"तब मैं खुद ही चली जाऊँगी।"

"मैं क्या करूँगा?"

"इस समय तुम ससुर के पास जाओ। उन्हें बुला लाओ। सुनो छोटे मालिक, अभी भी तुम्हारे पिता जिन्दा है और अच्छी तरह से इलाज करवाने से अच्छे भी हो जायेंगे।"

नाथू सिंह के आने पर लछिमा अस्त-व्यस्त कपड़ों में उसके पैर पकड़ लेती है, कहती है, "आप गणेश के ससुर हैं, समाज के प्रधान। हमारे मालिक के बारे में नवागढ़ खबर भिजवाइये। वहां जरूर अच्छे वैद्य होंगे। मालिक कहते थे राजा का इलाज भी वैद्य करते थे। यहां कोई ईमानदार जाना-चीन्हा आदमी फसल की देखभाल के लिए लगा दीजिए। नहीं

सब-कुछ चौपट हो जायेगा मालिक ! यह घर अव आपकी विटिया का घर है।"

"वात तो तुम ठीक ही कह रही हो, लछिमा ! गणेश इतनी वार हमारे यहाँ आता-जाता है, लेकिन उसने एक वार भी नहीं कहा कि वाप की तवीयत इतनी खराव है।"

"आपको तो सव पता ही है।"

"तो फिर डाक्टर को ही वुलवाता हूँ।"

"ऐसा ही करिये। इलाज का कुछ वंदोवस्त करिये।"

नाथू के चले जाने पर लछिमा गणेश को भीतर वुलाकर दरवाज़ा वंद कर देती है। मेदिनी से कहती है, "तुम कुछ मत सोचो, मालिक ! तुमने लछिमा को कुछ नहीं दिया, लेकिन अव लछिमा ही तुम्हारी देखभाल करेगी। क्या किया जाये, मालिक !"

फिर गणेश को डाँटकर कहती है, "आज से तुम पिताजी के पास से नहीं हिलोगे। तुम्हारे सिर विपत्ति है। मैं तुम्हारी जात-पाँत की नहीं हूँ, लेकिन वाप की तवीयत खराव होने पर तुम घर का काम सम्हालोगे। इलाज मैं करवाऊंगी तुम अव वड़े हो गये हो। तुम्हारे ससुर तिजोरी में से रुपया क्यों निकालें ? पिताजी के सिरहाने चाभी रखी हुई है। चाभी लेकर रुपया तुम निकालो। तिजोरी तुम खोलो, समझे ? गिनकर रुपया दोगे, हिसाव लोगे। फसल वेचने का रुपया गिनकर उसमें रखोगे।"

"मैं ?"

"तुम्हारा ही सव-कुछ है। क्या मैं हाथ लगाऊँ तिजोरी को ? सव-कुछ तुम्हारा है, तुम्हारा। अव मरद के वच्चे की तरह काम सम्हालो।"

गणेश ने लछिमा के मुँह से ऐसी वातें पहले कभी नहीं सुनी थीं। लछिमा ने उससे फिर कहा, "हक-नाहक ससुराल नहीं जाओगे, घर प
रहोगे। चारों ओर दुश्मन हैं।"

"समझा।"

"ये सारी वातें किसी और से मत कहना। जाओ, हरोआ को वुला
मालिक को पेशाव करवायेगा।"

मेदिनी अटक-अटककर कुछ कहता है। लछिमा झुककर सुन

और कहती है, "तुम्हें बताने की जरूरत नहीं। अब तुम जल्दी से अच्छे हो जाओ।"

कुसमय में इस तरह लछिमा मेदिनी की नाव का हाल-चक्का थामती है। उसी कमरे में गेहूँ, मडुवा मकई और रबी की फ़सल तुलवाती है। गणेश से लिया हिसाब पूछकर किसानों को पैसे देती है, मेदिनी के सामने। सभी कामों में नाथू से कहती है, "आप आशीर्वाद दीजिए। अगर कभी गलती हो जाये तो समझा दीजिये।"

नाथू पूछता है, "बीमार आदमी को इससे तकलीफ नहीं होती?"

"नहीं। इसी में मालिक की जान है।"

धीरे-धीरे मेदिनी के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। अब वह साफ़-साफ़ उच्चारण भी कर लेता है। थोड़ा दुबला हो गया है, लेकिन शरीर में स्फूर्ति का अनुभव करता है। हरोआ उसके हर काम में उसका साथी और सेवक है।

एक दिन मेदिनी हिसाब लगाता है कि वह छह साल से बिस्तर पर पड़ा है। मिशिर कहता है, "भैया, छै साल लछिमा ने तुम्हारी सावित्री की तरह सेवा की है और गणेश को भी तैयार कर दिया है।"

"हाँ, मुझे पता है।"

"गणेश सोलह साल का हुआ या सत्रह का?"

"सत्रह का," थोड़ा अटककर मेदिनी कहता है।

मिशिर पैर का अँगूठा जमीन में रगड़ते हुए कहता है, "परमेश्वर चाहते हैं कि तुम अपना काम करके ही जाओ। इसलिए तुम्हें थोड़ा-सा स्वस्थ कर दिया है।"

मेदिनी प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ देखता है।

"अब बहू को घर में ले आओ। वह आकर अपनी गृहस्थी सभाले।"

"और लछिमा?"

"भैया! तुम ज्ञानी आदमी हो। अब मैं तुम्हें समझाऊँ? लछिमा और गुलाल ने, खासतौर पर लछिमा ने, जो किया वैसा कर्तव्य आज तक किसी ने किसी औरत को करते नहीं देखा। अपनी जिन्दगी और जवानी गवाँ दी तुम्हारी सेवा में। हरोआ ने भी तुम्हारी बहुत टट्टी साफ़ की है

और वह आगे भी करेगा।"

"हाँ।"

"लेकिन एक-न-एक दिन सभी का काम खत्म होता है। लछिमा को अगर नहीं छोड़ोगे तो वहू घर में कैसे आयेगी? इज्जतदार बाप की बेटी और इज्जतदार बाप के बेटे की वहू ससुर की रखैल के साथ कैसे घर करेगी?"

मेदिनी अटक-अटककर कहता है, "और मेरी देखभाल?"

"वहू करेगी, गणेश करवायेगा।"

"लछिमा को...," मेदिनी की आँखों से आँसू निकल आते हैं। वह रुंधी आवाज में कहता है, "गणेश! गणेश कहाँ है?"

गणेश सामने आकर खड़ा हो जाता है।

"गणेश!"

"जी?"

"लछिमा को...।" गणेश बाहर से पहले ही सब-कुछ सुन चुका होता है। कहता है, "क्या दूँ?"

"जो माँगे।"

"जी!"

इसी तरह सब कुछ सम्पन्न हो गया। नाथू के घर भी ख़बर पहुँची। लेकिन जिस मेदिनी ने लछिमा का जीवन बरबाद कर दिया, उसे ही छोड़कर जाने में लछिमा को सबसे ज्यादा दुख हुआ।

"क्या करें मालिक? अब हम वहू की जिम्मेदारी में आ रहे हैं।"

हरोआ ने कहा, "मुझे भी ले चल।"

"यह क्या कहता है? मालिक का क्या होगा?"

"तुम्हारा क्या होगा?"

"मेरा? मेरी जिन्दगी कट जायेगी।"

"तुम्हारे बिना मैं इस घर में किसे देखकर जिन्दा रहूँगा?"

"ऐसी बात मत बोल, हरोआ!"

"क्यों न बोलूँ? यह सच्चाई है।"

गुलाल ने कहा, "हरोआ जैसा कहता है, वही कर।"

"कैसे कहूँ ? पहले तूने मुझे गिरवी रखा मालिक के पास । मालिक ने अट्ठारह साल अपने कब्जे में रखा । सोना नहीं, चाँदी नहीं । महीने में दस रुपया और तीन बीघा जमीन । मोहर से शादी नहीं करने दी, उसे भगा दिया । खुद बीमार पड़ा । चिड़िया जैसे घोंसला सभालती है, वैसे मैंने सारी गृहस्थी सभाली । अब मैं बूढ़ी हो गयी हूँ । दो साल बाद मैं चालीस की हो जाऊँगी । हरोआ अभी भी जवान है । वह किसी से भी शादी कर सकता है । मैं गणेश से कह दूंगी ।"

"वह तुझे चाहता है ।"

"मैं मुर्दा, महकती लाश हूँ, समझी ?"

"लेकिन...!"

"तू इतनी परेशान क्यों है ? तू बुढ़िया गिद्धनी मरेगी नहीं क्या ? लछिमा को मालिक के पास इतने साल गिरवी रखकर जीती रही । अब सोच रही है कि हरोआ जमीन जोतेगा और तू कंधे पर चढ़कर खाती रहेगी ? इस घर से मैं निकलूंगी, लेकिन पहले तुझे भगाऊँगी या खुद कहीं चली जाऊँगी । मुझसे अब नहीं होता ।"

बुझा हुआ चेहरा लिये लौट गयी गुलाल । लछिमा ने मेदिनी के सामने ही गणेश को बुलाया । कहा, "एक दिन बैठकर रुपये-पैसे का हिसाब मिला लो, छोटे मालिक ! कपड़ा, लत्ता, रजाई, कम्बल—सब का हिसाब कर लो । मेरे रहते-रहते सारा हिसाब हो जाना चाहिए ।"

गणेश पहले तो कुछ देर गुम खड़ा रहा और फिर बोला, "क्यों ?"

"क्यों, तुम नहीं समझते ?"

"नहीं, तुम्हारे साथ कोई हिसाब नहीं है ।"

"चले जाने के बाद अगर हिसाब माँगा तो ?"

"कहाँ जाओगी ?"

"अपने घर ।"

"खाओगी क्या ?"

"तीन बीघा जमीन में जो होगा, वही खायेंगे ।"

"पिताजी की देखभाल कौन करेगा ?"

"तुम्हारी दुल्हन और तुम ।"

"पिताजी मर जायेंगे।"

"मेरे रहने पर बहू नहीं आयेगी।" लछिमा ने जल्दी-जल्दी साँस ली। उसकी आँखें लाल हो गयीं। "किस तरह मैंने तुम्हें पालकर बड़ा किया, तुम्हारे पिता की सेवा की—धरम जानता है! छोटे मालिक, आज मेरे रहने पर बदनामी होगी। बहू नहीं आयेगी तो मुझे जाना ही पड़ेगा।"

"पिताजी जब तक जीवित हैं...।"

"क्या मालिक नहीं देखेंगे कि घर में दुल्हन आ गयी है?"

"महीने में दस रुपये के अलावा तुम...तुम और जो लेना चाहती हो, ले लो। पिताजी ने कहा है कि तुम जो कुछ भी माँगो देने के लिए तैयार हैं।"

"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।"

लछिमा जोर-जोर से सिर हिलाते हुए कहती है, "देखो, मालिक के लिए मैंने जवानी और जिन्दगी खत्म कर दी। मालिक ने आज तक कोई कोई अच्छा कपड़ा, रुपया, सोना-चांदी, सामान-वर्तन नहीं दिया। कोई बात नहीं। छोटे मालिक, तुमको मैंने पाल-पोसकर बड़ा किया, तुमने मुँह से कहा, यही काफी है।"

मेदिनी उत्तेजित होकर कहता है, "रुपया! रुपया!"

लछिमा समझी कि मेदिनी चाहता है कि वह रुपया ले ले। गणेश से कहती है, "इस वक्त ऐसी बातें मत उठाओ, छोटे मालिक! मालिक सोचेंगे, बोलेंगे तो उनकी तबीयत खराब होगी।"

गणेश बाहर निकल जाता है।

मेदिनी फिर कहता है, "रुपया! सोने की हँसली!"

लछिमा असम्य जलन-भरी धीमी आवाज में कहती है, "रुपया! हँसली! तुमने मुझे जिस तरह बरबाद किया है, उसके एवज में कितना सोना दोगे, कितना रुपया दोगे? नहीं, मैं कुछ भी नहीं लूँगी! जो कुछ सहना था, मैंने सह लिया। तुम और भी काफी दिनों तक जीवित रहो, मालिक! बहुत सुख भोगा है, अब रोग भी भोगो। लो, दवाई पियो। हरोआ, इधर आओ। मालिक पेशाब करेंगे।"

मिशिर, गुलाल, यहाँ तक कि नाथ सिंह ने भी कहा, "मालिक जब

देना चाहते हैं तो ले लो, लछिमा ! तुम्हारी जीवन-मृत्यु, सुख-दुख के मालिक है वह। तुम्हें ले लेना चाहिए। नहीं तो मालिक दुखी होंगे।"

लछिमा ने कहा, "इस उमर में अब मेरी कोई इच्छा नहीं है। मालिक के घर मुझे मानी ने भेजा था। हम छोटी जात के आदमी हैं। दस रुपये महीने मिले, तीन बीघा जमीन मिली। कपड़ा-लत्ता, खाना-पीना मिला। गणेश को सब-कुछ पता है। कभी मकई का एक दाना, एक पैसा या एक एक बर्तन भी इधर से उधर नहीं होने दिया।"

नाथू ने कहा, "तुमने इतनी सेवा की, उसका भी तो कुछ प्रतिदान लेना चाहिए।"

"नहीं मालिक, माफ कीजियेगा।"

इस तरह लछिमा सबको स्तंभित कर देती है—गणेश को भी। वह कहता है, "गुलाल को जाने दो। तुम यहीं रह जाओ।"

"यह कैसे हो सकता है, छोटे मालिक !"

मिशिर मुहूर्त निकालकर लछिमा के जाने का बंदोबस्त करते हैं। शुभ मुहूर्त में नाथू की लड़की इस घर में आयेगी।

लछिमा कहती है, "वह आयेगी, मालिक के लिए खुशी के दिन हैं। देवता हो तुम, गैबीनाथ में पूजा-वूजा चढ़ाने का बंदोबस्त करो। हाय राम ! इन सब बातों का खयाल तो तुम्हें भी होना चाहिए। मैं तो जा रही हूँ, तुम तो यहीं हो !"

मिशिर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहता है, "घर में औरत रहने से जैसे उसके दिमाग में हमेशा परिवार के कल्याण की चिंता रहती है, उसी तरह तू भी हमेशा इस परिवार की फिक्र में पड़ी रहती है। मैं तो सोच भी नहीं पा रहा हूँ कि तू अब नहीं रहेगी।"

"बस, बस देवता ! अब आप पूजा की चिंता करें।"

"क्या करूँ ?"

"घर में कौन-सा सामान मौजूद नहीं है ? नयी लकड़ी में घी, तेल, चावल, गुड़, दाल तुलवाओ। डलिया सजाओ। ब्राह्मण को देना होगा।"

"हम भी ब्राह्मण ?"

"छिः देवता ! गैबीनाथ के पुजारी जी को मिलेगा यह चढ़ावा।"

"और ?"

"मिठाई, फल और नया कपड़ा भी भिजवाओ।"

"कौन ले जायेगा ?"

"हरोआ को लेकर तुम खुद जाओ, पूरा मकान मैंने लीप-पोत दिया है। पुताई तो अभी हाल ही में हुई है। और क्या ?"

"हिसाब ?"

"क्या हिसाब तुम्हें देना पड़ेगा, देवता ? अभी तो मालिक जिन्दा हैं। उनके लड़के से सारी बातचीत हो गयी है।"

लछिमा फीकी हँसी हँसकर कहती है, "जाऊँगी अपना कपड़ा-लत्ता और नानी के बर्तन लेकर। गणेश देख लेगा। और हाँ, बहू के आने पर उसके हाथ से भी पूजा चढ़वा देना। मालिक ऐसा ही चाहते थे।"

सभी कुछ, शुभ कार्य की तैयारी ठीक-ठाक होती है। लछिमा और गुलाल मेदिनी के कमरे में आ खड़ी होती हैं। लछिमा कहती है, "मालिक, अपने घर जा रही हूँ। बीस साल तक तुम्हारी सेवा की। कोई गलती हुई हो तो माफ करना। हम छोटे लोग बड़े घर के रीति-रिवाज अच्छी तरह नहीं जानते थे। यहीं से आपको प्रणाम करती हूँ।"

गणेश को भंडार की चाभी देती है और कहती है, "मेरे लिए यही गर्व का विषय है कि मैंने तुम्हें बचाया, बड़ा किया, छोटे मालिक ! पिताजी का खयाल रखना। तेज आदमी थे। अब तो बच्चे जैसे हो गये हैं।"

"चलो, मैं भी चलता हूँ।"

"नहीं, छोटे मालिक ! मालिक को अकेले मत छोड़ना, डर जायेंगे।"

माहौल उदास और एकाकी हो जाता है। गणेश की दुल्हन आती है। कुछ सामान और दो दासियों को लेकर। नाथू सिंह साथ में आता है।

घर में मन नहीं लगता लछिमा का। गुलाल को मर्ज़ी का खाना पकाने को कहकर नहाने गयी थी तालाब पर दूसरे दिन और वहीं पर हरोआ उसे बुलाने आता है और कहता है, "जल्दी करो !"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मालिक ने तुम्हारा नाम पुकारा और फौरन पलट गये। बस फिर होश नहीं, आँखें भी पलट गयी हैं।"

"तुझे किसने भेजा है ? गणेश ने ?"

"और कौन भेजता ?"

"मालिक हैं या नहीं ?"

"कैसे बतायें ?"

"चलो, मैं आती हूँ। गणेश के ससुर ?"

"सभी हैं।"

"फिर मैं कैसे आऊँ ?"

"नहीं चलोगी ?"

"चलो, चलती हूँ।"

उसे हवेली तक नहीं जाना पड़ा। रोने की आवाज़। बहू रो रही है। ऐसे में सभी रोते हैं। एक के बाद एक सभी राजपूत मालिक उधर जा रहे हैं। लछिमा हरोआ से कहती है, "गणेश कहाँ है ? उसे बुलाओ।"

गणेश नहीं आया। बाप के पास बैठा है। लछिमा को बुलाता है, लेकिन लछिमा वहीं से लौट आती है।

मेदिनी सिंह का दाह-संस्कार और क्रिया-कर्म काफ़ी शान-शौकत से हुआ। गुलाल उन दिनों वहीं रहती है। श्राद्ध की पूरी मिठाई खाकर भी उसका जी नहीं भरता, घर भी ले आती है। कई दिनों तक खाती रहती है। परिणामस्वरूप उसे उल्टी और टट्टी लग जाती है और वह मर जाती है।

उन्हीं दिनों बिगुलाल की गाय अचानक एक दिन गजमोती सिंह के बग़ीचे में घुसकर, खाद के गड्ढे में मुँह के बल गिरकर गरदन टूटने से मर जाती है।

दुसाध लोग फ़ारेस्ट कर्मचारियों की बहुत दिनों की लापरवाही का फ़ायदा उठाकर अपनी झोंपड़ियों के चारों ओर नागफनी की बाढ़ का घेरा डाल लेते हैं।

गणेश एक नये रूप में उजागर होता है। उसके घर गजमोती सिंह आते हैं, मिसिर से अपने बाग़ में गाय मरने के प्रायश्चित का विधान जानने के लिए।

गणेश कहता है, "चाचा जी, इस गाँव में रहते हुए, यह

होने दूंगा। आप इस उम्र में भी पाप किये जा रहे हैं। उन्हें रोकने के लिए ही भगवती आपके बगीचे में आकर मरी है। प्रायश्चित करिये और प्रायश्चित के साथ सभी पाप-कार्य छोड़ दें। नहीं तो आपका सर्वनाश हो जायेगा। पाप का फल क्या अच्छा हो सकता है?"

गजमोती सिंह को याद आता है कि गणेश साधारण लड़का नहीं है। गणेश फिर कहता है, "मुसलमानी दोष के कारण समाज में आपकी इज्जत नहीं। यह सब-कुछ छोड़ दीजिये। अपनी इज्जत बढ़ाइये। जमाना बहुत खराब है।"

गणेश बड़ा जबरदस्त मालिक सिद्ध होता है।

मिशिर से कहता है, "देवता हैं आप, पिताजी के बंदोबस्त के अनुसार आप यहीं रहेंगे, लेकिन हक-नाहक अन्दर नहीं आयेंगे। आप बुजुर्ग आदमी हैं। आपको हम सीधा दे दिया करेंगे। अपना खाना खुद बना लीजियेगा। बुरा मत मानियेगा, देवता! अभी आप अपने पूजा-पाठ में रमिये। रोज रामायण पढ़िये। पिताजी को तो आप सुनाते रहे हैं। घर में धरम-ग्रंथ का पाठ होते रहने पर परिवार का ही मंगल होगा। मुझसे कोई गलती हो तो बताइयेगा।"

नाथू मिशिर से पूछता है, "घर का हाल कैसा है?"

गणेश सब-कुछ को बदल रहा है।

बहू के लिए हुक्म जारी होता है, "पीहर से आयी नौकरानियों के साथ लछिमा को लेकर कोई बात न करे बहू। पिताजी ने जो भी किया, अच्छा किया। इस घर में लक्ष्मी की कृपा बनी रहने का कारण लछिमा और गुलाल का कठोर परिश्रम है।"

कोई गप्प-बाजी नहीं, अड्डे-बाजी नहीं। केवल काम देखना चाहता है गणेश। उसका सबसे जरूरी आदेश यह है कि बिना आज्ञा के पीहर नहीं जाओगी।

हरोआ भंडार में नौकर बन जाता है। हवेली के भीतर पुरुष किसानों का जाना भी बंद हो गया।

एक दिन मिशिर ने गणेश से कहा, "गणेश! लछिमा तुमसे कुछ कहना चाहती है। सामने मैदान में खड़ी है।"

गणेश गया। लछिमा पेड़ के नीचे खड़ी थी। कुछ दुबली हो गयी थी। गालों पर कालिख। गणेश के दिल में एक अजीब-सी अनुभूति होती है। इसी एक शख्स के सामने वह जितना सहज महसूस करता है, उतना ही अधिक असहज भी।

"बहुत धूप है, छोटे मालिक! मेरे घर चलो।"

"चल।"

अपने कमरे में गणेश को बिठाती है। पंखा झलते हुए कहती है, "गुड़ का शरबत बना दूँ? और क्या दूँ तुम्हें? घर में तो कुछ भी नहीं।"

"गुलाल मर गयी। तुम अकेली यहाँ किस तरह रहती हो?"

"क्या किया जाये!"

"पहले हरोआ यहाँ सोने आता था।"

"अब यह कैसे हो सकता है, छोटे मालिक?"

बहुत-कुछ पूछती है लछिमा उससे। बहू उसकी देखभाल भी करती है या नहीं? मालिक की बरसी पर क्रिया-कर्म, मान-दान से होनी चाहिए। लछिमा ने एक बार सुना था कि गणेश गयाजी जाने को कह रहा था। अगर वह वहाँ जाये तो पिता के साथ माँ की क्रिया भी कर आये। इस लड़के को उसने बड़ा किया है—कहानी की तरह लगती हैं सारी बातें।

"कुछ कहना चाहती हो? कहो।"

लछिमा अचानक हाथ जोड़कर हाथ पसारती है और कहती है, "छोटे मालिक, मालिक के कहने पर भी मैंने कुछ नहीं लिया। मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ। फिर भी तुम मेरे बेटे के समान हो। तुमसे भी मैंने कभी कुछ नहीं लिया। आज माँग रही हूँ।"

"क्या माँगती हो, कहो? तुम तो कुछ भी नहीं लेती हो।"

"रुपया नहीं, सोना नहीं। शरम की बात है।"

"क्या है? बोलो ना।"

"अकेले नहीं रह सकती, मालिक! बहुत डर लगता है। इन [illegible] का खयाल आ जाता है। वह हरोआ मुझसे शादी करना [illegible] है। [illegible] के मारे तुमसे कह नहीं पा रहा। मैं वही कहना चाह [illegible]

गणेश बहुत आहत होता है। लछिमा समझ [illegible]

फिर कहती है, "देवता, तुम लोग कहते हो, मैंने छोटे मालिक की माँ का काम समाला। खून का रिश्ता है ? नही तो आज मुझे ऐसी बात करने की जरूरत पड़ती ? बुढिया भी मर गयी। वह रहती तो कोई बात ही नही थी।"

"यही सही रास्ता है।" गणेश कुछ-कुछ राजी होता है।

नाथू सिंह भी इस सुझाव को उत्साह से सहमति प्रदान करता है। तभी गणेश को सदेह होता है कि शायद रामरूप लछिमा पर निगाह रखने वालों में से एक है। रामरूप की उम्र ज्यादा नहीं है। पता नही क्यो, नीची जाति की जरा ज्यादा उम्र की औरतों की तरफ उसका आकर्षण ज्यादा है। मिशिर कहता है, 'खराब राशि-नक्षत्र में पुत्र धारण करने से ऐसा पुत्र पैदा होता है।"

इस तरह हरोआ और लछिमा की शादी हो जाती है। गजमोती सिंह कहता है, "यह बड़ा अच्छा काम किया, गणेश !" मेदिनी तो लछिमा की शादी करवाना चाहता नही था, इसलिए गणेश ने अपनी धाय माँ की शादी करा दी।

यह काम अच्छा हुआ या बुरा, जानने के लिए होली तक इतजार करना पड़ेगा। भंगी लोग स्वाँग रचाते हैं और गणेश की महिमा बखानते हैं। गणेश गजमोती सिंह को राह पर लाया, लछिमा की गृहस्थी बसायी। भंगी लोग गणेश के सामने गाना गा-गाकर चावल और रुपया वसूल करते हैं। गणेश खुशी के साथ चावल देता है, जेब से रुपया निकालकर देता है। उसके बाद कहता है, "चलो-चलो, आगे बढो !"

उम्र मे काफ़ी छोटा है वह बहुतों से। लेकिन चेहरा भीमकाय है। तकिये का सहारा लिये बैठा अतिथियो से कहता है, "उस बार पिताजी को गालियाँ दी थी, अब की बार मुझे ऊपर उठा दिया। गजमोती चाचा को नीचे उतारा। इतनी हिम्मत उनमें कहाँ से आती है ?"

रामरूप कहता है, "भैया, यह उनका जन्म का हक है।"

"यह हक दिया किसने ?"

गजमोती सिंह को शरम-हया थोड़ी कम है। कहता है, "हमेशा से छोटी जात को सही बात कहने का हक रहा है। अयोध्यापति रघु राम ने

तो धोबी के कहने पर सीता को वन में भेज दिया था।"

"कहाँ राम ? कहाँ अयोध्या ? यह तो वाढ़ा गाँव है।"

"क्या कहता है तू, वेटा ?"

"भंगियों को भगा देंगे गाँव से।"

"संडास साफ़ कौन करेगा ?"

"संडास तोड़ दीजिये सभी लोग।"

"लेकिन वेटा, अन्दर वाले थोड़े मानेंगे।"

"संडास नहीं था तो क्या कोई टट्टी नहीं फिरता था ? भगवान ने इतने खेत-मैदान किसके लिए दिये हैं ?"

चन्द्रभान ने कहा, "फिर गाँव में अफ़सर लोग नहीं आयेंगे।"

गणेश ने कहा, "मैं कोशिश करूँगा, उन्हें दबाकर रखने की। गाना बनाओ, स्वाँग रचाओ। लेकिन, मालिकों को छोड़कर। मालिक मालिक हैं।"

"वेटा, ऐसा काम अगर कर सको तो तुम्हें राजपूत समाज का सिर-मौर बना देंगे। तुम दामाद हो, उस पर देवता का अंश। मेदिनी भैया अगर बीमार न पड़ते तो वही सिरमौर होते। तुमको मैं अपना पद दे दूँगा।" नाथू सिंह ने भंग की मौज में आकर कहा।

चन्द्रभान बोला, "लेकिन गणेश, इस समय आजादी की सरकार है और गांधी मिशन के कर्मचारी तोहरी में अड्डा जमाये बैठे हैं। वे भंगियों को मदद भी देते हैं।"

"ये तो कानून की बात है। आज की अवस्था है। कानून और सर-कारी हुकूमत वाढ़ा से कोसों दूर है। दूर ही रहेगी। जब पास लाने की जरूरत महसूस करेंगे, ले आयेंगे। हममें एका होना चाहिए—बस। और कुछ नहीं चाहिए। जमीन हमारी है, रुपया हमारा है। लाठी संभालने के लिए नौकर भी मौजूद हैं।"

चन्द्रभान बोला, "देखो !" उसकी आवाज में झिझक थी।

नाथू बोला, "जो कुछ भी करो वेटा, रामरूप को साथ रखकर करना। अच्छी तरह समझ लो, वह भी तुम्हारे भाई जैसा ही है और उसके बारे में कहें क्या ? नामर्द, बेवकूफ है एक ही। तुम्हारे साथ रहने से,

अगर मर्दों की-सी रीतकरण सीखे...मेरे पिताजी ने तो लाड-प्यार देकर उसका सत्यानाश कर ही दिया है।"

## पाँच

काफी दक्षता से आगे बढता है गणेश। होली आने पर रबी उठाने के बाद पहली बार गाँव के राजपूत-समाज के लोग एक साथ मिलकर काली की पूजा करते हैं। कहते हैं, काली की पूजा कभी भी की जा सकती है। वैसे भी रिआया मालिकों को उत्सव के लिए चंदा और बेगार देती है। इस बार भी देती है। यह घटना नयी है। इसलिए वे बातें भी बनाते हैं कि क्या हर बार ही ऐसा होगा? यह पूजा, यह बली, यह धूमधाम?

काली-पूजा के उपलक्ष में, बाढ़ा में, लोहरी से स्टेशन मास्टर, दरोगा जी, सरकारी डॉक्टर, लकड़ी के ठेकेदार—सभी आते हैं। यहाँ तक कि बी० डी० ओ० साहब भी। काली की मूर्ति राँची से आती है।

"काली-पूजा बंगाली लोग ज्यादा करते हैं," यह कहने पर सरकारी डॉक्टर झाड़ खाते हैं।

दरोगा जी कहते हैं, "यह कैसी बात कहते हैं आप! इसमें प्रादेशिकता मत लाइये। काली शक्ति का रूप है, विश्व की माँ है। क्या केवल बंगाल में उनकी पूजा होती है? क्या और जगहों पर नहीं होती?"

खूब आव-भगत, आदर-सत्कार, भेंट-उपहार। एक मांसल खस्सी साथ लेकर जाते हुए बी०डी०ओ० कहते हैं, "सभी कुछ समझ आया, लेकिन यह बात समझ नहीं आयी कि ये लोग किस किस्म की मदद माँगने वाले हैं। इधर किसी तरह की गडबड़ के बारे में तो नहीं सुना।"

"कैसी गड़बड़?" दरोगा ने इस बात को कोई महत्व नहीं दिया।

"अजीब इलाका है!"

"क्यों?"

"ये स्कूल नहीं चाहते, हेल्थ सेंटर नहीं चाहते।"

"खेती के काम में लिखाई-पढ़ाई कहाँ लगेगी? शायद

धोवी के कहने पर सीता को वन में भेज दिया था ।"

"कहाँ राम ? कहाँ अयोध्या ? यह तो वाढ़ा गाँव है ।"

"क्या कहता है तू, वेटा ?"

"भंगियों को भगा देंगे गाँव से ।"

"संडास साफ़ कौन करेगा ?"

"संडास तोड़ दीजिये सभी लोग ।"

"लेकिन वेटा, अन्दर वाले थोड़े मानेंगे ।"

"संडास नहीं था तो क्या कोई टट्टी नहीं फिरता था ? भगवान ने
इतने खेत-मैदान किसके लिए दिये हैं ?"

चन्द्रभान ने कहा, "फिर गाँव में अफ़सर लोग नहीं आयेंगे ।"

गणेश ने कहा, "मैं कोशिश करूँगा, उन्हें दवाकर रखने की । गाना
वनाओ, स्वाँग रचाओ । लेकिन, मालिकों को छोड़कर । मालिक मालिक
हैं ।"

"वेटा, ऐसा काम अगर कर सको तो तुम्हें राजपूत समाज का सिर-
मौर वना देंगे । तुम दामाद हो, उस पर देवता का अंश । मेदिनी भैया
अगर वीमार न पड़ते तो वही सिरमौर होते । तुमको मैं अपना पद दे
दूँगा ।" नाथू सिंह ने भंग की मौज में आकर कहा ।

चन्द्रभान वोला, "लेकिन गणेश, इस समय आजादी की सरकार है
और गांधी मिशन के कर्मचारी तोहरी में अड्डा जमाये वैठे हैं । वे भंगियों
को मदद भी देते हैं ।"

"ये तो कानून की वात है । आज की अवस्था है । कानून और सर-
कारी हुकूमत वाढ़ा से कोसों दूर है । दूर ही रहेगी । जव पास लाने की
जरूरत महसूस करेंगे, ले आयेंगे । हममें एका होना चाहिए—वस । और
कुछ नहीं चाहिए । जमीन हमारी है, रुपया हमारा है । लाठी संभालने के
लिए नौकर भी मौजूद हैं ।"

चन्द्रभान वोला, "देखो !" उसकी आवाज में झिझक थी ।

नाथू वोला, "जो कुछ भी करो वेटा, रामरूप को साथ रखक
करना । अच्छी तरह समझ लो, वह भी तुम्हारे भाई जैसा ही है औ
उसके वारे में कहें क्या ? नामर्द, वेवकूफ है एक ही ।,तुम्हारे साथ रहने

अगर मर्दों की-सी रीतकरम सीखे...मेरे पिताजी ने तो लाड़-प्यार देकर उसका सत्यानाश कर ही दिया है।"

## पाँच

काफ़ी दक्षता से आगे बढ़ता है गणेश। होली आने पर रबी उठाने के बाद पहली बार गाँव के राजपूत-समाज के लोग एक साथ मिलकर काली की पूजा करते हैं। कहते हैं, काली की पूजा कभी भी की जा सकती है। वैसे भी रिआया मालिकों को उत्सव के लिए चंदा और बेगार देती है। इस बार भी देती है। यह घटना नयी है। इसलिए वे बातें भी बनाते हैं कि क्या हर बार ही ऐसा होगा? यह पूजा, यह बली, यह धूमधाम?

. काली-पूजा के उपलक्ष में, बाढ़ा से, लोहरी से स्टेशन मास्टर, दरोगा जी, सरकारी डॉक्टर, लकड़ी के ठेकेदार—सभी आते हैं। यहाँ तक कि बी० डी० ओ० साहब भी। काली की मूर्ति राँची से आती है।

"काली-पूजा बंगाली लोग ज्यादा करते हैं," यह कहने पर सरकारी डॉक्टर झाड़ खाते हैं।

दरोगा जी कहते हैं, "यह कैसी बात कहते हैं आप! इसमें प्रादेशिकता मत लाइये। काली शक्ति का रूप है, विश्व की माँ है। क्या केवल बंगाल में उनकी पूजा होती है? क्या और जगहों पर नहीं होती?"

खूब आव-भगत, आदर-सत्कार, भेंट-उपहार। एक मांसल रस्सी साथ लेकर जाते हुए बी०डी०ओ० कहते हैं, "सभी कुछ समझ आया, लेकिन यह बात समझ नहीं आयी कि ये लोग किस विषय की मदद माँगने वाले हैं। इधर किसी तरह की गड़बड़ के बारे में तो नहीं सुना।"

"कैसी गड़बड़?" दरोगा ने इस बात को कोई महत्व नहीं दिया।

"अजीब इलाक़ा है!"

"क्यों?"

"ये स्कूल नहीं चाहते, हेल्थ सेंटर नहीं चाहते।"

"खेती के काम में लिखाई-पढ़ाई कहाँ लगेगी? शायद यह..."

बीमार भी नहीं पड़ते। शांतिपूर्ण इलाक़ा है।"

"शांतिपूर्ण ही रहे तो अच्छा है।"

"स्कूल या हेल्थ सेंटर की माँग ये तभी करेंगे, जब आसपास के इलाक़े में स्कूल-हेल्थ सेंटर देखेंगे। तब जरूर कहेंगे—कुल भूमिहारों, बनियों-कायस्थों के इलाक़ों में ये सब हुआ है। हमें भी अवश्य चाहिए। कहीं कुछ मत कीजिए। शांति से रहिये। आप लोग ब्लॉक-ब्लॉक में जाकर विकास के बहाने ये सब गड़बड़ियाँ पैदा करते हैं।"

"बात तो सही है।"

"क्या जरूरत है इतने कुएँ खुदवाने की, नहरें और सड़क बनाने की! मुझे तो समझ में नहीं आता। देखिये चौधरी जी, जो इलाक़ा जितना पिछड़ा रहेगा, वहाँ के गाँव वाले भी उतने ही नरम और सरल रहेंगे। थाने से डरेंगे। विकास होने से वे सब बिगड़ जायेंगे। मालिक भी बिफर जायेंगे। उस सूरत में हमें मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है। भारत के गाँवों की उन्नति करना ठीक नहीं है।"

"वह गणेश सिंह कौन है?"

"बाप रे बाप! एक दाँत लेकर जन्मा था। देवांशी लड़का है। उनका समाज उसके नेतृत्व में आ रहा है। दूसरे राजपूतों को भी तो उसके बाप ने ही लाकर बाढ़ा गाँव में बसाया था। बड़ा जबरदस्त आदमी था।"

"उसे सभी लोग काफ़ी मानते हैं।"

"हाँ, काफ़ी मानते हैं।"

बहुत जल्द गणेश अपने-आपको भंगियों और दुसाधों का शुभकांक्षी प्रमाणित करता है।

हैजे के मौसम में कहता है, "सरकारी गाड़ी आने पर तुम सभी लोग टीका लगवा लेना। तुम्हीं लोगों को हैजा होने का ज्यादा डर होता है। हैजा होता भी है।"

"आप लोग मालिक हैं?"

"हम लोग? जिस घर में पूजा-वूजा होती है, उस घर में हैजा घुस सकता है? भगवान का परसाद है न?"

"हम लोग भी पूजा चढ़ायें देवता को?"

"जैसा ठीक समझो ।"

नया कुआँ खुदवाने के लिए मिस्त्री की खोज में गणेश तोहरी आया था। बी० डी० ओ० से कहता है, "इन लोगों की भलाई कौन करेगा? हैजे का सरकारी टीका लगवाने को कहा तो कहने लगे—हम देवता पूजेंगे, हमें बीमारी नहीं होगी।"

"अपनी भलाई की बात खुद नहीं समझते।"

बी० डी० ओ० को विश्वास हो जाता है कि गणेश बुरा आदमी नहीं है।

अपनी गोशाला से गणेश एक बूढ़ी गाय चुनता है। और उसे भंगी टोले के पास छोड़ देता है। सभी के ढोर चरने की जगह रस्सी के सिरे पर एक भारी पत्थर बाँध देता है। पत्थर खींचती हुई गाय ज्यादा दूर तक नहीं जा सकेगी।

हरोआ अभी भी उसके पास काम करता है। हरोआ कहता है, "मालिक सफेद गाय को क्या छोड़ दिया आपने?"

"क्या करूँ, हरोआ? बूढ़ी हो गयी है, दूध देती नहीं। चर-वर के खा ले तो ठीक है। इसीलिए छोड़ दिया है।"

"भंगियों को तो जानते हो मालिक, वह मंगालाल बहुत ही हरामी है। छोड़ी हुई गाय मिल जाये तो जहर देकर मार डालते हैं। उसका चमड़ा बेचता है और बाकी भगाड़ में डाल देता है।"

गणेश चाहता भी यही है। कहता है, "ऐसा कर सकते हैं क्या? हिम्मत है उनमें? मेरी सभी गायें दगी हुई हैं। उनके बदन पर निशान लगे हैं।"

हरोआ बात को आगे नहीं बढ़ाता। लछिमा से घर जाकर कहता है, "गाय-भैंस के बूढ़े होने पर मालिक लोग उन्हें छोड़ देते हैं हमेशा ही। अब की बार सफेद गाय को पत्थर बाँधकर भंगी टोले के पास क्यों छोड़ा है? ऐसा तो नहीं करते हैं।"

लछिमा बोली, "बेचारी प्यास से मर जायेगी।"

"राम-राम! गौ-माता भगवती समान होती है।"

"तुम चुप रहो। फालतू बात मत करो। अभी तुम गणेश के नौकर

हो। वह क्या अच्छा करता है, क्या बुरा—कुछ मत कहो।"

"नहीं, मैं कुछ नहीं कहूँगा।"

"तुम्हें जरूरत ही क्या है?"

"नहीं, कोई जरूरत नहीं।"

गणेश के यहाँ हरोआ का काम करना लछिमा को अच्छा नहीं लगता। हरोआ उसके यहाँ केवल खुराकी पर काम करता है। लछिमा को यह नहीं पता है कि हरोआ पर गणेश के अधिकार की वजह क्या है। बेशक हरोआ की खुराक काफ़ी ज्यादा है। यह बात माननी पड़ेगी कि मेदिनी सिंह और गजमोती सिंह के यहाँ खुराकी पर काम करने वाले किसानों को खाना अच्छा दिया जाता है। मेदिनी सिंह कहा करता था कि दूध देने वाली गाय-भैंसों, गाड़ी और हल के बैलों और किसान-मजदूरों को जो अच्छी तरह खाना नहीं देता, वह यह नहीं जानता कि उसकी भलाई किसमें है। इसलिए उसके यहाँ हरोआ को अच्छी तरह खाना मिलता है।

लछिमा उससे पूछ-पूछकर सभी बातें जान लेती है। गणेश की दुल्हन का गृहस्थी पर कोई जोर नहीं है। हरोआ को अनपका सीधा मिलता है। मिशिर को भी सीधा मिलता है। गणेश की दुल्हन केवल अपने, गणेश और दो नौकरानियों के लिए खाना पकाती है। दुल्हन को रोज गणेश के पैर दबाने पड़ते हैं। यह बात हरोआ को नौकरानी ने बतायी है।

खाना खाते-खाते हरोआ कहता है, "मिर्च से काफी फायदा है। अब की मिर्च लगाऊँगा। मालिक भी मिर्च लगायेगा।"

"लगा सकते हैं, इतनी जमीन है। हमें इतने फायदे की जरूरत ही क्या है? दो जने हैं। दुख-सुख में जीवन बीत ही जायेगा।"

"दिल चाहता है, लछिमा...!"

"अब तक सुनती रही हूँ कि तुम्हारा दिल मुझे चाहता है। लेकिन अब सुन रही हूँ, दिल मिर्च चाहता है। कैसा है तुम्हारा मन?"

"अब की बरसात से पहले अपने घर की मरम्मत करेंगे। तभी पपीते का पेड़ लगायेंगे।"

"लगा लेना। सुनो, भंगी लोग हर रोज तोहरी जाते रहते हैं। उनसे कह देना कि फल वाले की दुकान से पेड़ के पके पपीते का बीज ले आयें।"

"अमरूद और शरीफे का पेड़ भी लगायेंगे।"

"चलो छोड़ो। अब सो जाओ।"

हरोआ की चाह है—सजी हुई साफ-सुथरी गृहस्थी में रहे। शायद जिन्दगी में उसने कभी कुछ नहीं पाया जिसे अपना कह सके। वह पेड़ों की देखभाल करना जानता है, झोंपड़ी बाँधना जानता है, गाय-भैंस का इलाज जानता है। भैंस के बच्चे को कंधे पर उठाकर चल सकता है वह। हट्टा-कट्टा जवान आदमी। चाहता तो गणेश की नौकरी छोड़ सकता था। रबी की फ़सल के बदले मिर्च लगाना चाहता है। नगद पैसा मिलेगा। कर्ज की बही से न बँधे होने पर भी वह जन्म-दास है।

लछिमा सो जाती है।

मंगालाल को गाय मारनी नहीं पड़ी। प्यास से उसकी गरदन लम्बी हो गयी और वह मर गयी। मंगालाल केवल उसे खींच ले गया।

यह काम उसने पहले भी बहुत बार किया है, इसलिए भिखारी गजु की सहायता के बिना ही वह उसकी चमड़ी उतार लेता है। चमड़े पर राख और नमक लगाकर सुखाने को डाल देता है।

शव को भगाड़ में फेंक देता है।

फलस्वरूप थाने से कांस्टेबल आता है और मंगालाल को पकड़कर गणेश की हवेली में ले आता है। दरोगा भी मौजूद थे वहाँ। चमड़ा मंगालाल को ही ढोकर ले जाना पड़ता है।

गाय के मरने के बारे में मंगालाल जो भी बातें कहता है, दरोगा उसकी एक भी बात नहीं सुनते। मंगालाल को पेशी में देखने के लिए अन्य भंगी लोग भी आते हैं। वे भी कुछ कहने की कोशिश करते हैं।

दरोगा बार-बार सिर हिलाते हैं। गणेश जैसा व्यक्ति जब यह कह रहा है कि यह आदमी उसकी गाय चुरा कर ले गया है, उसने उसे चमड़े और हड्डियों के लालच में मार डाला है तो बात झूठी नहीं हो सकती।

"हुजूर, मालिक लोगों को पसंद नहीं कि हम भगाड़ का काम करें। इसलिए ऐसा कहकर हमारी बदनामी कर रहे हैं।"

दरोगा परेशान होकर कहता है, "भगाड़ का काम तो तुम लोग करते हो, बाप मेरे! कभी किसी मालिक ने तुम्हारी शिकायत की है? हैजे का

टीका लगवाने का इंतजाम करने, मालिक भागा-भागा तोहरी गया था, क्या इसीलिए ?"

"लेकिन हुजूर...!"

दरोगा मंगालाल को पकड़कर ले जाने की धमकी देता है। भंगी लोग घबरा जाते हैं। मंगालाल ने इससे पहले भी कई बार बेकार गायें-भैंसों को इस तरह खत्म किया है, तब तो कुछ नहीं हुआ था लेकिन इस बार क्या से क्या हो गया ! वे लोग टट्टी उठाना बंद करके मालिक लोगों को तंग कर सकते हैं। यह तरकीब भंगियों के दिमाग़ में नहीं आती। थाना-पुलिस इनके लिए सर्वशक्तिमान होते हैं।

गणेश दरोगा से कुछ कहता है। दरोगा को आने-जाने का मानदेय मिल जाता है और वह खुश हो सिर हिलाते हुए मंगालाल को लेकर चला जाता है। दरोगा गणेश के पक्ष में कहते जाते हैं, "गाय को मारने के लिए जेल काटनी पड़ेगी। गाय के बदले तुझसे जेल में तेल का कोल्हू चलवाऊँगा।"

सुनकर मंगालाल रो पड़ता है। रोते-रोते ही वह चला जाता है। भंगी लोग उस वक़्त तो चुपचाप चले जाते हैं, लेकिन शाम को मंगालाल का बड़ा भाई, बीवी और लड़का आते हैं।

आंगन में खड़े होकर कहते हैं, "माफ कर दो, मालिक ! फिर कभी ऐसी गलती न होगी।"

गणेश कहता है, "माफ तो करना ही चाहता हूँ।"

"कर दो, मालिक !"

"लेकिन इसके लिए पुलिस को कितना रुपया देना होगा, पता है ?"

"मालिक हमसे जो भी बनेगा, देंगे।"

"सिपाहियों की भूख मिटाना तुम लोगों के बस की बात है ?"

"फिर क्या होगा ?"

"सजा होगी।"

"सजा होने पर वह मर जायेगा, मालिक ! उसे पिशाब की तकलीफ है। वे मारेंगे मालिक, और मार-पीट से वह मर जायेगा।"

"देखते हैं, क्या कर सकते हैं !"

दूसरे रोज गणेश तोहरी जाता है। मंगालाल को अदालत तक पहुँचाने की उसकी कतई इच्छा नही थी। दरोगा कहता है कि केस होने पर इसे जेल जरूर होगी। गणेश दरोगा को पान खिलाने के रुपये देकर मंगालाल को छुड़ा लाता है। फलस्वरूप मगालाल और दूसरे भगी गणेश के प्रताप से परिचित होते हैं और उसके अहसान के लिए कृतज्ञता जताने आते हैं।

गणेश कहता है, "मारने को भी हम और बचाने को भी हम, यह बात तुम लोग क्यों भूल जाते हो?"

"फिर कभी नही भूलेंगे, मालिक?"

"हम लोगों को लेकर गीत बनाते हो?"

भगी लोग चुप हो जाते हैं।

"मैं उस तरह के गीत दोबारा नही सुनना चाहता। हमारे चाहने पर हम क्या कर सकते हैं, थोडा-बहुत तो मैंने तुम्हें दिखा दिया है। मालिकों को लेकर फिर कभी कोई गीत मैंने सुना तो सारे भगी टोले को जला दूँगा। कोई सरकार, कोई गांधी मिशन, भागाड़ का कोई ठेकेदार नही बचा सकेगा तुम्हें।"

भगी लोग वापस चले जाते हैं।

इस तरह धाढा गाँव मे गणेश मध्य-युग का फिर से सूत्रपात करने मे पथ-प्रदर्शक होता है। उसकी काफी प्रशसा की जाती है। भगियों को सबक सिखाने की खुशी मे वह काफी उल्लसित है। सहसा उसमे शरीर की भूख बडी तीव्रता से जागती है। आज रात वह नायू सिंह की लडकी को भोगने पर भी तृप्त नही होता। बनैले चीत्कार-भरे स्वर मे 'मिट्टी का लौंदा' कहते हुए पत्नी को एक लात मारकर बिस्तर से गिरा देता है वह। चिल्लाकर कहता है, "निकल जा...!"

अब गणेश की समझ मे आता है कि मेदिनी सिंह के लिए लछिया क्यों अपरिहार्य थी। घृणा से कहता है, "खाना नही मिलता क्या? ऐसी औरत मे किस मर्द की चाह पूरी होगी?"

नायू की बेटी को उसके इस व्यवहार मे कही कुछ अन्यायपूर्ण नजर नही आता। जो पत्नी अपने उष्ण रक्त और भूखी मासलता वाली देह मे पति को सेज का सुख नही दे सकती, उसका जीवन अर्थहीन है। उसके परिवार

के पुरुष लोग भी जानते हैं कि लड़कियाँ, विशेषकर विवाहित लड़कियाँ अपने पतियों के लिए व्यर्थ रहेंगी ही। दादा बरकंदाज़ सिंह जाते थे मोरी के पास। बाप नाथू जाते हैं, लखपतिया के पास। मालिक लोगों के घर-घर में रखैल रखने का नियम है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर माँ ने दो नौकरानियाँ उसके साथ कर दी थीं। नाथू की लड़की ने नौकरानी से पूछा, "कुछ दवाई वगैरह जानती हो।"

"किसलिए ?"

"उनसे डर लगता है।"

"और क्या लगता है ?"

"और...और अच्छा नहीं लगता।"

"छिः-छिः, मालकिन ! औरतों को ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। अगर वे ऐसी बातें करतीं तो क्या धरती पर इतनी आबादी बढ़ती ?"

"दवाई लाकर दे।"

"नहीं, नहीं, दवा-ववा की बात जानते ही भगा देंगे। उन दोनों सौतेली माँओं को दवाई वगैरा करने के कारण ही उनके पिता ने भगा दिया था।"

नाथू की लड़की करुण हँसी हँसती है और कहती है, "फिर तो वह मुझे पीट-पीटकर मार ही डालेगा। ऐसी लात जमायी है कि अभी तक मैं सीधी नहीं हो पा रही हूँ। इस तरह मारता रहा तो मैं मर ही जाऊँगी। शरीर में इतनी ताक़त कहाँ ?"

"क्या किया जाये, मालकिन ? घर में और कोई तो है नहीं। इतना सारा दूध उबालती हो, खाना पकाती हो; पूरी-कचौरी, गोश्त, मलाई बनाती हो। मेहनत के कार[illegible] रौनक नहीं रही, शरीर कमजोर पड़ गया।"

के घर में शायद कुलदीपक आने वाला है। ऐसे समय तुम्हारे घर में तो कोई औरत है नहीं। दो-चार दिन यह हमारे यहाँ रह जाये तो अच्छा नहीं रहेगा क्या ?"

"यह कैसे हो सकता है ? हमारे वंश में इस तरह का कोई रिवाज है ही नहीं। किसी के घर नहीं है। शादी के बाद घर में आयी लड़की घर से बाहर एक ही बार निकलेगी—मैं यह नियम कैसे तोड़ सकता हूँ ?"

नाथू सिंह हड़बड़ाकर उठता है, "ठीक है बेटा, ठीक है। इसने पहले कभी काम नहीं किया। शायद जल्दी थक जाती है।"

गणेश मुँह फुलाकर कहता है, "मैं बहुत ही भाग्यहीन हूँ, समझे ? आप लोगों को पता था कि हमारे घर में जो बहू आयेगी, उसे अकेले ही सब-कुछ सँभालना होगा। जब लछिमा घर में थी तो हमारे घर की सभी तरह से बढ़ोतरी हुई। अब सब तरफ घाटा-ही-घाटा हो रहा है। आप लोगों ने शर्त लगायी, उसी की वजह से यह सब-कुछ हुआ है। अब आप कह रहे हैं, 'अकेली रहती है घर ले जाऊँ ?' ले जायेंगे तो ले जाइये। लेकिन वापस मत भेजियेगा।"

"यह कैसी बात हुई, बेटा ? मैंने तो तुम्हारी ही बात मानी है।"

"अकेले घर में जो लड़की जा रही थी, उसे कामकाज क्यों नहीं सिखाया था ? किस बात की तकलीफ है उसे यहाँ ? इसके आते ही मेरे पिताजी गुज़र गये। तब भी मैंने कुछ नहीं कहा। क्या यह अच्छा लक्षण है ? कामकाज का जहाँ तक सवाल है वह केवल मेरा और अपना खाना पकाती है। मिसिर जी को सीधा देता हूँ। किसान-मजदूर को सीधा। नौकरानियाँ अपना खाना आप पकाती हैं। पानी वे ले आती हैं। सारा इन्तज़ाम वे ही करती हैं। आपकी लड़की कौन-सा भारी काम करती है ?"

"ठीक कहते हो तुम।"

नाथू सिंह सारी बातें अपनी पत्नी को बताता है और आदेश देता है, "अगर लड़की का सुख चाहती हो तो चुप रहो। हमारे ज़िद करने पर लछिमा को यहाँ से भगाया गया। यह बात भी सही है कि उसके रहते हुए मेदिनी की गृहस्थी में वाक़ई लक्ष्मी थी। दो जनों का खाना पकाने में तुम्हारी लड़की मरी जा रही है ! गणेश से लड़ाई मोल लेने से क्या लाभ ?

बेटी की ज्यादा तरफ़दारी की तो वह उसे भगा देगा । गणेश के साथ झगड़ा कर अपनी जगहँसाई कराऊँ? भंगियों की दुष्टता पर किस खूबी से रोक लगायी है उसने !"

मालिक लोगों को विषय बनाकर गीत बनाने पर लगी रोक पर भंगी टोला जल रहा है। गणेश में अपनी पत्नी को तंग करने का उत्साह ख़त्म होता जा रहा है। उसका पौरुष आहत है। इसके पीछे है गांधी मिशन के कार्यों में लगन से लगी उद्धत यौवना पल्लवी शाह।

पल्लवी शाह मात्र तेईस वर्ष की है। बम्बई के किसी तेजलाल शाह की अत्यंत लाड़ में पली लड़की। बेइंतहा धन होने के कारण डर-वर नाम की चीज उसमें नहीं है। जो मरजी आये, वही करने की आदी है। उसकी माँ किसी धर्माश्रम में रहती है। पिता निर्यात के व्यापार में अत्यंत व्यस्त रहते हैं। शौक में आकर पल्लवी अपने एक मित्र की एक साप्ताहिक अख़बार निकालने में सहायता करती है। फलस्वरूप उसकी संवाददाता भी बन जाती है। उसका वह मित्र असल में ग़रीबों के बारे में बड़े-बड़े भाषण देकर पल्लवी को मक्खन लगाता है और एक दिन उसका रुपया-पैसा लेकर भाग जाता है।

धरती को ही त्यागने के विचार से वह नींद की गोली खाती है; लेकिन तेजलाल शाह के ग्रह इस समय अच्छे थे और पुत्री द्वारा आत्महत्या करने पर उसकी काफ़ी बदनामी होती; इसीलिए उसे बचाया जाता है। बेहोशी की हालत में पल्लवी देखती है एक ज्योतिर्मय श्वेतांग संन्यासी को। उसे लगा कि वे कह रहे हों, 'डॉटर, डॉटर, मैं तुम्हें बचाऊँगा।'

एडविन कृष्णात्मा उसका परिचय गांधी मिशन के कार्यकर्ताओं से करा देते हैं और कहते हैं कि ग़रीब-से-ग़रीब लोगों के बीच जाओ। समाज की सेवा करो।

पल्लवी ट्रेनिंग लेती है। ग़रीब से भी ग़रीब हैं भंगी लोग। पल्लवी अंत में उनकी सेवा करने के लिए, उनके काम आने के लिए वाढ़ा चली आती है। एस० डी० ओ० से लेकर थाने का दरोगा तक, कोई भी उसकी चरम आत्मत्यागी प्रवृत्ति पसंद नहीं करता। लेकिन पल्लवी के संबंध इतनी ऊँची जगहों से हैं कि वे उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। मिशन

के कार्यकर्ता भी उसे नहीं रोक पाते। पल्लवी से भिड़ना उनके वश की बात नहीं थी।

पल्लवी की हिन्दी अच्छी नहीं है और इनकी अंग्रेजी इन लोगों की समझ से बाहर है। एम० डी० ओ० बार-बार कहते हैं, "आप वहाँ जाकर मुसीबत में फँस सकती हैं। हमारी नौकरी पर इससे आँच आ सकती है।"

पल्लवी दुरुस्त अंग्रेजी में कहती है, "आप मुझे डरा रहे हैं। मैंने ठान लिया है कि एक साल गरीब और पीड़ितों के लिए दरसल कहूँगी। यहाँ पर कुछेक भंगी परिवार अमानवीय स्थितियों में जिन्दगी गुजार रहे हैं। मैं उन्हीं की सेवा करूँगी।"

"यहाँ के मालिक राजपूत हैं।"

"वे सभी अशिक्षित जानवर हैं।"

"आप क्या करेंगी?"

"उनकी जरूरतों को देखूँगी। मैं अनुमान लगा सकती हूँ कि उनके पास अच्छा मकान, स्वास्थ्य-केन्द्र, स्कूल, पीने के पानी की व्यवस्था—कुछ भी नहीं है। वे लोग बेहद गरीब हैं।"

किसी का कहना नहीं मानती पल्लवी। एम० डी० ओ० कहते हैं, "अगर कोई गड़बड़ हो गयी तो?"

"मैं पापा को खबर कर दूँगी।"

एम० डी० ओ० मन-ही-मन उसे हजारों गालियाँ देते हैं। फिर कहते हैं, "किसी मिशन वाले ने वहाँ जाकर उनके साथ रहने की बात कभी नहीं सोची। आपको वहाँ बहुत तकलीफ होगी।"

मिशन की महिला प्रधान एम० डी० ओ० को अलग ले जाकर धीरे से कहती है, "इसका शौक दो दिन में ही खत्म हो जायेगा। ज्यादा ही क्यों, वह यहाँ से भी चली जायेगी। हमें भी छुटकारा मिलेगा। क्यों रोकते हैं उसे, वह बहुत ही अमीर घर की लड़की है। किसी प्रकार की रोक-टोक की वह अभ्यस्त नहीं है।"

"क्या अकेली जायेगी?"

"क्या किया जाये?"

हरिजन कल्याण संघ के अभय महतो से बात करता है एम० डी० ओ०।

अभय हट्टा-कट्टा जवान लड़का है। इधर के सारे गांव उसके जाने-पहचाने हैं। लेकिन वाढ़ा गांव जाने से कभी जिन्दा नहीं लौटेगा, इसी डर से वह कभी वाढ़ा गांव नहीं गया था। उसके संघ का संगठन काफ़ी कमज़ोर है। अभय पल्लवी के पास आकर कहता है, "मेरी बहुत दिनों की इच्छा है। आप जा रही है, दीदी! अगर मुझे साथ ले चलें तो मैं भी घूम आऊं?"

पल्लवी सहमत नहीं होती। आखिर में तय होता है कि अभय उसे वहां पहुंचाकर वापस लौट आयेगा। पल्लवी कहती है, "रुपयों की कोई बात नहीं। सिर्फ़ एक जीप, कुछ साड़ियां, धोती और बेबी फूड चाहिए।"

"दीदी तो सब-कुछ जानती हैं।"

"पटना के स्लम एरिया में एक महीना काम किया है मैंने।"

पल्लवी जीप से जाती है। उसे मंगालाल के जिम्मे सौंपकर अभय वापस आ जाता है। सारा भंगी टोला पल्लवी को देखने के लिए टूट पड़ता है। पल्लवी कहती है, "तुम जीप लेकर चले जाओ। इनसे कह दो कि मैं अब यहीं रहूंगी।"

भंगी टोला बेहद बदबूदार और गंदी जगह है। भंगी लोग इतने ग़रीब हैं कि पल्लवी को उनके साथ रहने में आनन्द का अनुभव होता है। बम्बई वाला दोस्त उसे धोखा देकर जैसे अशुद्ध कर गया था—मनुष्य जाति को मुंह-चिढ़ाते इन लोगों का साथ ही उसे फिर से शुद्ध और पवित्र कर सकता था। आवेग में वह मंगालाल से कहती है, "हां ओल्ड मैन! मैं तुम्हारे घर में ही रहूंगी।"

मंगालाल और अन्य भंगियों को विश्वास होने लगता है कि पल्लवी ज़रूर पागल है। अभय का चेहरा उनका जाना-पहचाना है। अभय उनको अभयदान देता है। द्रुत देहाती बोली में कहता है, "दीदी सरकार की तरफ़ से हैं। तुम लोगों की जरूरतें क्या हैं, अपनी आंखों से देखने आयी है। इसीलिए यहां रहना चाहती हैं।"

"यहां रहेंगी कहां? खायेंगी क्या?"

"तुम लोग जो खाओगे।"

"हुजूर, हम लोग तो समझो खाते ही नहीं हैं।"

"दीदी भी नहीं आयेगी।"

पल्लवी को सभी कुछ असामान्य लगता है। गेंद बनाने में लगा हुआ मुन्ना ही गाती है वह। मचान पर सोती है। सुबह पेन और कागज लेकर स्त्री-पुरुषों की उम्र के आधार पर सारणी बनाती है। फिर उनकी जीविका के बारे में जानना चाहती है। मंगालाल की पत्नी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसे भागाड़ और संडास की सफाई आदि के बारे में समझाने की कोशिश करती है। अतएव पल्लवी मंगालाल की पत्नी के साथ उजाड़ मैदान में पानी की जगह देखने जाती है।

"गर्मियों में यह सूख नहीं जाता?"

"सूख जाता है।"

"तब क्या करते हो?"

बिसुलाल के टोले की तरफ इशारा करती है और कहती है, "उनके कुएँ से पानी लेते हैं। वह भी लेने थोड़े ही देते हैं...।"

"क्यों?"

"हम लोग छोटी जात हैं, इसलिए।"

"ओह! जात?"

"हम लोगों को ढेरों तकलीफें हैं।"

"बड़े-बड़े मकान किन लोगों के हैं?"

"मालिक लोगों के।"

पल्लवी असीम आंतरिक विश्वास के साथ मंगालाल की पत्नी को समझाती है—संविधान। कोई मालिक नहीं है। आज के आज़ाद भारत में मंगालाल और मालिक दोनों बराबर हैं।

"अगर ऐसी ही बात है तो गणेश सिंह ने सलोवा के बापू को बिना वजह क्यों परेशान किया था?"

सलोवा के बापू की परेशानी के बारे में पूरा विवरण सुनकर भी पल्लवी समझ नहीं पाती है कि वह अपने पति के बारे में क्या कहे। पल्लवी समझाने की कोशिश करती है कि अपने को छोटी जात समझना ही नहीं चाहिए।

पल्लवी पर गणेश की निगाह पड़ती है। गाँवों में कोई भी बात

नहीं रहती है। पल्लवी के बारे में भी सभी को पता चल गया था। गांधी मिशन, हरिजन संघ की यह लोग क़तई परवाह नहीं करते। इनकी भलाई की वे चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करे, कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। ताक़त गणेश जैसे लोगों के हाथ में ही हमेशा रहती है। गांधी मिशन जैसी संस्थाओं में जो लड़कियाँ काम करती हैं, उन्हें गणेश जैसे लोग बड़ी नफ़रत से देखते हैं। उनके विचार से समाज की जूठी की हुई औरतें ही ऐसे काम करने आती है। वैसे गणेश जैसे लोगों के तई सभी औरतें उपभोग की वस्तु हैं। आजादी के शुरू-शुरू में, अकाल पड़ने पर राहत कार्यों के लिए मिशन की तरफ़ से एक यूनिट यहाँ आयी थी। उनमें से एक लड़की को गजमोती सिंह उठा ले गया था और बलात्कार करके उसे छोड़ गया था। उस अभागिन लड़की की रिपोर्ट थाने तक में दर्ज नहीं हुई थी।

पल्लवी को देखते ही गणेश के उष्ण रक्त में एक अजीब-सी चाहत तीव्रता से दौड़ने लगती है। यह वही चाहत है जो उसे उत्तेजित करती है, भूखा बनाती हैं और जिसे बुझाने में नाथू सिंह की लड़की असमर्थ है। गर्भवती होने के बाद से वह और ठसक गयी है। गणेश को देखते ही डर जाती है। छोटी जाति की किसी लड़की को रखैल रखना पड़ेगा, यह सोचकर उसका जी ख़राब होने लगता है। पल्लवी के नैन-नक़्श काफ़ी तीखे है और सेहत भी अच्छी है। गणेश पल्लवी को अनदेखा कर मंगालाल को बुलाता है। पूछता है, "मंगालाल, यह कौन-सा हरामीपन है?"

"क्या, मालिक?"

"इतनी अच्छी और साफ़-सुथरी औरत को तुमने अपनी झोंपड़ी में रख रखा है। हम लोग क्या मर गये हैं?"

"जी मालिक!" मंगालाल की जीभ सूख जाती है। डर से होंठ चिपक जाते हैं। होंठों पर जीभ फेरते हुए कहता है, "हम कैसे रख सकते हैं, मालिक? वह अपने-आप ही आयी है, गांधी मिशन से।"

"कौन पहुँचाकर गया है?"

"हरिजन संघ का अभय महतो।"

"ठीक है। उसे मेरे घर ले चलो।"

तभी पल्लवी आगे आ जाती है और दोनों कूल्हों पर हाथ रखकर कहती है, "कौन हो तुम ? किसलिए धमका रहे हो इन्हें ?"

"मैं गणेश सिंह हूँ। बाढा गाँव में, मैं जो चाहता हूँ वही होता है।"

"अच्छा तो तुम्हीं वह आदमी हो, जिसने मसालाल को बिना वजह तंग किया था ? चले जाओ यहाँ से, अभी, इसी पल !"

गणेश वहाँ से जाने का नाम नहीं लेता। वहीं-सी हँसी हँसकर कहता है, "तुम्हारे जैसे बहुत-से लोग इनकी भलाई के लिए आते हैं, लेकिन होता बुरा है। इन्हें यहीं रहना है, समझी ? सुना नहीं तुमने—उसने 'मालिक' कहा ? हम राजपूत लोग इनके जैसे नीच जाति के लोगों के मालिक हैं। इनके घर तुम नहीं रह सकतीं।"

"इनको कुछ पता नहीं है, इसलिए डरा रहे हो इन्हें। मैंने इन्हें सब-कुछ बता दिया है। अब कोई किसी का मालिक नहीं। अब भारत आज़ाद है।"

"आज साँझ को तुम मेरे घर आओगी। यही मसालाल तुम्हें वहाँ पहुँचायेगा। नहीं तो हम लोग आकर तुम्हें उठा ले जायेंगे।"

पल्लवी चिल्लाकर अंग्रेज़ी में गाली बकती है। गणेश कहता है, "मसा-लाल तुम्हें यह भी बता देगा कि बाहर से जवान औरत आने पर गजमोती सिंह ने उसके साथ क्या किया था। तुम्हारे कारण सभी का खून गरम हो रहा है।"

पल्लवी पैर पटककर कहती है, "कभी नहीं आऊँगी। पशु-शक्ति के सामने हार मानूँगी ? कभी नहीं।"

सभी लोग डर जाते हैं। बुरी तरह से डर जाते हैं। डर से उनके चेहरे सफ़ेद पड़ जाते हैं। कहते हैं, "नहीं जाओगी तो वे तुम्हें उठा ले जायेंगे। वे जानवर हैं। छोटी जाति की औरतों की इज्जत उनके हाथ में है।"

"थाना है, सिपाही हैं।"

"हाय राम !" मसालाल की पत्नी सिर ठोकती है। "थाने में मालिक लोग नियम से रुपया भेजते हैं। उस दिन मेरे आदमी को खूनमखून कर

दिया था। दरोगा ने कुछ नहीं कहा।"

सभी कहते हैं, "पल्लवी का यहाँ आना उचित नहीं हुआ। इस दूर-दराज गाँव में आना ठीक नहीं था। तोहरी यहाँ से काफी दूर है। हरएक मालिक के पास बंदूक है। वे बंदूक लेकर आयेंगे और पल्लवी को उठा ले जायेंगे। साथ में भंगी टोले को भी जलायेंगे।"

खाना नहीं पकता, किसी को भूख ही नहीं है। शाम को सूरज ढलने लगता है। आखिर अपनी जान के डर से मंगालाल पल्लवी को डाँटकर कहता है, "तुम चाहती हो कि तुम्हारे लिए हम सभी के घर जला दिये जायें और हमारे बाल-बच्चे साथ जल मरें? क्या यही चाहती हो तुम?"

पल्लवी भी डर जाती है। युगों से मन में बैठे डर के सामने उसकी हिम्मत भी जवाब दे जाती है और वह कहती है, "मैं चली जाऊँगी।"

"कहाँ?"

"तोहरी।"

मंगालाल की पत्नी अपने पति से कुछ कहती है। मंगालाल सिर हिलाता है। फिर मंगालाल की बीवी पल्लवी का हाथ पकड़कर कहती है, "इस समय तुम्हें न पाने पर वे हमें जिन्दा जला देंगे। थाना कुछ नहीं करेगा। रोशनी रहते-रहते चलो, हम भाग चलें।"

"कहाँ?"

"फारेस में। मोहन दुसाध रास्ता बतायेगा।"

"दुसाध? वे भी तो हरिजन हैं।"

"मालिकों ने उन्हें जमीन से भगा दिया था। चलो, चलें, शाम होने से पहले ही भाग चलें, नहीं तो बचना मुश्किल है।"

सुअर, बकरी मुर्गी, इंसान—डर के मारे भागते हैं। यह जुलूस पहले दुसाध टोली में पहुँचता है। जानवरों को उनके जिम्मे करके वे लोग जंगल की ओर चल पड़ते हैं। मोहन दुसाध आगे नहीं आता। उसका लड़का रांका दुसाध आता है। सारी घटना सुनने के बाद सिर हिलाता है और फिर जंगली गुस्से में कहता है, "तुम लोगों का घर आज जरूर जलेगा। सौंप देते लड़की को उन्हें। क्या भलाई करेगी यह तुम्हारी? भंगियों को

भलाई करेगी ? मालिकों के पास जमीन है, रुपया है। सरकार भी मालिकों की है। यह क्या भलाई करेगी ? क्यों आयी थी यह यहाँ ?"

ललोवा दुखी होकर कहता है, "अभी मरम्मत करायी थी घर की।"

मगालाल पूछता है, "जंगल में किस जगह ले आये हो ? झरना तो है यहाँ ? पानी तो मिल सकेगा ? आग मत जलाना। बातचीत मत करना। *जंगल में काफी अन्दर आ गये हैं हम। वे हमें खोजते-खोजते यहाँ तक पहुँच सकते हैं।"*

पल्लवी कहती है, "गणेश को सजा कराऊँगी।"

राका कहता है, "यह एक खास बात कही तुमने।"

राका चला जाता है। वे जंगल में से लकड़ी बटोरते हैं परमिट पर। जंगल उनका जाना-पहचाना है। भंगी लोग अचानक आयी इस मुसीबत से भयभीत होकर बैठे हैं। पल्लवी की तरफ घृणा से ताक रहे हैं। अँधेरे में भी पल्लवी को सब-कुछ दीख रहा है। भंगियों के बदन से आ रही जिस महक से उसे प्रेरणा मिल रही थी, अब वही महक बदबू बन गयी है। सोचती है, समाज-सेवा करने के लिए शायद बम्बई में भी काफी ग़रीब लोग हैं। वहीं जाकर काम करेगी वह। ऐसे विचित्र सामाजिक ढाँचे में काम करना संभव नहीं है। इन भंगियों को स्वास्थ्य संबंधी नियम सिखाना क्या संभव है ? पल्लवी पेड़ से टेक लगा लेती है।

अचानक दूर से हो-हुल्लड़ की आवाज़ आती है। मगालाल ललोवा से कहता है, "पेड़ पर चढ़कर देख, कुछ नजर आता है ?" ललोवा चुपचाप पेड़ पर चढ़ता है और फिर नीचे उतर आता है।

"क्या देखा ?"

"आग लगा दी है।"

"तू चुपचाप सो जा।"

"अगर वे यहाँ आ गये तो ?"

न बीतने वाली रात कट जाती है। सुबह की रोशनी फूटने से पहले राका और पीछे-पीछे मोहन दुसाध आते हैं। कहते हैं, "हमें तोहरी की राह पर छोड़ आते हैं। तुम लोग भाग जाकर क्या करोगे ?"

"क्या करेंगे ?"

मोहन ज़मीन पर थूकता है। फिर कहता है, "हम लोगों को भगाया था तो तुम लोग भी तीन दिन अपने घरों से बाहर रहे थे। यही सोचकर हमने आपका साथ दिया। अब क्या फिर से झोंपड़ी खड़ी करोगे?"

पल्लवी कहती है, "रुपया मैं दूंगी।"

उसकी बात पर ध्यान दिये बिना मोहन कहता है, "जमीन नहीं, जायदाद नहीं। झोंपड़ी खड़ी करने पर एक न एक दिन फिर आग लगेगी। तुम कितने परिवार हो?"

मंगालाल आंसू पोंछते हुए कहता है, "ग्यारह घर हैं। बाल-बच्चे मिलाकर बियालिस लोग। दो जनों के पांव भारी हैं।"

"तो तुम जाओ। अपने ठेकेदार से कहो। भागाड़ मत छोड़ना।"

"वहां पानी नहीं है।"

"तो हम लोगों की तरह तुम भी फारेस की जमीन पर गैरकानूनी तौर पर रहो। जब हटायेंगे तो कहीं और चले चलेंगे।"

रांका कहता है, "संडास की सफाई नहीं चलेगी।"

मोहन भी जोड़ता है, "कई सालों से तो यह काम कर रहे हो, अब मत करो। बस सुअर पालो, और बेचो, भागाड़ का काम तो है ही।"

"वहां फिर से घर न बनायें?"

"मैंने जो कहना था कह दिया। आगे तुम्हें जो ठीक लगे, करो।"

रांका और मोहन पल्लवी को ऊबड़-खाबड़ रास्ते से ले जाते हैं। जिस रास्ते से बाढ़ा गांव तक जीप आती है, कुछ समय बाद उसी कच्चे रास्ते पर आ पहुंचते हैं। जाती हुई एक बैलगाड़ी मिलती है। पल्लवी उसमें बैठ जाती है।

तोहरी पहुंचकर वह एस० डी० ओ० को सारी बातें बताती है; लेकिन फिर भी गणेश के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करवा पाती।

एस० डी० ओ० देर तक चुप रहने के बाद कहता है, "ठीक है, आप क़ानून नहीं जानतीं। मैं आपकी हर बात पर यक़ीन करता हूं, लेकिन उस पर केस करूं? पुलिस केस? किसके ख़िलाफ़? गणेश ने भंगी टोली में आग लगायी? किसने देखा? आपको उठा ले जाने की धमकी दी थी। अदालत में गवाही के लिए खड़ा करते ही डर के मारे यही भंगी लोग कहेंगे, 'नहीं,

गणेश ने ऐसा नहीं कहा था।"

"कानून क्या केवल अमीरों का है ?"

"मिस शाह ! आपकी दृष्टि में वह देहाती जोतदार अमीर है ? यह सापेक्षिक सिद्धान्त है—भंगियों के लिए वही देहाती जोतदार टाटा-बिड़ला है। आपको एक बहुत ही भयावह अनुभव से गुजरना पड़ा है। चलिये मेरे साथ। कुछ देर आराम करिये।"

"प्लेन कहाँ से मिलेगा ?"

"पटना से।"

"वहाँ तक कैसे जाऊँ ? पापा को फोन करूँ ?"

फोन पर ही सारा इन्तजाम होता है। पटना से ड्राइवर गाड़ी लाता है। किसी ठेकेदार ने भेजी है।

पल्लवी को बीच का समय एस० डी० ओ० के बँगले में गुजारना पड़ता है। अंत में उनसे कहती है, "भंगियों को कोई तकलीफ न हो, ध्यान रखियेगा।"

"रखूँगा, जरूर रखूँगा।"

अभय उससे मिलने आता है। अभय के सामने पल्लवी रो देती है। कहती है, "भंगी लोग डर गये थे। पता है, डर के मारे उनके चेहरे सफ़ेद हो गये थे। मेरे लिए उन्हें सारी मुसीबत झेलनी पड़ी। मैं अपने-आपको इतनी छोटी, इतना व्यर्थ और अपमानित महसूस कर रही हूँ !"

अभय प्रसन्न मुख से हँसते हुए कहता है, "भूल जाइयेगा दीदी, इस घटना को।"

"मुझे इस एस० डी० ओ० पर विश्वास नहीं। मेरे पास काफी रुपया है। रुपया तुम उन्हें दे सकोगे घर बनाने के लिए ? दे दोगे ना तुम ?"

"दीदी, आप सब-कुछ देखकर आ रही हैं। हाथ में पैसा आते ही शराब पियेंगे वे लोग। मालिकों को पता चलने पर फिर से घर जलेंगे उनके।"

"ओह !"

अभय हँसते हुए कहता है, "सुनिये दीदी, हरिजन संघ पर विश्वास करके कुछ रुपया दे दीजिये। हम लोग उन्हें अपने संघ की ओर से दे देंगे।

उन्हें झोंपड़ी बनाने का सामान दिला देंगे।"

"ऐसा ही करो।"

"बम्बई पहुँचकर चिट्ठी लिखना।"

पल्लवी चिट्ठी नहीं लिख सकी, क्योंकि घर पहुँचने पर उसे घर में अपने ख़िलाफ़ माहौल मिलता है। पापा जी और भाई साहब, दोनों डाँटते हैं उसे। समाज में बहती गंदगी के साथ मिलकर बहने की बदनामी उठाने पर उसे कोसते हैं। उसे पता लगता है कि पापा कांग्रेस की तरफ़ से एम० पी० बनने की कोशिश में हैं। फ़ौजी जनरल की तरह पापा उसका जीवन-पथ निर्दिष्ट करते हैं। कहते हैं, "विदेश जाओ, पढ़ाई-लिखाई करो। इस देश में रहोगी तो और कोई नया झमेला करोगी। तुम्हारी माँ धर्माश्रम में रहती है, इसी पर लोग काफ़ी बातें बनाते हैं।"

पल्लवी के पास पापा के सामने 'हाँ' कहने के अलावा कोई चारा नहीं। लेकिन विदेश जाने से पहले ही उसका नर्वस ब्रेक-डाउन हो जाता है। अंत में वह मानसिक बीमारी के इलाज के लिए एक नर्सिंग होम में चली जाती है।

अभय भंगी लोगों का उपकार चाहकर भी नहीं कर पाता। क्योंकि बाढ़ा गांव में भंगी टोला अब केवल जली हुई भीत-भर है। भंगी लोग आख़िरकार सरकारी फ़ारेस्ट की ज़मीन पर कांस की झोपड़ी बनाने में लगे हैं। अभय कहता है, "यहाँ से भी तुम लोगों को एक दिन भगा दिया जायेगा।"

"तब कहीं और चले जायेंगे।"

"बाकूलाल से बात करके भागाड़ के नज़दीक की ज़मीन क्यों नहीं ले लेते?"

"वहाँ पानी नहीं है।"

"वहाँ अगर जाना चाहो, और मैं कुंआ खुदवा दूं तो?"

मोहन दुसाध संत की तरह आँखें चढ़ाकर कहता है, "वहाँ की ज़मीन के नीचे पानी नहीं है, और फिलहाल सरकार भी कोई नया फारेस्ट नहीं लगा रही। अभी क्यों उठायेंगे? हम तो पेड़ भी नहीं काटते, फारेस्ट को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते।"

"मैदान के उस किनारे से वह जो नदी गयी है, वहाँ का मैदान किस का है ? तुम लोग वहाँ भी जा सकते हो।"

"क्यों ?"

"पानी मिल जाता।"

मोहन कड़वी हँसी हँसता हुआ कहता है, "मैदान किसी का है, ऐसा तो मालूम नहीं। गायें चरती हैं, मेला लगता है, लगान कभी कोई वसूलता नहीं। हो सकता है, सरकारी जगह हो। लेकिन हमारे जाते ही उठा नहीं दिये जायेंगे, क्या मालूम ?...तब पता चलेगा कि किस की दखल में है। और हमें पता नहीं। मगनलाल वगैरह जाना चाहें तो चले जायें।"

मगनलाल भयभीत होकर कहता है, "नहीं-नहीं, हम इन्हीं के पास रहेंगे।"

आखिर में अमय चला जाता है। जाते समय बाजार वाले दिन तोहरी में मिलने को कहता है।

पल्लवी के रुपयों से कुछेक बोरी मक्का और दो बोरी खेसारी दाल ख़रीद कर देता है अमय और कहता है, "दुसाधों और भंगियों के लिए है।"

राका कहता है, "उस लड़की ने रुपया दिया था। है न ?"

"तुम्हें इससे क्या मतलब ?"

"बाबू, तुम समझते हो कि हम घास खाते हैं। तुम्हारे पाँवों में बेगनी लगी हुई जूती है, टूटी कुरसी पर बैठते हो। जिंदगी में पहली मरतबा तुमने हमारी सहायता की ! बस, इसी से समझ लिया। चलो, भई मगनलाल।"

दुसाधों की तरह भंगी भी गणेश जैसों के हाथों से निकल जाते हैं। चन्द्रभान कहता है, "ओ गणेश, अब सहाम की सफ़ाई का क्या होगा ?"

"भंगियों को जाकर बुलवा लाओ।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

"तब बिना सहाम के काम चलाओ।"

"सालों की इतनी हिम्मत ? चले गये ?"

"पाप निकल गया, समझो।"

"नालियाँ निकालते थे, कूड़ा-करकट साफ़ करते थे।"

"गंजू आदि हैं या नहीं ? सव लोगों की खरीदी प्रजा..."

"वहाँ पर किस अधिकार से रह रहे हैं वे ?" यह पूछने पर एस० डी० ओ० साहब ने दस वातें सुनायी।

"वह जो रंडी लड़की आयी थी न, उसका वाप दिल्ली में सभी को जानता है। फ़ारेस्ट की जमीन अभी पड़ी रहेगी। वाद में वहाँ पेड़ लगेंगे। इस समय इस वात को लेकर कोई हंगामा नहीं होना चाहिए।"

"खैर, जो हुआ सो हुआ।"

"उन्हें लाकर फिर से वसाया गया तो वे फिर से जला देंगे टोला।"

लड़की के हाथ से निकल जाने पर गणेश का पौरुष आहत हुआ है। यह वात सभी समझते हैं, लेकिन कोई यह नहीं समझ पाता कि ऐसी लड़की मंगालाल के घर में थी कैसे ?

लछिमा के कानों में भी यह ख़वर जाती है। वह हरोआ से कहती है, "अच्छा ही हुआ। हम लोग भी शायद हरिजन ही हैं। अगर घर छोड़ना पड़ा तो फारेस में जाकर रहेंगे।"

हरोआ ख़ूव हँसता है। मजाक की ऐसी वात उसने कभी नहीं सुनी थी। कहता है, "ऐसा कभी हो सकता है क्या ?"

"हो सकता है," लछिमा भी मजाक करती है।

"तुमने उसे पाल कर वड़ा किया।"

"तुम क्या जानो ? गजमोती सिंह ने अपनी माँ को भूखा मारा था, जायदाद के लालच में। उसके नाना ने माँ को सम्पत्ति दे दी थी और माँ के मरते ही वह उसे मिलती, इतना इंतजार भी वह नहीं कर सका।"

"लेकिन यह ऐसा नहीं करेगा !"

"क्या पता, कारनामे सुनकर तो मुझे डर लगता है। क्या काम किया है ! छिः-छिः ! सारे मालिकों को साथ लेकर भंगी टोले को जलाया ? उस दिन अगर वे लोग पहले से जंगल में नहीं भाग गये होते तो ? हाय माँ ! शायद जिंदा ही जला देते उनको।"

हरोआ भीषण वेचैनी दवाकर कहता है, "चुप रह, लछिमा ! मत वोल, मुझे डर लगता है।"

## छह

समय पर गणेश की वहू एक लड़की प्रसव करती है और लड़की जनने के अपराध-बोध से बेहद दुखी भी होती है। गणेश से विनती करती है, "अभी मैं चलने-फिरने काबिल नहीं। देह में जोर नहीं रहा। पिताजी से कहो कि गंगा को भेज दें।"

"गंगा कौन है ?"

वह धीरे-धीरे कहती है, "जिसने मुझे पाला-पोसा है।"

"तेरे बाप की रखैल है क्या ?"

वह चुप रहती है।

गणेश ने निर्लिप्त स्वर में पूछा, "उसकी एक लड़की है न ?"

वहू की आँख भय से चौंक उठी। बोली, "रुक्मिणी नहीं रहेगी। यानी कि हमारे घर में भी नहीं रहेगी।"

"क्यों ? वह तो तुम्हारी बहन लगती है। रामरूप क्या उस पर नज़र डाल रहा है ?"

वहू का चेहरा लाल हो जाता है कहती है, "रुक्मिणी की शादी तय है, उसने खुद ही तय की है, नाहारा के एक अहीर से। गंगा सौ रुपये माँगती है। रुपया जुगाड़ होते ही वह रुक्मिणी से शादी कर लेगा।"

"अच्छा, कहूँगा तेरे बाप से।"

नाथू की बेटी में अब उसकी कोई रुचि नहीं रही। वैसे भी अब ज़रूरत भी क्या है उसकी ? वह मिसिर के पास जाकर बैठ गया। भूमिका बाँधे बिना कहने लगा, "मेरे पिता देवता थे, लेकिन मेरी शादी उन्होंने देख-भाल के नहीं की। न इससे घर का काम-काज होता है, न परिवार की देखभाल। अरे तोलने पर तो लछिमा ही भारी निकलेगी इसमें। ऐसी दस औरतें मिलकर भी उसके नाखून बराबर नहीं।"

"सो तो ठीक बात है।"

"अब क्या किया जाये ? वह तो लड़की बियाए बैठी है।"

"इस लड़की को तुम्हारे सिर लादा है बरकन्दाज ने।"

"हुँह ! ज़िन्दगी बरबाद कर दी।"

"तुम खुद ही इसका इंतजाम कर सकते हो।"

"वही करूँगा। और देवता...?"

"क्या ?"

"यह बताओ कि मारपीट, आगज़नी की वारदात करने पर पागलपन-सा क्यों छा जाता है ? क्या ऐसा दूसरों को भी होता है ?"

"तुम में तो देवता का अंश है। तुम्हारे लिए नियम कुछ दूसरे ही हैं।"

विक्षुब्ध होकर गणेश ने कहा, "घर की बहू का मान रखने के लिए लछिमा को दूर हटाना पड़ा। उसने मेरे ही नौकर से शादी कर ली। लेकिन बहू ने मुझे कुछ नहीं दिया, यहाँ तक कि एक लड़का भी नहीं।"

"आगे तो हो सकता है।"

"भगाकर शादी कर लूं क्या, फिर से ?"

"गणेश ! अगली बार तो लड़का हो सकता है न। तुम्हारी माँ के भी तो पहले लड़की हुई थी। बाद में लड़का हुआ।"

यही सोचते-सोचते उखड़े मन से गणेश नाथू सिंह के घर पहुँचता है। वहाँ उसे मिलता है अभूतपूर्व सम्मान। जैसे नाथू सिंह भी स्वीकार कर रहा हो कि गणेश को उसकी लड़की पर गुस्सा होने का पूरा अधिकार है। गणेश ने अपनी स्त्री का प्रस्ताव सामने रखा। नाथू बोला, "गंगा क्या करेगी ? गठिया से मर रही है, चल-फिर भी नहीं सकती। रुक्मिणी को भेज देता हूँ। वैसे उसके वहाँ जाने पर नौकर लोग बिगड़ सकते हैं। तुम्हारे यहाँ अनुशासन बड़ा कड़ा चलता है। वहीं रहे तो अच्छा है। बड़ी बेशर्म लड़की है। कमू अहीर के साथ भाग रही थी। मैंने कहा, 'पहले कमू दहेज का रुपया लाये, और फिर शादी करके ले जाये।' तुम उसी को ले जाओ।"

"भेज दीजिए।"

"उसके साथ बात-बात मत करना। छोकरी बकती बहुत है।"

गणेश ने कड़वी हँसी हँसकर कहा, "नौकरों के साथ क्या सुलूक करना चाहिए, हमें अच्छी तरह मालूम है। लछिमा ने कभी मुझे 'छोटे मालिक' के अलावा किसी और नाम से नहीं पुकारा।"

"सो तो ठीक है। ठीक ही कह रहे हो तुम। बेटा, मैंने तुमसे ग़लत

नजरिए से कुछ नहीं कहा। प्यार से ही कहा है।"

"आप कह सकते हैं। मैं आपकी बात मानता हूँ। आपकी बात मानकर ही मैंने लछिमा को हटा दिया था। आज घर का क्या हाल है, चलकर देखिए। दोनों दासियाँ पता नहीं क्या करती हैं! चावल-गेहूँ और दालों की बोरियों को चूहे कुतर रहे हैं। गुड़ पर फफूँद लग रही है। घर की लिपाई-पुताई तक नहीं। जैसे चारों तरफ उदासी छायी हो। सीधा तक मैं ही निकालकर देता हूँ।"

"बड़ी शरम आती है, गणेश। मेरी लड़की के लिए...।"

"मेरा नसीब ही ऐसा है।"

नापू सिंह ने अपनी स्त्री से कहा, "गणेश की बातें झूठी नहीं हैं। दो नौकरानियों के साथ मिलकर भी घर का काम नहीं चला सकती तुम्हारी बेटी। कोई और मर्द होता तो कभी की दूसरी शादी कर लेता या रखैल रख लेता।"

"वहाँ रुक्मिणी को क्यों भेज रहे हो?"

"तुम्हारी बेटी के सुख के लिए।"

"हाय राम! उसकी शादी नहीं होगी क्या?"

"वहाँ वह नौकरानी बनकर जा रही है। गणेश कोई शादी करके नहीं ले जा रहा है। भेज दो छोकरी को। रामरूप उसे बहन जैसा तो मानता नहीं है। घर में फ़ालतू में छीछालेदर होगी।"

"और वहाँ कुछ हो गया तो?"

"उसमें मुझे क्या लेना-देना? कपू अहीर को क्या एतराज होगा? लड़की तो उन्हें मालिक की जूठी ही मिलनी है। शादी से पहले हो या बाद में।"

"अगर लछिमा की तरह उसने रुक्मिणी को घर में ही रख लिया तो?"

"रख ले तो रख ले। मर्द का बच्चा सब-कुछ कर सकता है।"

नापू की स्त्री चुप हो गयी। हाँ, उनके समाज में पुरुष सब कुछ कर सकते हैं। उसने देखा तो नहीं, मगर सुना जरूर है कि उसके पिता की दादी-नानी के जमाने में राजपूताने के गाँव-गाँव में लड़की का पैदा होना

इतना अवांछित माना जाता था कि नवजात पुत्री को हँडिया में रखकर ज़िन्दा धरती में गाड़ दिया जाता था। हाय अम्मा! जैसे लड़की की डरी-डरी, भयभीत दृष्टि उसकी आँखों के आगे नाच जाती है। लड़की पैदा हो तो इसमें माँ का क्या दोष? गहरी साँस लेकर उसने रुक्मिणी को बुलाया और जरूरी हिदायतें दीं। मालिक के ही वीर्य से रुक्मिणी पैदा हुई है। इस तरह रुक्मिणियाँ पैदा होती ही रहती हैं। बदनसीब रामरूप अपनी लगभग हमउम्र गोलमटोल स्त्री के बजाय अब रुक्मिणी पर डोरे डाल रहा है।

रुक्मिणी चौंक पड़ती है और नाथू की स्त्री के पैर पकड़ लेती है। कहती है, "मालकिन, ऐसा मत करो, पैर पड़ती हूँ। दीदी के मालिक से मुझे डर लगता है। अगर कोई बदनामी फैल गयी तो फिर कमू शादी नहीं करेगा। तब मेरा क्या होगा? मैं तुम्हारे पैरों में यहीं पड़ी रहूँगी।"

नाथू की स्त्री अक्षम थी। व्यर्थता और अनुकंपा से भरकर वह सिर्फ़ हथेली-भर सीधा कर पायी और बोली, "क्या करूँ, रुक्मिणी? रामरूप के बाप ने ही यह व्यवस्था की है। तुझे यहाँ न रखकर और कहाँ भेजें?"

"मेरी माँ भी एक ही शैतान है...। एक सौ रुपया, कपड़े, बर्तन भला वह कितने दिनों में जुटा पायेगा? अपनी गाय-वाय नहीं, दूसरे की गाय क्यों चराती है?"

गंगा बोली, "भला क्यों न माँगू? जगमोती का नाती रख लेता तो कम-से-कम लछिमा की तरह हर महीने रुपया मिलता, ज़मीन मिलती, लेकिन तूने मेरी बात कहाँ मानी? मैं क्या खाऊँगी? ये भगा देंगे तो कहाँ जाऊँगी?"

रुक्मिणी ने कहा, "मैं भाग जाती तो अच्छा रहता?"

नाथू सिंह की स्त्री ने कहा, "इतना मत डर। उस घर के भीतर कोई दूसरा मर्द नहीं जाता। गणेश तो लड़की पैदा होने की वजह से अपनी स्त्री का मुँह तक नहीं देखता।"

"कमू आये तो उससे भी मुलाकात नहीं होगी।"

गंगा ने ढाढ़स देकर कहा, "कमू आयेगा तो मैं उसे तरजीह दूँगी।"

एकांत में ले जाकर गंगा ने लड़की से कहा, "वहाँ जाने पर तुझे

रामरूप परेशान नहीं कर सकेगा। वह अभागा पहले बुढ़ियों की तलाश करता था, अब छोकरियों की खोज में रहता है...। याद रखना है कि तू उसकी बहन है ?"

नाथू सिंह बोला, "किस बात का डर? गणेश देवता का अंश है। वह नीची जात पर नजर नहीं डालता। उस लड़की की बात दूसरी है, वह ऊँची जाति की थी और भंगियों ने उसे अपने घर में रखकर अधर्म किया था। तू वहाँ नहीं गयी तो गंगा तुझे गजमोती के नानी के पास भेज देगी।"

"नहीं, कभी नहीं जाऊँगी।"

"वह तेरी माँ नहीं है क्या ?"

'तुम भी तो मेरे बाप हो,' यह कहने की रुक्मिणी की इच्छा हुई, पर बोली नहीं। रोती-पीटती गणेश के घर चली गयी।

उसे देखते ही पुतली ने गहरी साँस ली, "बोली, आ बैठ। रो मत।"

रुक्मिणी खाना पकायेगी। वह नाथू की बेटी है, रसोई में घुस सकती है। दरअसल रुक्मिणियों की माताओं के हाथ का पानी नहीं पिया जाता। रुक्मिणियों के हाथ का पानी चलता है। मालिकों को इसी में फ़ायदा है। मालकिनों के प्रसूति-गृह में बने जाने पर चौका कौन सँभाले? फिर रुक्मिणियों के इधर-उधर भटकने पर अनाचार फैल सकता है। फिर किया भी क्या जा सकता है? घी-दूध पर पली मालकिनों का स्वास्थ्य फिर नहीं लौटता, लेकिन दाल-रोटी, जूठन, भुनी मकई के दानों पर पली रुक्मिणियों की पिटी-पिटाई देह पचास पूरे होने पर भी ढीली नहीं होती। इसीलिए मालिकों को अछूत लड़कियों की छाया अखरती नहीं पड़ती।

रुक्मिणी खाना पकायेगी। गणेश का खाना सजाकर रख देगी। रुक्मिणी रसोई में रहेगी, लेकिन सोयेगी दासियों के साथ। दासियाँ घर की लीपा-पोती करेंगी, बर्तन मलेंगी, धूप में बिस्तर सुखायेंगी। सदर-घर की सफ़ाई करेंगी। गणेश तो खाना खाकर चला जाता है। बगल के कमरे में वह कपड़े उतारकर कचहरी का कामकाज करता है, रात में सोता है।

रुक्मिणी वहाँ भी रम गयी। सरल आश्चर्य से एक दिन उसने पूछा,

"दीदी, मालिक तुम्हारे साथ नहीं सोता ?"

"नहीं, रुक्मिणी !"

"तुम सुखी नहीं हो क्या ?"

पुतली ने मुंह ढँक लिया हथेली से। चुपचाप आँसू बहाने लगी। रुक्मिणी ने मन-ही-मन सोचा, सभी मालिकों के घर की कहानी एक जैसी है। घरवाली मन को भाती नहीं। सिर्फ़ चन्द्रभान की स्त्री सुख से है।

रुक्मिणी का दर्जा इन दासियों से कुछ ऊँचा है। उसने दासियों से कहा, "दोपहर में बैठकर कथरी सिया करो।"

गृहस्थी का हालचक्का मजबूत हाथों से पकड़ लिया। धीरे-धीरे घर की हालत बदल गयी। पुतली की देह में भी स्फूर्ति आ गयी थोड़ी-सी। बाल सँवार कर उसे सजाकर रखती है रुक्मिणी। नन्ही-सी बच्ची को दुलारती है। गणेश के मौजूद न होने पर वह फटाफट बाहर जाकर अन्न-भंडार का हाल-चाल ले आती है।

मिसिर के पास जाकर बोली, "रोज दासी आया करेगी। ठाकुर जी का चरणामृत दे देना, देवता ! दीदी को दूंगी।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं।"

गणेश ने भी घर के परिवेश को बदलते हुए देखा। भोजन की थाली में कई-कई तरह के व्यंजन नजर आने लगे। स्त्री से कहा, "बड़ा एतराज़ कर रही थी तू। अब देखा न, मैंने अच्छा ही किया।"

"हाँ, अच्छा ही किया तुमने।"

इसके बाद स्त्री ने डरते-डरते कहा, " लड़की का नाम रखना है।"

गणेश ने ख़ुश होते हुए कहा, "मिसिर से कह दूंगा।" फिर बोला, "मिसिर ने कहा है कि इस बार तेरे लड़का होगा।"

"एक बार गैबीनाथ जाने दोगे ?"

"क्यों ?"

"वहां मनौती मानने से लड़का पैदा होता है।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं ? गाड़ी में चली जाना। साथ में कौन जायेगा ?"

"तुम नहीं चलोगे ?"

"नहीं।"

"तो फिर यही लोग चली जायेंगी दामिनी और रुक्मिणी।"

"ठीक है, ऐसा ही करना।"

बद बैलगाड़ी में यात्रा। लेकिन घर की कैद से बाहर निकलने की ख़ुशी। मुक्ति की साँस। रास्ते में परदा हटाकर देखते हुए जाने का मज़ा, पूजा के बाद दुकान में तिलुआ और खाजा खाने का मज़ा...रुक्मिणी के लिए तो यह और भी ख़ुशी का दिन था। कमू के छोटे भाई से मुलाक़ात हो गयी। उसने कहा, "क्या जानती है तू? दादा कागज पर गहीं कर रुपया कर्ज ले रहा है। महाजन बनारस से लौटकर रुपया दे देगा।"

"कब, गिरधर कब?"

"तीन महीने बाद।"

पुतली ने कहा, "देख रुक्मिणी, वैद्यनाथ कितने जाग्रत देवता हैं! पूजा के एक घंटे के भीतर ही हाथों-हाथ तुझे फल मिल गया।"

रुक्मिणी ने गहरी आत्मीयता से कहा, "तुम्हारा भी कल्याण होगा, दीदी! तुम्हारे लड़का पैदा होगा। मालिक तुम्हें प्यार करेगा। दुख के बाद क्या सुख नहीं आता? तुम्हारी जैसी सुन्दर पत्नी पर मालिक का दिल जरूर लौट आयेगा।"

पुतली ने अजीब सी हँसी हँसते हुए कहा, "लड़का होगा तब न?"

*"लड़की भी तो कितनी ख़ूबसूरत हुई है।"*

"बाप ने नजर तक उठाकर नहीं देखा आज तक।"

लड़की के प्रति गणेश की अप्रसन्नता उस समय कुछ हद तक दूर हो गयी जब मिहिर ने बताया, "लड़की सुलक्षणा है। भाग्यशाली है। राशि की गणना में 'म' अक्षर से नाम आता है। तुम्हारे पिता का नाम भी मेदिनी था। इसका नाम महालक्ष्मी रखो।"

"इतना बड़ा नाम?"

"मौनी कहकर पुकारना।"

"आप पुकारें। इधर मुश्किल खड़ी हो गयी है।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"अरे हिसाब का खाता खोलकर देखा तो पता चला कि पिता जी की बीमारी के समय से कुछ साल तक का हिसाब देखा ही नहीं। मिहारी

चमन, फागूलाल, आदि गंजू लोगों का कर्ज बारह-चौदह साल तक काटा ही नहीं। उनके हिस्से की फ़सल देता गया। अब हिसाब करने पर पता चला कि उन्हें कुछ भी नहीं दे पाऊँगा आगे से।"

"ओह, यह बात है।"

"फिर भी अधर्म नहीं करूँगा। कुछ न्याय तो करना ही होगा। मगर वह थोड़ा झंझट करेंगे। और उसके बाद मानेंगे ही।"

"झंझट क्यों करेंगे ?"

"देवता, आप यह नहीं समझ सकेंगे। क्या समझाऊँ? पेट-भर खाना और देहाड़ी पर काम करेंगे ये लोग अब। इनकी ज़मीन भी चली जायेगी। उस समय मेरी अपनी जाति के लोग ही कान भरेंगे। मजदूरों को फुसलाएँगे।"

"हाँ, दुसाधों के चले जाने पर खेत-मजदूरों की कमी पैदा हो गयी है जरूर। सभी लोग यही कहते हैं। इनके जाने पर भी मुश्किल ही होगी।"

"गाँव-गाँव में झगड़ा चल रहा है। देखें, क्या से क्या होता है! दरअसल, पहले का क़ानून अच्छा था। कभी प्रजा भागती नहीं थी। अब बस का रास्ता बन गया है। उस समय कहाँ थे ये सारे लोग ? अब कोई बना रहा है हरिजन संघ, कोई गांधी मिशन। सब इन्हें उकसा रहे हैं। वाह रे! क्या वह इन्हें खाना देंगे? रोजी देंगे? कौन देगा इन्हें पेट-भर भात और सिक्के?"

"यही तो बात है। ये लोग समझते ही नहीं। सिर्फ़ एक हरोआ समझता है।"

कहते ही मिसिर समझ गया कि यह बात उसने अपने अधिकार से बाहर की कर दी है। सुनते ही गणेश का चेहरा पत्थर हो गया। बोला, 'हाँ हरोआ। लेकिन हरोआ का हिसाब अलग है देवता, आप नहीं जानते शायद। कुछ दिनों से वह आ क्यों नहीं रहा है? दो दिन से एकदम ग़ायब क्यों है?"

"बुख़ार में पड़ा है। गर्मी लग गयी है।"

हरोआ से लछिमा ने भी कहा, "यह कैसी बात हुई? बुख़ार उतरते ही तुरत काम पर जाना चाहते हो? वहाँ तुम किस शर्त पर काम कर रहे

हो ? अरे बीमार होने पर तो गाय-भैंस तक को छुट्टी मिलती है।"

हरोआ कभी लछिमा को 'तू' कहकर नहीं बोलता। हमेशा तुम कहता है। जब लछिमा मालिक मेदिनी सिंह की रखैल थी, तभी का अभ्यास है यह।

लछिमा गुस्से में घड़ा लेकर बाहर निकली। रास्ते में गणेश मिल गया। हैरान होकर लछिमा बोली, "छोटे मालिक, इतनी धूप में क्यों निकल पड़े ?"

"हरोआ की खबर लेने के लिए।"

"बहुत बीमार पड़ गया है। ओह, कितना बुखार चढ़ा था उसे ! आज ही बुखार उतरा है। मगर कुछ खाया नहीं उसने।"

"बदन में थोड़ी ताकत आते ही काम पर चला आये।"

"जरूर !"

फिर गणेश ने कहा, "और किस पर विश्वास करूँ ? दो दिन बीतने पर आढ़तिये के आदमी आयेंगे। मकई, सरसों, मिर्च वगैरा तोलकर लानी होगी। मेरी हालत क्या है, देखो। एक भी ऐसा आदमी मेरे पास नहीं, जिसे जिम्मेवारी सौंप दूँ।"

"अकेले पड़ गये हो ?"

"तो तुम उसे भेज देना।"

गणेश ने आगे बात न की और अचानक पलटकर चल दिया। लछिमा को लगा कि शायद गणेश को हरोआ की बीमारी की बात पर पूरी तरह से यकीन नहीं हुआ है। सोचने से आश्चर्य भी लगता है। इतने साल तक उसने मुँह सीकर सिर्फ खुराकी पर ही काम किया है। इतने साल तक कभी भी पैसा तक नहीं दिया उसे। ठगना जानता नहीं, कामचोर भी नहीं है। फिर गणेश ने कैसे सोचा कि वह मक्कारी में सोया हुआ है ?

घर लौटकर लछिमा बोली, "ताकत आने पर काम पर चले जाना।"

"कल ही चला जाऊँगा।"

"नहीं, कल नहीं। गणेश से मैंने कह दिया है। उसने भी 'हाँ' कर दी है।"

"लछिमा, इस बार कुछ झंझट जरूर खड़ा होगा।"

"कुछ नहीं होगा।"

"तुम नहीं समझ रही हो।"

"खूब समझ रही हूँ।

दरअसल उस समय तक लछिमा नहीं समझी थी। वह हरोआ के लिए रोटी सेंकने बैठी। बोली, "यह लड़का मेरी गोद में बड़ा हुआ। लेकिन अब लगता है कि उसे पहचान नहीं पा रही हूँ।"

"बचपन में तो मेरी भी गोद में काफी चढ़ चुका है।"

"धीरे-धीरे उस पर बाप का रंग चढ़ रहा है। उसकी वजह से भंगी लोग इतने दिनों से जहाँ बसे थे, उस जगह को छोड़कर चले गये। अब देखो, कौन-कौन जाता है!"

हरोआ सीधा आदमी है। निष्पाप हँसी हँसता हुआ बोला, "यह कैसी समझदारी है! मालिक क्या अपनी खेती खुद करेगा? मैला खुद साफ करेगा?"

"भंगी टोले की ओर देखने से कैसा अद्भुत लगता है! जैसे श्मशान हो," लछिमा सिर हिलाते हुए बोली, "वारिस होने पर यहाँ जंगल खड़ा हो जायेगा।"

परित्यक्त भूमि पर बाढ़ा गाँव में कोई भी घर नहीं बनाता है। दुसाधों के चले जाने पर उनकी परित्यक्त भूमि पर जंगल खड़ा हो गया है। भंगियों की वासभूमि भी जंगल बनेगी।

गणेश भौंहें सिकोड़कर भंगियों की वासभूमि की ओर ही देख रहा था। देखते ही ख़ून खौल उठता है। पल्लवी के चले जाने के अपमान का बदला भंगी टोला जला देने पर भी नहीं चुका। और तभी उसकी नजर पड़ी रुक्मिणी पर। नाथू सिंह के घर से निकल रही थी। गंगा ने उसे पुकारा, लेकिन रुक्मिणी ने नहीं सुना और दौड़कर चली गयी। उसने गणेश को भी नहीं देखा। रुक्मिणी को देखने का गणेश का यह पहला मौक़ा था। इतने दिनों से रुक्मिणी उसके घर पर काम कर रही है, लेकिन गणेश ने उसकी तरफ़ नजर उठाकर नहीं देखा था। आज देख लिया। ख़ून पहले से ही खौल रहा था। कुछ और ज्यादा खौल उठा।

रात का खाना-पीना हो गया। धोकर हाथ पोंछते हुए उसने स्त्री

की ओर ताका। बोला, "रुक्मिणी से कह दे, पान-समोसा दे जाये।"

"तनिक रुको।"

"मेरे कमरे में भिजवा दो।"

"नहीं!" बहू डर से लिहाज भी भूल जाती है।

"क्यों? क्या ऐसी बात पहली बार सुन रही है? तू बापू की बेटी है न?"

"यह काम मत करो।"

"ज्यादा बात बढ़ायेगी तो तुझे यहाँ से निकलना पड़ेगा और यह यहीं रहेगी।"

रुक्मिणी बरामदे में पानी रखने आ रही थी। क्या हो रहा है, यह समझ पाने से पहले ही गणेश ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं ..नहीं...नहीं!" रुक्मिणी आर्त स्वर में रोते हुए चिल्ला पड़ी, "दीदी!"

गणेश ने उसे जोरदार झापड़ मारा।

तृप्ति, अतिशय तृप्ति। खून की हलचल धीमी पड़ने लगी। रुक्मिणी के 'नहीं-नहीं' शब्द रुदन में बदल गये। रुदन के बाद कराह में। उसके बाद सब कुछ शांत। सिसकियों की आवाज। गणेश ने बत्ती की लौ बढ़ा दी। रुक्मिणी की आँखें भय से चौड़ी हो गयी हैं। गणेश फिर उत्तेजित हो उठा। रुक्मिणी अब की बार रो भी न सकी। तृप्ति। नींद आ गयी। अचानक गणेश को अपनी एक समस्या का हल मिल गया। एक बुनियादी समस्या का। रुक्मिणी उसे उत्तेजित कर सकी। तुलसी नहीं कर सकी। गणेश हँसने लगा। उसने रुक्मिणी को धक्का देते हुए कहा, "अब जा यहाँ से।" फिर उनींदे स्वर में बोला, "कल तुझे धोती-कपड़ा खरीद दूँगा। ये तो सब फट चुके हैं।"

रुक्मिणी उठी। बरामदे में ही बैठी रही वह। बूढ़ी दासी ने आकर कहा, "चल, खाना खा ले और सो जा। नखरे क्यों कर रही है? ऐसा तो होता ही रहता है।"

फिर भी रुक्मिणी बैठी रही। तुलसी की दबे गले से रोने की आवाज सुनायी दे रही थी, 'ऊँ-ऊँ-ऊँ'। धीरे-धीरे वह उठी।

[illegible]

"मैं कुछ नहीं जानती, रुक्मिणी!"

दामिनी बोली, [illegible] रुक्मिणी! [illegible]

[illegible] और उधर मन्दिर में शहद मांगेगी?"

"मन्दर न जाऊँ?"

"नहीं।"

"ठीक है, नहीं जाऊँगी।"

"इस तरह बुतही-सी क्यों होती जा रही है दिन-ब-दिन? तू बापू और मां की औलाद है। तेरे जीवन में यह क्या कोई नयी बात है? ये लोग कहना चलाते आते हैं। यहाँ क्यों चली आयी?"

"रामरूप पीछे पड़ गया था।"

"अब क्यों डरती है फिर? सोते में चौंक क्यों पड़ती है बार-बार? गिरधर ने कहा था, तीन महीने बाद कमू आयेगा। तीन महीने तो हो रहे हैं।"

"कौन? कौन आयेगा?"

रुक्मिणी काँपने लगी। हाथ से दाल का बर्तन गिर गया। दासियाँ एक-दूसरे की ओर देखने लगीं। बूढ़ी ने कहा, "यहाँ कौन देख रहा है कि क्या हुआ! तू रुक्मिणी को ले जा। जा। मैं मालिक का खाना लगा देती हूँ।"

उस रात रुक्मिणी गणेश की बगल में निद्राहीन, अपलक अँधेरे में ताकती रही। तीन महीने। इतनी जल्दी तीन महीने पार हो गये। क्या वह किसी दुःस्वप्न की कैद में रही है? समय का हिसाब नहीं लगाया। गैबीनाथ से लौटते समय रास्ते में गिरधारी मिला था। उसने कहा था, 'कमू कागज पर सही कर रुपया लायेगा। तीन महीने लगेंगे। महाजन बनारस गया है।' तीन महीने होने जा रहे हैं। कमू आ पहुँचेगा। तब रुक्मिणी क्या करेगी? अचानक कमू अहीर अगर आ ही पहुँचे तो! यह तो सिर्फ़ मालिक के साथ रहना नहीं है।

सवेरे छुट्टी लेकर रुक्मिणी गंगा के पास गयी। गंगा से कानाफूसी में कई बातें हुईं। बोली, "पेट में बच्चा लेकर मैं कमू के पास न जा सकूँगी। तू दवाई ला दे।"

गंगा का मुँह सूख गया। बोली, "तू जा। मैं दवाई लेकर आती हूँ। दवा तो जानती थी भंगी बहू। हाय राम! यह क्या हो गया?"

मंगालाल की स्त्री ने सब-कुछ सुनकर कहा, "पेट की लड़की को जानवर के घर भेजा? कोई भेजता है ऐसे?"

फिर उसने एक जड़ी दे दी। बोली, "गंगा, अगर अमर होना होगा तो तीन दिन में हो जायेगा। नहीं तो नहीं होगा। क्या करें, पहले महीने ही आना चाहिए था।"

पिंजरे के पंछी की तरह क़ैद हो गयी थी रुक्मिणी। उसे आदर-बाहर ही नहीं निकलने दिया जाता था। दवा लेकर गंगा बाय का दर्द भू

उधर दौड़ती-फिरती है। रुक्मिणी की खोज में नाथू सिंह के लिए उसकी जरूरत 18 वर्ष पहले रुक्मिणी के जन्म के बाद से ही खत्म हो चुकी है। जब गंगा और एक बूढ़ी गाय रहती है—परित्यक्त, गोशाला के छप्पर तले। जिन गो-धन से नाथू अमीर बना है वे सभी हरियानवी गायें सीमेंट के फ़र्श वाली पक्की गोशाला में रहती हैं। अपने उसी छप्पर के नीचे गंगा ने रुक्मिणी को बिठाया और सिल पर जड़ी पीस कर खिला दी। बोली, "कुछ देर यहीं लेटी रह।"

गंगा आंगन धोने और घर में झाड़ू-बुहारू करने के लिए चली गयी।

अचानक गोशाला बुहारने वाली मोरी आकर बोली, "ए गंगा! रुक्मिणी वहाँ लेटी छटपटा रही है, जा देख तो। तू नहीं जानती कि वह आयी हुई है?"

"हे राम!"—गंगा झाड़ू फेंककर दौड़ी। मोरी भी कौतूहलवश साथ हो ली। रुक्मिणी ने कहा, "माँ, देह में भयानक पीड़ा है। साँस लेने में भी तकलीफ हो रही है।"

मोरी ने रुक्मिणी के चेहरे पर पानी छिड़का, आँचल से हवा की। गंगा कहने लगी, "ऐसा कैसे हुआ?"

लड़की की ओर देखकर उसने आँख से इशारा किया। रुक्मिणी ने उसका इशारा देख लिया और बड़ी तकलीफ़ से बोली, "कई दिनों से अच्छा नहीं लग रहा है।"

मोरी वरकदाज की रखैल थी। वह इशारा तुरंत समझ गयी और पलक झपकते ही उनके पक्ष में शामिल हो गयी। बोली, "अँगीठी की गरमी में खाना पकाने से शरीर में गर्मी छा गयी है। सिर धो देती हूँ। तू लेटी रह। गंगा, तू चली जा। तेरा काम तो खत्म हो गया। मैं इसके पास रहूँगी।"

"मौसी, उल्टी करूँगी।"

"कर ले। खड़ी हो जा। मैं तुझे पकड़े रहूँगी।"

उल्टी में कल रात की खायी रोटी, भाजी, साग और अचार निकल आया। मोरी बोली, "कहा था न मैंने। देह गरम हो गयी है, हजम नहीं हुआ। आहा, ऐसी अच्छी-अच्छी चीजें निकल आयी रे?"

उल्टी करके मुँह धोकर रुक्मिणी फिर सो गयी। गंगा ने नाथू को सारी बात बता दी। नाथू ने कहा, "बीमार हुई है, उल्टी कर रही है। जा कह आ कि ठीक हो जाने पर आयेगी।"

गंगा ने वहाँ पहुँचकर गणेश से यही कहा। गणेश ने कहा, "उल्टी होती तो क्या मैं इलाज नहीं कराता? ठीक है, जाओ। नहीं, अन्दर जाने की जरूरत नहीं। मैंने सुन लिया है।"

गंगा हाथ जोड़कर बोली, "जी, वह होश में नहीं है। बेहोश-सी पड़ी है। लगता है, बुखार भी हो गया है।" फिर उसने पेंच लगाया और बोली, "देह में कुछ लाल-लाल दाग-से भी दीख रहे हैं। कहीं चेचक न निकल आयी हो। मेहरबानी हो तो उसे कुछ दिन अपने पास ही रख लूँ।"

"चेचक?" भौंहें सिकोड़ते हुए गणेश बोला, "हाँ, हाँ, अपने पास ही रखो। ख्वामख्वाह डर रही हो। एक-दो दिन में ठीक हो जायेगी तब भेज देना। नौकरानी रखकर उनकी खोज-खबर लेने मैं तो जाने से रहा। तुम्हीं दे जाना उसे।"

"जी मालिक!"

गंगा लँगड़ाते-लँगड़ाते लौटी। नाथू ने कहा, "बदहजमी से उल्टी हुई है। मगर बेहोश क्यों है?"

नाथू की स्त्री भी उसे देखने आयी। बोली, "कोई खराब हवा लग गयी होगी, गंगा! अच्छी तरह नहलाकर धुला कपड़ा पहना दे। मोरी पानी पढ़कर पिला देगी। वह जानती है ये सब चीजें।"

दरअसल रुक्मिणी सो रही थी। बहुत दिनों की अधूरी नींद। माँ के फटे बिछौने पर पूरी बेफिक्री के साथ सो रही थी वह। शाम को नींद टूटी। बोली, "माँ, सिर फटा जा रहा है। अजीब-सा महसूस हो रहा है।"

"थोड़ा सहन कर।"

"हाँ, माँ। अब मैं नहाऊँगी।"

"इतनी शाम को?"

"देह मैली लग रही है न?"

कुएँ के चबूतरे पर बैठ कर रुक्मिणी नहाती है। माँ की धोती पहनती है। थोड़ा-सा गुड़ का शरबत पीती है। शरीर फिर से अस्थिर हो उठता है।

"माँ, माँ ! पास ही में रहो।"

"थोड़ा सहन कर।"

"कमू से मत कहना।"

"नहीं, बिटिया !"

"उसी समय अगर उसके साथ चली जाती तो कैसा रहता !"

"यहीं से चली जाना।"

"तेरा रुपया।"

"नहीं लूंगी रुपया।"

"भाग जाऊँगी ?"

"हाँ रे। बहुत दूर।"

यंत्रणा से रुक्मिणी छटपटा रही थी। बोली, "किसी भी मालिक का दिल अपनी घरवाली से नहीं बहलता। इसीलिए इतनी तकलीफ है...। बहुत जलन है !"

"ले, पानी पी ले।"

"नहीं, उल्टी हो जायेगी ?"

नींद-भरी आँखों से रुक्मिणी बोली, "तेरे पेट से मैं पैदा हुई। मेरा भी कोई-न-कोई बाप था। गणेश को सब पता है। उसे समझाओ, कुँवारी के लड़के को कमीन कहा जाता है, कमीन ! कहता था, 'तेरे लड़का होने पर हम उसे गोद ले लेंगे।' लेकिन माँ, मैं मालिक के किसी कमीन बेटे की माँ नहीं बनना चाहती। कमू ने कहा था...।"

"अब तू सो जा।"

गंगा पाँव पसारे बैठी रही। बात से फूले दायें पैर की ओर देखती रही। मच्छर भगाने के लिए उसने कंडे जला दिये थे। कंडे राख हो गये हैं। मच्छर भिनभिनाने लगे हैं। रुक्मिणी की ओर देखकर उसकी व्यवहृत, जूठी, परित्यक्त, अँधेरे में डूबी और निर्वासित आत्मा की गहराई में कोई चीज़ काँप उठी। कितनी ही बातें। आज़ादी नहीं थी। आज़ादी आयी। गंगा जैसी औरतों को आज़ादी का पता ही न चला। उनके पुरुषों का जीवन मालिकों के हाथों में है, और लड़कियाँ हैं मालिकों के लिए। घर-घर का एक ही इतिहास है। मालिकों की ज़मीनों पर काम करना, हर

साल कर्ज लेना, और जमीन से हाथ धो बैठने पर नंगे भिखारी बनकर मालिक की जर-खरीद प्रजा बन जाना।

गंगा का पति भी इन्हीं में से एक था। भूमिहीन, सब तरह से हीन खेतिहर। उसने जिसके हाथ अपनी जमीन गँवायी, उसी मालिक का खेत-मजदूर बन गया। वैसे यह कानून भी इन्हीं गाँवों के मालिकों का बनाया हुआ है। सब-कुछ खो बैठने पर, किसी दूसरी जगह जाने तक की आजादी नहीं इनको। गंगा को भी नहीं, उसके पति को भी नहीं। लेकिन दुसाधों ने नया काम कर दिखाया। रुक्मिणी की जवानी जितने दिनों तक रहेगी, मेहनत करने की क्षमता उसमें जितने दिनों तक रहेगी, उतने दिनों तक उसे दुलारा जायेगा। उसके बाद गंगा की तरह उसे बूढ़ी गाय के साथ एक छप्पर के नीचे रहना पड़ेगा।

गंगा के बाद नाथू सिंह ने लखपतिया को पकड़ लिया था। अब साठ साल के बुड्ढे ने मोरी से कहा है, "अपनी नतनी को इधर भेज देना। मेरा काम करेगी।" मोरी ने उसी समय अपनी नतनी को जँवाई के यहाँ भेज दिया। एक बार रुक्मिणी के पेट का दुश्मन दफा हो जाये, गंगा कमू से रुपया नहीं लेगी। लड़की बेचकर रुपया कमाने का विचार उसके दिमाग में क्यों आया? दवाई का असर हो सकता है। मगनलाल की स्त्री की दवाई कभी नाकाम नहीं होगी।

मोरी कालिख-पुती लालटेन लेकर आयी। बिना भूमिका बाँधे बोली, "दवाई दी थी क्या? पेट ठहरा है क्या?"

गंगा ने सिर हिलाया।

मोरी ने सिर पीट लिया। फिर बोली, "इस बार आफत टल जाये तो मैं खुद उसे कमू के पास पहुँचा दूँगी। इनके अपने घरों में चैन नहीं और इनके घरों का मैला ढोते-ढोते हम भी मरें। इन हरामी बरकंदाज के लिए न जाने कितनी बार मैंने मगनलाल की बहू से दवाई लेकर खायी है।"

"असर होता था?"

"हुआ तो था।"

"दीदी, पैर पड़ती हूँ। किसी को बताना नहीं।"

"नहीं, किसी को नहीं बताऊँगी। यह दुख तो घर-घर में छाया है।

किससे कहूँ, बता ? बरकंदाज मेरे कंधे पर लदा रहा। आज मैं इनकी गोशाला साफ करके दो मुट्ठी सत्तू पर गुजारा करती हूँ। नाथू ने तुझे...। अब अपना हाल देख। कितने दिनों से रात में मुझे दिखायी नहीं देता। तू लँगड़ी हो गयी है।"

"रुक्मिणी की शादी हो जाये तो मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

"कहाँ ?"

"तोहरी में भीख माँगूंगी।"

"हे राम ! मैं भी जाऊँगी।"

"तेरे तो सभी जिन्दा हैं।"

"खाना कोई नही देता। और दे भी कहाँ से ?"

दोनों रुक्मिणी के अग़ल-बग़ल लेट जाती हैं और सो जाती हैं।

आशंका से भरे तीन दिन बीत गये। कई बार रुक्मिणी को उल्टी और दस्त हुए, लेकिन जो वह चाहती थी, नहीं हुआ। गंगा दुबारा भंगी टोले में गयी। मगालाल की बहू ने सब-कुछ सुनकर सिर हिला दिया। गंगा सामने बैठी लगातार आंसू बहाती रही। कमू के साथ रुक्मिणी की शादी की बात भी उसने उसे बता दी। उसके बाद वह लौट आयी। माँ का चेहरा देखते ही रुक्मिणी सब-कुछ समझ गयी। फिर रुक्मिणी ने कुछ नहीं कहा। माँ घर के घर के अन्दर गयी तो वह भी साथ हो ली।

नाथू की स्त्री ने पूछा, "अच्छी हो गयी ?"

"हाँ मालकिन !"

"काम पर जायेगी न ?"

"कल जाऊँगी।"

गंगा और मोरी दोनों एक साथ बोलीं, "क्या बात करती है !"

रुक्मिणी मुसकरायी। बोली, "माँ ! तेरे बदन में काफी मैल जमा हो गया है। चल स्नान करा दूँ। चल मौसी तू भी, आज तालाब पर चल !"

तालाब के किनारे तीनों काफ़ी देर तक बदन रगड़ती रहीं। फिर उन्होंने बाल धोये। उसके बाद नहायीं।

रुक्मिणी बोली, "आज मैं ठीक हूँ, माँ ! खाना मैं पकाती हूँ। मौसी, तुम भी अपना खाना ले आओ। एक साथ खाते हैं।"

खाते समय, बड़े स्वाभाविक ढंग से रुक्मिणी बोली, "माँ ! कितने महीने से उनके यहाँ जा रही हूँ। महीने में पाँच रुपये देने को कहा था, आज तक एक पैसा भी नहीं दिया।"

"माँग लेना ?"

"तुम्हीं माँग लेना, माँ !"

"क्यों ?"

"क्यों क्या ?"

"चाँदी के झुमका उतारकर दीदी के पास रखे थे, लेना भूल गयी।"

"माँग लेना।"

"तुम्हीं ले लेना।"

"तू नहीं माँगेगी ?"

"नहीं माँ ! मौसी, मैं कमू के पास जाती हूँ।"

"ठीक है, वहीं जा बेटी। सब-कुछ उससे कह दे। मारे-पीटे, जो भी कहे, अपनी गलती मान लेना। रुपया उसके पास होगा। दोनों वहाँ से चले जाना।"

मोरी बोली, "बस में चढ़ जाना, रामगढ़ होते हुए धनबाद।"

"वही करेंगे।"

गंगा और मोरी काफ़ी निश्चित हो जाती हैं। सारा दिन रुक्मिणी हलके मन से बातचीत करती रहती है। शाम को माँ के साथ मिलकर झाड़ू-सफ़ाई करती है। हाथों-हाथ सारे काम कर डालती है। नायू की घरवाली कहती है, "क्या बात है, आज गुड़िया माँ के आँचल में छिपकी हुई है ?"

रुक्मिणी थोड़ा मुसकरायी।

रुक्मिणी रात को भी माँ से लिपटकर सोयी। रुक्मिणी को स्वस्थ देखकर गंगा को नींद आ गयी, गहरी नींद।

गंगा काफ़ी सवेरे उठी, लेकिन उसने रुक्मिणी को बिस्तर पर नहीं पाया। चली गयी, मुझे बिना जगाये ही चली गयी। गंगा बहुत हैरान थी। इतने सवेरे क्या वह कमू के पास चली गयी या गणेश के घर कपड़े लेने गयी है ? कमू के यहाँ जाते हुए तो उसे मोरी को भी बुलाना था।

"यह भी ठीक।"

"लेकिन पैसा कहाँ है? गंगा सच कहती है। मालिक या पुलिस न भी माने, हम सभी जानते हैं। जब तक हमारे घरों में माँ, औरतें, बहनें, बेटियाँ रहेंगी, तब तक हम इस बात को जानते रहेंगे। बस, अब चलो। उठाओ रुक्मिणी को। मोरी, धनपतिया, तुम लोग गंगा को सहारा देकर धीरे-धीरे ले चलो। होशियारी से।"

रुक्मिणी को ढोकर सबसे पहले नाथू सिंह के घर लाया गया। नाथू सिंह तमतमाता चेहरा लिये आ खड़ा हुआ। बोला, "अफ़सोस है!"

बिगुलाल बोला, "मालिक, आपने ही उसे गणेश के घर भेजा था। वहाँ वह पिंजरे में बन्द रही। तीन दिन पहले घर लौटी थी, पेट में तीन महीने का बच्चा लिये। कमू के साथ शादी नहीं होगी। इसी बात के गम से उसे अपने से घिन लगने लगी थी। इसलिए गले में फंदा लगा लिया रुक्मिणी ने। अब क्या करें? तोहरी ले जायें? पुलिस चीर-फाड़ करेगी या जला दें? हमारा कहना है कि जला देते हैं, क्योंकि मालिक चीर-फाड़ करने से मालूम हो जायेगा कि रुक्मिणी के पेट में बच्चा है। तब मालूम किया जाये कि उसके साथ किसने कुकर्म किया?"

नाथू सिंह ने कहा, "बिगु, यह क्या चिल्लाकर बोलने की बात है?"

"हमें क्या मालूम? गंगा और रुक्मिणी आपकी हिफाजत में थीं। आपने उसे वहाँ भेजा था। वहाँ उसने चांद-सूरज तो देखे नहीं, फिर गर्भवती कैसे हुई? हम लोग तो हैरान हैं।"

"क्या होगा अब? तुम लोग क्या चाहते हो?"

"रुपया चाहिए, मालिक! रुक्मिणी को जलायेंगे, क्रिया-करम करने से प्रायश्चित होगा। गंगा अपनी सारी बिरादरी को भोज देगी। नहीं तो हम इसे यहीं छोड़ जाते हैं। आप ही सारा इंतजाम कीजिए। आपकी हिफाजत में ही थी यह लड़की।"

नाथू सिंह मन-ही-मन बिगुलाल को गाली देता है। फिर इस फैलती बदनामी का मुंह बंद करने के लिए निकालता है एक सौ का नोट। कहता है, "सिधा ले जा।"

बिगुलाल नाथू सिंह की आंखों में गड़ा कर सोचता है, 'जमीन मत लो,

खेत-मजदूर मत बनाओ।' बिगुलाल यही कहकर तो रोया था। फिर वह थोड़ा मुसकराता है और कहता है, "छोटे आदमियों के मुरदे को लेकर और चिंता न करें मालिक! आप आराम कीजिए।"

रुक्मिणी को लेकर वे लोग चन्द्रभान के मकान की ओर चल पड़ते हैं। नाथू सिंह जमीन पर बैठ जाता है और कहता है, "यह क्या हो गया?"

उसकी औरत बोली, "तुम्हें क्या? गणेश की मुसीबत है यह।"

"मुसीबत मेरी हो या गणेश की या चन्द्रभान की—सभी का सर्वनाश समझो। इस बात को लेकर वे रुपये इकट्ठा कर रहे हैं। इतना साहस?"

औरत बोली, "अब सोचने से भी क्या होगा?"

जीते जी तो नहीं, लेकिन मरने के बाद रुक्मिणी ने अपना असली परिचय दिया। राजपूत मालिक इस अप्रत्याशित घटना से घबराकर फटा-फट रुपये देने लगे। धीरे-धीरे दूर से एक विचित्र शव-यात्रा को देखकर दुसाध और भंगी भी दौड़े-दौड़े आते हैं। गणेश की हवेली के सामने शव को लिये पहुँचते हैं तो करीब दो-ढाई सौ लोग जमा हो जाते हैं।

*बिगुलाल आवाज देता है, "मालिक! मालिक!"*

गणेश बाहर आता है। दुसाध, भंगी—सभी खामोश खूँखार नजरों से उसे देख रहे हैं।

"यह क्या?"

बिगुलाल मुसकराया और ऊँची आवाज में बोला, "देख लीजिए, मालिक! लड़की नाथू सिंह की हिफाजत में थी। उसने उसे आपकी हिफाजत में भेज दिया था।" फिर भीड़ की ओर रुख करते हुए बोला, "कमू अहीर के साथ उसकी शादी होने वाली थी।" फिर रुककर गणेश की ओर मुड़ा और कहने लगा, "आपने काफी यत्न से रखा उसे। चाँद और सूरज तक ने *उसका मुँह नहीं देखा। लेकिन मालिक, तीन दिन पहले मालूम हुआ कि* यह तीन महीने की गर्भवती है।"

"क्या?"

"गर्भवती, मालिक! पेट में बच्चा! नहीं समझे? आपके घर के अंदर की नौकरानी। उस घर में आपके अलावा कोई पुरुष नहीं घुस सकता। लेकिन वह गर्भवती हुई। इसी बात में उसे अपने से घिन पैदा हो गयी थी।

आज तड़के उसने गले में फंदा डाल लिया। घर-घर घूमकर मालिकों से दाह-खर्च जुटाया है उसके लिए। यहीं रहती थी, इसलिए आपको भी एक बार उसके दर्शन कराने के लिए लाये हैं। भाइयो, अब बाजा बजाओ।"

तुरही और नगाड़ा बजने लगता है और दो सौ लोग एक साथ चिल्ला उठते हैं, "राम नाम सत्य है।"

गणेश भीतर जाकर दरवाजा बन्द कर लेता है। बिगुलाल वग़ैरा चले जाते हैं।

## सात

रुक्मिणी की आत्महत्या और शव-दाह को इस प्रकार एक अर्थ मिलता है। इस घटना की एक निश्चित प्रतिक्रिया भी होती है। गजमोती, चन्द्रभान आदि सभी मालिक लोग मन-ही-मन असंतुष्ट हैं। रामरूप नाथू सिंह से कहता है, "सभी गणेश को ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं।"

"रहने दो यह बातें।"

"रुक्मिणी उसी के कारण मरी है, दुसाध-भंगी फिर से गांव में घुसे और खेत-मज़दूरों ने दल बनाकर रुक्मिणी के क्रिया-कर्म के लिए चंदा उगाहा है।"

नाथू सिंह की आंखों के सामने रुक्मिणी का मृत चेहरा लगातार बना रहता है। वह उसके प्रेत-भय से पीड़ित है। कहता है, "गंगा अगर रुपयों की मांग न रखती तो कमू के साथ उसकी शादी कभी की हो जाती। इतना बड़ा कांड भी न होता।"

गजमोती सिंह कहता है, "गणेश ने उस दूसरी लड़की के लालच में भंगी टोले को आग लगायी। उसके बाद भी नाथू सिंह ने अपनी लड़की को गणेश के पास क्यों भेजा?"

"गजमोती ने भी उसकी मांग की थी।"

"जी यह तो होता ही है, लेकिन आत्मघाती कौन होता है?"

"गंगा भी मुंह पर लात मारकर चली गयी।"

"आत्मघाती कौन होता है ?"

यह बात लछिमा गंगा से कह रही थी, "गंगा, जो होना था सो हो गया। अब कुएँ में क्यों कूदती हो ? जानती हो, आत्मघाती कौन होता है ?"

"अब बरदाश्त नहीं होता, लछिमा !"

दरअसल गंगा को आत्मघात की कोशिश करते हुए लछिमा ने ही देखा था। मोरी के पास से उठकर आयी थी गंगा। उसे सीने से लगाये रखा था लछिमा ने बहुत देर तक। दुख से बोली, "क्या से क्या हो गया ?"

"मैं क्या करूँ ?"

"मेरे घर चलो।"

"नहीं," गहरी सांस छोड़कर गंगा बोली, "चलो, मोरी के यहां ही चलें। मुझे न पाकर चिंतित होगी।"

बिगुलाल, मोरी, लखपतिया—सभी लोग बत्ती उठाये गंगा को पुकारते हुए इसी तरफ़ आ रहे थे। लछिमा के साथ गंगा को देखकर मोरी बोली, "छोड़ दे इसे। तूने ही गणेश को पाला-पोसा है।"

लछिमा गंगा को उनके पास तक ले आयी और बोली, "शोक से व्याकुल है। कुएँ में कूदने जा रही थी।"

"लछिमा ने बचाया," गंगा बोली।

लछिमा बोली, "सुन मोरी, उस दिन रुक्मिणी की लाश उठाकर ले जाते समय बिगुलाल ने मेरे घर की ओर थूका था। ठीक ही किया था उसने। घिन लगती है मुझसे और मेरे घर से भी। लेकिन मोरी, मैंने जो कुछ भी किया, क्या अपनी मरजी से किया था ? तुम्हीं लोग बताओ। रुक्मिणी जैसा हाल होता तो मुझे भी मरना पड़ता।"

बिगुलाल ने कहा, "इन सब बातों को अब कहने से क्या होगा, लछिमा ?"

"नहीं, कहने दो मुझे। गुलाल, मेरी नानी ने मुझे मेहिनो के पास गिरवी रख दिया था। मुझे उन लोगों ने क्या दिया है ? तुम लोग जमीन देखते हो, यह भी गुलाल से तय था। मोहरकरन को भूल गये, बिगुलाल ?

मैंने खुद तुम्हारी लड़की के साथ उसकी शादी की बात नहीं की थी क्या? क्यों की थी? गणेश को क्यों पाला-पोसा था मैंने? मेरे चेहरे पर थूकते हो? मुझे लात मारो। क्या तुम्हें नहीं पता कि मेरे पति पर उसने कैसा अधिकार जमा रखा है, उसे क्यों पैदायशी गुलाम बना रखा है? लो मारो मुझे। गंगा, तू भी मार लात, पर मेरा यह भी कहना है कि उन्होंने जब नवजात शिशु को मुझ पर लाद दिया था तो मैंने उसे पाला-पोसा और अगर वह जानवर बनता है तो इसमें मेरी गलती कहाँ है?"

बिगुलाल कहने लगा, "बस करो लछिमा! रोओ मत। मोरी ने जो कुछ कहा, उसे भूल जाओ। गुस्से और दुख से जो इतनी बातें कहीं तूने; हमने क्या तुम लोगों को समाज में वापिस नहीं लिया है? क्या करें हम भी, लछिमा? एक-एक करके सब की जमीनें चली गयीं, और अब हमारी जान पर मालिकों का कब्जा है। जब भी जरूरत होती है, अपने खेतों में काम कराते हैं। इसके लिए साल-भर पेट बाँधकर पड़े रहो। पैदायशी गुलाम कौन नहीं है, बोलो तो?"

लछिमा उन लोगों को रुकने के लिए कहती है और पति की सहायता से घर के अन्दर से दो बोरी खींचकर ले आती है। कहती है, "यह ले जाओ बिगुलाल! ये तो घर पर खाते नहीं हैं। हम दो जने हैं, इतनी ही फसल उठायी थी। हाथ जोड़ती हूँ, इसे घर ले जाना। कल बोरी वापस कर देना।"

"लौटायेंगे कैसे?"

"छिः-छिः, बिगुलाल!"

मोरी बोली, "बोरी उठाकर घर ले चल अब।"

बिगुलाल जाते समय बोला, "साल में छह महीने खायेंगे, छह महीना क्या करेंगे? एक और बाड़ा बन गया है जंगल के बाहर। हम लोग भी वहीं चले जायेंगे और क्या करेंगे?"

"घर मत छोड़ना बिगुलाल, वरना वह उसे जला देगा।"

"परमिट बनवाकर लकड़ी बटोरेंगे छह महीने।"

"राँका दुसाध से पूछ लेना पहले।"

गंगा को साथ लेकर वे लोग चले जाते हैं। धीरे-धीरे लछिमा घर के

भीतर आकर हरोआ से कहती है, "गंगा को अपने यहाँ रखने के जुर्म में मोरी के घर वालों पर भी जुलुम हो सकता है।"

लछिमा की बात सही निकलती है। तभी नाथू सिंह के घर से नौकर आया और उसने कहा, "मोरी, तू गोशाला साफ करने क्यों नहीं आयी।"

"अब नहीं जाऊँगी, भरत !"

"क्यों ?"

"चल, मैं खुद बता आती हूँ।"

घर में नहीं घुसती मोरी। बाहर ही उकड़ू बैठ जाती है—दस जनों की तरह, बेगार खटते खरीदी प्रजाओं की तरह। बरकंदाज की रखैल होने के नाते अब जैसे इस मकान के भीतर गोशाला में, झाड़ू-बाल्टी में उसका विशेषाधिकार नहीं रहा। जैसे अभी कुछ दिन पहले नाथू सिंह ने उससे नहीं कहा था, "कोई और जवान लड़की देख। लछपतिया सूखती जा रही है।"

नाथू सिंह कचहरी में आकर बैठा और बोला, "यह क्या, मोरी ? यहाँ क्यों बैठी है ? जा, अन्दर जा।"

"ना मालिक !"

"इसका मतलब ?"

"अब और मेहनत नहीं होती," कहकर मोरी खड़ी हो जाती है। फिर बोली, "बीस साल की उम्र से इस घर में आयी थी। तुम्हारे बाप की बहुत सेवा की है मैंने। अब शरीर में दम नहीं है। अब अपने घर में ही रहूँगी।"

"ओह ! समझा।"

"चलें, मालिक !"

"गंगा को भेज देना। तुम लोगों को खाना नहीं मिलता, लेकिन उसे क्यों सुखाते हो ? यहाँ वह पहले जैसे रह रही थी, अब भी वैसे ही रहे। सारा जीवन उसने यहीं बिताया है। कहना कि अब उसे कोई काम नहीं करना होगा। बस खायेगी-पियेगी और आराम से रहेगी।"

"कह दूँगी।"

मोरी चली जाती है। पहले जैसी नरम आवाज में नहीं उसने नाथू सिंह

छोड़ दो। चिंता न करो।"

"रामू, अब तेरी बीवी को ले आते हैं।"

"कटाई हो जाने दो।"

"गंगा आ जाती तो अच्छा रहता। वह बाहर रही तो बात फैलेगी।"

"देखते हैं।"

गंगा सभी के सामने अपनी समझदारी जताती है। बिगुलाल से बोली, "उस मकान में अब नहीं घुसूँगी। उम्र काट दी उस मकान में, लेकिन वहाँ से जो कुछ मिला है, तुम लोग जानते ही हो। दुख से नहीं डरती हूँ। दुख में तुम लोगों का साथ देती जरूर, लेकिन मेरे यहाँ रहने पर नाथू सिंह तुम लोगों पर जुलुम ढाएगा।"

"तो कहाँ, जाओगी?"

"कहाँ? तोहरी में।"

"वहाँ क्या करोगी?"

"क्या करूंगी? भीख माँगूंगी।"

मोरी बोली, "हम भी चलेंगे तुम्हारे साथ।"

बरकंदाजसिंह और नाथू सिंह—बाप-बेटे दोनों की भूतपूर्व रखैलें, अपने-अपने मालिकों को अपना जीवन, अपना यौवन, अपनी क्षमता, अपना सर्वस्व सौंप कर सभी अछूत-रखैलों की प्रतीक बनकर सड़क पर निकल आयीं—चिथड़े पहने, बगल में पोटली दबाये, हाथ में एल्मूनियम के बेडौल कटोरे लेकर। गंगा के हाथ में लाठी भी थी। उन्हें छोड़ने के लिए गाँव के लोग कुछ दूर तक आते हैं।

बिगुलाल बोला, "जंगल के रास्ते जाना। छाँव मिलेगी।"

"वह रास्ता नहीं जानते हम।"

"राँका से कह देता हूँ।"

राँका दुसाध उन लोगों को जंगल के रास्ते दूर तक छोड़ आता है।

आजादी—असीम मुक्ति का स्वाद मिला मोरी और गंगा को। रुक्मिणी उन्हें आजादी दिला गयी। राँका उनकी ओर देखता था और फिर हिलाता था। मोरी बोली, "किसी पेड़ के नीचे जा बैठेंगे। जो मिलेगा, खा लेंगे। नहीं मिला तो मर जायेंगे।"

"हाँ।"

रुक्मिणी की आत्महत्या का एक और भी अप्रत्याशित परिणाम निकलता है। गगा और मोरी के चले जाने की घटना की चर्चा गाँव में हर स्तर पर होती है। गणेश की हवेली में पुतली के मन पर क्या गुजरी है, मालूम नहीं। लेकिन रात को मिसिर चौंककर उठता है। उसे ऐसा लगता है कि जैसे कोई रो रहा हो। किसी लड़की के रोने की आवाज। शुरू में उसे प्रेत-भय सताने लगा। तभी उसे गणेश की गरज-तरज सुनायी दी, "रात को बाहर आकर रोती है? घर की लक्ष्मी भगायेगी क्या?"

"इसके बाद भी लक्ष्मी रहेगी क्या?"

"चुप रहो!"

थप्पड़ मारने की आवाज। कातर आर्तनाद। मिसिर को फिर नींद नहीं आयी। शेष रात वह सोचता ही रहा। दो जून रोटी के लिए ग़रीब ब्राह्मण यहाँ पड़ा है। लछिमा चली गयी। रुक्मिणी मर गयी। उसे पहले भी ऐसा लगता था कि गणेश की बीवी मार खाती है। आज अपने कानों से ही सुन लिया सब-कुछ। पहले मेदिनी की हाँ में हाँ मिलाकर रहना पड़ता था। अब उसके लड़के के साथ भी यही स्थिति है। इस राजपूत-प्रधान गाँव में डरपोक और नम्र स्वभाव के कारण मिसिर को कभी कोई इज्जत नहीं मिली। फिर वह इतना ज्ञानी भी नहीं। दरअसल था तो रसोइया ब्राह्मण ही। मेदिनी ने समझा था उसका इल्म। उसी ने इसको मास्टर रखा था। मेदिनी उसे 'देवता' कहता था, गणेश भी कहता है। लेकिन मिसिर भी एक जमाने से खुराकी पर गुलामी ही कर रहा है। रुपए-पैसे का कोई हिसाब-किताब है ही नहीं उसके साथ।

इतने दिनों तक मिसिर ने इन सब बातों के बारे में कभी सोचा ही नहीं, लेकिन आज वह यह सब क्यों सोच रहा है? रुक्मिणी की मृत्यु के मूल में गणेश की बर्बरता ने उसका मन तोड़ दिया है। अब उसका मन भर गया है। गगा और मोरी भिखारिन बनकर चली गयीं। मिसिर भी गंगीनाथ चला जायेगा या कहीं और। ब्राह्मण को भिक्षा माँगने में क्या लज्जा है? और वह भी बूढ़े ब्राह्मण को? दगा-फ़िसाद, खून-खराबा, आग जनी से मिसिर का मन भर गया है।

सवेरे-सवेरे ही मिसिर बग़ल में पोटली दबाये सामने आ खड़ा हुआ। बोला, "गणेश ! मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा। जा रहा हूँ।"

"आप भी जा रहे हैं ? क्यों, देवता ?"

"बूढ़ा हो गया हूँ। मन भी उदास रहता है।"

"और घर के देवी-देवताओं की पूजा कौन करेगा ?"

"सभी घरों में पूजा करने जो आते हैं नहारा गाँव से, उन्हें कहने से वे कर दिया करेंगे।"

"क्या मुझसे कोई ग़लती हुई है ?"

"नही, नही।"

मिसिर चेहरे पर प्रसन्नता का भाव लाते हुए हँसता है। पहली बार उसने अपने-आपको ब्राह्मण महसूस किया। गणेश उन्हें प्रणाम करता है और उनके चरणों में रुपया रखता है।

"नहीं गणेश, रुपया लेकर क्या करूँगा ? साल-भर पूजा-ऊजा के दौरान जो देते हो, उसी में से दस-पन्द्रह रुपया मेरे पास हैं। मुझे तीर्थ-यात्रा पर जाना है। साथ में रुपया-पैसा रखा तो कहीं कोई मार कर छीन न ले। बहू को बुलाओ। लड़की और बहू को आशीर्वाद दे जाऊँ।"

मिसिर सभी को आशीर्वाद देता है। उसके बाद वहाँ से निकल पड़ता है। जाते हुए उसे देखता है। हरोआ बोला, "यह क्या, देउता ?"

"जा रहा हूँ, हरोआ ! लछिमा कहाँ है ?"

"यहीं है।"

लछिमा आँगन में पेड़ के नीचे बाँस से बनी मचान पर मिसिर को बैठाती है। मिसिर आँगन में लगे फलों के पेड़, मिर्च, भिण्डी और बैंगन के पौधों को देखता है। गहरी साँस लेकर मिसिर बोलता है, "सुखी गृहस्थी। गणेश की गृहस्थी भी सुखी हो सकती थी, लेकिन गणेश अपने बाप से ज्यादा निष्ठुर है। जिसे भी हाथ लगाता है, बरबाद कर देता है। अब उस हवेली में सिर्फ़ बुरा-ही-बुरा होगा।"

लछिमा बोली, "तो जा रहे हैं, देउता ?"

"क्या करें, लछिमा ? गणेश की बहू रात को कमरे से बाहर बैठकर रुक्मिणी के लिए रो रही थी। शायद अकसर रोती है। गणेश ने उसे मारा।

आज जब वह मुझे प्रणाम कर रही थी, तो उसके दोनों हाथों पर मैंने नील देखे। सुना है कि वह सिर पर पानी भी नहीं डाल सकती। गनेश की मार से उसके सिर में घाव हो गये हैं। अब और बरदाश्त नहीं होता। कुछ कर नहीं पाता, इसलिए बुरा लगता है। उनके लिए पूजा-ऊजा भी बहुत की। लेकिन कुछ भी नहीं हो पाया।"

"देवता, जो सबकी बुराई करता है, क्या कभी उसका भला होता है? अच्छा ही कर रहे आप कि जा रहे हैं। कुछ पैसा-वैसा दिया?"

"दे रहा था, लिया नहीं।"

सिशिर थोड़ी देर और बैठता है। फिर कहता है, "चलें, लछिमा! तेरे लिए मुझे चिन्ता थी। खैर, अच्छा ही हुआ है।"

सिशिर के चले जाने पर लछिमा बोली, "देवता को तो जाना ही था। मैं जितने दिनों वहाँ रही, ईश्वर ही जानता है कि गनेश को कितना लाड़-प्यार मैंने दिया है। अभी भी मुझे चिन्ता रहती है। यदि राह चलते मिल जाये तो उसके चेहरे की ओर कैसे ताकूँगी?"

सिशिर के चले जाने से भी गनेश की मान-मर्यादा में कमी आती है। गजमोती सिंह के मकान में रामरूप, चन्द्रभान और गनेश की बैठक होती है। वहाँ सागर भी था। रामरूप कहता है, "हमारी गरीबी प्रथा में बँटाई पर जमीन सिर्फ बिशुलाल के पास ही रह गयी थी। औरत-मर्द दोनों मेहनत करते हैं। ससुर, दामाद, लड़का वगैरह मिलाकर तेरह लोग हैं। मोती के दोनों लड़कों ने पिछले साल जमीन गँवा दी। इस बार उन लोगों का कहना है कि आप लोगों की खेती का काम साल में छह महीने करें। लेकिन बाकी छह महीने क्या करें?"

गजमोती बोला, "क्या करना चाहते हैं?"

"वे परमिट बनवाकर लकड़ी बटोरना चाहते हैं।"

"कितने लोग लकड़ियाँ बटोरेंगे? इतनी लकड़ी खरीदता कौन है?"

"क्यों? नहारा, देवीपुर, महुगढ़—इन गाँवों में जंगल नहीं है। सभी लोग लकड़ी नहारा के गोविन्द लाला की टाल से खरीदते हैं। वे लोग य— की हाट में बेचते हैं।"

"यह बात है!"

"क्या आपको मालूम नहीं है ? सुना है, आपने ही ख़रीदी प्रजा को ऐसा हुकुम दिया है।"

"दिया नहीं है। सोच रहा हूँ, दूंगा। लेकिन यदि यह लोग अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर चले गये तो खेती का काम कौन करेगा ?"

चन्द्रभान बोला, "मैं भी ऐसा ही हुकुम दे दूंगा। फारेस्ट का तहसीलदार रोज़ परमिट देगा, रोज़ लकड़ी चुनेंगे।"

रामरूप ने कहा, "मुझे तो हाँ कहनी ही पड़ेगी। जो कुछ भी हो, गंजु वगैरह कुछ लोग हैं और है बाक़ी ये लोग। वैसे भी यह बात ठीक है कि हम लोग खेती-बाड़ी नहीं कर सकते। गणेश, तुम क्या कहते हो? या तुम्हारे लिए यह झमेला ही नहीं ?"

गणेश बोला, "झमेला ? बात समझ में नहीं आयी, भैया ! बँटाई पर जो खेती करता है, या जो ख़रीदी प्रजा है वह अपनी जमीन जोतता है और बेगारी भी देता है। सभी जमीन गिरवी रखकर कर्ज़ लेते रहे हैं और लेते रहेंगे। कर्ज़ बढ़ जाने पर देखते हैं, बेगारी से या सारी फ़सल दे देने पर भी कर्ज़ नहीं चुकता तो ज़मीन मालिक की हो जाती थी। और अब भी होती है। ज़मीन गवाँ देने पर जब पास में कुछ नहीं रहता तो वह ज़मीन-मालिकों के खेतों पर मज़दूर, ज़र-ख़रीद गुलाम बन जाता है। पहले भी ऐसा ही होता था। क्यों होता था ? क्यों वह गुलाम बना रहता है ? ऐसा न हो तो हमें खेती के काम के लिए बाहर से मज़दूर बुलाने पड़ें। इसलिए हम लोग उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा नहीं छोड़ते। अगर ऐसा न होता तो हम उनकी जगह आदिवासी रखते या दूसरे गाँवों से अछूतों को बुलाते। इन जगहों पर पहले किसी समय में आदिवासियों का कब्ज़ा था। सबको भगाकर हमने उनकी ज़मीनों पर कब्ज़ा लिया। इसके बावजूद हम लोगों ने भूमिहीन प्रजा पर अपना मालिकाना अधिकार नहीं छोड़ा। साल में छह महीने वे तकलीफ़ में रहेंगे। वह तो पहले से रहते आये हैं। यह कोई नयी बात तो है नहीं। इस साल मैं क्यों उनके बारे में सोचूं ? देखो, इस प्रकार खेत-मज़ूर बने मेरी प्रजा है, गजू वगैरा चार घर और हैं। इस साल मैं बारह-चौदह घरों को उजाड़ने के लिए मजबूर हूं। मैं गांव में सबसे बुरा आदमी हूँ, इसलिए पिताजी की बीमारी के कई साल बाद तक उनसे कर्ज़-

कर्ज नहीं वसूला। उन्हें उनके हिस्से का अनाज देता रहा। जब हिसाब करके देखा कि असल और ब्याज मिलाकर एक-एक जने पर दो सौ-ढाई सौ-तीन सौ रुपयों तक कर्ज चढ़ गया है। अब तुम्हीं बताओ कि क्या करूँ? बारह-चौदह घरों की जमीन, कुल मिलाकर दस बीघा भी नहीं है। लेकिन जमीन ले लेने पर वे लोग मेरे खेत-मजदूर बन जायेंगे। उन पर अपना अधिकार मैं नहीं छोड़ने वाला हूँ। लेकिन उन्हें परमिट लेकर लकड़ी चुनने का अधिकार भी नहीं दूंगा।"

गणेश की आत्मविश्वास से भरी बातों को सुनकर गजमोती सिंह और चन्द्रभान भी अपने स्वसिद्धान्तों से विचलित होने लगते हैं। लेकिन रामरूप कहता है, "मैं ऐसा नहीं करूँगा। तुमने जो किया है, वह ठीक है।"

"इस साल नयी बात क्या हुई है, जो तुम लोग उनके आगे हाथ जोड़कर झुके जा रहे हो?"

"बस गणेश, बस," गजमोती सिंह बोला।

"क्यों, हुआ क्या है?"

गजमोती सिंह भी कभी रुक्मिणी के साथ सम्भोग करना चाहता था। अस्सी साल की उम्र में भी उसका शरीर गठा है। हर रोज वह अनार का रस और दूध में मिसरी डालकर पीता है। वह कहने लगा, "भंगी टोले में आने वाली उस लड़की के सिलसिले में भी तुमने एस० डी० ओ० को नाराज किया था। भंगियों और दुसाधों को एकजुट होने का मौका मिला। फिर रुक्मिणी वाली घटना में बिशुलाल वगैरा ने घूम-घूमकर हम लोगों को बहुत बदनाम किया।"

"ठीक है। घर में बन्दूकें होते हुए भी आप लोग उनसे डरेंगे, तो डरते रहिए। मैं डरने वाला नहीं हूँ। हम लोग चार घर हैं। अब तक एक साथ चलते थे। आज से अलग चलेंगे।"

गजमोती सिंह का हाथ ऊपर उठ आता है। उसकी उँगलियों में चार अँगूठियाँ चमक उठती हैं। कहता है, "मेरा मतलब है रामरूप, कि गणेश और हम लोग अलग-अलग क्यों चलें? वह जो चाहता है, करे। हम लोग उन्हें हुक्म देने नहीं जायेंगे, क्योंकि वे हुक्म माँगने नहीं आयेंगे। आगे देखते हैं, वे क्या करते हैं?"

गणेश बोला, "यदि वे लकड़ी चुनने पर गये तो ?"

"उन्हें बुलाकर फैसला करेंगे। वरना जाने देंगे या डाँट देंगे।"

रामरूप ने कहा, "ज्यादा जोर-दबाव डालने से सब भाग जायेंगे।"

"जायेंगे कहाँ ?"

"या तो भिखारी बन जायेंगे या फ़ारेस्ट की जमीन पर जा बसेंगे।"

"जमीन ताक़त और जोर से रखी जाती है, रामरूप," घमंड के साथ घोषणा करते हुए बाहर निकल जाता है गणेश। इस समय उसकी शिराओं में अपने वंशजों का खून खौल रहा होता है।

अगले दिन गणेश अपनी प्रजा को बुलवाता है। खाता खोलकर उनका हिसाब दिखाता है। मेदिनी सिंह के जमाने में किस-किसने खाने के लिए पच्चीस या तीस या पच्चीस सेर गेहूँ लिया था, बताता है। किसी ने तीन रुपया कर्ज लिया था, और किसी ने लिया था बारह सेर मड़ुवा। किसी ने दस रुपया लिया था और उसके बाद चालीस साल से उसका ब्याज चुकाया था, बेगारी और अनाज के रूप में। लेकिन फिर भी ब्याज चुकता नहीं हुआ था, बढ़ता ही गया था और अब सूद और असल मिलाकर हिसाब फैला था दो सौ इक्यासी, ढाई सौ, तीन सौ आदि रुपयों में।"

प्रजा चुप रहती है।

"तुम्हारे, तुम्हारे बाप-दादाओं के अँगूठों के निशान-विशान सब लगे हैं यहाँ। जमीन गिरवी रखी है तुम्हारी, यह सब तुम लोगों को मालूम है न ?"

सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए भिखारी ने कहा, "जमीन मत लो मालिक, इस साल फसल अच्छी हुई है।"

इन सबको रुक्मिणी की शवयात्रा में देखा था गणेश ने। वही बात इस समय याद करके गुस्से में बोला, "हक़ की बात अकाल के समय होगी। पिताजी जब बीमार थे, उस समय क्या मैंने कर्ज या ब्याज काटा था ?"

"क्यों नहीं काटा ? तब काट लेते तो अब जमीन नहीं गँवानी पड़ती।"

भिखारी का लड़का दुखारा बोला, "जमीन के बगैर खायेंगे क्या ?"

"इतना सब हिसाब मैं नहीं कर सकता। मैंने जो कहना था, कह

दिया। या फिर मेरा रुपया वापस कर दो।"

"अच्छा मजाक कर रहे हो, मालिक!"

"जमीन मेरी है। कटाई के समय मालूम हो जायेगा।"

दुखारी बोला, 'जो विचार-धरम हो, वही करो, मालिक!"

"दुसाधों से मिलकर गुटबन्दी मत करना।"

प्रजा चली जाती है।

घुटते रहे लोग, घुटता रहा सारा गाँव। तभी एक दिन अचानक साइकिल पर सवार होकर अभय महतो पहुँचता है। वह गोरी और गंगा से सब-कुछ सुनकर आया है, लेकिन बताता नहीं है। बोला, "तुम लोगों को एक खुशखबरी देने आया हूँ। हरिजन मंच को अब सरकार भी मदद दे रही है। बी० डी० ओ० और एस० डी० ओ० भी मेरी बातें सुन रहे हैं।"

बिलुनाथ की पत्नी बोली, "तुम क्या मंत्री हो गये हो? हाथ में घड़ी है। साइकिल पर आये हो?"

"साइकिल एक दोस्त की है और घड़ी भी। भौजी, अगर हम मिनिस्टर बने तो तुम बनोगी डिप्टी मिनिस्टर।"

"धत्! कैसी बात करते हो?"

"जाने दो। काम की बात सुनो। सभी से बात करनी जरूरी है। चलो, उस पेड़ के नीचे बैठते हैं।"

चलते हुए, परित्यक्त भंगी टोले के पास से गुजरते हुए अभय थोड़े तिरछे कर उस तरफ देखता है। चलते-चलते भंगी टोले का जिक्र न करते हुए महतो कहता है, "मेरा घर पूर्णिया जिले में था। चार से नौ साल की उम्र के बीच हमारी टोली चार-पाँच तीन बार जलायी गयी थी। मालिक महाजन, कायस्थ, जमींदार थे। सिपाहियों ने दूसरी बार सरकार को खबर दी थी। तीसरी बार जमींदार के लोगों ने तीन सिपाहियों को मारकर आग में झोंक दिया था। उसके बाद माँ जैसे-तैसे करके टाउन में चली आयी। मैं मदन-आश्रम में पढ़ने लगा। यह सब लम्बी कहानी है।"

इन बातों से अभय उनके बहुत करीब आ जाता है। वे लोग खुद ही रुक्मिणी, गोरी और गंगा के बारे में बताने लगते हैं। गोरी का मरना

बोला, "माँ हाथ में कटोरा लिये भीख माँग रही है। पेड़ के नीचे बसेरा है उसका।"

अभय बोला, "भीख माँगती है, लेकिन सोती मेरे दफ़्तर के बरामदे में है। ख़ूब मजे में सोती है। चिंता मत करो। आँखों पर चश्मा भी लग गया है। हम लोगों ने आंखों के डॉक्टर को बुलाकर कैम्प लगाया था। तभी उसका चश्मा भी बनवा दिया था। अब ठीक से देख पाती है।"

ताज्जुब की बात है! सुनकर सभी हैरान होते हैं। मोरी का पोता कहता है, "आपकी साइकिल पर जरा चढ़ लें।"

"मेरे सामने ही रहना मैदान में। पंचर मत कर देना।"

"नहीं, सामने ही रहूँगा।"

अभय पेड़ के नीचे बैठकर उनसे उनकी तात्कालिक समस्याओं के बारे में जान लेता है।

वैसे वह सारी बातों को पहले से ही जानकर आया था। वह कहता है, "देखो, बड़ी साफ़-सी बात है। मालिक जो ज़मीन ले रहा है, इसका फैसला मैं करूँ, यह क्षमता मेरी नहीं है। क्यों नहीं है? क्या कोई क़ानून नहीं है? क़ानून है। पच्चीस सेर अनाज का कर्ज़ चालीस साल तक बेगार और फ़सल के रूप में चुकता करने के बाद ढाई सौ रुपया नहीं बन सकता है। लेकिन कोर्ट-कचहरी के लिए पैसा और ताक़त हमारे पास नहीं है। हाकिम-अफ़सर लोग हमें कोई मदद नहीं देंगे। यह है सीधी-सी बात। अगर वे मदद देते तो कुछ बंदोबस्त हो सकता था। मैं तो उनसे कहते-कहते थक गया हूँ कि छुआछूत की समस्या और ज़मीन की समस्या एक ही है। इस का फैसला करो। लेकिन मैं छठी तक पढ़ा हूँ। आनन्द महतो के लड़के अभय महतो की कौन सुनने वाला है?"

"लेकिन वह अच्छी बात कौन-सी बता रहे थे आप?"

"मुझे पता था कि कटाई तक आपके पास कोई काम-काज नहीं रहेगा। इसलिए मैंने पहले मिनिस्टर से बातचीत की। वह तोहरी आया हुआ था। हरिजन मंत्री। वह हम लोगों के काम में थोड़ी-बहुत मदद भी करता है। जो भी हो, मैंने फारेस डिपाट से बात पक्की कर ली है। बाढ़ा-न्हारा फारेस में चार साल बाद पेड़ कटने शुरू होंगे। मैंने कहा, बाढ़ा के लोगों

को लकड़ी चुनने का परमिट बनवा देना। फारेस्ट डिपार्ट को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन शर्त है कि कोई पेड़ नहीं काटेगा और जंगल में आग नहीं लगनी चाहिए। अब बोलो, तुम कितने लोग आओगे? महीने का परमिट है, रोज-रोज का नहीं।"

भिखारी बोला, "मालिक लोग नहीं जाने देंगे।"

अभय बोला, "देखो, मैं भी हरिजन हूँ। तिकड़म जानता हूँ। मैं थाने-दार, एस० डी० ओ०, बी० डी० ओ० सभी से बोल चुका हूँ। उन्हें बताया है कि गाँव के लगभग सभी हरिजन खेत-मजदूर हैं। मालिक उनको काम नहीं देंगे, रोजी का बदोबस्त भी नहीं करने देंगे। बल्कि वे उन्हें इस काम पर जाने से भी रोकेंगे। नया एस० डी० ओ० खराब आदमी नहीं है। अभी मालिक-महाजनों का घी-चावल-चम्मी उसने खाना शुरू नहीं किया है। उसने कहा है कि ऐसा कैसे हो सकता है? मालिकों के कहने पर भी नहीं मानूँगा। आपका काम है अछूतों में साहस जुटाना। भूखे लोगों में साहस नहीं रहता। आप उन्हें समझाइये। खैर, जो भी हो मैंने तो आपको समझा ही दिया है।"

"महीने-भर का परमिट लेने में प्रतिदिन बीस पैसे की दर से कितने रुपये बनते हैं, मालूम है तुम्हें? कहाँ से आयेगा इतना रुपया? छह रुपये प्रति व्यक्ति!"

अभय विजयी की हँसी हँसता हुआ बोला, "वही तो बात है। हम लोग रुपयों से परमिट बनवा कर दे रहे हैं। हरिजन संघ के बैंक में हजार रुपया जमा है। इस काम में खर्च करेंगे वह रुपया। अब चलो, मीटिंग खत्म। दुसाधों को भी कहते हुए चलते हैं।"

गाँव में कुछ भी नहीं रहता। मैदान में बैठकर अभय से बातचीत, मोरी के पोते का साइकिल पर चढ़ना—सब-कुछ मालिकों की नजर में आया। खाद का बंदोबस्त करने, पता नहीं क्यों, रामरूप और गणेश एक ही दिन मोहरी रवाना हो गये। खाद के साथ एस० डी० ओ० का कोई सबंध नहीं, लेकिन फिर भी वे एस० डी० ओ० के पास ही जाते हैं। जो कहना था, गणेश ने ही कहा। एस० डी० ओ० भौंहें सिकोड़कर बोले, "ताज्जुब की बात है। आप लोगों की फसल उठाने समय हो तो ये काम

करेंगे। जब तक आपके खेतों पर काम नहीं करते, तब तक वे अपने आप मेहनत करके खाना जुटायेंगे। इसमें आप लोगों की मान-हानि कैसे हो रही है?"

"अभय महतो उनको भड़का रहा है।"

"नहीं। वह मुझे सारी बातें बनाकर काम कर रहा है और यह भी जान लीजिए कि ज़मीन छीनकर मालिक-महाजन हर साल इतने लोगों को भूमिहीन मज़दूर बना रहे हैं। इस कारण बहुत-सी जगहों पर गड़बड़ शुरू हो गयी है, गड़बड़ के कारण मामला क़ानून-व्यवस्था का बन जाता है। तब हम लोग बीच में आते हैं। गोली-बंदूक चलती है। संबंध ख़राब हो जाते हैं। आप लोगों का इलाक़ा काफ़ी अनुन्नत है और आप लोगों का परम्परागत जुल्म जारी है। इसलिए अभी तक गड़बड़ी हुई नहीं है, लेकिन हो सकती है।"

"आप अछूतों को मदद देंगे?"

"सरकारी हुकुम ऐसा ही है। लेकिन अगर उन्होंने पहले हंगामा किया तो बात दूसरी है। लेकिन उन्हें भूखे नहीं मरने दिया जायेगा। इसलिए यदि सरकारी जंगल में उन्हें लकड़ी चुनने दिया जाता है, तो इसमें शांति भंग कैसे होती है?" रुककर एम० डी० ओ० पानी पीते हैं। फिर कहते हैं, "अभय महतो पर आप लोग नाराज़ हैं। लेकिन उनका संघ गांधी मिशन के साथ मिलकर काम करता है और उसे मदद देने के निर्देश हमारे पास हैं। यदि वे सरकारी जंगल में पेड़ नहीं काटते या आग नहीं लगाते तो उनका परमिट छीनने का हक किसी को नहीं है।"

गणेश बोला, "लेकिन इससे उनका साहस बढ़ जायेगा?"

"आपका नाम?"

"गणेश सिंह।"

"रुकिये। आप ही ने पल्लवी शाह को लेकर हंगामा किया था न? रियली? जानते हैं, वह कौन थी? उसके पिता इस समय भारत के वित्त-मंत्री हैं। फिर भी आप आये हैं? आप लोग चले जाइये।"

गणेश बोला, "जायेंगे ज़रूर, यहां रहने नहीं आये हैं। लेकिन जब फिर से चुनाव होगा तब हमारे जैसे गंदे लोग ही रुपये देंगे और कांग्रेस

लेगी भी। ठीक है, आप इस इलाके के नहीं हैं। आदमी को नहीं पहचानते। मैं कहता हूँ, वे नीच-जाहिल लोग फ़ारेस्ट का कानून ज़रूर तोड़ेंगे और क़ानून-व्यवस्था का प्रश्न भी उठेगा। और बाढ़ा में पुलिस भी आयेगी।"

एस० डी० ओ० दाँत फाड़कर हँसा और मज़ाक़ में बोला, "ठीक है। इसी तरह बाढ़ा गाँव मध्ययुग से निकलकर आधुनिक युग में पहुँच जायेगा। मालिक अत्याचार करता रहेगा, प्रजा चुपचाप सहन करती रहेगी, यह सब आधुनिक भारत में नहीं चल सकता है। सभी जगह सिर्फ़ विक्षोभ और अशांति है।"

"अच्छा तो चलते हैं। फिर मिलेंगे।"

गणेश और रामरूप गाँव लौट आते हैं, गणेश की बैलगाड़ी में। हरोआ गाड़ी हाँकता है। लेकिन हरोआ की आदमी में गिनती गणेश ने कभी नहीं की थी।

गणेश बोला, "अभी चुप रहो।"

"छी-छी, किस तरह अपमान किया है उसने!"

"सब अपमान भूल जाओ।"

"क्यों, मगर पढ़ोगे?"

"उन्हें जंगल में जाने दो, लकड़ी चुनने दो।"

"मैं तो हमेशा ही यही कहता था।"

"उसके बाद जंगल में पेड़ कटेंगे, आग लगेगी। फ़ारेस्ट का क़ानून तोड़ेंगे वे! तब फ़ारेस्ट का काम चला आयेगा, बाप-बाप आकर पैर पकड़ेंगे। तब लात मारूँगा और दम से बीन का काम लूँगा। ऐसा न किया तो मेरा नाम भी गणेश सिंह नहीं।"

"वे मर जायेंगे। भाग जायेंगे।"

"जाने दो," गणेश गरजता है, "सबको भगा देंगे। नयी प्रजा लाकर बसायेंगे। हाकिम क्या करेगा? अदालत क्या कर लेगी? चुनाव में रुपया नहीं लेना क्या? रुपया दूँगा उन्हें। हमारी मदद करेंगे तो हम भी मदद देंगे। लाखों का मालिक गणेश चाहिए या हरिजन अभय महतो? सबसे पहले उसी की लाश गिरायेंगे। कौन क्या कर लेगा? अछूत? भंगी टोला जलाया, उन्हें भगाया, रुक्मिणी का पेट कर दिया, वह मर गयी

किसने क्या कर लिया ? रामरूप ! जमीन और मालिकाना बाप का नहीं, रौब का होता है।"

"तुम पागल हो गये हो।"

इसके बाद वे बाढ़ा पहुँचते हैं। चिन्तातुर डरा हरोआ गाड़ी से बैल खोलता है, उन्हें घास-पानी डालता है गौशाला के सामने। फिर घर लौटकर लछिमा को बुलाता है।

दरवाजा बंद करके हरोआ लछिमा को सभी कुछ बताता है। सुनते हुए लछिमा का चेहरा पत्थर-सा सख्त हो जाता है। लछिमा बोली, "तुम क्यों फिक्र करते हो ? जो कुछ सुना है, भूल जाओ।"

"तुम क्या करोगी ?"

"अँधेरा होने पर राँका दुसाध के पास जाऊँगी।"

"राँका क्या करेगा ?"

"कोई कुछ कर सकता है तो वे ही कर सकते हैं।"

"क्या कर सकते हैं, सुनें तो।"

"जब यह लोग लकड़ी चुनने जायें तो वे रात-दिन ध्यान रखेंगे कि जंगल में कोई आग न लगाने पाये। और जंगल के रास्ते जाकर अभय को भी सावधान कर देंगे वे।"

हरोआ कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला, "तुम राँका से कहो। मैं, कल ही गाड़ी के पहिये और हल की मरम्मत कराने तोहरी जा रहा हूँ। अभय से मैं कह दूँगा। यदि कहीं मेरा नाम मालिक के कानों तक पहुँच गया तो वह मुझे जान से ही मार डालेगा।"

"मारना इतना आसान नहीं है।"

"नहीं लछिमा, बहुत आसान है। तुम अकेली जाओगी या मैं भी चलूँ साथ में ? मैदान पार कर जंगल के किनारे होकर जाना।"

"अकेली ही जाऊँगी।"

लछिमा अकेली ही जाती है। राँका दुसाध उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। लछिमा उसे बाहर बुलाकर सारी बात बताती है। यह भी कहती है कि वह हरोआ का नाम न ले कहीं। हरोआ अभय को खबर कर आयेगा। एक बार फिर से राँका को सारी बात समझाकर वह चली

आती है।

अगले दिन लछिमा विचित्र ज़िद करती है।

"तुम्हारे साथ मैं भी तोहरी चलूंगी। कभी गयी नहीं वहां। इतनी बड़ी जगह बन गयी है, कभी देखा नहीं। गणेश से कह देना। तुम तो गाड़ी लेकर ही जाओगे।"

"गणेश से कहूँ?"

"नहीं कहोगे क्या?"

"नहीं, लछिमा! हम लोग फिर कभी पैदल ही वहाँ चलेंगे। यह देखकर तुम डर रही हो कि मैं अकेले जा रहा हूँ।"

"हाँ।"

"डर की क्या बात है? मैं सावधानी से बातें करूँगा।"

हरोआ ने बहुत सावधानी से और डरते हुए बात की अभय से। धीरे-धीरे बोला, "सभी कुछ बता दिया है, महतो जी! लेकिन मेरा नाम किसी को मालूम नहीं होना चाहिए। मालूम होते ही वे मेरा खून कर देंगे।"

गणेश से हरोआ डरता है, अभय समझता है। डरना स्वाभाविक भी है। लेकिन इसके महत्व को नहीं समझता। वह तोहरी में रहता है। गांधी मिशन के साथ मिलकर उसका संघ काम करता है। गांधी मिशन की चम्पावती देशमुख बापूजी की स्नेहपात्री कन्या है। चम्पावती मिशन की माता है। वे अभय को 'बेटा' कहती हैं। बाढ़ा गाँव जहां कभी ज़मीन-मालिक और किसान, ज़मीन-मालिक और बँटाईदार, ज़मीन-मालिक और खेत-मज़दूर के बीच ऐसी स्थिति ही पैदा नहीं हुई कि मालिक पुलिस से मिलकर गोली चलायें। ऐसी जगह अभय या हरोआ या खेत-मज़दूरों की लाश किस तरह गिराएगा गणेश?

वह बोला, "नहीं, तुम्हारा नाम कोई नहीं लेगा। एस० डी० ओ० खुद भी गणेश पर नाराज़ हैं।"

अभय की प्रशासन पर जितनी आस्था है, उतनी हरोआ की नहीं। वह सुपारी खाते हुए सही और बुद्धिसम्मत बोला, "महतो जी, आप कह रहे हैं कि डर की बात नहीं है। मैं कहता हूँ कि डर की बात है। अब आप ऐसा करें कि मेरी जान और अपनी जान बचाने का उपाय कीजिए। आप

हम मर गये तो मर ही गये। उसके बाद एस० डी० ओ० साहब गणेशसिंह को फाँसी पर भी चढ़ा दें तो हम लोग जिन्दा नहीं हो सकते।"

"नहीं, नहीं, कुछ भी नहीं होगा।"

हरोआ निश्चित होकर मोरी और गंगा के पास जाता है। उन्हें मुरमुरा और बासी जलेबी खिलाता है। गाँव की ख़बर देता है। मोरी की आँखों पर निकल के फ्रेमवाला चश्मा देखकर कहता है, "अब तो तुम बाबू लोगों के घर की-सी औरत लग रही हो।"

गंगा बोली, "पैर के दर्द के लिए अस्पताल से सुई ले रही हूँ। बाप रे! कितना मवाद भर गया था।"

"तुम्ही लोग अच्छे हो।"

"बाढ़ा जाने को दिल करता भी है और नहीं भी...।"

"नहीं, नहीं। क्या देखने जायेगी वहाँ?"

इसके बाद हरोआ लुहार से पहिया और हल लेता है। लछिमा के लिए साबुन हल्दी और पापड़। दस पैसे के जुए में जीता हुआ झुनझुना लेकर गाँव लौटता है।

दूसरे ही दिन अभय एस० डी० ओ० से मिलता है। हरोआ के बारे में कुछ कहे बिना सारी बात बताता है। बार-बार कहता है, "गणेश बहुत ही ख़तरनाक आदमी है, प्रतिहिंसापरायण।"

उदाहरण के तौर पर भंगी टोले को जलाने और रुक्मिणी की आत्महत्या की बात भी कहता है। एस० डी० ओ० साहब को चेताता है कि वे उससे संभल कर बात करें। गणेश पता कर सकता है कि किसने यह ख़बर उन तक पहुँचायी है। यह खबर देने वाला एक हरिजन है। गणेश से वह बहुत डरता है। पता लग गया तो गणेश उसे मार डालेगा।

सुनकर एस० डी० ओ० कुछ अप्रसन्न होता है। अपमानित महसूस करता है। अभय महतो को उसने इसलिए पास आने दिया है कि लड़का काम अच्छा कर रहा है। इसीलिए उसे मदद देने का आश्वासन भी दिया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह उनसे कहे कि यही कीजिए, यह न कीजिए।

एस० डी० ओ० अपने पद की मर्यादा के अनुरूप स्वर में बोले, "यह

गणेश सिंह छोटा-मोटा हिटलर लगता है। उसके साथ कैसे बात करनी होगी, यह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"

"निश्चय ही।"

"खून करेंगे, लाश गिरा देंगे, ऐसे ही डरा रहा है।"

अभय हल्के-हल्के मुसकराता है। फिर कहता है, "वह जंगल में आग लगायेगा। उनके साथ दंगा-फिसाद भी करेगा। उन्हें उकसाकर उनके हाथों में लाठी भी पकड़ायेगा। उनको भी लगेगा कि गणेश के कारण उनका सरकारी जंगल में घूमना बंद हो रहा है। वे भी दुख और गुस्से से पागल होकर दंगा-फिसाद कर बैठेंगे। तब कानून-व्यवस्था भंग हो जायेगी और बाढ़ा में पुलिस घुसेगी।"

"क्या हम अकेले अछूतों को ही पकड़ेंगे? जो भी दोषी होगा, उसे पकड़ेंगे। आप क्या समझते हैं कि पुलिस ले जाकर मैं उन अछूतों को पीटूँगा? उस बर्बर गँवार राजपूत को छोड़ दूँगा?"

अभय चुप रहता है। फिर धीरे-धीरे कहता है, "गणेश जैसे अत्याचारी मालिक को सज़ा देकर बाढ़ा के भूमिहीन खेत-मजदूरों को न्याय दिला सकें तो मैं अभय महतो आपके पाँवों को पकड़कर प्रणाम कर जाऊँगा और सैकड़ों-लाखों अछूत, भूमिहीन किसानों के आशीर्वाद से आपका अच्छा ही होगा।"

एस० डी० ओ० ने कहा, "यह तो ठीक है, और मेरी ड्यूटी भी है यह, पर मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता कि किसने उससे क्या कहा और उसने क्या सुना। कोई घटना हो गयी तो दिखा देंगे कि न्याय के रास्ते पर कठोर बनकर कैसे काम किया जाता है।"

यह सुनकर अभय कुछ निश्चिन्त होता है। कहता है, "फिर उन लोगों को परमिट दे देते हैं। आप क्या कहते हैं?"

"ज़रूर। परमिट देने आप जायेंगे या वे खुद लेने आयेंगे?"

"मैं ही जाऊँगा। मुझे कुछ हुआ तो आपको तुरन्त खबर मिल जायेगी, फिर आप बंदोबस्त कर सकते हैं।"

"इससे अच्छा है कि उन्हें परमिट लेने के लिए कह आइए। तहसीलदार से खुद परमिट ले लेंगे।"

हम मर गये तो मर ही गये। उसके बाद एस० डी० ओ० साहब गणेशसिंह को फाँसी पर भी चढ़ा दें तो हम लोग जिन्दा नहीं हो सकते।"

"नहीं, नहीं, कुछ भी नहीं होगा।"

हरोआ निश्चित होकर मोरी और गंगा के पास जाता है। उन्हें मुर-मुरा और बासी जलेबी खिलाता है। गाँव की ख़बर देता है। मोरी की आँखों पर निकल के फ्रेमवाला चश्मा देखकर कहता है, "अब तो तुम बाबू लोगों के घरकी-सी औरत लग रही हो।"

गंगा बोली, "पैर के दर्द के लिए अस्पताल से सुई ले रही हूँ। बाप रे! कितना मवाद भर गया था।"

"तुम्हीं लोग अच्छे हो।"

"बाढ़ा जाने को दिल करता भी है और नहीं भी...।"

"नहीं, नहीं। क्या देखने जायेगी वहाँ ?"

इसके बाद हरोआ लुहार से पहिया और हल लेता है। लछिमा के लिए साबुत हल्दी और पापड़। दस पैसे के जुए में जीता हुआ झुनझुना लेकर गाँव लौटता है।

दूसरे ही दिन अभय एस० डी० ओ० से मिलता है। हरोआ के बारे में कुछ कहे बिना सारी बात बताता है। बार-बार कहता है, "गणेश बहुत ही ख़तरनाक आदमी है, प्रतिहिंसापरायण।"

उदाहरण के तौर पर भंगी टोले को जलाने और रुक्मिणी की आत्म-हत्या की बात भी कहता है। एस० डी० ओ० साहब को चेताता है कि वे उससे संभल कर बात करें। गणेश पता कर सकता है कि किसने यह ख़बर उन तक पहुँचायी है। यह ख़बर देने वाला एक हरिजन है। गणेश से वह बहुत डरता है। पता लग गया तो गणेश उसे मार डालेगा।

सुनकर एस० डी० ओ० कुछ अप्रसन्न होता है। अपमानित महसूस करता है। अभय महतो को उसने इसलिए पास आने दिया है कि लड़का काम अच्छा कर रहा है। इसीलिए उसे मदद देने का आश्वासन भी दिया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह उनसे कहे कि यही कीजिए, यह न कीजिए।

एस० डी० ओ० अपने पद की मर्यादा के अनुरूप स्वर में बोले, "यह

गणेश सिंह छोटा-मोटा हिटलर लगता है। उसके साथ कैसे बात करनी होगी, यह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"

"निश्चय ही।"

"खून करेंगे, लाश गिरा देंगे, ऐसे ही डरा रहा है।"

अभय हलके-हलके मुसकराता है। फिर कहता है, "वह जंगल में आग लगायेगा। उनके साथ दंगा-फिसाद भी करेगा। उन्हें उकसाकर उनके हाथों में लाठी भी पकड़ायेगा। उनको भी लगेगा कि गणेश के कारण उनका सरकारी जंगल में घुसना बंद हो रहा है। वे भी दुख और गुस्से से पागल होकर दंगा-फिसाद कर बैठेंगे। तब क़ानून-व्यवस्था भंग हो जायेगी और बाढ़ा में पुलिस घुसेगी।"

"क्या हम अकेले अछूतों को ही पकड़ेंगे? जो भी दोषी होगा, उसे पकड़ेंगे। आप क्या समझते हैं कि पुलिस ले आकर मैं उन अछूतों को पीटूंगा? उस बर्बर गँवार राजपूत को छोड़ दूंगा?"

अभय चुप रहता है। फिर धीरे-धीरे कहता है, "गणेश जैसे अत्याचारी मालिक को सजा देकर बाढ़ा के भूमिहीन खेत-मजदूरों को न्याय दिला सकें तो मैं *अभय महतो आपके पाँवों को पकड़कर प्रणाम कर* जाऊँगा और सैकड़ों-लाखों अछूत, भूमिहीन किसानों के आशीर्वाद से आपका अच्छा ही होगा।"

एस० डी० ओ० ने कहा, "यह तो ठीक है, और मेरी ड्यूटी भी है यह, पर मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता कि किसने उसमे क्या कहा और उसने क्या सुना। कोई घटना हो गयी तो दिखा देंगे कि न्याय के रास्ते पर कठोर बनकर कैसे काम किया जाता है।"

यह सुनकर अभय कुछ निश्चिंत होता है। कहता है, "फिर उन लोगों को परमिट दे देते हैं। आप क्या कहते हैं?"

"जरूर। परमिट देने आप जायेंगे या वे खुद लेने आयेंगे?"

"मैं ही जाऊँगा। मुझे कुछ हुआ तो आपको तुरन्त खबर मिल जायेगी, फिर आप बंदोबस्त कर सकते हैं।"

"इससे अच्छा है कि उन्हें परमिट लेने के लिए कह आइए। तहसीलदार से खुद परमिट ले लेंगे।"

"यह भी ठीक है।"

अभय चला जाता है और उन्हें ख़बर कर आता है। वे लकड़ी चुनने का एक महीने का अपना-अपना परमिट ले जाते हैं और अपने को परम भाग्यशाली समझते हुए घर लौट आते हैं। अभय सब से उनका दाव वहीं रखवा लेता है। उनके पास लकड़ी बाँधने के लिए रस्सी रह जाती है, बस।

तहसीलदार ने कहा, "जानते हैं कि बीड़ी तो तुम लोग पियोगे ही। लेकिन बाहर जाकर पीना। लेकिन यह भी सुन लो कि फ़ारेस्ट सरकार के के लिए कैसा है। सात लड़कियों के बाद जैसे लड़का पैदा होता है उसी तरह फ़ारेस्ट सरकार की आँखों की पुतली होता है।"

राँका बोला, "हम लोग कब से लकड़ी बटोर रहे हैं, कभी एक डाली भी काटी है? माह के जाड़े तक में कभी पत्ते जलाये हैं? तुम्हारा गार्ड तो आता-जाना रहता है। उससे पूछ लो।"

"जानते हैं, भाई!"

अभय ने तहसीलदार के लड़के को चम्पावती देशमुख की चिट्ठी की मदद से पटना अस्पताल में भरती करा कर क्षय रोग से बचाया था। तहसीलदार के मन में अब तक वह अहसान ताज़ा है। तभी तो अभय रुपया देकर परमिट जारी करवा सका है।

अभय राँका से बोला, "सब जानते हो। तुम लोग भी होशियार रहना। अब मैं इस तरफ़ और नहीं आऊँगा। कोई असुविधा हो तो तुम्हीं चले आना।"

"ठीक है।"

अगले दिन ही राँका ने सब से कहा, "देखो, सूखी लकड़ियों को एक जगह इकट्ठा मत करना। कहीं सोचो कि आज गठ्ठर बनाकर रख लेते हैं, कल ले जायेंगे। ऐसा कभी मत करना।"

"जैसा कहते हो, वैसा ही करेंगे।"

"दुश्मनों की कमी नहीं है। जाने कौन कब आग लगा दे! कहा यही जायेगा कि आग तुम लोगों ने लगायी है। इसी बहाने फारेस्ट का काम खतम कर दिया जायेगा। इसलिए थोड़ी नजर भी रखनी पड़ेगी।" जंगल

की ओर जाते हुए बोला, "लछिमा और हरोआ बहुत ही अच्छे लोग हैं। जमीन है, घर है। सब-कुछ रहने पर भी लोग अच्छे होते हैं, पहले यह नही पता था।"

बिगुलाल साँस छोडकर बोला, "अभी भी विश्वास नही हो रहा है कि हमें वाकई परमिट मिल गया है। यह एक सरकारी कागज है। कटाई से पहले कुछ दिनों काम करने पर हम कुछ कमा सकेंगे?"

भिखारी बोला, "हाँ राँका, हम इतने सारे लोग है। एक साथ लकडी चुनेंगे, तो ढेरो लकडी बटोर डालेंगे।"

"इधर पन्द्रह मील और उधर बीस मील तक जगल फैला है। तुम कितनी लकड़ी बटोरोगे, भिखारी?"

"हम यही काम करेंगे।"

वे लकडी चुनते हैं, बाँधते है। छोटी-बड़ी डालियो को खीच कर ले जाते है। राँका अनुभवी उँगलियों से हलकी डालियाँ छाँटकर अलग करता है, "पहले देखना कि टाल मे कैसी लकडी है? उसमे जान है या नही? लो, अब बाँध कर सर पर उठाओ। चलो मेरे साथ।"

इस काम मे मर्द-औरत दोनो ही लग जाते हैं। सिर्फ बूढे बच्चो के साथ घर पर रहते हैं। टाल पर लकडी बेचकर वे आटा, नमक, खेसारी दाल ख़रीदकर घर लौटते हैं।

बिगुलाल कहता हैं, "आज का दिन कैसे बीता! कभी नही सोचा था कि जीवन में कभी ऐसा दिन भी आयेगा। हमे तो यही पता था कि जब खेती का काम न हो तो दूसरे गाँव मे खेत-मजदूरी करो, भीख माँगो, बोझा उठाओ या सडक पर पत्थर कूटो। बाढ़ा के खेत-मजदूरो का जीना-मरना मालिको के हाथ मे था। बाढ़ा के खेत-मजदूर या तो भूखों मरते थे या एक मुट्ठी बाजरा, मकई, सत्तू के लिए मालिक के यहाँ फुटकर काम करते थे। औरतें गोबर थापती थी।"

गणेश पेड के सहारे खडा होकर उनकी बातें सुनता है।

'दूसरे दिन गणेश तोहरी जाता है। जाहिर मे उसका उद्देश्य बैंक जाना था। वहाँ पर नवागढ़ के स्वरूपसिंह से उसकी मुलाकात होती है। बहुत दिनो बाद हुई है यह मुलाकात। स्वरूप उसे रोक लेता है। वह जंगल क

ठेकेदार है। उसका काम हजारी बाग में है। नवागढ़ में उसने दोमंजिला मकान बनवाया है। अपनी जीप से तोहरी आया है। स्वरूप बोला, "तुम्हारे और मेरे पिता एक ही काम करते थे। इतने दिनों बाद मिल रहे हैं, चलो चलें एक दिन मजा करें।"

गणेश को लगता है कि वह दोनों अलग-अलग दुनिया के लोग हैं। उसने पूछा, "क्यों, तुम्हारे पास भी ज़मीन-जायदाद है?"

"ज़मीन-जायदाद छोटा भाई संभालता है। सोच रहे हैं, सारी जमीन बँटाई पर ही दे दें। ठेकेदारी में पैसा है। एक भाई को धनबाद में कोयले की खान की ठेकेदारी दिला दी है। दूसरे भाई की भी मुझे जरूरत थी। लेकिन पिताजी जब तक जिंदा हैं, नवागढ़ नहीं छोड़ेंगे। इसलिए यहाँ एक अच्छा मकान बनवा लिया है। आपसे झूठ नहीं बोलेंगे। राँची टाउन में भी मकान है, बीवी-बच्चे वहीं रहते हैं। यहाँ इस जंगल में मैं ऊब जाता हूँ। काम जंगल में करते हैं, लेकिन घर लौटने पर बिजली चाहिए, पंखा चाहिए, सिनेमा चाहिए। गाय-भैंस और अनाज ही काफ़ी नहीं।"

"मेरी जिन्दगी तो इन्हीं सब में है।"

"शादी कर ली है? लड़का-बच्चा?"

"एक लड़की है।"

"गांव में तो स्कूल भी नहीं है।"

"स्कूल! मैं ही कौन-सा पढ़ा-लिखा हूँ जो लड़की पढ़ेगी?"

"भैया, अब बाप-दादाओं की चाल से काम नहीं चलेगा। राँची में देखो, लड़कियाँ फटाफट साइकिल पर आती-जाती हैं।"

गणेश हँसता है, "यक़ीन नहीं आता।"

"मेरी लड़की भी स्कूल जाती है। क्या करें, पिताजी नहीं मानते। वहू परदा नहीं करती, लड़की स्कूल जाती है।"

"भैया, इससे तो नाश होता है।"

"किसने कहा?" स्वरूप नये अर्जित व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के साथ कहता है, "मेरी बीवी खूब पूजा-ऊजा करती है। घर में लक्ष्मी-जनार्दन का मंदिर है उन्हीं के प्रताप से तीन लड़के हुए। भैया, धर्म को ताक पर रख दूं तो ठेकेदारी में मुझे सात साल में छह लाख रुपये का

*फ़ायदा हो सकता है। हाकिम, दरोगा, जंगल-आफ़िस—सब मुट्ठी में हैं।"*

"तुम ज़मीन अपने पास रख सकते थे।"

"उस काम में मेरी रुचि नहीं है, भैया! बचपन में ही मेरी शादी हो गयी थी, लेकिन ससुर जी ने राँची टाउन में ही मुझे अपने पास रखकर पढ़ाया-लिखाया। उनका अपना लड़का नहीं है। अब भी उन्हीं के कारण ठेकेदारी कर रहा हूँ।

स्वरूप की जीप नवरतनगढ़ के इलाके में दाख़िल होती है तो गणेश बड़ा ही हैरान होकर सोचता है कि इतने पास होते हुए भी यह इलाका इतना कैसे बदल गया है।

स्वरूप ने कहा, "तुम कोई ख़बर नहीं रखते। इस इलाके से राजा का लड़का ही एम० पी० बना है। तभी तो नवरतनगढ़ में सड़क, अस्पताल, स्कूल—सभी कुछ बन गया है।"

ठेकेदारी के रुपये से स्वरूप जैसे लोगों के रंगों से पुते दुमंजिले मकान हैं। गणेश केवल स्वरूप के पिता को ही पहचान पाता है। वे कहते हैं, "आओ बेटा, आओ।" उसके सिर को सूँघकर आशीर्वाद देते हैं। उनके बदन से गणेश को पसीने, मैल, श्लेष्मा और आयुर्वेदिक तेल की जानी-पहचानी गंध आ रही थी। स्वरूप उसे दूसरी मंजिल पर ले जाता है। ग्रामोफ़ोन से गाना सुनवाता है। ट्रांजिस्टर और रेडियो भी दिखाता है, फिर कहता है, "आराम करो। दारू चलेगी?"

"मैं नहीं पीता।"

"फिर रहने दो।"

गोश्त का पुलाव और रबड़ी खाते हैं। स्वरूप गणेश की समस्या सुनना चाहता है, किन्तु उसकी बातों में उसका मन नहीं लग पाता। गणेश को भी लगता है कि सारे ज़रूरी काम छोड़कर वह यहाँ समय बरबाद कर रहा है।

सुबह-सुबह ही वे दोनों तोहरी चले आते हैं। गणेश को जीप से इ- उतारकर स्वरूप डाल्टन गंज चला जाता है। गणेश को लगता है कि स्वरूप जैसे लोगों की हवा लगने से दूसरे आदमी भी बिगड़ जाते हैं। इ- जैसी चीज छोड़कर ठेकेदारी! उसे लगता है कि जैसे वह रें

है।

तोहरी में उसे एस० डी० ओ० मिल जाते हैं। एस० डी० ओ० यह मौक़ा छोड़ना नहीं चाहते। गणेश से कहते हैं, "ज़रा इधर तो आइये। आप से एक बात करनी है।"

"क्या बात है? यहीं नहीं बता सकते?"

"नहीं, इधर आइये।"

एक तरफ़ खड़े होकर एस० डी० ओ० उससे कहते हैं, "सुना है, तुम अभय को जान से मारना चाहते हो। अछूतों को भी नहीं छोड़ोगे और मेरी ख़बर भी लोगे। देखिये, अगर आप जंगल में आग लगाकर उन्हें फँसाना चाहेंगे तो पुलिस आयेगी और मैं भी आऊँगा। मुझे पता चल गया है कि जो भी गड़बड़ होगी, वह आप ही करायेंगे। आपको छोड़ूँगा नहीं। चाहे आप मेरी परवाह न करें। मैं भी आपकी कमर में रस्सी डालकर, पूरे बाढ़ा गाँव का चक्कर लगवाकर गाड़ी में बिठाकर लाऊँगा।"

एस० डी० ओ० हाथ झटककर गणेश के बोलने के प्रयास को हवा में उड़ा देता है। गणेश के दिमाग़ में तेजी से विस्फोट-सा होता है—हरोआ! हरोआ!! हरोआ!!!

गणेश ख़ुद गाड़ी हांकता हुआ तोहरी आया था। ख़ुद ही हाँककर वापस ले जाता है। 'हरोआ' भंडार-घर में काम कर रहा था। भीषण गरज के साथ हरोआ कहता हुआ वह अपने ख़ास कमरे की तरफ़ दौड़ता है। बंदूक निकालकर टोटा भरते हुए चिल्लाता है, "हरोआ, आज तुझे तेरे पुरखों के पास नरक में भेजकर ही दम लूँगा।"

गणेश की पत्नी बिजली की गति से आँगन में से लड़की को उठाकर भंडार-घर में चली जाती है। दरवाज़ा बंद कर हरोआ से कहती है, "तुम्हें गोली मारने आ रहा है मालिक। दरवाजे के सामने बोरियाँ लगा डालो।"

हरोआ पहले तो पत्थर बन जाता है, उसके बाद दरवाजे के सामने गेहूँ और धान की बोरियाँ डालने लगता है। बहू को मुंह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा करता है। गणेश जोर-जोर से दरवाजे पर लात मारता है और गाली बकता है। हरोआ दूसरी बोरियों के सहारे

ऊपर चढ़कर छप्पर में से फूस हटाता है।

गणेश चिल्लाता है, "मैं कुल्हाड़ी से दरवाजा काट डालूँगा।"

गणेश कुल्हाड़ी लाने जाता है। बहू लड़की को उठाये डर से काँपती हुई सफ़ेद पड़ जाती है। हरोआ छप्पर फाड़कर पीछे से बाहर कूद कर दौड़ने लगता है अपने घर की ओर। गणेश कुल्हाड़ी से दरवाजा काटकर अन्दर सिर डालकर देखता है। हरोआ नहीं है। ऊपर देखने पर टूटा छप्पर नजर आता है। बीवी को देखकर कहता है, "पहले उसे मारूँगा, फिर तुझे।"

गणेश बंदूक लेकर दौड़ता है। पुतली अपनी लड़की को लेकर पीहर भाग जाती है, उसके पीछे-पीछे नौकरानियाँ भी।

गणेश के पहुँचने से पहले ही हरोआ अपने घर पहुँच गया।

उसने कहा, "मालिक सब-कुछ जान चुका है। वह मुझे मारने के लिए बंदूक लेकर निकल पड़ा है। यहाँ पहुँचने ही वाला है। जल्दी करो लछिमा, जंगल में भाग चलें।"

लछिमा ने उसे जोर से अन्दर की ओर धकेल दिया। दरवाजे के चौखटों पर दोनों हाथ टिकाकर खड़ी हो गयी और कहा, "वह आ पहुँचा है।"

गणेश ने पूछा, "कहाँ है वह कुत्ता? उसे आज कुत्ते की तरह गोली मारूँगा।"

"पहले मुझे मारो, फिर उसे मारना।"

"हट जाओ, लछिमा! मैं उसे..."

"नहीं।"

"तुम जानती हो, वह कौन है? उस कुत्ते ने तुम्हें कभी बताया ही नहीं होगा कि किस गाँव में वह बेगारी करता था। मालिक का खून करके यहाँ भाग आया और पिता जी ने उसे शरण दे दी। हाँ, पिता जी मुझे बोल गये हैं। मेरा उस पर यही अधिकार है।"

लछिमा चिल्ला उठी, "अब उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं रहा। अंग्रेजों के समय में उसने कोई खून किया था। वही डर दिखाकर तीस साल तक उसे बिना वेतन, बिना मजदूरी के तुमने काम कराया और अपना कितना पैसा बचा लिया है। क्या वह तुम्हारे यहाँ बेगारी

नहीं रहा? इसी अधिकार के वल पर तुमने इतने सालों तक उसे डर दिखाकर अपने कब्जे में रखा?"

"हट जाओ, लछिमा! वरना तुम्हें भी मार डालूंगा।"

"नहीं!" हरोआ पशुओं जैसी गुर्राहट लिये हुए एक अनजान स्वर में गरज उठा। लछिमा को हटाकर, धारदार दाव हाथ में लिये वह वाहर कूद पड़ा। तभी गणेश की वंदूक गरज उठी और साथ ही उसके गले से आर्त-नाद फूट निकला। गणेश के कंधे पर दाव फेंककर मारी थी हरोआ ने। वंदूक उसके हाथ से छिटक कर दूर जा गिरी। हरोआ की जांघ में गोली लगी थी। वह नीचे वैठ गया। अव लछिमा ने दाव उठा ली। गणेश उसकी ओर देख रहा था। लछिमा वोली, "निकल जाओ यहां से! अभी इसी समय!"

गणेश ने अपने कंधे पर हाथ लगाया—खून-ही-खून। वंदूक उठायी गणश ने और वहां से चल दिया।

लछिमा ने हरोआ को धीरे से सहारा देकर खड़ा किया और चार-पाई पर जा लिटाया। वोली, "मैं अभी आती हूं। विगुलाल को वुला लाऊं।"

अचानक उसका आंगन लोगों से भर गया। विगुलाल की स्त्री, भिखारी की स्त्री, उसकी लड़की और अनेक वूढ़ी औरतों की भीड़ लग गयी। भिखारी की स्त्री मरदों को वुलाने चली गयी।

विगुलाल की स्त्री ने कहा, "लछिमा, चलो गाड़ी पर छांव करें। हरोआ को तोहरी ले चलें।"

लछिमा हरोआ का सिर गोद में लेकर वैठ गयी। गोली जांघ में लगी है, पर हरोआ का चेहरा क्यों सफ़ेद पड़ता जा रहा है?

हरोआ ने क्षीण, मगर एकदम साफ़ स्वर में कहा, "लछिमा, मुझे तोहरी मत ले जाओ।"

"गोली को निकाल दिया जायेगा...। मौसी, ज़रा पंखे से हवा करो। सुराही से पानी ला दो! तुम अच्छे हो जाओगे जी, मैं...मैं भला किसके सहारे रहूंगी?"

"लछिमा, गोली मेरे पेड़ू में घुस गयी है।"

"खून कैसे बंद हो ? पट्टी कहाँ बाँधूं ?"

"लछिमा...!"

"क्या कहते हो, बोलो ?"

"मुझे लेकर फिकर मत करो अब।"

"नहीं, क्यों न करूँ ?"

आँखें मूँदकर, हरोआ ने रुक-रुककर कहा, "देह का पूरा खून नीचे उतर रहा है। तोहरी किसे ले जाओगी ? लछिमा, बात सिंहभूम जिले की है। मालिक का नाम था सूरज सिंह। हम थे बेगारी पर उसके यहाँ। उसने सेवक-पट्टा भी लिखा लिया था। बहुत जुलुम होता था। एक दिन हमने मार डाला उसे। फिर इधर भाग आये। मेदिनी सिंह ने पेट में उँगली डालकर यही बात निकाल ली थी। और मरने से पहले उसने गणेश को यह बात बता दी। यही अधिकार था मुझ पर इनका। तुम पूछती थी न कि तुम पर इनका क्या अधिकार है ?"

"सब झूठ है। उनकी बदमाशी है। बात इतनी पुरानी है। वह तुम्हें पकड़वा देगा, इसीसे तुम डरते थे न ?"

"हाँ लछिमा, इसी डर के मारे मरता था।"

"पहले क्यों नहीं बताया ? पहले ही हम सब-कुछ छोड-छाड के भाग जाते। लड़के-बच्चे तो थे नहीं, फिर हमें मोह किसका ?"

हरोआ के मुँह से फिर बात न निकली। सिर्फ खून निकलता रहा। आँगन में बहता रहा खून। जितना खून निकलता गया, हरोआ की देह भी जैसे उतनी ही सिकुड़ती गयी। दुसाध, बिगुलाल के घरवाले, भगी, जर-खरीद प्रजा—सभी आ खड़े हुए। लछिमा बोली, "अब इसे तोहरी ले जाकर क्या होगा ? बचेगा नहीं। फिर इसी घर में ही क्यों न रहे ? इस घर को कितना प्यार करता था।"

भीड़ को ठेल कर आगे निकल आता है राँका दुसाध। बोलता है, "ऐसा क्यों कहते हो ?"

लछिमा आहिस्ता से घाव से कपड़ा हटा देती है—जाँघ के मास को पार कर पेड़ू तक सूराख हो गया था। लछिमा घाव को कपड़े से फिर ढँक देती है।

शाम के लगभग हरोआ मर जाता है। लछिमा उसे लिये बैठी रहती है। आंगन में दीप जलता है। भोर होने पर लछिमा कहता है, "अब और नहीं रखूंगी इसे अपने पास।"

"कौन-कौन उठायेगा इसे ?"

अचानक सबको याद आता है कि हरोआ ने उनके लिए जान तो दी है। लेकिन उसकी जाति क्या है, यह तो किसी को भी मालूम नहीं।

लछिमा ने कहा, "तुम सब लोग मिलकर उठाओ। कमरे में ले चलो। उसने कभी अपनी जाति तो बतायी नहीं, मैंने भी कभी नहीं पूछा।"

"क्या कमरे में ही रखोगी उसे ? लछिमा...!"

"नहीं, मैं पागल नही हुई हूँ। इस कमरे को वह बहुत प्यार करता था। जब मैं वहां रहती थी, तब वह यहां सोता था। गुलाल से कहकर और मेरी आज्ञा लेकर पेड़ लगाता था, कमरे की मरम्मत करता था। अब मैं यहां नहीं रह सकूंगी।" यह कहकर थोड़ा रुकी लछिमा। फिर शांत स्वर में बोली, "अब मैं इस बाढ़ा में ही नहीं रहूंगी। बहुत...बहुत हो चुका।"

"कहां जाओगी ?"

बिगुलाल ने कहा, "हमारी टोली में चलो।"

धनपतिया ने कहा, "मेरे घर चल।"

लछिमा ने सिर हिलाया। "नहीं, नहीं। तुम लोग समझते नहीं। बहन भाग आयी तो आज रामरूप भी गुस्से में है। मालिक-मालिक का गठबंधन कल फिर से होगा। वे मुझे भला रहने देंगे यहां ? मेरे कारण तुम्हारी टोली को ही जला डालेंगे। रांका के आदमी मेरे लिए एक झोंपड़ी खड़ी कर देंगे। अभय महतो एक परमिट बनवा देगा।"

"और तेरी जमीन ?"

"नहीं मौसी, गणेश को पाला-पोसा था, उसी की बखशीश में मिली थी जमीन गुलाल को।" पेड़ के तने से टिककर जैसे लछिमा किसी और के बारे में कह रही है। उसी तरह आज पहली बार उसने अपने वंचित, अपमानित जीवन की कहानी सबके सामने सुनायी।

"गुलाल ने मुझे बंधक रखा। और अपने लिए हर महीने की तनख्वा

और जमीन का करार करवा लिया। मुझे पूछा तक नहीं। अब न गुलाल और न मेदिनी मिह्र। मजजात बच्चे को सीने से लगाकर पाला-पोसा। इसी की बख्शीश बाप जीवन-भर देता रहा। मोहरकरन की बात सोचो, मौसी? और उसी के लड़के ने, कल, पालने-पोसने का कर्ज एक गोली से चुका दिया। फिर जमीन क्यों रखूं? अब पूरा हिसाब खत्म।"

लछिमा बोली, "छप्पर तोड़ दो। बेड़ा काट डालो। आँगन के सभी पेड़ काट दो और घेर के बीच में ही सब-कुछ ऊँचे तक सजाओ और उसे उस पर लिटा दो। मौसी, पहले तुम लोग नहा लो। लो, नये कपड़े पहनाओ, बिगुलाल!"

कल की काटी लड़की का बोझा सभी के घर पड़ा ही हुआ था। सभी लोग लकड़ियाँ उठा लाये। अनजाने गोत्र और अनजानी जाति का हरोआ, जिसका सारा जीवन गुलामी में कटा, जो जन्मा ही दास था, राजा की तरह एक बहुत ऊँची चिता की सेज पर धू-धू करती आग में जल गया।

लछिमा को घेर कर उसकी बाँह पकड़कर सभी लोग उसे जंगल के उस पार ले जाते हैं। इस समय लछिमा उन सभी को बेहद प्रिय हो गयी थी।

राँका के आदमियों ने ऊँची-सी जगह पर लछिमा के लिए झोंपड़ी खड़ी कर दी। लछिमा ने कहा, "राँका, यह पैसे ले लो। अगर गैबीनाथ में मिसिर देवता मिलें तो उन्हें दे देना। सारी बात बता देना। वह हरोआ के नाम से पूजा-ऊजा कर देगा। वही किरिया हो जायेगी, बस।"

मिसिर सुनकर विह्वल हो उठा। धरती पर बैठ गया। थर-थर काँपने लगा। फिर बोला, "लछिमा से कहना कि मैं पूजा कर हरोआ की आत्मा की शान्ति करा दूँगा। रुपयों की जरूरत नहीं है।"

"रुपये न लेने पर उसे दुख होगा।"

मिसिर ने पैसे ले लिये। बोला, "यह भी कोई बात हुई? हरोआ ने क्या किया था, उसका रिकार्ड ही कहाँ था? फिर उसे कौन पकड़ता? हम लोग तो सोचते थे कि मेदिनी ने उससे सेवक का पट्टा लिखा कर खरीद लिया है। हरोआ को तो पता था कि सेवक का पट्टा नहीं है। फिर वह क्यों डरा?"

"पुलिस पकड़ेगी उसी खून के अपराध में ।"

"बस इसीलिए। इतने साल तक डर के मारे उनका दास बना रहा। हे परमेश्वर ! यह कैसा अन्याय है ! हाय रे लछिमा-हरोआ ! यह सोचकर मन को कितनी शांति मिलती थी कि वे सुख-चैन से हैं।"

रांका ने बड़े आश्चर्य से मिसिर की ओर देखा। फिर कहा, "चलूं, देवता ! अब तोहरी जाऊंगा।"

"लछिमा का ध्यान रखना, बेटा ! मैं तो गरीब आदमी हूं। कोई घर भी नहीं है मेरा। पेड़ के तले रहता हूँ। बीच-बीच में यात्रियों को पकड़ लाता हूँ। ठाकुर का प्रसाद मिल जाता है। घर होता तो उसे बुलाकर रहने को कहता। बेटी की तरह रहती।"

"मैं चलूं फिर !"

रांका तोहरी पहुँचता है। अभय महतो को सारी बातें बताता है। सुनकर अभय को लगता है कि जैसे उसके गाल पर किसी ने थप्पड़ लगाया हो। क्योंकि रांका पूछता है कि गणेश सिंह को किससे पता चला कि हरोआ ने ऐसा कहा है ?

"रांका, तुम थोड़ी देर बैठो।"

"क्यों ?"

"ज़रा देर बैठो तो सही।"

अभय सीधा गया एस० डी० ओ० के पास। कचहरी शुरू होने वाली थी। एस० डी० ओ० व्यस्त थे, बेहद व्यस्त। फिर भी अभय ने उन्हें सारी बात बतायी।

एस० डी० ओ० ने कहा, "मैंने उसे धमकाया था। बदजात ने दो और दो चार कर लिये। लेकिन इस घटना की कोई रिपोर्ट क्यों नहीं आयी ? उन्होंने अब तक रिपोर्ट क्यों नहीं दर्ज करायी ?"

"अब दर्ज कराने पर आप कोई व्यवस्था करा सकते हैं ?"

"अरे, देखा जायेगा। गणेश को किस तरह से फंसा सकें तो...। खैर यह बताओ कि ये सारी बातें आपको किसने बतायीं ?"

"रांका दुसाध ने।"

"वह यहीं मौजूद है ?"

"हाँ। लेता आऊँ ?"

"बुला लाइये, जरा जल्दी।"

राँका एस० डी० ओ० के घर के बरामदे पर उकड़ू बैठ गया। सामने कचहरी है। लोग आ-जा रहे हैं। राँका ने क्रम से सारी घटना बता दी।

"उस समय तुम वहाँ मौजूद थे ?"

"घटना के वक्त नहीं था। गणेश सिंह के चले जाने के तुरत बाद वहाँ पहुँचा था। हम सभी लोग पहुँचे थे।"

"क्या-क्या हुआ, बताओ तो ?"

राँका पूरी घटना बयान करता है। एस० डी० ओ० कहता है, "तुम बाहर जाकर बैठो।" फिर अभय से कहता है, "आप टिफिन टाइम में आयें या शाम को।"

"शाम को ही आऊँगा।"

अभय अपने घर यानी संघ के दफ्तर में मिले एक कमरे में स्टोव पर खाना बनाता है। राँका आज उसका अतिथि है। गांधी मिशन के कुएँ पर दोनों ने स्नान किया और होटल में भात खाया। अभय ने कहा, "अब तुम मेरे साथ मत आओ। बातचीत करके मैं अकेले ही आऊँगा।"

राँका ने भात खाया। फिर एक पान खरीद कर खाया और बीड़ी सुलगायी। कुछ बातों में वह अभय से ज्यादा समझदार है। अभय से कहने लगा, "हम दुसाधों की जमीन चन्दरभान सिंह और गजमोती सिंह ने छीन ली थी। टोले की जमीन मेदिनी सिंह की थी। जमीन क्या थी, दीमकों के टीलों की कतारें थीं। हमने कितनी मेहनत से केरोसिन खरीद कर, गाँव-भर से सूखे पत्ते बटोर कर चार दिन तक आग जलायी। तब जाकर दीमकें मरीं। मेदिनी सिंह ने जमीन का एकमुश्त बीस रुपया लिया था। बस। खैर, जब जमीन चली गयी तो हमें पता चला कि उसने गैरकानूनी ढंग से जमीन ली है। मेदिनी ने कहा, 'तुम लोग चले जाओ यहाँ से।' उस समय हम लोग थे और सिर्फ एक हाकिम था। तुम्हारा संघ भी नहीं था। हम लोगों ने कचहरी के पेशकार के आगे कई बार अर्जियाँ पेश कीं। हमने बहुत भाग-दौड़ की। कहा जाता, इतना रुपया लाओ, उ

रुपया लाओ। हमारे जैसे आदमियों का करीब एक सौ रुपया चला गया।"

"काम हुआ?"

"कुछ नहीं हुआ, मालिकों ने क्या कहा-सुना, बाद में पता चला। हमने जो कुछ कहा था, उस पर अदालत ने कहा कि वह जमीन के रिकार्ड खोज कर देखेगी कि हमारा हक बनता है या नहीं? बनता है तो कितना बनता है? हाकिम ने भी कहा, 'अदालत के सामने तो मालिक-प्रजा समान हैं।' मगर अदालत कानून के रास्ते पर चलती है।"

"उसके बाद?"

"अभी तक रिकार्ड की खोज जारी है। कुछ नहीं होने वाला। जो बंदोबस्ती जमीन दी जाती है, उसका रिकार्ड जानते हैं, कहाँ रहता है जो अदालत देखेगी? पेशकार तो वही है। उसने तो उसी दिन साफ कह दिया था, 'अरे भाई, जरखरीद प्रजा को बेदखल करके ही मालिक जमीन लेता है। अदालत से उसका फैसला न हुआ है और न होगा। तुम लोगों के पीछे कोई विलासप्रसाद भी नहीं है।'"

"ओह, विलासप्रसाद!"

विलासप्रसाद इस शासन और समाज-व्यवस्था के ही अनअपेक्षित परिणाम थे। वे भागलपुर के सरकारी वकील हैं। बिहार के ब्रिटिश-विरोधी संघर्ष में उनके परिवार की तीन पीढ़ियों से तीन लोग फाँसी पर चढ़कर शहीद हुए थे। मालिक नारायण मिश्र द्वारा बेदख़ल किये गये इक्कीस किसानों का केस लेकर बड़ी हिम्मत से उन्होंने किसानों के पक्ष में मुक़दमे का फैसला करवाया। इस केस को हाथ में लेने से पहले उन्होंने सरकारी वकील का पद त्याग दिया था। साधारण वकील की हैसियत से केस लड़ा था। नारायण मिश्र ने हाई कोर्ट में अपील की। पटना के रास्ते पर अज्ञात हत्यारों के हाथों विलासप्रसाद की हत्या हो गयी। उन इक्कीस किसानों को घर क्या, गाँव छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया गया। अभय समझ गया कि पेशकार ने विलासप्रसाद का नाम लेकर राँका से मज़ाक किया है। वह समझ गया कि मामला काफ़ी पेचीदा है।

राँका बोला, "इतनी बात तुम्हें क्यों बतायी? क्योंकि तुम अच्छे आदमी हो। लेकिन तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं है। हमारी बातें

हाकिम से कहने से भी कोई लाभ नहीं। हाकिम क्या जवाब देंगे, मुझे मालूम है। पूछेंगे, 'सबूत कहाँ हैं? हरोआ कौन है?' वह मर गया है। 'लछिमा?' वह हरोआ की स्त्री है। हरोआ की गोली का घाव नहीं दिखाया जा सकेगा। गणेश सिंह अपने कंधे का घाव दिखायेगा और हरोआ के नाम पर हजारों दोष मढ़ेगा।"

"देखेंगे।"

"गणेश के कंधे पर लगा घाव ही हमारे लिए लाभ है। वैसे होगा कुछ भी नहीं। हरोआ ने वार किया था। खड़े होकर मारता तो बायाँ हाथ कंधे से उतर जाता। अच्छा रहता। गोली खाकर भी उसने दराँत मारा। कितना जवान था! इतनी बड़ी देह थी। कंधे पर भैंस का बच्चा उठाकर चला आता था। हमें बचाने में उसने अपनी जान दे दी।"

राँका चला गया।

एस० डी० ओ० ने शाम को अभय से सारी बातें सुनी। राँका की तरह वह भी बोला, "सबूत कहाँ है? हरोआ मर गया है। गणेश सिंह अब अपना कंधे का घाव दिखायेगा। पचासों बात कहेगा।"

"तो फिर?"

"एक बात अच्छी हुई कि गणेश ने खुद आकर कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी। एक काम कीजिए। हरोआ की स्त्री से एक रिपोर्ट थाने में दर्ज करवा दें। मैं दारोगा से कह दूँगा। एकदम गैरकानूनी काम कर रहा हूँ, मगर गणेश जैसे आदमी को थोड़ा पाठ पढ़ाने के लिए। इस रिपोर्ट पर प्राथमिक जाँच-पड़ताल में जाकर उसकी बंदूक जब्त कर ली जाये। उसके पास लाइसेंस तो होगा नहीं। यही ठीक रहेगा।"

अभय ने कहा, "एक बात है।"

"क्या?"

"देखिए, उस समय आपसे मैंने बार-बार कहा था कि गणेश से कुछ कहना हो तो इस तरह कहिए कि उसे शक न हो कि यह बात किसने आपको बतायी है। आपने शायद सही ढंग से बात की होगी, लेकिन उसने ठीक पकड़ लिया और उस आदमी को मार डाला। वह तो मर ही गया। उसे तो अब लौटाया नहीं जा सकेगा न?"

एस० डी० ओ० जानता है कि ऐसा करने पर उसकी बदली हो जायेगी। पता नहीं क्यों, वह अभय की नजरों में साबित करना चाहता है, 'देखिए, मेरी कथनी और करनी में फर्क नहीं है।' वह ऐसा क्यों चाहता है, कहा नहीं जा सकता। एस० डी० ओ० ख़ुद हरिजनों या खेत-मजदूरों का पैरोकार नहीं है। मालिकों का विरोधी भी नहीं है। वह खेत-मजदूर या मालिक, किसी का भी समर्थक या विरोधी नहीं है। वह प्रशासन-सरकार-प्रधानमंत्री-संविधान-कानून में सुधार के द्वारा देश की उन्नति वगैरा में पूरी तरह विश्वास रखता है। इस तरह के कानून पास होने पर उसे बेहद ख़ुशी होती है। तोहरी जैसी जगह में वह सोच नहीं पाता कि किसे बताए कि भारत में गणतंत्र सफल हो रहा है।

गणेश पर उसका क्रोध कई कारणों से है। जिस व्यक्ति के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है, जिसकी मानसिकता बर्बर और मध्ययुगीन है, वही गणेश इतना धनवान है और फिर भी वह भारत की उन्नति की दौड़ में रोड़े की तरह अटक रहा है। अगर गणेश पढ़ा-लिखा, ट्रैक्टर चलाने वाला, अँग्रेजी बोलने वाला, आधुनिक और उन्नत तरीके से खेती करने वाला खेत-मालिक होता तो शायद इस एस० डी० ओ० के दिल में उसके प्रति विद्वेष नहीं होता। एस० डी० ओ० को मालूम है कि जागरूक जमींदार अपने किसानों का शोषण और बेदखली बड़े ही जागरूक और आधुनिक तरीकों से करते हैं। उस सूरत में उसे अभय की खामोशी कोई अपराध नहीं लगती। वे लोग सभी कुछ कानून के घेरे में रहते हुए करते हैं। कानून ने ही जब मालिक-महाजनों के हाथों किसानों के शोषण और भूमि से उनकी बेदखली की पूरी व्यवस्था कर रखी है तो गणेश जैसे बर्बर लोग एस० डी० ओ० और थानों को नाक पर रखकर ख़ुद क्यों नगदान बने हैं!

गणेश पर एस० डी० ओ० के क्रोध का एक और भी कारण है। ... का कहना है कि वह किसी एस० डी० ओ० को नहीं मानता ... उसने खुल्लमखुल्ला ऐसा नहीं कहा है। बाढ़ा में कैम्प ... अच्छा रहे। मगर वहाँ गणेश सिद्ध है। उसने ... है। अब गाँव में किसी के घर में पाखाना नहीं है। अब

में जाया जाता है। वह आदमी नहीं, जानवर है।

एस० डी० ओ० के दिमाग़ में इसी तरह की बातें चक्कर काट रही हैं
आ की दुखद मृत्यु के पीछे उसकी कोई नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है
बात उसे अभय को देखकर ही याद आती है। वह बोला, "ठीक है।"

"क्या ?"

"आप जो कुछ जानते हैं, लिखकर मुझे दे दें। या लिखकर लेते आयें।
केस दर्ज तो होना नहीं है। क्योंकि एक ओर वह दुष्ट है तो दूसरी ओर
कमज़ोर विधवा। विधवा के पास केस लड़ने के लिए पैसा भी नहीं है।
फिर वह उसे मार-वार भी सकता है।"

"मेरे लिखने से क्या होगा ?"

"आप मुझे इसकी जानकारी दे रहे हैं। इसी आधार पर मैं खुद
जाऊँगा और उसकी बंदूक ज़ब्त कर लूँगा। पूरी जाँच करूँगा। घर में
नज़रबन्दी के आदेश निकाल दूँगा। बाहर पुलिस बिठा दूँगा या मुचलका
लिखवा लूँगा। केस होगा ही। अगर सरकार की तरफ़ से केस नहीं भी हो
तो आप में और उसमें ही हो जाये।"

"सरकार की तरफ़ से ही हो तो अच्छा रहे।"

"देखेंगे। शायद बंदूक ज़ब्त की जा सके। हाँ, यही अच्छा होगा।
रिपोर्ट दुसाधों की नहीं, औरों की भी नहीं, विधवा की भी नहीं, बल्कि आप
एक ऐसे आदमी हैं जो उनका भला चाहते हैं। आप न्याय चाहते हैं। बड़
अजीब केस है। मगर जो हो, मैं लड़ जाऊँगा।"

"तो लिख लाऊँ ?"

"यहीं बैठकर लिख लें।"

"एक कापी रख लूँ अपने पास ?"

"ज़रूर।"

"मैं हिन्दी में लिखूँगा।"

"उसी में लिखिए। राष्ट्रभाषा है। हिन्दी में ही ठीक है।"

रिपोर्ट लिखने के बाद अभय ने कहा, "मगर देखिएगा, उस
और दुसाधों वगैरह पर जुल्म न होने पाये।"

"निश्चय ही ऐसा होगा। वचन देता हूँ।"

"कानून-व्यवस्था का मामला खड़ा होने पर न्याय होना चाहिए।"

"ज़रूर!"

अभय ने लौटकर सारी बातें चम्पावती को बतायीं। बुढ़िया चम्पावती ने समझदारी से कहा, "बेटा, जनमत तैयार करो। रिपोर्ट की कापी मुझे दे दो, मैं अंग्रेज़ी में अनुवाद करके किसी मंत्री-वंत्री या अख़बार वालों को भेज देती हूँ।"

"अच्छा माता जी!"

सोहरी का स्टेशनमास्टर आजकल रेलवे यूनियन में काम करने का अच्छा फल भोग रहा है। उसकी उम्र कम है। सोशलिस्ट पार्टी का हमदर्द है। वह अभय से बोला, "इस चरखा-मिशन और पाखंडी संघ से इस तरह के काम नहीं हो सकेंगे। किसी शक्तिशाली राजनीतिक पार्टी की मदद लेना ज़रूरी है। यूनियन की ज़रूरत है।"

"मास्टर साहब, ऐसे दीन-दुखियों के लिए न तो कोई पार्टी है, न कोई यूनियन। इनकी पीठ पर अगर कोई होता तो हमारे बिहार में इतने किसान क्यों मरते, क्यों बेदखल होते?"

"क्या करें, एजूकेशन नहीं है न?"

"लिखाई-पढ़ाई?"

"अरे, सरकारी स्कूलों में भी तो नहीं भेजते वे अपने लड़के-बच्चों को।"

"उनके मालिक उन्हें ऐसा नहीं करने देते। फिर लड़के तो आठ साल की उम्र से ही गाय चराने लगते हैं, पढ़ने कब जायें?"

विषय में प्रश्नकर्ता की रुचि कुछ ही क्षणों में खत्म हो जाती है, शायद। रुचि थी ही नहीं। उसने कहा, "बाढ़ा गाँव में अछूतों के बारे में तो आप सोच ही रहे हैं। हमारे रेलवे कुलियों, लाइन की मरम्मत करने वाले कुलियों को भी देख आयें। उन्होंने आपको निमंत्रण दिया है। हमें तो बुलाते नहीं।"

"मैं अछूत हूँ ना।"

अभय हँसता है और चला जाता है। बाढ़ा गाँव की घटनाएँ उसके दिल को दर्द में डुबोए रखती हैं। स्टेशनमास्टर के काफ़ी हलके गले में

…में जाया जाता है। वह आदमी नहीं, जानवर है।

…स० डी० ओ० के दिमाग़ में इसी तरह की वातें चक्कर काट रही हैं। …की दुखद मृत्यु के पीछे उसकी कोई नैतिक जिम्मेदारी वनती है, …ात उसे अभय को देखकर ही याद आती है। वह वोला, "ठीक है।"

"क्या ?"

"आप जो कुछ जानते हैं, लिखकर मुझे दे दें। या लिखकर लेते आयें। …स दर्ज तो होना नहीं है। क्योंकि एक ओर वह दुष्ट है तो दूसरी ओर …मज़ोर विधवा। विधवा के पास केस लड़ने के लिए पैसा भी नहीं है। …फिर वह उसे मार-वार भी सकता है।"

"मेरे लिखने से क्या होगा ?"

"आप मुझे इसकी जानकारी दे रहे हैं। इसी आधार पर मैं खुद जाऊँगा और उसकी वंदूक ज़ब्त कर लूँगा। पूरी जाँच करूँगा। घर में नज़रवन्दी के आदेश निकाल दूँगा। वाहर पुलिस विठा दूँगा या मुचलका लिखवा लूँगा। केस होगा ही। अगर सरकार की तरफ़ से केस नहीं भी हो तो आप में और उसमें ही हो जाये।"

"सरकार की तरफ़ से ही हो तो अच्छा रहे।"

"देखेंगे। शायद वंदूक ज़ब्त की जा सके। हाँ, यही अच्छा होगा। रिपोर्ट दुसाधों की नहीं, औरों की भी नहीं, विधवा की भी नहीं, वल्कि आप एक ऐसे आदमी हैं जो उनका भला चाहते हैं। आप न्याय चाहते हैं। वड़ा अजीव केस है। मगर जो हो, मैं लड़ जाऊंगा।"

"तो लिख लाऊँ ?"

"यहीं वैठकर लिख लें।"

"एक कापी रख लूँ अपने पास ?"

"ज़रूर।"

"मैं हिन्दी में लिखूँगा।"

"उसी में लिखिए। राष्ट्रभाषा है। हिन्दी में ही ठीक है।"

रिपोर्ट लिखने के वाद अभय ने कहा, "मगर देखिएगा, उस … और दुसाधों वग़ैरह पर जुल्म न होने पाये।"

"निश्चय ही ऐसा होगा। वचन देता हूँ।"

"कानून-व्यवस्था का मामला खड़ा होने पर न्याय होना चाहिए।"

"जरूर।"

अभय ने लौटकर सारी बातें चम्पावती को बतायीं। बुढ़िया चम्पावती ने समझदारी से कहा, "बेटा, जनमत तैयार करो। रिपोर्ट की कापी मुझे दे दो, मैं अंग्रेज़ी में अनुवाद करके किसी मन्त्री-संत्री या अख़बार वालों को भेज देती हूँ।"

"अच्छा माता जी!"

सोहरी का स्टेशनमास्टर आजकल रेलवे यूनियन में काम करने का अच्छा फल भोग रहा है। उसकी उम्र कम है। सोशलिस्ट पार्टी का हमदर्द है। वह अभय से बोला, "इस चरखा-मिशन और पाखंडी संघ से इस तरह के काम नहीं हो सकेंगे। किसी शक्तिशाली राजनीतिक पार्टी की मदद लेना ज़रूरी है। यूनियन की ज़रूरत है।"

"मास्टर साहब, ऐसे दीन-दुखियों के लिए न तो कोई पार्टी है, न कोई यूनियन। इनकी पीठ पर अगर कोई होता तो हमारे बिहार में इतने किसान क्यों मरते, क्यों बेदखल होते?"

"क्या करें, एजूकेशन नहीं है न?"

"लिखाई-पढ़ाई?"

"अरे, सरकारी स्कूलों में भी तो नहीं भेजते वे अपने लड़के-बच्चों को।"

"उनके मालिक उन्हें ऐसा नहीं करने देते। फिर लड़के तो आठ साल की उम्र से ही गाय चराने लगते हैं, पढ़ने कब जायें?"

विषय में प्रश्नकर्ता की रुचि कुछ ही क्षणों में खत्म हो जाती है, शायद। रुचि थी ही नहीं। उसने कहा, "बाढ़ा गाँव में अछूतों के बारे में तो आप सोच ही रहे हैं। हमारे रेलवे कुलियों, लाइन की मरम्मत करने वाले कुलियों को भी देख आयें। उन्होंने आपको निमंत्रण दिया है। हमें तो बुलाते नहीं।"

"मैं अछूत हूँ ना।"

अभय हँसता है और चला जाता है। बाढ़ा गाँव की घटनाएँ उसके दिल को दर्द में डुबोए रखती हैं। स्टेशनमास्टर के काफ़ी हलके गले से

निकली बातें रात को खाट पर लेटे-लेटे याद आती हैं। राँका वगैरा के मामले में उसे वाक़ई रुचि लेनी चाहिए। किसी राजनीतिक पार्टी का समर्थन उन्हें मिलना चाहिए। यूनियन की भी ज़रूरत है। मगर जिन राजनीतिक पार्टियों ने सर्वहारा को मुक्त करने की घोषणा की है, वे भी तो ज़ुल्म के शिकार और अपमानित किसानों, जाँति-पाँति की मार से मरे हरिजनों के बारे में कोई रुचि नहीं लेतीं। साल-भर में कितने लोग सर्वहारा वर्ग में शामिल होते जा रहे हैं? उन्हें लेकर कौन संगठन बनाएगा? अभय तो साधारण आदमी है, उसमें इतनी क्षमता कहाँ? भारत की जनता के लिए ही जब सब-कुछ है तो फिर क्या ये लोग भारत की जनता में शामिल नहीं हैं? चुनाव के वक़्त रुपया देने वाले गणेश जैसे लोग सरकार के लिए बेहद काम के आदमी हैं। गणेश जैसे लोग राजनीतिक पार्टियों के लिए भी आवश्यक हैं। इसी वजह से राँका वगैरा को किसी की मदद नहीं मिलती।

एस० डी० ओ० की समझ दूसरे ही क़िस्म की है। वह बात करता हुआ कहता है, "क़ानून ने उन्हें जितना कुछ दिया, लेकिन वे उतना भी माँगना ही नहीं जानते। और आप कहेंगे कि क़ानून लागू ही नहीं किया जाता। अगर वे दबाव डालना जानते तो क़ानून लागू हो जाता। मैं इंडस्ट्रियल अफ़सर का बेटा हूँ, शौक से सरकारी क्षेत्र में आया हूँ। इंडस्ट्रियल मज़दूर अपनी माँगें मंज़ूर करवाने के लिए दबाव डालते हैं।"

"कुछ मिलता है उन्हें?"

"कुछ मिल पाता है, कुछ नहीं। बाढ़ा जैसे गाँवों में अभी मध्य युग ही चल रहा है। क़ानून और व्यवस्था को लेकर अगर कोई घटना हो भी जाये तो बाढ़ा वर्तमान युग में पहुँचेगा। इससे समस्या हल भी नहीं होगी।"

अभय सोचता है, शायद बाढ़ा का भाग्य यही है। इतने दिनों तक एकतरफ़ा अत्याचार चलता रहा है और अत्याचारियों ने इसे ही शाश्वत मान लिया है। क्या करें? पीठ पर कोई दल, कोई संगठन, कोई सरकार, कोई सहारा भी नहीं। अभय जो कुछ कर रहा है, वह भी संघ के जन्म-दाताओं के विचार से राजनीतिक कार्रवाई है। अभय जानता है कि वह

कितना अकेला, कितना अक्षम है। शायद बाढ़ा का भाग्य भी यही है। मार खाते-खाते शायद एक दिन पलटकर वे प्रतिरोध भी करें। शायद मार-पीट भी करें। तब एस० डी० ओ० के शब्दों में कानून-व्यवस्था टूट जायेगी। पुलिस आयेगी, राँका वगैरा को पकड़ेगी, गणेश जैसे लोगों को सुरक्षा प्रदान करेगी, भूमिहीन खेत-मजदूरों की तादाद बढ़ेगी, बाढ़ा बीसवीं सदी में पहुँच जायेगा। बही में जमा में गिना जायेगा सिर्फ गणेश के कंधे का घाव।

अचानक अभय ने निर्णय ले लिया। इतना क्या सोचना ? अगर उन्हें सिर्फ बेदखल ही किया जाता है तो अभय उनके साथ चलेगा। पूरे जी-जान से कोशिश करेगा कि उसकी जान-पहचान के लोग इस विषय में रुचि लें। उनके साथ ज़िन्दा रहने की कोशिश करेगा। यही होंगे, अभय की यूनियन या पार्टी या संघ-मिशन का काम।

अगर वह गिरफ्तार हो गया तो ? कुछ भी हो, अभय केस लड़ेगा। अदालत में गवाह के कठघरे में डेढ़ सौ लोगों को ला खड़ा करेगा।

अभय को कुछ ही क्षणों में नींद आ गयी। एस० डी० ओ० ने तो कह ही रखा है कि वह गणेश को सीख देगा। मुद्दई है अभय। वे लोग तो बीच में कहीं नहीं है।

एस० डी० ओ० की जीप गणेश के मकान के सामने जैसे ही आकर खड़ी हुई रामरूप और नाथू जल्दी से दौड़े आये। हाकिम ! एस० डी० ओ० ने निहायत ही नपे-तुले शब्दों में उन्हें डाँटकर हटा दिया। नाथू और रामरूप जानबूझकर घर के भीतर नहीं गये।

पुतली ने कह दिया था, "मुझे मारो, काटो या जो जी चाहे करो, लेकिन मैं वहाँ वापस नहीं जाऊँगी। कदापि नहीं जाऊँगी। गयी तो वह जान से मार डालेगा। तुम दोनों ही मारो। चाहे मुझे या मेरी लड़की को।"

पुतली का कहना है, "गणेश इंसान नहीं है अब, पागल जानवर बन गया है।" नाथू, रामरूप, चन्द्रभान, सागर—सभी जमीन-मालिक इस बात को स्वीकार करते हैं। गणेश की जरखरीद प्रजा का चले जाना, हरोआ की मौत, लछिमा का गाँव छोड़कर चले जाना ऐसे मुद्दे थे जिन पर वे इकट्ठे होकर बातचीत करना चाहते थे।

गणेश ने खुलेआम कहा है, "नौकरानी की औलादो, कुत्तो! इन नों को तुम लोगों ने ही मुँह लगाकर सिर चढ़ाया है। निकलो इस घर वरना सबको हरोआ बना दूँगा। मेरे पास बंदूक भी है, गोली भी।"

अपने कानों से ऐसी बातें सुनकर कौन जायेगा उसके पास? गणेश न्मत्त घायल बाघ बन चुका है। उस दिन अपने बँधुआ किसान गोपाल को पकड़कर ले गया था। बाद में गोपाल भी भाग गया। वह नाथू के घर में कह गया कि "कंधा ठीक होने पर गणेश तुम्हें भी मारने आयेगा।"

फिर भी ससुर और साले की हैसियत से नाथू और रामरूप आगे आये थे। एस० डी० ओ० की डाँट सुनकर दोनों पीछे हट गये। उन्हें लौट जाने का मौक़ा मिल गया। पुतली ने कहा, "ठीक है। उसे जेल में रखने से ही इधर शान्ति होगी, अन्यथा वह मुझे मार डालेगा।"

नाथू ने कहा, "रामरूप, तू अपनी माँ और बहन को लेकर डाल्टन गंज चला जा। उन्हें ममहर में छोड़ आ।"

"आप ही चले जायें। गणेश इस घर में घुसा तो क्या मेरे पास बंदूक नहीं है?"

एस० डी० ओ० की चिल्लाचिल्ली पर गणेश बाहर निकल आया। उसके बाहर निकलते ही चार पुलिस वाले घर में घुस गये और भीतर से उसकी बंदूक निकालकर ले आये। गणेश नंगे बदन था। काले बालों से भरी पुष्ट देह। बग़ल से लिपटती हुई पट्टी बाएँ कंधे पर बँधी थी। गणेश ने शुरू में तो बढ़े-चढ़े स्वर में बात की। लाइसेंस दिखलाने की ब सुनकर हँसा। फिर बोला, "हाकिम साहब, मैं लाइसेंस फ़ीस नहीं दे चुनाव में रुपया देता हूँ। पूरे पचास हज़ार दे चुका हूँ। तीन चुना मैंने कुल मिलाकर पचास हज़ार दिये हैं।"

"जिन्हें रुपया दिया है, उनसे ही बात कीजिए।"

"बंदूक क्यों जब्त कर रहे हैं?"

"लाइसेंस नहीं है, इसलिए।"

सहसा गणेश गरज उठा। बंदूक ही उसकी संगिनी है, आसरा है। बोला, "उस हरामी अभय महतो की बात पर जब्त कर रहे हैं? एक जरख़रीद को मैंने मारा है, बस इसलिए

"जन्म से बंधुआ मजदूर जैसी कोई चीज कानून नही मानता। यह देखिए तलाशी का वारंट ! इसी के बल पर घर की तलाशी ली है, बंदूक जब्त की है।"

"कानून ? क़ानून हमारी खातिर है। मैं जरखरीद गुलाम रखूंगा—क़ानून इसे माने या न माने।"

"चलता हूँ। किसी भी तरह की गड़बड़ी की खबर मिली," एस० डी० ओ० ने घुड़की दी, "तो उसी दिन से यहाँ कैम्प लगवा दूँगा। पूरी जांच करूँगा। अभय महतो के अभियोग की मैं खुद जांच करूँगा।"

"नहीं, बंदूक के बिना मैं नहीं रह सकूँगा। बंदूक और गोली। अभी कई लाशें गिरानी बाक़ी हैं।"

एस० डी० ओ० ने दो पुलिस वालों को वहीं तैनात कर दिया। बोला, "घर से बाहर क़दम न रखें।"

जीप पर चढ़कर खुशी-भरे चेहरे से एस० डी० ओ० बोला, "मुझे आपने धमकी दी है। कल वारंट लाकर आपकी गिरफ़्तारी लूंगा। आज बंदूक ले जा रहा हूँ।"

फिर उसने पुलिस वालों से कहा, "रात के आठ बजे रिलीफ़ आयेगी।"

"नहीं हुजूर, सवेरे भेज दीजिएगा।"

"आदमी बदमाश है, सावधान रहना।"

"नहीं हुजूर, जितना बिफर रहा है, उतना करने की ताकत इसमें नहीं है। कंधे का जख्म देखिए। बायाँ हाथ नीचे झूल रहा है।"

गणेश चीख-चीखकर एस० डी० ओ० को माँ-बाप की गाली देता रहा। चरम-चरम अपमान है यह उसका। कहने लगा, "अभय महतो ! उसे कहाँ से पता चला ? हमारे लोगों ने ही तो बताया होगा।"

यह सुनकर एक पुलिस वाला बंदूक तानकर बोला, "बस, बस। भीतर चले जाइये और चुप होकर बैठिए।"

बंदूक का मुँह गणेश की ओर करते हुए सिपाही ने उसे धमकाया और अपने संगी से बोला, "लालटेन जला लेना अँधेरा होने पर।"

ताने हुए ही उसने घर के चारों तरफ़ का जायजा लिया।

णेश ने घर में घुसकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। चारों ओर धता छायी थी। उसके मज़दूर-किसानों ने गायों-भैंसों को खूँटों से कर हाँक दिया है। कंधे के घाव ने सर्वनाश कर दिया है। गणेश नहीं चला सकता। फिर वह पास भी न रही। पुतली को मारना नाथू को, रामरूप को, अछूतों को—सभी को मारना है। फिर नयी जा लाकर बसाऊँगा। एक बार क्यों, दस बार शादी करूँगा। लछिमा से उनके साथ चली गयी अपनी ज़मीन छोड़कर? कमीने हैं, कमीने हैं ये सब! अचानक आग लगाने का ख़याल आते ही उठा। बदला लेने का रास्ता दिखायी पड़ गया।

केरोसिन, दियासलाई, बस।

रात होने पर।

रात हुई। घर-घर में गणेश की ही चर्चा चल रही है। गजमोती सिंह बोला, "चंद जवान लोग घर का छप्पर फाड़कर भीतर कूद जायें और उसे पकड़कर बाँध दें। उसे गरमी चढ़ गयी है। सिर मुड़ाकर खोपड़ी पर ख़ूब पानी डालकर वैद्य जी का तेल मलने से अच्छा हो जायेगा।"

उसके लड़के सागर सिंह ने मरदाने स्वर में बाप से कहा, "अब उसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं। सभी को गाली दी है उसने। मैं नाथू या रामरूप नहीं हूँ। मैं नहीं सहन कर सकता। मैं राजपूत हूँ। उसे रास्ते पर लाकर ही छोड़ूँगा।"

चन्द्रभान बोला, "यह जो भी हुआ, उसने हमें दुश्मन बना दिया। उसका समय अभी ख़राब जा रहा है। वरना मिसिर क्यों चला जाता कुछ भी हो, गणेश ने जैसी गाली हमें दी है, उसे माफ़ नहीं किया सकता।"

रामरूप ने अपने बाप से कहा, "आप जाइये। मैं यहीं रहूँगा और लूँगा कि कौन नौकरानी की औलाद है! गणेश ने साँप की पूँछ प रखा है। मैं उसे नहीं छोड़ूँगा। अब उसके पास बंदूक ही कहाँ है की बात बीच में मत उठायें। विधवा होने पर पुतली ज़्यादा सुखी माँ कहती है, 'हाल ही में बच्चे को भी मारने जा रहा था।' पुतली तो काले दागों, नोच-खसोट के दागों, लोहे की सींक से जले दागो

पड़ी है।"

नाथू गहरी साँस लेकर बोला, "सरकार मजा देगी। क्या वह किसी छोटी जाति का है? अपनी ही जाति का है, अपना जँवाई है। तुम्हारी तरह जमीन-मालिक है। उसके खून से हाथ काले मत करना। लड़का नहीं हुआ, इसी वजह से पुतली को...।"

"आपके यहाँ भी तो पहले लड़कियाँ ही हुई थी। उसके बाद मैं पैदा हुआ था और आखिर में पुतली। पहले लड़का नहीं हुआ तो क्या आपने भी माँ को ऐसे ही मारा था?"

इस तरह गणेश के मामले को लेकर वाका गाँव की मानसिकता में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। नाथू और गजमोती सिंह के लड़कों ने बाप की बात ठुकरा दी, पुतली ने अपने पति को छोड़ दिया, पुतली की माँ अपनी लड़की को उसके पति के यहाँ वापस भेजने को राजी नहीं हुई और उसने अपने पति और लड़के को धमकी दे डाली, "लड़की, नातिन और मैं एक साथ कुएँ में कूद पड़ेंगे।"

हताश होकर नाथू बोला, "गणेश, यह तूने क्या किया!"

उसे बार-बार लगता था कि गणेश का पकड़ा जाना सभी मालिकों की हार मानी जायेगी। जन्म से गुलाम की तो मालिक हत्या करते ही हैं, मगर पकड़े तो नहीं जाते। क्या होने जा रहा है? मालिकों का जीवन और अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। रामरूप तो अभी बच्चा है। वह समझता नहीं है। कुछ भी हो, गणेश उनका स्वजन है।

उधर राँका के साथ छह-सात आदमी जंगल में जाग-जागकर पहरा दे रहे हैं। इनके पास बंदूक नहीं है, पर गणेश के पास भी तो नहीं है। गणेश के रहते रात को पहरा छोड़ देना संभव नहीं। यह एक भीषण लड़ाई है—राँका जैसे लोगों के अधिकार की लड़ाई। गणेश तो उन्हें बर-बाद करेगा ही। लेकिन राँका वगैरा ऐसा नहीं होने देंगे। धुंधले चाँद की रोशनी में जंगल नैसर्गिक सुन्दरता में डूबा है। राँका और उसके आदमी पूरी तरह से सचेत हैं। गणेश अभी जख्मी पागल जानवर है। हिंसक और धूर्त।

ठीक जानवर की ही तरह, एक बड़े आदिम जन्तु की भाँति ग

अपने घर में से निकलता है। पुलिस वाले जान ही न सके कि गणेश कब चुपके से खिड़की से बाहर निकल गया। केरोसिन तेल का टिन, गूदड़ और दियासलाई लेकर। जंगल में आग। जंगल तो जलेगा ही इसके बाद।

जानवर की तरह ही वह आया। देह में असीम शक्ति है। इसीलिए सारा सामान एक ही हाथ से उठाकर लाया है। शिकारी की भाँति जानवर पर नज़र पड़ते ही कोई बोल उठा, "राँका...वो...वो आ रहा है।"

"ह र्र र्र र्र र्र र्र," चिल्लाते हुए वे दौड़ पड़े। गणेश इसके लिए तैयार नहीं था। उनकी उठी हुई लाठियों को देखकर उसे ऐसा लगा कि जैसे उन सब के हाथों में बंदूकें हैं। गणेश ने टिन और गूदड़ जोर से फेंक मारा उनकी ओर। राँका ने कहा, "देखो, मिट्टी का तेल लाया है।"

अब उसे और माफ़ नहीं किया जा सकता। जमा हुआ क्रोध भयानक चीत्कार में बदल गया और वे तेज़ी से आगे बढ़े। गणेश दौड़ता रहा, वे भी दौड़ते रहे। जंगल में कोने की तरफ़ भागा गणेश। अँधेरे में ग़ायब हो गया। वे कहते ही रह गये, "कहाँ गया? कहाँ गया, भाग गया? जंगल में घुस गया? रतनी और रूपा! तुम सामने की तरफ़ जमे रहो। मैदान में से भागते देखो तो मार गिराना। हम जंगल में घुसकर देखते हैं।"

वे जंगल में घुस गये। गणेश जाने कौन-से अजीब संकेत पर, हाँफते हुए लछिमा के घर के सामने जा पहुँचा। दूर पर बनी नयी झोंपड़ी के सामने। कुंडी खोल दी गणेश ने।

लछिमा उठ बैठी। खड़ी हो गयी। उसे जल्दी नींद नहीं आती। सामने गणेश खड़ा है। उसके कपड़ों से केरोसिन की गंध आ रही है।

"छोटे मालिक!"

गणेश ने सिर हिलाया। बोला, "वे लोग पीछा कर रहे हैं।"

"केरोसिन की गंध? टिन लाये थे क्या? आग लगायी है? जंगल में आग लगा दी है?"

"नहीं, नहीं, नहीं।"

गणेश ने लछिमा के मुँह पर अपना हाथ रख दिया। उसके चेहरे से धूर्तता बरस रही थी। उसने कहा, "टिन फेंक कर भागा हूँ। वे लोग

जगल में घूमे हैं। मुझे तलाश कर रहे हैं।"

"अब ?"

"तू मुझे थोड़ी दूर तक पहुँचा दे। घर चला जाऊँगा।"

"तुम्हें पहुँचा देने पर क्या ये लोग मुझे यहाँ रहने देंगे ?"

गणेश ने पहली बार लछिमा को 'तू' कहकर सम्बोधित किया था। बोला, "तू यहाँ क्यों रहेगी ? जहाँ पहले थी, वहीं रहेगी। चल मेरे साथ। पक्का मकान, अच्छा खाना। बहू को तो अब लाऊँगा नहीं। एक शादी और कर लूँगा ?"

एकटक देखती रही लछिमा उसकी ओर। उसके बाद बोली, "आओ, बैठो।"

टोहकर हरीआ की कटार उसने निकाल ली।

"यह क्या उठा लिया हाथ में ?"

"इसे हाथ में रखना जरूरी है। तभी मैं तुझे बचा सकूँगी।"

"हाँ, हाँ। अरे तेरे घर में रहने से, तुझे दिखा पाने से, उस हाकिम के मुँह पर भी तो जूती पड़ेगी न ?"

"फिर सब ठीक हो जायेगा ?"

"काहे नहीं ठीक होगा ?"

लछिमा के दिमाग में अचानक विस्फोट-सा हुआ। विस्फोट ने लछिमा को पक्का इरादा दिया। अचानक वह हिंस्र हो उठी। लछिमा ने कहा, "मेरे अलावा अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। आज मैं तुम्हें एक बार फिर बचाऊँगी। लेकिन गणेश सिंह, तुम्हारे कहने के मुताबिक नहीं। अपना काम मैं अपने तरीके से करूँगी।"

"तू क्या...?"

लछिमा ने उसकी ओर कटार साध कर वर्णभेदी चीत्कार से रात के आकाश को चीर दिया। "कहाँ हो ? दौड़ो ! गणेश सिंह जगल में आग लगाने आया है। मेरे घर में छिपा है। कहाँ हो ? दौड़ो, गणेश सिंह मेरे घर में है। कहाँ हो ?"

जो सोये थे, वे भी जाग गये। जो जगल में घूमे थे, उन्होंने भी जवाब में हाँक लगायी। धीरे-धीरे एक-दूसरे को पुकारने की आवाजें जहाँ-तहाँ

सुनायी पड़ने लगीं। कोलाहल मच गया। उसके वाद उनकी चीत्कार 'हर्रं र्रं र्रं र्रं र्रं र्रं' आकाश की ओर आग की लपटों की तरह सुलग उठी। शोर जंगल की आग की तरह फैल गया। हथियारवंद लोगों के गले की चीत्कारें ज्वार की तरह चारों ओर ऊपर उठीं और फिर किनारों से टकराने लगीं। लछिमा दरवाज़े से हट गयी और उनके वीच अदृश्य हो गयी।

# सरसतिया

सरसतिया थी, दुसाध की लड़की, दुसाध घर की बहू। बाढ़ा गाँव की बहू। बीच-बीच मे दो-तीन साल के अंतर से शादी का लगन लगता है। कैसे लग जाता है—यह दुसाध, गजू और रैदास वगैरह ही जानते है।

लगन लगता है और लगा ही रहता है एक पक्ष तक, कभी-कभी एक महीने तक। तब सभी गाय चराने वाले लड़को, बच्चो, छोटी-छोटी लड़कियों की शादी हो जाती है। हालांकि शादी और ससुराल जाकर घर करने का कोई सम्पर्क नही होता है। शादी के समय बाप कर्ज-वर्ज लेकर शादी कर देता है। उसके बाद लड़का-लड़की बड़े होते हैं। पहले का कर्ज चुकता होने से पहले ही अगला कर्ज चढ़ जाता है।

लड़की को कुछ-न-कुछ देकर ही ससुराल भेजना पड़ता है। इस तरह कर्ज बढ़ता ही रहता है। बाप उधार लेता है। लड़का चुकता करता रहता है, और कर्ज भी लेता जाता है। उसका लड़का भी उसका कर्ज चुकता करता है और खुद भी कर्ज लेता है।

शादी के मौके पर कर्ज सिर्फ लड़की का बाप ही नहीं लेता। जिन लोगो को लड़की को रुपये देने होते हैं, वे भी कर्ज लेते हैं।

यह कर्ज और ब्याज का साम्राज्य बहुत ही बड़ा और पुराना है। बाढ़ा गाँव के अछूत बालिगो की प्रति व्यक्ति आय एक सौ रुपया सालाना या इससे भी कम है। लेकिन इस गाँव मे ब्याज पर चढ़ी रकम की संख्या दस लाख रुपये से भी ज्यादा है।

लेकिन हाँ, बाढ़ा गाँव मे उधार-कर्ज राजपूत-मालिक देते है, कोई लाला या साहूकार नहीं। अछूत उनकी प्रजा, खेत-मजदूर और बेदारी हैं। इन्हें कर्ज देकर, जमीन से उखाड़ने का भी हक उन्हीं का है।

सरसतिया इसी गाँव की लड़की है। गजमोती सिंह के पास जमीन

रखकर सरसतिया के बाप ने बाढ़ा गाँव के उधारचंद के साथ शादी की थी। सरसतिया काफ़ी छोटी थी। उधारचंद ने ही शादी का सारा ख़र्च दिया था। दामाद की उम्र ससुर के समान है। शादी का वग़ैरा मिलने के बावजूद सरसतिया के बाप ने कर्ज़ लिया था।

सरसतिया के बाप का माथा चकरा गया था। उधारचंद की उम्र बहुत ज़्यादा है। लड़का-लड़की नाती-पोतों से घर भरा है। पचास साल उम्र। सात साल की सरसतिया से शादी हो रही है उसकी।

सरसतिया के बाप ने बूढ़े से शादी क्यों की?

इसका कारण—उधारचंद दुसाधों में टाटा-बिड़ला की तरह है। न उसकी ज़मीन है और न ही वह कोई मालिक-महाजन है। बहुत बड़ा बकरियों का रेवड़ है उसका। वह भी बाढ़ा गाँव में नहीं, नवरतनगढ़ में।

स्वतंत्रता से पहले ही नवरतनगढ़ के राजाओं की हालत सुधर गयी थी। गद्दी पर भुजा सिंह बैठा। ग्रामीण राजा, लेकिन था काइयाँ बुद्धि। ज़मीन बेचता रहा और लीज़ पर देता रहा। उधारचंद ने राजा के वकील की मदद से काफ़ी ज़मीन लीज़ पर ले ली।

बकरियों के लिए बड़ा-सा बाड़ा बनाया उसने। सभी हँसे। गाय नहीं, भैंस नहीं, बकरियाँ। उधारचंद ने सभी की बातें सुनीं। लड़कों की मदद से ज़मीन को लकड़ी और डालियों से घेर दिया। तीन बीघा ज़मीन घेरना आसान नहीं है। एक बीघा ज़मीन पर अलग से घेरा बनाया। वहाँ अपना घर बनाया। सब काम उसने वकील से उधार लेकर किया।

उसके बाद वह कुछ बकरियाँ लाता है। बकरियों के काम में ज़्याद ख़र्च नहीं है। मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा है। भुजा सिंह फ़िलहाल धनी जोतदा है। 'राजा' उसके नाम के साथ लगा रह गया है, लेकिन अब वह रा नहीं है। भुजा और वकील को बकरी भेंट करते हुए, विकासशील नवरतनगढ़ में उसने अपनी स्थिति मजबूत कर ली है।

बच्चा बकरी, बूढ़ी बकरी, दूध वाली बकरी बेच-बेच कर उधा कर्ज़ उतार देता है। लगता है, उसने वकील पर जादू कर दिया है, उधारचंद दुसाध ही एकमात्र व्यक्ति है, जिसका कर्ज़ इसी जन्म गया है।

इसलिए सभी उसे मानते हैं, भुजा और वकील को शुरू में संदेह था कि उधारचद नवरननगढ मे कोई और इरादा लेकर आया है।

वह जानता है कि छोटी जाति के लोगो का फलना-फूलना ऊँची जाति वाले बरदाश्त नहीं करेंगे। वह नीम जाति का दुसाध है। धोबी से कपडा धुलाना उसके लिए अपराध है। घर मे लालटेन जलाने का मतलब दौलत का घमंड दिखाना है। पाँव मे जूता और सिर पर छाता लेकर चलना भी अपराध है। जमीन खरीदना घोर अपराध। इनसे भी छोटे-छोटे अपराधों पर दुसाधो, मजू, रैदास और धोबियों के घर जलते है, लाशें गिरती हैं, जमीनें छीन ली जाती हैं।

इसलिए उधारचद ऊँची जाति के लोगों को खुश रखता है। भुजा और वकील उसके बारे मे जो सोचते हैं, सभी वैसा ही सोचते हैं।

उन्होने कहा कि उधारचद आदमी अच्छा है। अपने हाथ का धुला कपड़ा पहनता है। दुकान पर आता है तो दूर खड़ा रहता है। पैसा देकर कहता है, "कृपा होय हुजूर, थोड़ा सौदा दे दीजिये।"

ऊँची जाति के लोगो को आते देखकर रास्ते मे हट जाता है। गरमी मे नगे पैर चलता है, सिर पर गमछा लपेट कर। जब ऊँची जाति के लोगों को सौदा बेचता है तो अच्छा माल बेचता है। बीच-बीच मे भुजा और वकील को भी भेंट चढा आता है।

पूरन सोलह साल का है। खून मे चचलता है। वह अपने बाप से पूछता है, "क्यों इतना डरते हो? चोरी नहीं की, डकैती नहीं डाली।"

उधारचद लड़के की ओर पीली और करुणा-भरी आँखों से देखता है। दूसरे लड़के उसकी दीन-हीन-कायर भूमिका का महत्व समझते हैं।

उसने कहा, "पूरन, तेरा खून गरम है।"

"कहना क्या चाहते हो, पिताजी?"

"इसी तरह रहना होता है, बेटा!"

"क्यों?"

"नहीं तो वे लोग नाराज हो जायेंगे। नाराज होने पर वे घर जलाते हैं, जमीन से उखाड़ते हैं, गोली चलाते हैं। पुलिस आकर हम लोगों को ही पकड़ती है।"

'प्रसाद जी कहते हैं, हमारा भी हक़ है।"

"प्रसाद जी ?"

"हरिजन सेवा संघ के प्रसाद जी।"

"प्रसाद जी भी ठीक कहते हैं।"

"ठीक कहते हैं ?"

"हाँ।"

वहुत वेचैनी से उधारचंद वीड़ी जलाकर लड़के से कहता है, "तव प्रसाद जी यहाँ नहीं थे। तव भी मैंने सुना था कि हम लोगों को जूता पहनने, सिर पर छाता लगाने, जमीन खरीदने—सभी कुछ का हक है।"

"यही तो कह रहा हूँ।"

"लेकिन पूरन, वे वात-वात में हमें अपराधी जता कर जुल्म करते हैं। ऐसा तो कई वार हुआ है।"

"थाना-पुलिस नहीं है ?"

"पूरन ! तुम्हारे लिए वाढ़ा गाँव छोटी जगह है। नवरतनगढ़ अभी वड़ा शहर है। तोहरी नजदीक है। वहाँ भी शहर की हवा पहुँच गयी है। इसलिए तुम जैसा कहते हो कि थाना-पुलिस है, वह भी जरूर है। प्रसाद जैसे लोगों के कहने पर हमारे जैसे लोग थाना-पुलिस में गये थे। यह बात भी ठीक है, लेकिन...।"

"लेकिन क्या, वोलिये तो ?"

"कोई न्याय नहीं करता। आज भगवान न करे, भुजासिंह यदि मारने लगे तो तुम थाने जा सकते हो।" यह कहकर उधारचंद थू थूक कर गुस्से में वोला, "पूरन दुसाध के कहने पर क्या पुलिस नवरत के राजा भुजासिंह को पकड़ सकती है ?"

"नहीं, नहीं।"

"तो इसलिए मैं चुप रहता हूँ। यह सव-कुछ क्या मैं अपने लि हूँ ? तुम लोगों के लिए करता हूँ। तुम यदि जिन्दा रहना चाहते हो तरह ही सव को सलाम वजाकर चलना। हमारे गाँव में एक जमीन नहीं। सव चक्रपाणी सिंह के खाते में चढ़ गयी है। उ कर सव-कुछ निर्भर करता है।"

उधारचंद वकील को पकड़ता है और कहता है, "हुजूर ! लड़कों की शादी हो गयी है। घर में बच्चे आने वाले हैं।"

"क्या चाहिए ? कहो।"

"वहाँ ढाई मील तक बस का रास्ता बन गया है। बाढ़ा से भी दूर है। वहाँ जगल भी है। आपका दामाद वहाँ अमीन है। कृपा हो तो लड़कों के लिए थोड़ी जमीन दिला दें वहाँ।"

"खेती की जमीन ?"

"राम-राम हुजूर ! दुसाध कभी जमीन का मालिक बन सकता है ? लेकिन इस जमाने में...।"

"क्यों ? पूरन तो प्रसाद के पास आना-जाना रहता है और प्रसाद अछूतों को तालीम भी देता है ?"

"हुजूर ! पूरन आप ही का लड़का है। उसे अभी क्या पता है ? वह अभी समझता ही क्या है ? भेजे देंगे आपके पास। जूते से खबर लीजिएगा उसकी।"

"अरे, नहीं, नहीं। मैंने वैसे ही कहा था।"

"वे भी बकरी पालेंगे।"

"तुम अकेले कैसे सभालोगे ?"

"मेरी किस्मत है, हुजूर ! दो बीवियाँ मर चुकी हैं। छोटी का एक भतीजा है। उसका नाम रांका है—रांका। पास में ही है, नाढ़ा में। उसे यहाँ बुला लेंगे। पूरन और उसके दोनों भाई—तीनों मिलकर जो कुछ कर पायें करें।"

यही बंदोबस्त हुआ। पूरन को वहाँ से हटाकर उसने राहत की साँस ली। रुपया काफी था। तीनों लड़कों को वह वहाँ से ले गया। बोला, "यहीं रहना, बकरी पालना, जो मिले उसी से पेट पालना।"

बड़े लड़के ने कहा, "नाढ़ा में जमीन ले सकते थे ?"

"नहीं, कभी नहीं," उधारचंद बोला, "मेरे जीवन-काल में मेरे पिता, दादा, परदादा यानी तीन पीढ़ियों में मैंने तीन बार जमीन लेते देखा है। तीनों बार ही कर्ज के लिए जमीनें गँवाते भी देखा है। दरअसल बंदो-बस्ती में बजर जमीन मिलती है। हम उसे उपजाऊ बनाते हैं। तब मालिक

द हराम हो जाती है। सोचता है, शायद अच्छी जमीन मिल गयी स तभी से तिकड़म में लग जाता है कि कैसे जमीन छीनी जाये।"

"ढाई में खेती की जमीन ले सकते थे ?"

"वेटे, देखने से लगता है कि धरती वहुत वड़ी है। यह जंगल, यह ान, यह आवादी, लेकिन मालिक कहाँ नहीं हैं? यही काम अच्छा है। स काम में मालिकों से कुछ लेना-देना नहीं होता और फिर पैसा भी है।"

"तीनों लड़कों को यहाँ से क्यों हटा दिया ? पूरन को यहीं रहने देते?"

"वकील उससे नाराज है। तुम लोगों का भला इसी में है। वस चलने लगेगी तो वहाँ भी वाजार लगने लगेगा। फिर वहाँ घूमा करना। थोकदार लारी में माल खरीदकर ले जायेगा।"

पूरन वोला, "लारी लेकर थोकदार यहाँ भी तो आता था। उसे तुम वकरी क्यों नही वेचते थे ?"

"सभी वात क्या समझानी जरूरी है? वहाँ वैठकर थोकदार को माल वेचने और नकद रुपया लेने से भुजासिंह नाराज हो जायेगा।"

"तव अकेले सव-कुछ करोगे ?"

"राँका को ले आयेंगे।"

"उसे ही सव-कुछ दे दोगे ?"

"नहीं वावा, सव तुम्हीं लोगों का है।"

ऐसे ही वुद्धिमान व्यक्ति उधारचंद ने अपने से वहुत छोटी उम्र की लड़की सरसतिया से शादी की। इस पर उसके लड़के उस पर विगड़ जा हैं। पूरन तो वाप को मारने की सोचने लगता है। अंत में तीनों भाई व के पास आते हैं। कारण है, पूरन का ससुर।

पूरन का ससुर वोला, "अकड़ दिखाने को जा रहे हो। क्या है तु पास कहने को? उधारचंद समाज का नामी व्यक्ति है। यह उसक नहीं, काम की जगह है।"

"वहाँ जाकर विवाह करोगे ?"

"क्यों नहीं करेंगे ?"

"क्यों करोगे?

"पिताजी शादी क्यों कर रहे हैं? यह कलंक क्या कम है? रौका जवान लड़का है। हमारे मामा का ही लड़का है और अब हमारे ही साथ रहता है। उसकी शादी करना भी उनका कर्तव्य है।"

"हाँ, हाँ, ठीक है।"

"उसी के लिए तुम्हारे बाप ने नाई भेजा था।"

"वह तो भेजना ही था। कौन गया?"

"गनौरी हज्जाम।"

"अच्छा आदमी है। बूढ़ा है, पर है तेज।"

"वह तो है ही। देखिये, गनौरी हज्जाम को बड़े-बड़े मालिक-महाजन भी चाहते हैं। राजपूत मालिकों के घरों में भी वही शादी-ब्याह की बात चलाता है। लेकिन उसके साथ हमारे पिताजी की भी अच्छी पटती है।"

"तुम से और कुछ कहने की जरूरत नहीं है, बेटा! गनौरी की बात कह रहे हो न। वह बदमतलबी नहीं है।"

"बदमतलबी? यह क्या होता है?"

पूरन का ससुर हँसा और बोला, "यह नहीं समझे? पूरन भगत तो छोटा है, तुम लोग भी नहीं समझे?"

"आप ही बताइये।"

"बेटे, उधारचंद ने पैसा कमाया है। उसने ऐसा कारोबार किया, जो कभी किसी दुसाध के दिमाग में भी नहीं आया था। खुद काम किया और तुम्हें भी खड़ा कर दिया। बकरी पालने में पैसा खर्च नहीं होता। बकरी पाल रहे हो, दूध बेच रहे हो, खस्सी बेच रहे हो, बकरी बेच रहे हो। अच्छे तो तुम्हीं लोग हो। जमीन में सखरा उठाना पड़ता है, हम लोग पूजते हैं, फिर चाटते हैं। यह सब तुम्हारे बाप की ही हिम्मत से है।"

"सच है।"

"बदमतलबी में गनौरी हज्जाम लड़की का लालच देकर रुपया ऐंठ सकता था। बाप के मन में लड़कों के लिए जहर घोल सकता था। इसे ही बदमतलबी कहते। लेकिन गनौरी हज्जाम जहाँ है, वहाँ बदमतलबी नहीं है।"

"पिताजी शादी क्यों कर रहे हैं इतनी छोटी लड़की से ?"

"देखो बच्चो, उधारचंद जब शादी कर रहा है तो जरूर इसके पीछे कोई कारण है। तुम लोग एक बात नहीं जानते।"

"कौन-सी बात ?"

"बाढ़ा से जाते समय उसने कहा था, 'यदि ऐसा कुछ कर पाया कि, जिससे लड़कों का पेट पाल सका, तभी लौटेंगे। वरना भीख माँगने के लिए कहीं और चला जाऊँगा।' समझे ? वही उधारचंद है।"

"ऐसा कहा था उन्होंने ?"

"हाँ भई, हाँ। उसके साथ मेरी कौन-सी रिश्तेदारी है कि बातें बनाऊँ ? मैंने सोचा था कि वह यह सब बातें तुम दुख के कारण कह रहा था। लेकिन जो भी हो, उसने वही कर दिखाया।"

"पता नहीं, अब क्या हो गया है ?"

"यह उनसे ही पूछो। तुम्हारे पिता बिना कारण के कुछ नहीं करते।"

"रौंका की शादी के लिए भेजा था गनौरी हज्जाम को। बाद में सुन रहे हैं कि खुद शादी करेंगे।"

"फिर गनौरी के पास ही क्यों नहीं जाते ?"

"नहीं, पिताजी के पास ही जाते हैं।"

पिताजी के पास जाकर उनको आश्चर्यजनक क़िस्सा सुनने को मिला।

## दो

तीनों लड़कों को एक साथ देखकर उधारचंद थोड़ा मुसकराया। लड़कों को लगा कि जैसे वे पिताजी को पहली बार देख रहे हों। उनके पास पैसा है, शरीर में भी ताक़त है। मेहनती आदमी हैं। उधारचंद बोला, "तीनों एक साथ ? क्या बात है ?"

"पिताजी ! आप फिर शादी कर रहे हो ?"

"हाँ, बेटे !"

"क्यों, पिताजी ? एक माँ से तीन लड़कियाँ हैं, दूसरी से तीन लड़के। इस उम्र में फिर क्यों शादी कर रहे हो ?"

उधारचंद ने रोंका को आटा, दाल, मिर्च ले आने के लिए दुकान पर भेज दिया।

रोंका के जाने के बाद उधारचद बोला, "गनौरी हज्जाम को कारण मालूम है और गजमोती सिंह के घर में लक्ष्मी दामोदर की पूजा करने वाले ब्राह्मण को भी पता है।"

"वह क्या जानता है ?"

उधारचद बोला, "लड़की के माथे पर जन्म से एक लाल दाग है। गनौरी ने देखा तो उसने कहा कि ऐसा दाग तो होता नहीं। गनौरी ने बहुत-सी लड़कियों का लगन कराया है। इस के बारे में मालिकों के घर में बड़े-बड़े ज्योतिषी-पंडितों की बात सुनी है उसने। लड़की का बाप गजमोती सिंह की खरीदी-प्रजा है। गनौरी ने चुपके से पुजारी ब्राह्मण को बुलाया।"

रोंका वापस आ गया तो उधारचद ने उससे एक घड़ा पानी भर लाने को कहा, "हमारी डोरी-बाल्टी लेता जा।"

रोंका के चले जाने पर उधारचद ने बीड़ी सुलगायी। जोर से कश खींचकर बोला, "ब्राह्मण ने छुआछूत से बचते हुए दूर से लड़की का हाथ देखा, खूब अच्छी तरह से। उसके बाद लड़की को वहाँ से जाने के लिए कहा। गनौरी से बोला, 'देखो, भगवान का कैसा पक्षपात है।' "

"क्यों ? क्या बात है ?"

रोंका पानी लेकर आता है। उधारचद उससे कहता है, "रोंका ! तुम चूल्हा जलाओ। लड़के लोग खाना खायेंगे। पहले दाल चढ़ा दो। आटा भी सान लो।"

लड़कों को लेकर घर से बाहर आ जाता है। बाड़े से बाहर निकल कर एक बड़े-से पत्थर पर आ बैठता है। बोला, "ब्राह्मण ने कहा है कि भगवान ने स्वयं लक्ष्मी को दुसाध के घर में भेजा है। इस लड़की को सिर्फ लड़का होगा और लड़का भी कैसा—राम जैसा लड़का, बलराम जैसा लड़का, लछमन जैसा लड़का। ऐसी माँ के लड़के भू-स्वामी होते हैं।"

"और क्या कहा ?"

"गनौरी ने हँसकर कहा, 'दुसाध की लड़की है, देवता! इसका लड़का ...-स्वामी कैसे बनेगा ?' इस पर ब्राह्मण बोला कि 'पहले भी हुआ है और आगे भी होगा।'"

"इसका क्या अर्थ ?"

"ब्राह्मण बड़े घरों की बड़ी बातें जानता है। पहले के जमाने में राजाओं के नाई वगैरह इसी तरह भगवती गुणों वाली लड़की ढूंढ़ते थे। जहाँ भी मिलती, वहीं से राजा ले आते थे उसे। लड़की हो या बीवी, उठा लाते थे। एक-दो लड़के हो जाने पर लौटा देते थे। अब कहाँ का राजा और कहाँ का जमींदार, और किसका लड़का!"

पूरन भगत धीरे-धीरे बोला, "पिताजी, यह सब तो होता है। हमारा क्या आता-जाता है इससे ?"

"तब मैंने सोचा कि ऐसी लड़की की शादी राँका से क्यों करें ? लड़की ~ बाप को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था। भगवती लक्षणों वाली ...ड़की बरसों में एक ही मिलती है। सोचा, जमीन हमारे पास रहती नहीं। रहती तो कितना अच्छा होता। मैंने गनौरी से कहा, 'तीनों लड़कों की शादी हो गयी है। बहुएँ हैं। शादी मैं करूँगा।'"

"तो यह बात है ?"

"हाँ, यही बात।"

"आप पागल हो गये हो, पिताजी!"

पूरन भगत गहरी साँस छोड़कर बोला, "अकेले रहते हो। कुछ बना लिया है। गाँव-घर से दूर रहते हो। राजा-जमींदार के देश में बातें हवा में तैरती है। किसी गाँव में ऐसी बात हमने तो सुनी न...

फिर कहने लगा, "कालिया दुसाध की लड़की सरसतिया ... लक्षणों वाली लड़की है, ऐसी बात कभी किसी ने सुनी है ?"

"मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ?"

"कालिया को कितना रुपया दे रहे हो ?"

"चालीस रुपया।"

"चालीस रुपया मिलने पर मैं अभी महादेव-लक्षणों वाल...

बन सकता हूँ।"

पूरन बोला, "मेरे समुर को कुछ दिया है ?"

"पान के लिए दो रुपया।"

"इसीलिए वह तुम्हारे गुण गा रहा था।"

भगत बोला, "ठीक है। भगवती-लक्षणा लड़की है। उसकी शादी रौंका से क्यों नहीं कराते ?"

इस बात पर उधारचन्द गरम हो जाता है। उसका लड़कों के साथ काफ़ी झगड़ा हो जाता है। अन्त में कहता है, "निकल जाओ सभी !"

पूरन बोला, "जहर देकर तुम्हारी बकरियों को मार डालेंगे।"

"क्यों, मैं तुम लोगों का खाता हूँ या तुम्हारा दिया पहनता हूँ ?"

"तुम्हारे कारण लोग हम पर हँसेंगे।"

"तो यहाँ से हटा देंगे तुम लोगों को।"

"जो इच्छा हो करो।"

तीनों लड़के चले जाते हैं। रौंका दौड़ते हुए उनके पीछे आया और बोला, "चले क्यों जा रहे हो ? मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

"नहीं, पिताजी हमें नहीं चाहते।"

"यह जगह बहुत खराब है।"

"तुम समझाओ जाकर।"

पूरन बोला, "तू भी चल।"

"कहाँ जायेंगे ?"

"जहाँ हम लोग जा रहे हैं।"

गुस्से में लड़के तेज चलने लगते हैं। कुछ देर बाद पूरन बोला, "अंधेरे में कहाँ जायेंगे ? चल, तोहरी चलें।"

"यहाँ कौन रिश्तेदार है ?"

"चलो भी।"

पूरन प्रसाद महतो को जगाता है। प्रसाद उनकी बातों को सुनकर पहले खूब हँसता है। फिर कहता है, "लेकिन उधारचंद यह ठीक नहीं कर रहा है। यदि मैं उससे कहने गया तो वह उलटा पड़ जायेगा।"

पूरन बोला, "वह वकील हरामी है।"

"उसी के दामाद ने तुम लोगों की ज़मीन वंदोवस्ती करा दी है।"

पूरन कुछ झिझक रहा था। बोला, "प्रसाद जी!"

"बोलो।"

"क्या वह उस जमीन को छीन सकता है?"

"क़ानूनी तौर पर नहीं। वैसे तुम लोग जानते हो कि किन हथकंडों से जमीन हथियायी जाती है।"

तीनों भाई एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं।

"पिताजी ने ऐसा क्यों किया? वकरियाँ पालकर पिताजी ने दो-चार पैसे जोड़े हैं, वरना दुसाध कब पेट-भर खाता है या अपनी जमीन की फसल घर में लाता है?"

"क्या कहा है पिताजी ने?"

"सरसतिया भगवती-लक्षणा लड़की है।"

"हट वेवकूफ़! भगवती-लक्षणा लड़की?"

प्रसाद समझ नहीं पाता कि क्या कहा जाये! कुछ देर सोच-विचार कर वोला, "क्या कहें? तुम्हारे पिताजी वैठे हैं नवरतनगढ़ में। वहाँ अभी भी भुजा सिंह के घर की हवा बहती है। बहुत ही ख़राब हवा। अरे, मैंने कभी किसी भगवती-लक्षणा लड़की के वारे में नहीं सुना।"

"किसी ने भी नहीं सुना।"

पूरन बोला, "अब क्या करें?"

"तुम कर ही क्या सकते हो? इस तरह की शादी ग़ैर-क़ानूनी हो
है। ग़ैर क़ानूनी शादियाँ फिर भी हो रही हैं।"

"आप कुछ नहीं कर सकते?"

"मैं अगर नवरतनगढ़ गया तो भुजा सिंह मुझे मार डालेगा।"

"ऐसा नहीं हो सकता है!"

प्रसाद निर्मल हँसी हँसता हुआ बोला, "मार डालने पर भुजा
सजा हो सकती है। मैं वहाँ नहीं जा पाऊँगा, फिर भी एक बार उ
से मिलने की इच्छा है। अब वोलो, इस समय तुम लोग क्या खाओ
विचार से, पूरन, सत्तू और गुड़ ख़रीद लाओ।"

सत्तू, गुड़ और पानी पीकर तीनों भाई सो गये।

सवेरे लौटते समय वे लोग सोच-विचार करते रहे। ज्यादा देर तक सोचते रहना उनका स्वभाव नहीं है। उन्हें लगता है कि उनका बार उनका सब-कुछ छीन सकता है।

बकरियाँ पाल-पोस कर हालत सुधारने की, बात बार-बार लगती है, सम्भव नहीं, खून में है खेती करना।

भगत बोला, "बेच देते हैं सब-कुछ। चलें, नाडा लौट चलें।"

"फिर ?"

"मालिक की जमीन पर मजदूरी करेंगे।"

"अब काम नहीं देगा।"

"फिर क्या करें ?"

पूरन साँस छोड़कर बोला, "अभी जो कर रहे हैं वही करें। कोई गड़-बड़ी की संभावना होने पर सोचेंगे।"

"यह काम क्या कर पायेंगे ?"

"पिताजी तो कर पाये।"

भगत बोला, "आखिर भागना ही पड़ेगा।"

जब तक प्रमाद नवरतनगढ जाने की सोच ही रहा था, लोहरी के बाजार में उधारचन्द उसे मिल गया। एक सोलह साल के लड़के के साथ खरीदारी कर रहा था।

लड़कों की बात उधारचन्द ने खुद ही चलायी। "प्रमाद जी, आपसे क्या कहूँ, लड़के बड़े नालायक निकले।"

"क्यों ? प्रमाद तो पसंद करता है।"

"हाय, हाय ! प्रमाद जी को कैसे मालूम ! लड़के किन-किन मामलों तक बाप से जवाब-तलब कर सकते हैं ?"

"बात क्या है ?"

गरीब के साथ प्रमाद जी का यह कैसा मजाक है ! सभी को मालूम है, उस दिन उधारचन्द के लड़के झगड़ने आये थे। बाप का अपमान करके लोहरी में प्रमाद जी के पास रात बितायी।

"यह भी सभी को मालूम है।"

"इतनी रात वे लौटते कैसे ?"

"ख़ैर। लेकिन अपमान क्यों किया ?"

प्रसाद यह सब कहना नहीं चाह रहा था। उधारचंद जैसे ज्ञानी होते ए क्या वह यह काम अच्छा कर रहा है ?

"किस काम की वात कर रहे हो ?"

"भक्त के लड़के की उम्र सात साल है। उधारचंद अपने पोते की उम्र की लड़की से क्यों शादी कर रहा है ?"

"करना क्या ग़ैर-क़ानूनी है ?"

"ग़ैर-क़ानूनी तो है ही। क्योंकि क़ानून में लिखा है, लड़की की शादी चौदह साल की उम्र से पहले करना अपराध है। वह वात छोड़ देते हैं। गाँव-घर में छोटी उम्र में शादी होती है। लेकिन उम्र में इतने फ़र्क पर उस लड़की से शादी करना पर क्या उसके प्रति अन्याय न होगा ?"

"कैसा अन्याय ? उधारचंद मर जाता है तो वह दूसरी शादी कर सकती है। जाने दो यह सब वातें। लेकिन लड़कों ने अपमान तो नहीं किया। वैसे उनके मन को चोट लगी है।"

"रहने दो। उधारचंद वहुत बुरा आदमी है। बुरे वाप का मुँह भी देखने की ज़रूरत नहीं है। जो उनका जी चाहे करें।"

गुस्से से बड़बड़ करता हुआ उधारचंद चला जाता है। प्रसाद से संघ के दफ़तर में लौट कर देखता है। शिड्यूल्ड कास्ट आफ़िसर के दफ़ का उसका दोस्त वीरेन्द्र खटिया पर लेटा हुआ है। वीरेन्द्र बोला, "भ एक रिपार्ट देनी होगी। तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।"

"मेरी मदद की ?"

"तुम घर में ताला क्यों नहीं लगाते ?"

"क्या है घर में, जो ताला लगायें !"

"चलो, पहले कुछ खाते हैं। पिछला डी० ए० मिला है।"

"चलो।"

दोनों खाना खाते हैं। रिपोर्ट भी तैयार होकर मिल ग वोला, "तुम्हें एक मज़ेदार कहानी सुनाता हूँ।"

"वाद में। अभी चलो, पान खाते हैं।"

पान खाने के वाद दोनों कमरे में आकर वैठते हैं। प्रस

किसी से बोला, "अरे लछमन, घर में मेहमान आये हैं। एक चारपाई दे जा। खटमल न हों उसमें।"

लछमन खटिया दे जाता है। बोला, "खटमल कहाँ रखे हैं? कल ही गरम पानी डाला है।"

वीरेन्द्र बोला, "चलो, अपनी कहानी सुनाओ अब।"

प्रसाद उसे उधारचंद और उसके लड़के वाली कहानी सुनाता है।

"यह कोई कहानी है?"

"उधारचंद क्या दुनाम हो गया है?"

जवाब में वीरेन्द्र बोला, "संतोष, मेरे भाई, ने इस बार मुझे फँसा दिया है। वह खुद भी मरेगा, मुझे भी साथ मारेगा।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"एक साल जेल में रहने के बाद निकला है। सोचा था कि अब ठंडा हो गया होगा। इसी साल इकहत्तर में बाहर आया है। यूनियन के लड़ाई-झगड़े के सिलसिले में जेल गया था।"

"छात्र यूनियन की मार-धाड़ में जेल गया था क्या?"

"नहीं। मंत्री के भतीजे को पीट दिया था। सहकारिता-मंत्री के भतीजे को। वह स्वास्थ्य-मंत्री की भांजी का पति है। साले का एक हाथ बेकार हो गया है। कॉलेज तो कब से बंद है।"

"फिर?"

"जेल से निकलते ही हीरो बन गया। मंत्री का भतीजा बदले की ताक में था। संतोष की लाश गिराने की सोच रहा था वह। मैंने उसे आगरा भेज दिया। मालूम है, उसने क्या किया?"

"क्या किया?"

"वह आगरा नहीं गया। हरिपुरा में जमीन के लिए भूमिहीन किसानों और जमीन-मालिकों के बीच लड़ाई चल रही है। उसी लड़ाई में कूद पड़ा।"

"हाँ, हाँ, सिवानी में लड़ाई चल रही है।"

"जी हाँ!"

"बहुत पुलिस लगी है वहाँ।"

"अब क्या किया जाये? मेरी नौकरी सरकारी है, ज़रूर चली जायेगी। ठीक है, जो रुपया मिलेगा उससे दुकान करेंगे। लेकिन वह ज़रूर जान से मार डाला जायेगा। उसकी शादी हो चुकी है। बहू अभी बच्ची है।"

"कुछ पता चला कि क्या कर रहा है?"

"नहीं। वैसे करने को कुछ भी कर सकता है। जेल में कामताप्रसाद के दल के लोगों के साथ था। उन्होंने ही उसे बहकाया है। मैंने समझाया कि बेशक तुम्हारी बात ठीक हो सकती है। जिसके पास ज़मीन नहीं है, छीन ली गयी है, उसे ज़मीन मिलनी चाहिए, चलिए मान लेते हैं। लेकिन उचित काम करने पर मार तो खानी पड़ती है।"

"चिंता की बात है।"

"जानते हो, आज यह बात मैंने क्यों कही?" अचानक वीरेन्द्र बोला, "संतोष, जो इस तरह की बातें करता है, क्या वह खुद उनका अर्थ समझता है? कहता है, 'मैं डरपोक हूँ।' पिताजी नहीं हैं। इसलि हमेशा उसकी सुनता रहा हूँ। मानता हूँ कि वह बुद्धिमान है। ठीक है उसने इंटर पास किया है, ननिहाल की दुकान पर आटा तोलते हुए। इ उस को मक्खन लगाकर, हाथ-पाँव जोड़कर उसके लिए नौकरी जुटाय इस नौकरी में अब सात साल हो गये।"

"हाँ, मुझसे भी तभी का परिचय है।"

"याद है न?"

"मुझे भी एक पियन की नौकरी दे रहे थे।"

"हँसो नहीं प्रसाद, इस ज़माने में पियन भी कम नहीं होता। पियन हमें रुपया उधार देता है। सूद पर रुपया उधार देता है औ ख़रीदता जाता है।"

थोड़ी देर रुककर फिर कहने लगा, "सुखी थे। माँ को भ थी। बहन-भाई की शादी की। कच्ची ईंटों का मकान था मकान बनाया राँची में। ताऊजी ने दया करके पिता जी थोड़ी-सी ज़मीन दे दी। संतोष कॉलेज में पढ़ रहा था। वज़ीफ़े के रुपये से ही। मुझे लगता है कि मैंने उसके लिए

है।"

"सो तो तुमने किया ही है।"

"लेकिन सतोष कहता है, 'मैं भीतर से नौकर बन गया हूँ। उसे भी नौकर बनाना चाहता हूँ। क्रांतिकारी यह सब नही करते।'"

"क्या वह यह सब बातें समझता है?"

"उसे यहाँ रखा तो वह लड़का उसे मार देगा। उस लड़के का एक हाथ नहीं है। पढ़ने-लिखने में काला अक्षर भैंस बराबर। कैसे पास हुआ, वही जाने। लेकिन अब उसकी बस और टैक्सी है। रेलवे में ठेकेदारी का लाइसेंस है। उसके नीचे चार सौ आदमी काम करते हैं। कितनी मुश्किल से मैंने उसके भाई को आगरा भिजवाया था। उसी के ममिया ससुर के पास। लेकिन अब वहाँ न जाकर इधर बैठ गया है। मरेगा भी वही।"

"मरेगा ही, ऐसा क्यों सोचते हो?"

"पुलिस वहाँ सतोष के लिए नही गयी है। गयी है कामताप्रसाद के लिए। कामताप्रसाद मुसाहरी आंदोलन से भागा हुआ है। भागा हुआ तो है, लेकिन उधर लड़ाई भी चला रहा है।"

"लौटा पाओगे, लगता नही है।"

"नही। खैर जाने दो। मैं कुछ कहना चाहता था आपसे।"

"कहो।"

"तुम जो कह रहे थे, क्या नाम है?"

"उधारचंद दुसाध।"

"भैया, वह हमारे वर्ग से निकल गया है।"

"कैसे?"

"वह अब दुसाध नही रहा। क्योंकि अब वह खेत-मजदूरी, मालिकों की बेगार, इन सबके बीच नही है। अपना देश छोड़कर इधर चला आया है। कारखाने या किसी कोयला खान में जाता तो उसे एक समाज मिलता। वहाँ कुली बनता। गाँव में मालिकों का जुल्म और वहाँ ठेकेदारी का जुल्म। लेकिन यहाँ वह अकेला है।"

"यह बात सही है।"

"नवरतनगढ़ में रुपया-पैसा, मालिकाना हक, सब राजे-र

है, उच्च वर्णों का है। वह अकेला है। एक नया काम करके कुछ रुपया इकट्ठा कर लिया है उसने। पैसा थोड़ा ही है, पर उसके लिए बहुत है। उसकी मानसिकता बदल रही है।"

"हाँ! गाँव में रहता तो उसके साले का लड़का, उसके परिवार का सदस्य होता। यहाँ वह उसका नौकर बन गया है।"

"नौकर! हाँ, वही जो मैंने बताया। गाँव में रहता तो सभी के साथ मिलकर रहता। सामाजिक जिम्मेदारी में रहता। यहाँ वह जड़हीन, अपने वर्ग से अलग, एक विचित्र स्थिति में है।"

"फिर यह शादी का मामला? भगवती-लक्षणा लड़की?"

वीरेन्द्र साँस छोड़कर बोला, "एक तो भारतवर्ष और फिर राजा-ज़मींदार। ऐसी जगह इतने अंधे संस्कार और गंदे विचार होते हैं कि घुटन-भरा वातावरण कभी साफ़ नहीं होता। सभी में कुछ-न-कुछ संस्कार रहते हैं। इन इलाक़ों में हालत और भी ख़राब है। यहाँ कोई काम सही नहीं। ऐसी बातों में ही लोगों का मन फँसा रहता है।"

"वह तो अछूत है, दुसाध है।"

"यहाँ के राजा को शायद नरबलि में विश्वास है। इसी कारण उसके संरक्षण में पलने वाले का भगवती-लक्षणा में विश्वास। गाँव में रहता तो इन बातों की तरफ़ ध्यान न जाता। अपने काम में लगा रहता। लेकिन यहाँ समय मिलता है और अलौकिक बातों पर विश्वास करने का रुझान शायद कमज़ोर दिमाग़ के आदमियों में होता ही है।"

"क्या किया जाये? शिक्षा से यह सब दूर होगा?"

"भैया, कौन-सी शिक्षा से?"

"अ-आ-क-ख या एक-दो-तीन से।"

"भैया, तुम्हारी भारत सरकार प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर सकती है। सरकार इसे लेकर हो-हल्ला कर सकती है, लेकिन रोज़ा-ओझा, डायन-दैवशक्ति को न मानने की शिक्षा नहीं दे सकती। प्राथमिक शिक्षा! सवर्ण हिन्दू मास्टर, अनुसूचित जातियों के बच्चों को स्कूल में घुसने नहीं देता। ऐसी है प्राथमिक शिक्षा!"

प्रसाद हँस पड़ता है।

"हँसते क्यों हो ?"

"मनोज ने तुम्हारी मानसिकता बदल दी है।"

"मनोज ने ? नहीं-नहीं ! धन्यवाद जनाब, नहीं। क्या मैं इस विभाग में काम नहीं करता ? सरकार की अंत्योदय योजना की जय हो, जय हो कहते हुए और दो-चार आदमियों को लांघते हुए विभाग की पदस्थापना में दो नम्बरी अधिकारी नहीं बना हूँ? दौरे पर नहीं जाता हूँ? अपनी आँखों से देखता नहीं हूँ क्या ? मैं खुद अनुसूचित जाति से हूँ। और अनुसूचित जनजातियों और आदिवासियों के विकास के नाम पर कितना रुपया बरबाद होता है, क्या यह मैंने नहीं देखा है ?"

"तो फिर ?"

"जो भी कह रहा हूँ, अपनी आँखों से देखकर कह रहा हूँ। मनोज जैसी सुविधा तो मुझे नहीं मिली। मेरी मानसिकता बदलने से नहीं बनी है। क्रान्ति की जरूरत क्यों है, यह नहीं समझेंगे वे। मैंने जो देखा है, जो देख रहा हूँ, देखता रहता हूँ...।"

वीरेन्द्र इतने समय बाद पहली बार एक सिगरेट जलाता है। फिर डरपोक बेवकूफों जैसी हँसी हँसता हुआ बोलता है, "बहुत इच्छा थी कि चुपचाप बी० ए० पास कर लूँ, एम० ए० पास कर लूँ। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ।"

"घर में खाने वाले कितने हैं ?"

"माँ, बीवी, लड़का, मनोज की बीवी। मनोज भी...।"

"अब तो जाओ।"

"हाँ। बहुत बातें कर लीं।"

प्रसाद बोला, "फुरसत मिलते ही चले आना।"

"तुम्हें कभी और कुछ बनने की इच्छा नहीं होती ?"

"नहीं ! मैं तुमसे भी ज्यादा नजदीक रहकर जीवन का नग्न रूप देखता हूँ।"

अगले दिन वीरेन्द्र चला गया। प्रसाद को इयारचंद की समस्याएँ समझा गया। इयारचंद अकेला, अपने वर्ग में बड़ा व्यक्ति है।

आम तौर पर सभी दुसाध या गंजू या अनुसूचित जातियों की मूल समस्याएँ

एक जैसी हैं। उधारचंद तैरता हुआ, जड़ से उखड़ा तत्व है। साये लगने पर सरसतिया और उधारचंद की शादी हो जाती है। उधारचंद के हाथ लड़की देने की खुशी में सरसतिया का पागल बाप अपनी जमीन का टुकड़ा गजमोती के पास गिरवी रखकर कर्ज़ लेकर, खुशी से आत्मविभोर होकर, निस्व: होकर एक रंक बन जाता है।

## तीन

शादी से सरसतिया जैसी औरतों की क़िस्मत नहीं बदलती, उसकी भी नहीं बदली। लड़की की शादी करके कालिया दुसाध दो-चार दिन ख़ूब कूदता-फाँदता रहा। बूढ़े से शादी की है, ठीक किया है। उधारचंद ने शादी का ख़र्चा दिया है। गौने का ख़र्चा भी उसी का है। बीवी बोली, "अब क्या करोगे?"

"क्यों?"

"खायेंगे क्या? काम कहाँ है?"

"मालिक है न?" ठंडे स्वर में बोला कालिया। जैसे कि मालिक के दरवाजे पर धरना देने की जरूरत ही नहीं है उसे।

पत्नी गाल पर हाथ रखकर बोली, "हो धनुवा के बापू, तुम्हारा दिमाग फिर गया क्या?"

"उधारचंद ने छोटी लड़की के साथ शादी की है तो इससे तुम्हारा या मेरा क्या बिगड़ता है? समय पर अपनी बीवी ले जायेगा। मालिक न हो तो हम खायेंगे क्या? कितनी हैसियत है तुम्हारे उधारचंद की? हमें भी पालेगा?"

उसी समय तुरन्त कालिया की पत्नी मालिक के घर गयी। गजमोती सिंह की बीवी मर चुकी है। बूढ़ा है, लेकिन एक नम्बर का हरामी है। वह अभी भी अपनी मुसलमान प्रेयसी के पास जाता है। प्रेयसी धर्मपरायण है। कहती है, "तुम कोई और देख लो। मैं धर्म-कर्म में लगने वाली हूँ।"

लेकिन गजमोती उसकी नहीं सुनता। उसके कंधे पर सवार है वह

सिंदबाद के बूढ़े की तरह।

गजमोती सिंह के परिवार की मालकिन उसके लड़के सागर सिंह की बीवी है। कालिया की बीवी ने आकर उसी के पास धरना दिया। सागर की बीवी ने अप्रसन्नता के साथ एक खोंची मड़ुवा उसे दिया। बोली, "काम? क्या काम करेगी? घर का काम तुम से नहीं होगा।"

"बाग-बगिया की झाड़ू-सफाई करूँगी।"

"उस काम के लिए आदमी है। बर्तन-बर्तन के लिए आदमी चाहिए। लेकिन जिसके हाथ का पानी चले, ऐसा कोई चाहिए।"

"मालिक से थोड़ा किरपा करने को कहिये।"

नथुनी बनवाने को लेकर सागर की बीवी का मिजाज पहले से ही खराब था। फटकार कर बोली, "मालिक को क्या कहूँ? मैं इस मकान में दासी-बाँदी हूँ। कौन मेरी सुनेगा?"

कालिया की बीवी बोली, "यह कैसी बात है, माँ? तुम तो घर की लक्ष्मी हो। तुम्हारे आने से यह गिरस्थी खिल उठी है। बड़े घर की लड़की हो तुम। तुम्हें कौन दासी बना सकता है?"

सागर की बीवी एक खोंची मड़ुवा और देती है। मड़ुवे की पोटली घर में लाकर वह बोली, "एक जून का बंदोबस्त कर लायी हूँ।"

"देख रहा हूँ।"

अगले दिन कालिया नवरतनगढ़ गया। क्या कहेगा, मन-ही-मन उसने सोच लिया था—इतनी छोटी उम्र की लड़की से तुम्हारी शादी क्यों करायी है? तुम्हारे पास बकरियाँ हैं। पैसा है। बुरे समय में खाने को कुछ मिल सकेगा, यही सोचकर यह शादी की थी। अब कुछ निकालो।

उधारचंद ने उसकी गर्मजोशी पर ठंडा पानी डाल दिया। कालिया ने तो बातों को अच्छी तरह से जमा कर पेश किया था। कहने लगा, "जमीन गिरवी रख दो, इस समय मजदूरी भी नहीं है। वैसे कटाई का समय आ रहा है। इस समय अभाव ज्यादा है। पेट भरने को भी कुछ नहीं है।"

सुनकर उधारचंद बौखला उठा, "शादी का खर्चा सारा मैंने दिया है। किस अक्ल से तुम जमीन गिरवी रखने गये थे? मैंने तो तुमसे नहीं

ा ?"

"अरे तुम्हारे जैसे मानी व्यक्ति का मान रखने के लिए ...।"

"जो भी तुमने किया है, अपनी अक्ल से किया है। अब मैं क्या कर
ता हूँ ?"

"तुम तो नाराज हो रहे हो ?"

"मजदूरी का काम वैसे भी इस समय खेतों में नहीं रहता है। पेट नहीं
लता है। देखो, मैंने तुम्हारी लड़की से शादी की। इस तरह का
अभाव तुम्हारे घर में हर साल रहेगा। साल में नौ महीने खाना नहीं
जुटता तुम्हारे यहाँ। लड़की तो मेरे यहाँ बाद में आयेगी। जब तक वह
नहीं आती है तो क्या मुझे साल में नौ महीने इतने सारे लोगों के लिए
खाना जुटाना होगा ? मैं क्या कोई मालिक-महाजन हूँ ?"

कालिया एकदम पिचक गया। राँका के हाथों की बनी तोरी की
सब्जी और रोटी भरपेट खाकर भी मन ठीक नहीं हुआ। अगले दिन उसे
खाली हाथ विदा नहीं किया उधारचंद ने। कुछ मंडुवा दिया और दो
रुपये दिये। फिर बोला, "आगे से नहीं दे पाऊँगा।"

"सरसतिया भी बिना खाये रहेगी ?"

"दूसरी लड़कियों के मामले में गौना न होने तक क्या दामाद सुसराल
वालों का खर्चा भरता है ? यह कौन-सा नया हिसाब लगाया है तुमने ?"

घर लौटकर कालिया ने मंडुवा और एक रुपया पत्नी को सौंप दिया,
फिर बोला, "एक रुपया मैं पास रख रहा हूँ। तूने ठीक कहा था
सरसतिया की शादी उस बुड्ढे से न करते तो अच्छा ही था।"

कालिया की बीबी सीधी समझ की औरत है। बोली "अब छोड़ो
बातें। मालिक के पास जाओ। इतने दिनों तक खरीदी प्रजा रहे हैं। फ
काटेंगे, मजदूरी लेंगे। हमारा भी तो कोई हक है।"

सागर सिंह बोला, "मेरे पास क्यों आये हो ?"

"किसके पास जायें, मालिक ?"

"गये तो थे दामाद के पास ?"

"कुछ भी नहीं दिया उसने, मालिक !"

"इस बार शायद तुम्हें न ले पाऊँगा। हमारे यहाँ पहले से

मजदूर बहुत हैं।"

"ऐसा क्यों, हुजूर ?"

"मालूम नहीं कि क्या हो रहा है दुमका-पूर्णिया में। पुलिस मार-मारकर सारे बदमाशों को गाँव से बाहर निकाल रही है। सब इधर-उधर छितरा गये हैं। दो-चार पैसे दो तो सारा धान काटकर उठा देंगे।"

"काम नहीं मिलेगा, मालिक ?"

"नहीं-नहीं, तुम लोग बहुत हरामी हो। कामचोर भी। चार आना रोज़, एक वक्त नाश्ता, एक पाव सत्तू दूँ तो काम करोगे ?"

"मालिक, हर साल आठ आना देते हो और आधा सेर सत्तू। इस बार ऐसा क्यों ?"

"आधे खर्च पर मजदूर मिल रहे हैं इस बार !"

यह बुरी खबर बाढा गाँव के खेत-मजदूरों में फैल जाती है। तब उन्हें याद आती है अन्य दुसाध, गजू, भगियों की बात। गणेश सिंह के अत्याचार से बौखला गये थे। जमीन से उखड़कर वे पहले जंगल के बाहर, फिर जंगल के भीतर चले गये थे। गणेश को तो उन लोगों ने मार ही डाला था। यह लम्बी दास्तान है। उस समय इसी प्रसाद ने उन्हें काफी मदद की थी।

कालिया बोला, "प्रसादजी से कहें।"

"क्या कहोगे ?"

"वह क्या कहेगा, हम जानते हैं।"

कालिया और दो लोग प्रसाद के पास जाते हैं। प्रसाद बोला, "तुम लोग एकजुट हो जाओ। कह दो 'जितने दिन वे नहीं आते, उतने दिन हम लोग काम करते हैं।' यदि तुम उनकी निर्धारित मजदूरी मान लेते हो ..।"

"अब चार आने में आजकल क्या मिलता है ?"

"जानता हूँ। और यह भी जानता हूँ कि सरकारी रेट तो दूर रहा, जो देते रहे हैं वह भी नहीं देंगे। एक बार रेट घटने के बाद फिर नहीं बढ़ता।"

"फिर क्या करें ?"

कालिया का लड़का धनुआ वोला, "इसीलिए गाँव से सव लोग उखड़ रहे हैं। पहले हमें काम मिल जाता था, पर अब बाहर से खेत-मजदूर आ रहे हैं।"

"हाँ, आ तो रहे हैं।"

"उनके देश-गाँव में धान कौन काट रहा है ?"

"क्या पता ?"

"तो अव क्या किया जाये ?"

"तुम लोग जाओ। मैं देखता हूँ। परसों आना।"

इस समय प्रसाद अकेला पड़ गया है। कांग्रेस सरकार का शासन है। 'भूमि-मजूर सहाय समिति' जैसी दो-एक स्थानीय संस्थाएँ इस वक़्त भूमिगत हो गयी हैं। इस वक़्त जो भी खेत-मज़दूरों के स्वार्थ देखेगा, पकड़ा जायेगा। क्या किया जाये ?

प्रसाद सड़क के ठेकेदारों के पास जाता है। उनसे वहुत-सी वातें करता है। आख़िर में एक वात पक्की हो जाती है।

प्रसाद कालिया वगैरा से कहता है, "ढाई के उस तरफ़ वस के लिए जो रास्ता वन रहा है, वहाँ मिट्टी काटने और पत्थर डालने का काम है। तमाम मर्द लोग वहाँ चले जाओ। एक रुपया रोज़ की मज़दूरी है। खाने-पीने को कुछ नहीं। लगता है कि सोलह के क़रीव लोगों को काम मिल जायेगा।"

"हम तीस लोग हैं।"

"नाम वोलो।"

प्रसाद सवके नाम लिख लेता है। फिर कहता है, "इस दल में एक औरत शामिल कर लो। और दूसरे दल में भी एक औरत रख लेना। पहले दिन सोलह लोग जाओ, दूसरे दिन बाक़ी के सोलह।"

"औरतें ?"

"भई, इससे अधिक मुझसे नहीं होगा।"

गजमोती सिंह ख़ुश होता है। भूखे दुसाध लोग अंत में शायद खुराकी पर ही धान काट देंगे। लेकिन जव उसे पता लगता है कि प्रसाद की कोशिश से वे सड़क वनाने के काम पर गये हैं तो वह वहुत नाराज़ होता

है।"

वह सागर सिंह से कहता है, "गणेश सिंह ज्यादा ही सख्ती करने गया था। खुद भी मरा और गाँव से मेहनत-मजदूरी करने वाले सारे लोगों को भी भगा गया। तुम्हारी बातों में आकर मैंने उनसे खटपट की। अब झमेला खड़ा हो गया !"

"झमेला क्या है ? आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।"

"क्या करोगे तुम ?"

"देखते हैं।"

समय पर सागर सिंह नाथू सिंह के पास जाता है। नाथू और चन्द्रभान बोले, "इतने परेशान होने की क्या बात है ? नवरतनगढ़ के भुजा सिंह के वकील का दामाद अमीन है न और उसी का भाई कुली-मजदूर जुटाने वाला ठेकेदार है। वह भाई खेत-मजदूर ला रहा है।"

"रेट क्या है ?"

"और कितना ? वही आठ आना ! चार आना उनका, चार आना ठेकेदार का। इस तरह वह उनसे काम करा रहा है। अंत में कोयला खानों में पहुँचाकर चला जायेगा।"

"खैर। गाँव के दुसाधों को लेने से सालों का दिमाग़ चढ़ जाता है। देंगे क्यों नहीं ? ठेकेदार को देंगे।"

इसी तरह सारी व्यवस्था हो जाती है। कालिया दुसाध और अन्य लोग सड़क की मरम्मत के काम पर लग जाते हैं। सरसतिया जैसे छोटे लड़के-लड़कियाँ इन्तजार करते रहते हैं, धान कट जाने के बाद खेतों में गिरे हुए अनाज को इकट्ठा करने का।

धान की कटाई वग़ैरह खत्म होते-होते जाड़ा शुरू हो जाता है। जंगली बेर पकने लगे हैं। शरद में जो आँवले पके थे, वे पेड़ से नीचे गिरने लगे। सरसतिया दूसरी लड़कियों की तरह टोकरी और लाठी लेकर जंगल जाती है, पके हुए बेर इकट्ठे करने। उसकी माँ और बड़ी औरतें तोहरी जाकर उन बेरों को बेच आती हैं।

एक दिन ज्यों ही वह अपने सिर से बेर की टोकरी और सूखी लकड़ियों का गट्ठर उतारती है तो देखती है कि एक अनजान लड़का

लिये बैठा है।

"कौन है तू? यहाँ क्यों बैठा है?"

"मैं हूँ राँका दुसाध।"

"वह कौन है?"

धनुआ की बीवी हँसती हुई बोली, "पगली! इसी के साथ तेरी शादी होने को थी। पर किस्मत में बूढ़ा पति लिखा था। क्या किया जाये!"

"क्यों आया है?"

"देख, तेरे पति ने क्या भेजा है!"

मंडुवा, दो-एक घुईया और मिर्च। धनुआ की बीवी बोली, "सरसतिया! जरा दुकान चली जा। थोड़ा नमक ले आ।"

"पैसा?"

"वह लोग आयेंगे तो दे देंगे।"

धनुआ की बीवी टोकरा ख़ाली करके राँका को दे देती है। फिर नमक की चाय बनाकर देती है। आजकल वे यह चीज़ ख़ूब पी रहे हैं। लड़के, बच्चे भी। सवेरे ढेर सारी नमक की चाय पी लेने से भूख कम लगती है। नमक, चाय और एक मुट्ठी मकई का सत्तू उबाल दो तो गोद का बच्चा भी चाव से खा लेता है।

राँका गहरे कौतुहल के साथ सरसतिया को देखते हुए नमकीन चाय पीता रहा। यहाँ उसे काफ़ी सहजता अनुभव हुई। उधारचंद के यह आजकल उसे नौकर जैसा व्यवहार मिलता है। उधारचंद के लड़कों साथ उसका सम्पर्क सहज था। जब बाप-लड़कों का ही सम्पर्क ख़त्म गया तो राँका किस खेत की मूली है! वह तो मामा का ही लड़का है न

सरसतिया बेशुमार ग़रीबी में भी काफ़ी सहज लगती है। हाँ, तो है दुसाध लड़कों की परिचित दुनिया। टूटे छप्पर के लिए बाँस के कोंहड़े की बेल के साथ काली हँडिया और नंगा, दुबला, पेट-फ बच्चा घुटने के बल चलता हुआ। राँका समझता है कि वह इनसे हालत में रह रहा है। उसे पेट-भर खुराक मिलती है, शरीर पर भी है। टोकरा उठाकर चलते समय वह सरसतिया को बुलाता

सुनो! सुनो तो!"

"क्या बात है ?"

साथ-साथ चलते हुए राँका उसे एक रुपया देता है। बोला, "तेरे लिए दिया है।"

"किसने ?"

"तुम्हारे पति ने ?"

"तुम क्यों कह रहे हो ?"

"तुम मेरे फूफा की बीवी जो हो।"

"तुम्हारी कौन हूं ?"

"बुआ।"

"वह कैसे ?"

राँका एक अमरूद भी सरसतिया को देता है। खुद खाने के लिए लाया था। इस लड़की को देखकर दया आती है।

"बेर कहां से लायी हो ?"

"जंगल से।"

"जाओ, अब घर जाओ।"

"तुम भी चले जाओ। और महुंवा लाना।"

"मैं क्या मालिक हूं ? मालिक ने दिया तो लाऊँगा।"

सरसतिया दौड़कर रुपया धनुआ की बीवी को दे देती है। फिर आँगन में लकीरें खींचकर इक्का-दुक्का खेलने लगती है। सरसतिया की माँ घर लौटकर सब-कुछ सुनकर हैरान होती है।

फिर बोली, "कितना हरामखोर है बुड्ढा ! पिछली हाट में उसने तीन बकरियां बेची थीं। लड़कों के साथ भी अब उसका कोई सम्पर्क नहीं है। एक दुधेली बकरी पालने के लिए दे देता तो हमें कुछ राहत मिलती। उसका रुपया वही राँका खायेगा।"

सरसतिया अपने लाल बाल हिलाकर कहती है, "नहीं, नहीं।"

"जरूर खायेगा।"

"राँका बहुत अच्छा लड़का है।"

"कैसे रे ?"

"मुझे अमरूद दिया है न खाने को।"

राँका ने सरसतिया के बारे में खूब जमकर बताया। उधारचंद मन-ही-मन सोचता रहा। बोला, "क्या किया जाये?"

"मैं क्या बोलूं?"

"बेटा, कालिया ने जमीन गिरवी रख दी है।"

"वह जमीन अब नहीं मिलने वाली...।"

"मेरे पास आया था तब तो वह।"

"हाँ, मैंने भी देखा था।"

"मैं क्यों उन सबको खाने को दूं? मेरे पास बीस-पच्चीस बकरियाँ ही तो हैं।"

"जमीन खरीद सकते हो।"

"जमीन। जमीन के बारे में किसने कहा? मैं कहता हूँ कि सभी मेरे पास रुपयों के लिए आते है। लड़के भी आये थे।"

"वे तोहरी भी नहीं आते हैं अब।"

"तू भी तो पड़ा हुआ है...।"

"मुझे रुपया तो देते नहीं हो?"

"रुपये का क्या करेगा? तुझे खाने को मिलता है, कपड़ा-लत्ता मिलता है। फिर जब कालिया की लड़की आ जायेगी तो तेरी शादी करा देंगे। तुझे बकरी दे देंगे। कहीं बसा भी देंगे।"

"मैं जाता हूँ।"

"क्यों?"

"शाम हो गयी है। बकरियों को गिनकर वाड़े में बन्द करना है।"

"बहुत तकलीफ उठायी है मैंने पहले। तेरे आने पर थोड़ा आराम मिला है। लेकिन आराम करने की बात पर याद आया, तू आजकल डाक बाबू के घर, थाना सिपाही के पास, वकील बाबू के घर घास बेचता है?"

"हाँ।"

"अयं! कब से?"

"बहुत दिनों से।"

"मेरे काम में हर्जा करके?" मालिक-महाजनों जैसे स्वर में डाँटकर बोला उधारचंद।

रांका और दुमाधो की तरह डरा नहीं। बोला, "काम खत्म करने के बाद करता हूँ। काम से जी चुराता तो खसी बकरियाँ इतनी मोटी हो जाती ? इतने दामों पर कैसे बिकती ? कितनी मेहनत करता हूँ, जानते हो ?"

"अरे, वह तो जानते है।"

"खाना देते हो, कपड़ा-लत्ता देते हो।"

"जरूर देते हैं।"

"कभी एक पैसा नहीं देते। इसलिए बकरी चराते हुए घास खोदता हूँ, और फिर बेच देता हूँ। पैसे से बीडी-दियासलाई-बालों के लिए तेल खरीदता हूँ।"

रांका का जवाब उधारचंद को बड़ा जबरदस्त लगा। उसने कहा, "कितने दिनों से घास बेच रहे हो ?"

"बहुत दिनो से।"

"कितना रुपया बना लिया है ?"

"पाँच-सात रुपया।"

उसके जवाब मे नाराजगी थी। उधारचन्द बोला, "गुस्साता क्यों है ? अच्छा किया। ला, अब गमछा दे। दूध का रुपया काफी बकाया पड़ गया है।"

बकरी का दूध काफ़ी दामो मे बिकता है। बारह आना सेर।

उधारचद डाक बाबू के घर जाता है। दूध के पैसे का हिसाब करते समय बोला, "आजकल सभी लड़के बड़ी जल्दी गुस्सा हो उठते हैं।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"वही रांका है ना अपना !"

"क्या किया उसने ? वह तो बहुत शांत लड़का है।"

उधारचद सारी बातें बताता है। सुनकर डाक बाबू बोले, "यह तो ठीक बात नहीं है, उधारचद !"

"कैसे ?"

डाक बाबू का अस्थायी डाकघर दूसरी जगह जा रहा है, गंजटाउन में। इसलिए वह खुश है। कुछ साल पहले तक जो लोग राजा थे, चाहे वे

कितने ही छोटे राजा क्यों न थे, इतने अजीव जीव हो सकते हैं, डाक वावू पहले नहीं समझ पाये थे।

भुजा सिंह के सिपाही उधार में दाल-मसाला ख़रीदते हैं। उधार में ही पोस्टकार्ड-लिफ़ाफ़ा ख़रीदते है। दो साल में उन्होंने जेव से छप्पन रुपया भरे हैं। उनके सिपाही सव तगड़े जवान थे—अत्यंत असभ्य और वर्वर। वे कभी पूजा करते हैं तो चंदा देना पड़ता है। उसकी वदली रोकने का प्रयास कर रहे थे वे, लेकिन अव तो डाकघर ही जा रहा है।

उधारचंद की वात उसने सुनी ही नहीं।

"क्यों मास्टर साहव, ठीक कहा है न मैंने?"

"नहीं, नहीं, तुम उसे पैसे नहीं देते। लड़का भूत की तरह मेहनत करता है। अपनी मेहनत से घास खोदकर वेचता है। इस वात पर क्यों विगड़ते हो? यहाँ की हवा लग गयी है क्या?"

"उसे अपने पास रखता हूँ, खिलाता-पिलाता हूँ।"

"अरे वावा, वीड़ी पीने के लिए भी तो पैसा चाहिए।"

"चलो छोड़िये। अच्छा अव दूध का पैसा दीजिए।"

"यह लो।"

"आप यहाँ से जा रहे हैं, मास्टर साहव?"

"डाकघर ही यहाँ से जा रहा है।"

"हाँ, हाँ। सुना तो है।"

"कुछ स्टेशनों के वाद लखीमपुर में।"

"मास्टर साहव, क्या वह इससे अच्छी जगह है?"

"इन सव इलाक़ों में हमें तो कुछ जँचता नहीं। लड़के-लड़कियों की पढ़ाई की भी कोई सुविधा नहीं है।"

"आप लोगों को इन सव की ज़रूरत है।"

कुछ दिनों वाद वकील भी उधारचंद से वोला, "यह क्या वात है? लड़का मेहनत करके घास लाता है, दो-चार पैसों में वेचता है तो इसमें तुम्हारा क्या नुक़सान होता है?"

"वात तो ठीक है, हुजूर!"

"फिर तुम्हें यह भी सोचना चाहिए कि तुम्हारी उम्र वढ़ रही है।

वह अगर भाग गया तो तुम्हारी बकरियों की कौन देखभाल करेगा? तुम्हारा अपना लडका होता तो उसे भी कुछ पैसे देने पड़ते। फिर वह तो तुम्हारी जाति का ही है, तुम्हारा रिश्तेदार।"

"जी हुजूर!"

इस तरह वकील उधारचद को जता देता है कि बकरियां रखकर दो-चार पैसा जोड लेने पर भी वह नवरतनगढ की आंखों मे दुसाध ही है। यहाँ पर उसका अपना कोई नही है।

उम्र बढ रही है, यह बात उधारचद को अच्छी नहीं लगी। उम्र कहाँ बढ रही है? वह अब भी काफी तगडा और ताकतवर है। वह अभी यह बातें सोच ही रहा होता है कि वकील अचानक उससे एक सवाल पूछता है।

"सुना है, तुमने किसी सुलक्षणा लडकी से शादी की है?"

"हाँ हुजूर! ऐसा ही है। आपसे किसने कहा?"

"किसी से सुना था।"

"चलूँ, हुजूर!"

"भाग्यवती लक्षणो वाली लडकी है?"

"नाई तो यही कहता था।"

"अरे! तुमने अच्छा किया!" बहुत ही खराब तरीके से हँसा वकील। फिर बोला, "वैसी लडकी राजाओं को भी नही मिलती है। दुसाध को मिल गयी!"

"यह तो किस्मत की बात है, हुजूर!"

"ठीक है, ठीक है। खा-पीकर ताकत बढाओ। लड़के-बच्चे पैदा होने चाहिए। क्या पता, लडका किसी दिन मत्री बन जाये। नहीं तो दरोगा या विधान सभा का सदस्य कुछ तो बनेगा ही।"

"आप लोगों के आशीर्वाद से।"

उधारचद चला जाता है। वकील सोचता है कि भुजा सिंह को यह खबर जरूर देनी चाहिए। भुजा सिंह और वह एक ही उम्र के हैं।

इस समय भुजा सिंह की उम्र चालीस है। राहू की नजर रहते-रहते भुजा सिंह अपनी पहली पत्नी से तीन लडकियाँ पैदा कर चुका है। वैसे अन

वह राजा नहीं है, लेकिन मिज़ाज राजा का है। धनी भू-स्वामी है। इसके अतिरिक्त जंगल का बड़ा ठेकेदार भी है।

वकील उसे क़ानून से बचकर चलने का परामर्श देता है और उसके लिए लड़कियाँ जुटाता है।

इस दुसाध को यहाँ बसाना बुरा नहीं रहा। भुजा सिंह पर से जब राहु का प्रभाव हटेगा, उस समय वैसी ही कोई लड़की मिल गयी तो भुजा सिंह को साले के लड़के को गोद नहीं लेना पड़ेगा और वह वकील की मुट्ठी में ही बंद रहेगा।

कौन है यह भुजा सिंह ? एक गँवार राजपूत ही तो है। पेड़ों के काटने के काम की निगरानी वकील ही करता है। भुजा सिंह ने अपनी तरफ़ से दस्तख़त वगैरा करने का अधिकार भी दिया है।

वकील मन-ही-मन तय करता है कि समय आने पर भुजा सिंह को यह सब बताना होगा।

घर लौट कर उधारचंद राँका से बोला, "इधर आना जरा।"

"क्या कहना है ?"

"कालिया की लड़की भगवती-लक्षणा है, यह बात वकील को कैसे पता लगी ?"

"मुझे क्या मालूम ?"

"बताओ, उसे इसका पता कैसे लगा ?"

"तोहरी हाट में कालिया की बीबी आती है।"

"तो क्या उसने कहा है ?"

"बाढ़ा से भी तो कई लोग आते हैं।"

"उसी ने कहा होगा। औरतों की जुबान पर रोक नहीं होती। तूने तो नहीं कहा ?"

"क्या पागल हो गये हो ? वकील जी से आज तक मैंने कभी बात तक नहीं की।"

"चलो, ठीक है। लेकिन आगे से किसी को मत बताना।"

कुछ दिनों बाद राँका फिर थोड़ा-सा मंडुआ लेकर बाढ़ा गया। सर-सतिया उसे जंगल में ले जाकर पेड़ हिलाने को कहती है। बेर बटोरकर

रांका उसकी टोकरी भर देता है। वह उसे चूरन की एक गोली खाने के लिए देता है और कहता है, "मैंने खरीदा है, अपने पैसे से।"

बेर की टोकरी रांका खुद ही ढोकर लाता है। सरमतिया की माँ से कहता है, "इसके बाद आँवला भी बटोर दूँगा।"

"आँवले का क्या होगा ?"

रांका अकड़कर बोला, "तोहरी जाते हो। आँख खोलकर नहीं देखते क्या ?"

"क्या देखूँ ?"

"वहाँ कबिराजी दवाई के कम्पनी वाले आते हैं...।"

"वे वहाँ क्या करते हैं, रांका ?"

"वे खरीदते हैं आँवला, हरड़, और भी बहुत कुछ।"

"यह तो नहीं मालूम था हमें।"

"अब तो मालूम हो गया।"

"जाता कहाँ है ? बैठ, थोड़ा खाकर जा।"

"नहीं-नहीं, मुझे वहाँ पहुँचकर खाना पकाना होगा।"

"ले, ये थोड़े-से मकई हैं, खा ले।"

"लाओ।"

"उधर भी जा रहा है ?"

"आज लड़कों की खबर लेकर आने को कहा है।"

उधारचंद ने रांका से इस तरह की कोई बात नहीं कही थी। यह उसका नाटक है। खुद ही वहाँ जाता है। भगत बोला, "क्या बात है ?"

"और लोग कहाँ हैं ?"

"सड़क बनाने के काम पर गये हैं।"

"क्यों ?"

"पास ही काम चल रहा है।"

"इधर और क्या खबर है ?"

"यहाँ तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

"बस चलने लगेगी तो कारोबार अच्छा चलेगा।"

"कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है।"

"पैसा जब आने लगेगा तो बहुत अच्छा लगेगा।"

"तू अचानक कैसे आ गया ?"

"तुम लोगों को देखने।" राँका साँस छोड़ता है। "तुम्हारे पिता का कारोबार है। तरह-तरह की बातें करने वाले बहुत-से लोग हैं। मैं क्या करूँ ? आजकल बहुत खिटपिट करता रहता है। मुझ पर शक भी करता है। अब वहाँ अच्छा नहीं लगता।"

"तुझे जरूर कुछ देगा।"

"कुछ भी नहीं देगा।"

"जाने की सोच रहा है क्या ?"

"कहाँ जायें ? यदि जायें तो उस बूढ़े का क्या होगा ? कौन उसे देखेगा, बोलो ? पता नहीं तुम लोगों को क्या हुआ है ?"

"हम लोग कर ही क्या सकते हैं ?"

"मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि बीवी आते ही वह मुझे भगा देगा।"

"ऐसा कहा है क्या पिताजी ने ?"

"कह रहा था कि बकरियाँ पालने को दूँगा, शादी करूँगा। लेकिन वह यह सब करेगा नही। दुकानों पर और इधर-उधर कहा है कि भगा देगा।"

"तब तुम हमारे पास आ जाना। हम लोग तुम्हारी शादी करायेंगे। हम लोग जो खाते हैं, वही तुम भी खाना। नहीं खायेंगे तो तुम भी भूखे रहना।"

"परिवार के बिना क्या काम चलता है ?"

"तेरी शादी तो हो जाती। पर हमारे बाप के सिर पर जो शादी का भूत चढ़ गया।"

"भगवती-लक्षणा लड़की ही नहीं है वह...।"

"क्यों ?"

"मुझे मंडवा देकर भेजता है। कालिया और उसके घर वाले सड़क का काम करते हैं और कालिया की लड़की जंगल में बेर चुनती है।"

"पिताजी ने क्या देखा है उसमें ?"

"जो लड़की इतनी अच्छी और भाग्यवती है, उसके पति के घर में

आते ही किस्मत बदल जायेगी ! पर अभी तो वह जंगल में बेर चुन रही है।"

भगत की बीवी सत्तू, गुड़ और पानी लाकर रौंका को देती है। बोली, "कोई अपना काम छोड़कर दूसरा काम करता है तो ऐसा ही होता है।"

भगत उसे दूर तक छोड़ने आता है। कहता है, "जरा रुको। ठेकेदारों की लारी जाती रहती है। कह देंगे, उसी में चले जाना।"

लारी पर चढ़कर लौटते हुए रौंका सोचता है, ये लोग सड़क का काम कर रहे हैं। फिर किसी और काम की खोज करेंगे। मैं अकेला आदमी हूँ। जहाँ भी मन हो, जा सकता हूँ। लेकिन यह ठीक नहीं है। उधारचंद ने इतने दिनों तक खाना दिया, आश्रय दिया। जब उसकी बीवी आयेगी तब मैं और भी जवान होऊँगा। उसी समय वहाँ से चला जाऊँगा।

सरसतिया भी तब बड़ी हो जायेगी। भगत के लड़के जैसी। मैं भी किसी लड़की से शादी कर लूंगा। दोनों मिलकर मेहनत करेंगे, झोपड़ी बनायेंगे। रौंका दुसाध। रंक, रौंका ! जिसके पास कुछ भी नहीं होता है वही रौंका कहलाता है। लेकिन रौंका नाम में क्या होता है ? तब मैं रौंका नहीं रहूँगा। मेरी बीवी होगी, बच्चे होंगे, झोपड़ी होगी।

लारी-ड्राइवर सिर बाहर निकल कर बोला, "अब उतर जा रे। तेरा नवरतनगढ़ उधर है।"

रौंका उतर पड़ता है। तेज-तेज चलने लगता है। न जाने उधारचंद कितना नाराज हो चुका होगा ! लेकिन नवरतनगढ़ में उस दिन भारी गड़बड़ थी।

## चार

बहुत ज्यादा गड़बड़ी है नवरतनगढ़ में। सभी जगह पुलिस। मुन्ना सिंह की हवेली के विशाल आँगन में पुलिस की जीप। रौंका को उत्सुकता होती है, लेकिन वह आँखें नीची किये वहाँ से गुजर जाता है। पुलिस के सामने आँखें नीची करके चलना चाहिए, दौड़ना नहीं चाहिए। पुलिस

भागते हुए दुसाध, गंजू और धोवियों की पीठ पर वहुत गोली चलाती है और पता नहीं कैसे उस गोली से दिल में छेद हो जाता है। राँका चलता रहा।

उधारचंद उसे देखकर डाँटना भूल गया और वोला," जल्दी आ इधर। वहुत खतरा है।"

"क्या हुआ है ?"

"भूमि मजदूर सहायता समिति के कार्यकर्ता जुगल करन आदि को ढूंढ़ने आयी है पुलिस। यहाँ रहेगी कुछ दिन।"

"रहेगी ?"

"हाँ।"

"तव तो सिपाही लोग वकरी-खस्सी उठा ले जायेंगे।"

"क्या होगा, राँका ? ग्यारह वकरी, तेरह खस्सी, दो वूढ़े वकरे, सात ग्याभिन वकरियाँ, चार दुधारू हैं। वच्चे हैं आठ। यह साले कच्चे चवा जायेंगे। सब को खा जायेंगे। क्या करें अव ?"

राँका तुरंत कुछ निश्चय ले लेता है। वोला, "मुझे कुछ दिनों का चिवड़ा-सत्तू-गुड़ गमछे में वाँध कर दे दो। ग्याभिन वकरियों और खस्सियों को लेकर में जंगल में भाग जाता हूँ।"

"और वाकी का क्या करें ?"

"दुधारू वकरियों, वच्चों और वकरों को यहीं रखो।"

"पूछने पर क्या कहूँगा ?"

"कह देना, राँका लखीमपुर हाट में वेचने गया है।"

"वे अगर इन्हीं को ले गये तो ?

"ले जाने दो।"

"जंगल में क्या वच पाओगे ? वे लोग तो जंगल में ही ढूंढेंगे। जुगल करन एक पुलिस वाले को मार कर भाग गया है।"

"देखा जायेगा। सरसों कहाँ है ?"

"सरसों का क्या होगा ?"

"तुम भी क्या वकरा वन गये हो ? लाओ, जल्दी दो। कान में सरसों डाल देने से वकरियाँ में-में नहीं करती, यह भी नहीं मालूम ? लाओ, दो

रुपया दो।"

"क्या करोगे रुपयों का ?"

राँका बिगड़ उठता है। बोला, "ज्यादा दिन जंगल मे रहना पड़े तो क्या खरीदकर नही खाऊँगा कुछ ? जो कुछ तुम्हारे पास है उसे दे दो।"

बकरियों को लेकर राँका चला जाता है। जगल, यहाँ का जगल खतरे से खाली नहीं है। यह जंगल का इलाका सरकार का है। पहले नवरतनगढ़ के जमींदार का था। राँका नवरतनगढ़ के निकट नही रहेगा। बाढ़ा की ओर चला जायेगा। जगल अभी घना नही है। हलका है। आगे घना होता गया है। जगली काँटों से भरा दुर्गम जगल का रास्ता। लेकिन राँका रास्ते को जानता है। बाढ़ा-नाढ़ा-ढाई तक आने-जाने के लिए वे लोग जगल का रास्ता ही इस्तेमाल करते है। थोड़ा सुस्ता ले ? नही, अभी भी ख़तरा है।

राँका ख़तरे से दूर जाना चाहता है। एक और राँका दुसाध के पास। बाढा के पास मे जो जगल है, उसमे कुछ दुसाधो-भगियों की झोंपड़ियाँ है। कुछ साल पहले इन्ही लोगो ने गणेशसिंह के खिलाफ़ आवाज उठायी थी।

नाढा मे ही राँका ने यह सब-कुछ सुना था। गणेश को उन लोगों ने मार डाला था। लेकिन इतने सारे लोग उस घटना मे शामिल थे कि सिर्फ़ उनमें से कुछ लोगो को दो-तीन साल की सजा हुई थी। वे जगल से लकड़ी चुनकर बेचते हैं। आजकल पुलिस ने उन्हे काफ़ी परेशान कर रखा है। अगल-बगल कोई भी बलवा-झगड़ा हो तो पुलिस वहाँ पहुँचती है। गणेश को पालने वाली लछिमा भी वही रहती है। वह भी जेल से लौटी है। उन लोगों की अनुमति से राँका उनके जगल मे रह जायेगा।

सरमततिया वगैरह को पता भी नही चलेगा। गणेशसिंह के मारे जाने के बाद वे भूलकर भी उस जगल मे नही आते। बाढ़ा या नाढ़ा के दुसाध भी वहाँ नही जाते। राँका एक बार वहाँ गया था। माँ-बाप के मरने पर वह सीधा सुधारचंद के पास नही आया था। तब वह इधर का रास्ता नही जानता था। नाढा आते समय वह भूलकर वहाँ चला गया। वहीं चार दिन ठहरा था। उन लोगो ने तो उसे वहीं रह जाने के लिए कहा था।

धीरे-धीरे शाम हुई। जंगल और भी अँधेरा लगता है। इस जंगल में बाघ नहीं है। लेकिन बकरियों के साथ वह कहाँ रहे? भेड़िया, सियार, लकड़बग्घा जैसे जानवरों का ख़तरा तो है ही। इसके अलावा जंगल में कुछ भालू जैसे हरामी जानवरों का भी ख़तरा है। जाड़े के अन्तिम दिनों में वे बेर खाने के लिए निकलते हैं।

तभी अचाअक राँका, राँका दुसाध के सामने पड़ जाता है—बड़ा राँका। छोटा राँका उसे पहचानता है, लेकिन बड़ा राँका उसे नहीं जानता।

"कौन? कौन है तू?"

"राँका दुसाध। बाढ़ा का राँका दुसाध!"

"क्या कहा?"

"तुम्हें जब उसने पहचान लिया तो उसे मेरे सामने लाओ।" एक अपरिचित बाबू आदमी बोला। राँका ने देखा कि उसके हाथ में बन्दूक है।

राँका सारी बात बताता है। बड़ा राँका पूछता है, "सच बोल रहे हो? वरना तेरी बकरी-बकरा सब गया समझो और साथ में तेरी भी छुट्टी।"

"एकदम सही कह रहा हूँ।"

"जुगल जी, आप ही पूछिये।"

राँका बहुत ही व्याकुल होकर बोला, "आप ही जुगल करन हैं?"

"हाँ भाई! तुम अगर चाहो तो पुलिस को ख़बर करके मुझे पकड़वा सकते हो। पुलिस तुम्हें रुपये देगी।"

"नहीं, नहीं।" राँका बहुत डर जाता है। बोला, "राँका दुसाधों को परेशान करने के लिए जब यही पुलिस आती है तो बाढ़ा-नाढ़ा में हमें खेत से पकड़कर पीटती है। पुलिस से मैं बहुत डरता हूँ।"

"रुपया तो मिलेगा?"

राँका अपनी दुखी, पर सरल आँखों को ऊपर उठाकर बोला, "लेकिन वह तो धरम नहीं होता है जी। पुलिस तो आपको मार डालेगी। है न? तोहरी हाट में मैंने कुछ दिन पहले ऐसा ही सुना था।"

बड़ा राँका बोला, "उधारचंद भी एक ही जानवर है। अपने लड़के की शादी ठीक करने की बात थी। खुद ही शादी कर बैठा।"

"अपने लड़के के लिए नहीं, मेरे लिए शादी तय कर रहा था।"

"तेरा कौन होता है वह?"

"फूफा।"

रौंका को दुख हुआ। दो दिन के पुराने परिचय के बल पर बड़े रौंका के पास आया था। बड़ा रौंका शायद उसे भूल गया है। बड़े रौंका से उसने यही बात कही।

बड़ा रौंका बोला, "बकरियाँ बचाने के लिए तू जंगल में क्यों घुमा है? आजकल इधर बाघ आया हुआ है। तुझे अगर बाघ खा गया तो?"

"पुलिस ले जायेगी दुसाध की सम्पत्ति।"

"वह जब मालिक-महाजन बनता है तो उसे सजा भुगतने दो। तू बकरी-वकरी बेचकर यहाँ से भाग जा।"

रौंका बोला, "यह तो धरम का काम नहीं है। बूढ़ा आदमी! उसने मुझ पर विश्वास किया है। फिर रोटी-पानी भी तो देता है।"

बड़ा रौंका बोला, "देखिये जुगलजी, ऐसी अकल है हम लोगों की, हम दुसाध लोगों की। इसीलिए आपका काम सफल नहीं हो रहा है।"

युगल निर्मल हँसी हँसता है। बोला, "भैया! एक साथ जेल में रहे हैं। परिणामस्वरूप तुम्हारी समझदारी इस तरह की बनी है। इस बेचारे को क्या समझ? तुम समझे हो, अब इसे समझाओ। लेकिन अभी इसकी बकरियों का तो इन्तजाम करो। चलो, अब सोया जाये।"

"आग जलायी नहीं जा सकती है?"

"नहीं।"

"तब खाना-वाना नहीं बनेगा। आटे की लिट्टी बनाने का समय ही नहीं मिला। आटा ले आये हैं। खैर, उसे जाने दो। रात का क्या होगा?"

"हम लोग तीन हैं—तुम, मैं और यह छोटा रौंका। पारी-पारी से जगना होगा। और क्या? जंगल में इधर की तरफ पानी कहाँ है? कल उधर की तरफ चलेंगे।"

"हम लोगों की टोली पर पुलिस की नज़र है।"

"नहीं, नहीं, जंगल में ही रहेंगे।"

"कल ले चलूँगा। वहाँ पुलिस कभी पहुँची ही नहीं है और पहुँचेगी

नहीं।"

राँका ने शरमाते हुए कहा, "मेरे पास चिवड़ा-सत्तू-गुड़ है। सभी खा सकते हैं।" युगल उसकी पीठ थपथपाता है।

एक गड्ढे मे सूखे पत्तों के विस्तर पर, वकरियों के शरीर की गर्मी से घिरा राँका आराम से सो गया। भोर में उसे वड़े राँका ने जगाया। युगल और उसके साथी ने वदन के कुरते उतारकर वन्दूक को उसमें लपेट लिया। वकरियों को गिनकर वे लोग वहाँ से चल पड़े।

वडा राँका उन्हें सचमुच काफ़ी घने जंगल में ले गया। वोला, "यह जो पहाड़ देख रहे हैं जुगलजी, यहीं है वह तोपाई बुरू। कोलों की वस्ती थी। कोल इन गुफाओं मे रहकर लड़ाई चलाते थे। वहुत पहले की वात है। अँग्रेज़ लोग ने सारी वस्ती को ही तोड़ दिया था। तव यह जंगल वन गया। हम भी किसी एक गुफा में रह जायेंगे।"

"यही ठीक रहेगा। फ़ारेस्ट विभाग के लोग तो नहीं आते इधर?"

"यहाँ पेड़ छोटे-छोटे हैं और नकसलियों के डर से फ़ारेस्ट के लोग अव जंगल के अन्दर नही आते।"

"पानी है कही?"

"यहीं की एक गुफा से कुरडा नदी निकली है।"

"कुछ दिन यही रह सकेंगे।"

"कितने दिन?"

"कहा नहीं जा सकता? आंदोलन छोड़कर ज़्यादा दिन इधर रह सकते।"

"मैं क्या करूँ?"

"तुम वाढ़ा में रहो। पुलिस की ख़वर मुझ तक पहुँचाते रहन रहने से तो काम चलेगा नही। अन्य साथियों से भी सम्पर्क करना"

"मैं ज़्यादा नहीं आ-जा सकता।"

"नहीं! तुम मत आना। जेल में हम लोग एक साथ थे पुलिस को मालूम है। लेकिन तुम पहले छूट गये थे।"

"आप वाद में जेल तोड़कर भागे।"

"हाँ।"

"आप भी क्या वही हैं, जिन्हे नक्सली कहा जाता है?"

"मैं हरिजन आदोलन में था, राँका ! तब भी मेरा ख़याल यही था कि हरिजनों और खेत मजदूरों की समस्या एक ही है। खेत मजदूरों के आदोलन मे कानूनी तरीके से खूब लडा हूँ। मार खाते-खाते अन्त में बन्दूक लेनी पड़ी। जानता था कि नक्सली आदोलन मे जाने पर हथियार उठाना पड़ेगा। कई रास्तों पर चल चुका हूँ।"

"आप हमेशा से नक्सली नही थे?"

"अब तो सरकार की निगाह मे सभी नक्सली हैं। कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, जिन्होंने कभी भी किसानो के लिए आदोलन किया है आज उन्हें नक्सली ही कहा जाता है। तुम लोगो ने जो बलवा किया था, उसके आधार पर सरकार तुम्हे भी नक्सली कहेगी।"

"बडे ताज्जुब की बात है।"

"दियासलाई, मोमबत्ती और मिट्टी की दो-एक हँडिया भेज देना।"

"जरूर। लेकिन लेकर कौन आयेगा?"

राँका बोला, "मैं आऊँगा।"

बड़ा राँका डाँटकर बोला, "हाँ समझ लिया मैंने, लेकिन अब चल।"

टोले की ओर आते समय रास्ते मे बडे राँका ने कहा, "तू किसी भी कारण बाढा गाँव नही जायेगा।"

"अच्छा।"

"वहीं के लोग जगल मे आते हैं।"

"उनके सामने नही पड़ूँगा।"

"तू रहेगा लछिमा के जिम्मे।"

"जैसा कहोगे।"

"लछिमा जुगल जी को सभी चीजें पहुँचायेगी।"

"मैं पहुँचा दूँगा।"

"नहीं। औरतों पर वे शक नही करते। वैसे मेरा खयाल है कि जगल के इतने भीतर तक कोई घुसेगा नही और तू इधर आने-जाने के लिए पश्चिम का रास्ता पकडना। उधर से कोई आता-जाता नही।"

"कितने दिन रहूँगा?"

"तुझे ही पता है।"

"पुलिस की खबर कौन लायेगा ?"

"हमारी औरतें।"

"वे नवरतनगढ़ से भी खबरें ला सकती हैं।"

"लायेंगी।"

"पुलिस हमें हमेशा परेशान करती रहती है। इसलिए पुलिस की गतिविधियों की खबर लाने में हमारी औरतें खूब चुस्त हो गयी हैं। लछिमा की उम्र पचास साल है। गठा हुआ शरीर। सभी बाल विचित्र तरीके से सफेद, चेहरा शांत गंभीर। देखने से लगता है कि वह दुसाधिन नहीं है।"

बड़े रांका ने उसे बाहर बुलाया। बहुत धीरे-धीरे उससे बातें कीं। लछिमा शांत होकर सुनती रही। फिर बोली, "आटे की लिट्टी बनाऊँ ?"

"ठीक है, बनाओ।"

"तुम मारे जाओगे, रांका !"

"नहीं-नहीं, डरो नहीं।"

"इस लड़के को क्यों फँसा रहे हो ?"

"यह तो खुद ही आकर फँसा है।"

"रांका दुसाध ! तुम से क्या कहूँ ? इससे पहले इस आदमी के बारे में तुमने कभी नहीं बताया। यह जुगल करन कौन है ?"

"बैठो लछिमा ! उसका नाम न बोलो। उसके नाम पर ही इनाम है।"

"समझ गयी। अब अपने घर चले जाओ। उसके बाद तोहरी जाकर प्रसाद महतो को पकड़ो। नये परमिट बनाने का समय आ गया है। इस लड़के को किस नाम से पुकारें ? छोटा रांका। आज से यही है तेरा घर। आज आराम करो। कल अपनी झोंपड़ी खड़ी कर लेना।"

बड़ा रांका बोला, "दिन में बकरियों को खुली छोड़ देना। रात को सभी के घर एक-दो बकरियां रख देंगे। मुसीबत खत्म।"

"यही ठीक रहेगा। चल छोटे रांका, पानी ले आयें।"

रांका दोनों रुपये लछिमा को दे देता है।

"रुपये किसलिए ?"

"मैं खाना जो खाऊँगा।"

बड़ा राँका हँसकर बोला, "जेल मे काम करके लछिमा को मजूरी मिली है। हम बहुत-से लोग थे। अभी हम लोग धनी हैं।"

"हाँ-हाँ, जेल ससुराल है न! बहुत रुपया दिया है उन्होंने।"

इसके बाद लछिमा नहाकर नदी से पानी ले आयी। फिर उसने गमछे में लिट्टियाँ, नीबू का अचार, मिर्च, नमक बाँध लिया। मटके में पानी भरकर सिर पर रखा और राँका से बोली, "मैं पोटली उठाती हूँ। तू लालटेन और लाठी लेकर आगे-आगे चल।"

रात में यह जंगल और भी अपरिचित और डरावना लगता है। लेकिन लछिमा निडर चलती रही। राँका ने पूछा, "कोई डर तो नहीं? बड़ा जानवर मैंने कभी नहीं देखा। शिकारियों ने जंगल के सारे बड़े जानवर खत्म कर दिये हैं।"

"रास्ता तो नहीं भूलोगी?"

"राँका दुसाध ने मुझे इस जंगल में खूब घुमाया है। वह रही गुफा। तोपाबुरू। मुझे याद है।"

"तुम इस जंगल में आती रहती हो?"

"हाँ, गुफा मे एक नाला भी है। वहीं से कुरडा नदी निकली है। नदी का पानी बहुत साफ और ठंडा है।"

"डर नहीं लगता?"

"काहे का डर है! चला चल।"

"ठीक रास्ते पर है?"

"बुद्धू कहीं का! तोपाबुरू सामने है। आँखें खोलकर देख।"

"ऐं! पहुँच गये?"

"और नहीं तो क्या? आगे बढ़, देख उन्हें।"

युगल उनकी आवाज सुनकर खुद आगे आ गया।

लछिमा बोली, "गुफा में नहीं थे। पेड़ के नीचे क्यों?"

"बहुत चमगादड़ हैं। फिर गुफा गंदी भी है और गीली भी।"

"पेड़ के नीचे इतनी ठंडक में?"

"क्या किया जाये!"

"आग भी नहीं जला सकते?"

नहीं। रात को जाड़े की ठंडक सह लेंगे। दिन में धूप से वदन सेंक ..."

"कल कुछेक वोरियाँ ले आयेंगे। यह खाना लो।"

लछिमा लिट्टी, अचार, मिर्च, नमक निकालकर देती है। पानी का ...ा भी उतारकर रखती है। वोली, "कल मोमवत्ती और दियासलाई ले ...येंगे। अव चल, राँका ! और हाँ, आपके पास टार्च-वत्ती है ?"

"थी। अव नहीं है।"

"सभी एक साथ मत सो जाना ! कभी-कभी भालू आ जाता है।"

लछिमा राँका का हाथ पकड़कर तेज़ी से चल देती है। युगल उनकी ओर देखते हुए अपने साथियों से कहता है, "ऐसा इससे पहले भी हुआ है। इस वार भी हो रहा है !"

"क्या हो रहा है, जुगल ?"

"न इनसे कोई जान, न कोई पहचान। फिर हमारी मदद कर रहे हैं। पुलिस को पता लगा तो इन पर अत्याचार होगा। फिर भी यह लोग मदद करते हैं। खुद को खाना नहीं मिलता है, लेकिन हम लोगों को खाना पहुँचाते हैं। ऐसा क्यों करते हो, पूछने पर कहते हैं कि क्यों न करें? तुम लोग हमारे लिए इतने कष्ट जो सहन कर रहे हो।"

"इन लोगों की वात ही कुछ अलग है।"

"कैसे ?"

"इतनी रात गये यह औरत केवल एक वच्चे के साथ इधर च... आयी !"

"वह मामूली औरत नहीं है। उसके वारे में जेल में खूव सुना है।"

घर लौटकर लछिमा और राँका ने देखा कि वड़ा राँका वैठा है।

लछिमा वोली, "राँका दुसाध, कल मैं तोहरी जाऊँगी।"

"क्यों ? फिर से पकड़े जाने की इच्छा है क्या ?"

"हाँ। जेल में इतने मजे में जो थे।"

अगले दिन लछिमा वोली, "तोहरी जा रही हूँ।"

वड़ा राँका वोला, "क्यों ? कल तो वात हो गयी थी।"

"जाऊँ। प्रसाद जी से परमिट के वारे में कहूँ।"

"मैं चला जाता हूँ । मैं दरोगा जी के पैर पकड़कर बैठ जाऊँगा। उसे नरम करूँगा । फिर प्रसाद जी के पास जाऊँगा।"

"नहीं । तुम्हारा पूरा परिवार है । मेरा कोई नहीं ।"

"यह क्या बात हुई ? हम लोग नहीं हैं तुम्हारे ?"

"जाओ, जाओ, अब काम करो । जरा इसे ऊपर तो उठाओ।"

रौंका चौकी उठाता है । चौकी के पाये के नीचे की जमीन खोदकर लछिमा पीतल के दो भारी कंगन निकालती है।

"यह क्या है, लछिमा ?"

"वजन देख रहे हो ?"

"हाँ, भात राँधने की हँडिया बन सकती है इनकी ।"

"सो तो है । भात के लिए पीतल की हँडिया, लेकिन भात की व्यवस्था नहीं है, रौंका दुसाध ! उसका क्या होगा, बोल ?"

"अभी क्यों बेचने जा रही हो ?"

"टार्चबत्ती, दियासलाई, मोमबत्ती और आटा-दाल लाना है ।"

"आटा-दाल-नमक-मिर्च हम लोग देंगे ।"

"ताकि सब को पता चल जाये । बात फैले और पुलिस आ जाये ।"

"अपना सब-कुछ बेच दोगी किसी-न-किसी के लिए, अपने काम नहीं लाओगी । क्या बुढ़िया नहीं होगी तुम ?"

"तब भीख माँगूँगी ।"

लछिमा सोहरी चली गयी। यह सब बातें रौंका के सामने ही हुई थीं । लछिमा की बातों से रौंका को झटका-सा लगा । वह घास बेचकर दो-चार पैसे लाता है । उन्हें छिपाकर रखता है । उधारचन्द एक भी रुपया उस पर खर्च नहीं करता । युगल करन जैसे लोग कोई बड़ा काम करने के लिए घर-द्वार छोड़कर जंगलों में भटक रहे हैं । लछिमा उन्हें नहीं जानती, फिर भी उनके लिए अपने कंगन बेचने गयी है। ऐसा भी होता है ।

लछिमा शाम से पहले ही लौट आयी । रौंका से पूछा, "पानी कौन लाया ? खाना किसने पकाया ?"

"वह सब मैंने किया है । तुम तो थककर लौटी हो ।"

"लिट्टी लगायें ?"

"बड़े राँका ने आटा दिया है। बना रहे हैं।"

"अच्छा। नवरतनगढ़ में पुलिस बहुत है। उधारचंद के दो बकरों और मेमनों को पुलिस उठाकर ले गयी। लगता है, सात-आठ दिन उनका गुजारा चल जातेगा। पुलिस लखीमपुर तक जा रही है।"

"मैं क्या करूँ ?"

"कुछ दिन यहीं रह।"

आज लछिमा लालटेन लेकर आगे-आगे चलती है। युगल को टार्च-बत्ती, मोमबत्ती दियासलाई और तीन बोरियाँ देती है और कहती है, "नवरतनगढ़ से लखीमपुर तक पुलिस की चौकियाँ लगी हैं। जंगल में कुत्ते लाकर तुम्हें ढूंढेंगे।"

"तो क्या किया जाये अब ?"

"एक काम करो। शिकारी कुत्ते भी पानी के स्रोत में गंध नहीं महसूस कर सकते। जिस गुफा से नदी निकली है, पानी में से होते हुए उसी गुफा में चले जाओ।"

"ठीक। बहुत ठीक कहा है तुमने।"

"कल दिन में देख लेना उस जगह को।"

"पुलिस लखीमपुर की ओर चली गयी तो हम भी यहाँ से चले जायेंगे।"

"कहाँ ?"

"और यहाँ कितने दिन रहें ?"

"पुलिस को पूरी तरह से हट जाने दो पहले।"

लछिमा चली जाती है। लगातार बरसों छिप कर रहते-रहते और भागते-भागते व्यक्ति का भीतरी मन हो उठता है संदिग्ध और वह सतर्क हो जाता है। कभी-कभी उसका मन मस्तिष्क को ख़तरे के संकेत देता रहता है।

युगल अचानक बोला, "उधर ही चलें, भैया !"

"कहाँ ?"

"वहीं, नदी वाली गुफा में।"

टार्च जमाकर सावधानी से वे आगे बढ़े। युगलकरन सबसे आगे था। वह पहले पानी में उतरता है।

"सावधान! बालू पर पैर का निशान न पड़े।"

पानी कम गहरा था। पैर जमाकर आगे बढ़ाते हुए वे एक साथ ही गुफा के अन्दर घुसते हैं, झुककर। फिर और आगे बढ़ते हैं। अचानक पानी गहरा, और गहरा होने लगता है। अन्दर कहीं से छेदों से पानी निकल रहा है। नदी का उद्गम-स्थल। अगल-बगल फिसलनदार पत्थर।

युगल बोला, "बोरी बिछाकर बैठ जाओ। जरा रुकना पड़ेगा।"

वह बाहर निकल गया और कुछ लकड़ियाँ ले आया। लकड़ियों के ऊपर बोरियाँ बिछा दी और उन पर बैठ गया। बन्दूक भी सभाल ली। फिर बोला, "कुत्ता शायद न भौंके। लेकिन भौंक भी सकता है।"

तीन घंटे बाद कुत्ते का भौंकना, सीटी की आवाज आदि सुनायी देती है। भोर होने पर कुछ आवाज नजदीक आने लगती है। तभी लछिमा और एक लड़की की आवाज सुनायी देती है।

बड़ा रौंका बड़ी होशियारी से बातें करता है, "यहाँ तो हम लोग हर रोज आते हैं, लकड़ी चुनते हैं।"

"क्या कह रहे हैं, समझ गये न?"

"देखिये, देखिये, कुत्ता उधर जा रहा है।"

लछिमा चिल्लायी, "क्यों नहीं जायेगा उधर? साहब अपने कुत्ते को इधर बुलाओ। मुझे क्यों सूँघता है यह? देख रौंका, कल हम लोग ही तो वहाँ बैठे थे और यहीं तो हमने खाना खाया था बोरी बिछाकर। कुत्ता ठीक समझ गया।"

कुत्ते शायद और ज्यादा मदद नहीं कर पा रहे हैं। तभी एक अफसर चीखा, "उन गुफाओं में देखो?"

"गुफाएँ चमगादड़ों से भरी हैं। वहाँ कोई नहीं है।"

"तुम लोगों को मैंने जो कुछ करने को कहा है, अच्छी तरह समझ गये हो न?"

बड़ा रौंका बोला, "हाँ हुजूर!"

"पकड़ा देने पर इनाम। उनकी मदद करने पर...।

"नहीं हुजूर ! खूब सबक सीख लिया है। फिर यह जंगल हमारी
न है। यहाँ कोई बदमाश आकर छिपे...।"

अफ़सर आपस में बातें करते हैं। "कोई फ़ायदा नहीं ? वह साला
ारूर अपने अड्डे की ओर जायेगा।"

एक ने राँका से कहा, "देखो, तुम उसके साथ जेल में थे।"

"किसके साथ ?"

"युगलकरन के।"

"हुजूर, वे लोग बाबू कैदी थे। हम लोग डकैती, दंगा-हंगामा में पकड़े
गये थे। फिर दुसाध नीच जाति ठहरी। उनसे हमारी बात कहाँ से हो
पाती ?"

"समझे ! तुम जरा तोहरी थाने से सम्पर्क बनाये रखना।"

"रोज आ जायेंगे, हुजूर ! अगर आप कहेंगे तो रोज आ जाया करेंगे।"

"हम जा रहे हैं। जो कुछ तुम से कहा है, याद रखना।"

"जरूर।"

"अपनी टोली के सभी लोगों को बता देना।"

"हुजूर, एक खस्सी दे दें खाने के लिए !"

"नहीं, अभी नहीं। और यह भी बता दें कि पुलिस आती-जात
रहेगी। किसी को रिश्वत मत देना।"

"ना हुजूर !"

पुलिस और राँका वहाँ से चले जाते हैं। राँका बोला, "ओफ कि
पत्ते गिरे है ! वैसे जमीन काफी साफ है।"

"उस बुरू के पीछे भी तो जंगल है।"

"हाँ हुजूर, चलेंगे।"

"चलो।"

"लेकिन बुरू छोड़कर दूसरी ओर से घुसना होगा।"

"बुरू के उस ओर भी गुफ़ा है क्या ?"

"नहीं।"

"उस तरफ़ नहीं जायेंगे। उत्तर की ओर जाना चाहते हैं।"

"बस के रास्ते की तरफ ?"

"उधर बस का रास्ता है ?"

"हाँ हुजूर। कच्ची सड़क है। प्राइवेट बस चलती है।"

"किधर जाती है ?"

"राँची, रामगढ़, धनबाद।"

"राँची ? युगलकरन का घर भी राँची जिले में है। चलो, उधर से ही चलो। तुम हमारे साथ चलो जीप में।"

"चलिये हुजूर !"

वे लोग चले जाते हैं। चलते-चलते पुलिस अफसर पूछता है, "आज बारिश होगी क्या ?"

रात को बारिश हुई थी। छोटे राँका ने लछिमा से पूछा, "वे लोग चले गये हैं क्या ?"

"कहाँ जायेंगे ?"

"खाना नहीं खायेंगे ?"

"चुप रह। एक-आध दिन न खाने से आदमी मरता नहीं है।"

अगले दिन राँका लौटा। लछिमा से कहा, "कोई पकड़ा गया है, तार से खबर आयी है। वे लोग राँची गये हैं।"

"इन लोगों का क्या होगा ?"

"अभी हम लोग कुछ नहीं कर सकते। प्रसादजी से कहेंगे।"

"ठंड से मर जायेंगे।"

"तो क्या करें ?"

कामताप्रसाद, सतोष और किसी अनजान गाँव के दो कार्यकर्ता पुलिस मुठभेड़ में मारे जाते हैं। इस तरह इधर से पुलिस का ध्यान हट जाता है। पुरानी दोस्ती की खातिर या किसी अन्य कारण से प्रसाद महतो युगल और उसके साथियों को गाँधी मिशन की एम्बुलेंस गाड़ी में कम्बल बाँटने के काम के दौरान गुफा में से कहीं और पहुँचा आता है।

बोला, "बेटा, इसके बाद अगर पकड़े गये तो मैं फँस जाऊँगा और दूसरे लोग भी।"

छोटा राँका बहुत पहले ही उधारचंद के पास लौट गया था। जाते हुए उससे लछिमा ने कहा था, "गाँधी आ जाने के बाद यहाँ

आना । यहीं बस जाओ तो बड़ा राँका तेरी शादी करा देगा।"
राँका लौट गया। मन का एक हिस्सा वह वहीं छोड़ गया। लछिमा
उससे कहा, "बीच-बीच में खबर लेने आऊँगी।"

## पाँच

उधारचंद के पास राँका का जीवन कटता है, बिना किसी वैचित्र्य के। बीच-बीच में वह सरसतिया के लिए मंडुवा ले जाता है। इस काम में उसे राहत मिलती है। तीन साल गुजरते ही उधारचंद फिर उबल पड़ा।

"सुन रहा है राँका, मेरे लड़कों के कारनामे?"

"क्या हुआ?"

"उन लोगों ने मेरी नाक कटा दी है।"

"हुआ क्या है?"

"बकरी-खस्सी बेचकर तीनों चले गये हैं।"

"कहाँ चले गये?"

"वह कांग्रेसी लड़का कुलियों की ठेकेदारी कर रहा है।"

"कहाँ-कहाँ कुली देगा।"

"धनबाद, झरिया की कोयला खदानों में।"

"वहाँ चले गये?"

"हाँ। मैं उनका कौन होता हूँ? प्रसाद महतो उनके अपने हैं, इसि
उन्हें ही बताकर गये हैं। अब मैं क्या करूँ?"

"क्यों, तुम क्या करोगे?"

"वकील बाबू से विनती करके और उनके दामाद से कहकर
लिए जमीन का बन्दोबस्त किया था। अब वे लोग कहेंगे, दुसाधों की
नहीं करनी चाहिए।"

"जमीन का क्या हुआ?"

"वही तो हरामीपना है।"

"क्या हरामीपना है?"

"यह जमीन एक पंजाबी शरणार्थी [illegible] से ले रखा था। [illegible] रहा है बाई तक। अब वहाँ अपना बाल-बच्चा बन गया है। साहब ने कह दिया कि जमीन लेनी हो तो मेरे बाप के पास आओ।"

"तब दे दो जमीन। कहाँ है वह आदमी ?"

"लोहगी में उसके बड़े भाई का होटल है।"

"मैं बुलाकर लाता हूँ।"

"हाँ, बुला लाओ। [illegible] से भी पूछते आना।"

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"एक बार वकील के पास हो आऊँ।"

लोहगी में [illegible] से वह पंजाबी [illegible] से बात नहीं [illegible]। बोला, "कौन है उधारचंद बुलाना ?"

"उसके बड़के यहाँ रहते थे।"

"क्या कहता है वह ?"

"उसकी जमीन की [illegible] से लिखे की बात थी।"

"उस जमीन का मालिक तो [illegible] है। वही [illegible] देगा। [illegible]"

[illegible] के नाम ?"

[illegible]

[illegible] पहुँचा।

उनके जाने के वाद प्रसाद राँका को लेकर अन्दर जाता है। पूछता है, "क्या ख़बर है ?"

"प्रसादजी, जुगल करन का क्या हुआ ?"

"जिन्दा है।"

"क्या कर रहे हैं ?"

"जो काम पहले करते थे वही कर रहे हैं। तुम किसलिए आयें हो, बताओ ?"

राँका सारी वात वता देता है। प्रसाद गहरी साँस लेकर वोला, "वे क्या करेंगे ? वस के रास्ते में पड़ता है वाढ़ा। गुंडे लोग आते-जाते लारी और जीप रोककर वकरी-खस्सी उठा ले जाते हैं।"

"हमें तो कुछ भी नहीं मालूम।"

"सव जगह दुकानें वनने लगी हैं। वीच में दुसाध लोग जगह घेरे वैठे हैं! वहुत अत्याचार हो रहा है। रुपया दो या जगह ख़ाली करो। इस पंजावी के साथ उनकी दोस्ती है।"

"फिर ?"

"भरत को एक दिन उन्होंने खूव पीटा। अस्पताल ले जाना पड़ा। जव वह अस्पताल में पड़ा था, तो पूरन की वीवी को उठा ले गये।"

"उठा ले गये ?"

प्रसाद कड़वी हँसी हँसता हुआ वोलता है, "हरिजन अछूतों की औरतों पर उनका अधिकार तो हमेशा से रहा है।"

"पूरन की वीवी का क्या हुआ ?"

"फिर नहीं लौटी," प्रसाद कुछ रुककर कहता है, "एक आदमी इस घटना को लेकर आन्दोलन कर रहा था—हरिजन महिलाओं पर अत्याचार रोकने के लिए।"

"क्या वह सफल हुआ था, प्रसाद जी ?"

"हाँ राँका, अव तुम जाओ।"

लौटकर राँका उधारचंद को सव-कुछ वताता है। उधारचंद गंभीर ही रहता है। वाद में कहता है, "क्या करें ?"

"किसका क्या करें ?"

"वकील बाबू ने कहा है कि जैसे ही सड़कों ने उस जमीन को छोड़ा, वैसे ही उस पर से तुम्हारी बंदोबस्ती ख़त्म हो गयी।"

"यही कहेंगे, मैं जानता था।"

"लेकिन मैं तो जानता हूँ कि मैंने दस साल के लिए बंदोबस्ती करायी थी। अभी भी चार साल पाँच महीने बाक़ी है।"

"यही बात कही थी।"

"कही थी। कहने लगा—अगर ऐसा समझते हो तो अदालत जा सकते हो।"

"क्या अदालत में जाओगे?"

"पागल हुआ हूँ क्या कि अदालत जाऊँगा? अदालत गया तो मेरे कंधे पर सिर रहेगा क्या? कहाँ से सबूत दूँगा कि मैं सच कह रहा हूँ?"

"पहले यह बताओ कि यहाँ क्यों आये?"

"यह क्यों पूछ रहा है?"

"गाँव में जब थे तो मालिक जुल्म करता था।"

"इसीलिए तो गाँव छोड़ा था।"

"उस समय भी हम लोग अदालत नहीं जा सकते थे। तब अदालत में जाने के लिए पैसा ही नहीं था। अदालत में जाने पर मालिक गाँव में नहीं रहने देता। अदालत से ग़रीब दुसाध को कभी भी न्याय नहीं मिल सकता।"

"यहाँ आकर भी यही कहना पड़ रहा है!"

"हाँ, कहना तो यही पड़ रहा है।"

"प्रसाद जी ने कहा—उनके गुस्से का मुख्य कारण यह है कि सड़क अच्छी बन गयी है। उसके साथ-साथ दुकानें बन रही हैं। तो दुसाध के पास क्यों इतनी जमीन रहे?"

"यह तो तूने अभी कहा।"

"वकील बाबू भी इसी तरह सोच सकते हैं।"

"क्या कहा?"

"दुसाध क्यों इतनी जमीन लेकर बैठा रहेगा, कारोबार करे

"नहीं, नहीं, नहीं, ऐसा न कहो।"

राँका बोला, "यहाँ हमारा कोई भी नहीं है। गाँव में कितने भी कष्ट
ं न हों, अपने समाज के लोग तो हैं।"

उधारचंद बोला, "अब वहाँ कैसे जा सकते हैं?"

"सब-कुछ बेचकर जा सकते हो।"

उधारचंद दयनीय चेहरा बनाकर बोला, "रुपया कहाँ है?"

"तुम्हारे पास रुपया नहीं है?"

"नहीं रे! सिपाही लोगों ने उधार ले-लेकर मेरे पास कुछ भी नहीं
छोड़ा। अब न तो वे ब्याज देते हैं न मूल।"

"देस-गाँव में इसी उधार के कारण हमारी सारी तकलीफें थीं और
तुम भी इधर उधार देने पर लग गये।"

"सोचा था कि...।"

"मैंने तुम्हारा एक भी पैसा इधर से उधर नहीं किया। तुमने मुझ
पर विश्वास नहीं किया, अपने लड़कों पर भी विश्वास नहीं किया। जिन
पर तुमने विश्वास किया, वही तुमको...। जाने दो, अब छोड़ो। तुम
जहन्नुम में जाओ। मुझे लालटेन दो। दुकान से तेल भरवा लाऊँ।"

इस तरह इस प्रसंग का अंत होता है। अब की बार जब मंडुवा लेकर
राँका बाढ़ा जाता है तो सरसतिया को देखकर चौंक उठता है। "अचानक
कितनी बड़ी हो गयी हो, सरसतिया! चेहरे पर रौनक आ गयी है।"

सरसतिया पूछती है, "इतने दिन तक कहाँ थे?"

"तुम्हारी नौकरी कर रहा था।"

"मेरी? तुम क्या नौकर हो?"

"और क्या?"

"मैं क्या जानूं? मुझे वह रिश्ता तो याद ही नहीं रहता।"

"हाथ में लाल धागा क्यों बाँध रखा है?"

माँ ने कहा, "हाथ खाली नहीं रहना चाहिए।"

"अब की बार चूड़ियाँ ला दूंगा।"

"बैठो, सत्तू है, गुड़ है, खाओ।"

सत्तू-गुड़ देकर सरसतिया कहती है, "मेरा मन तुम्हारे लि
होता है, कितने दिनों से नहीं आये थे।"

"मालिक भेजेगा तभी तो आऊंगा।"

"होली पर क्यों नहीं आये?"

"मेरे लिए होली का त्यौहार कैसा है?"

"क्या तुमने कभी सनीमा देखा है?"

"नहीं, कभी नहीं देखा।"

"मैं देखूंगी अबकी बार, गौरमेंट के आदमी गाड़ी लेकर आयेंगे, दिखायेंगे।"

"यह तो अच्छी बात है।"

"अच्छी बात पर याद आया। जानते हो, पूरन की बीवी यहां है!"

"कहां है?"

सरसतिया उँगली से दुसाधों के टोले की तरफ़ इशारा करती है। कहती है, "वहां पांच दिन पहले उसे धान के खेत में फेंक गये थे।"

"वहां किसके पास आयी?"

"नाथनी उसका चाचा है न?"

"सरसतिया, मैं उसे थोड़ा देख आऊँ।"

"नहीं, अभी तो वह बहुत बीमार है।"

"मुझे वापस जाना होगा। अच्छा, अब चलता हूँ।"

"फिर कब आओगे?"

अचानक रांका को कुछ याद हो आता है। हँसता हुआ कहता है, "अब की बार शायद तुम्हें लेने ही आऊँ।"

"कहां?"

"नवरतनगढ़।"

"ओह!"

"तुम्हें पहुँचा कर मेरी छुट्टी।"

"कहां जाओगे?"

"वहीं, उनकी टोली में।"

"वहां मत जाना, रांका! नवरतनगढ़ में मुझे छोड़कर वहां मत जाना।"

रांका सरसतिया की तरफ़ विस्मित होकर देखता है। फिर कहता है:

"ऐसी वातें नहीं कहते। जा, अव तू घर जा।"

"मैं फिर वाढ़ा वापस आ जाऊँगी, देखना...।"

"देखा जायेगा।"

राँका नवरतनगढ़ वापस चला जाता है।

उधारचंद एक दिन कहता है, "एक वकरी और दो वकरे वेच आ, राँका !"

"आज तो वाजार का दिन नहीं है।"

"तो क्या हुआ ? तोहरी में अच्छी कीमत मिल जायेगी।"

"सफेद वकरी रखने से क्या ठीक नहीं होता ?"

"नहीं, नहीं ! मुझे रुपये की जरूरत है।"

"अचानक ही कैसे ?"

"रुपये की जरूरत अचानक ही पड़ती है और इस काम में भी अगर रुपया न खर्च करूँ तो कमा किसलिए रहा हूँ ?"

"समझ नहीं आया ?"

"तू समझकर क्या करेगा ? वर वाली लाऊँगा, घरवाली। सोलह साल की हो गयी है। अव और देर करना उचित नहीं है। मेरी उम्र भी बढ़ रही है। तू तोहरी चला जा। मैं एक वार वकील वावू के पास जाता हूँ। पतरा देखकर अच्छा दिन वतला देंगे।"

"पतरा ? वह क्या वला है ?"

"उसमें सव-कुछ लिखा रहता है।"

"क्या लिखा रहता है ?"

"शादी का दिन, वकरा खरीदने का दिन, वीवी लाने का दिन। शुभ-अशुभ दिन लिखे होते हैं उसमें।"

"अव तुम वावू वन गये हो।"

"वह कैसे ? क्यों ?"

"जव शादी की थी तो तुमने दिन नहीं देखा था। कारोवार किया था, तव भी दिन नहीं देखा। सिपाही वकरा ले गये, तव भी दिन नहीं देखा। मेरे जंगल में जाने वाला दिन भी नहीं देखा। लड़के इतने परेशान हुए, दिन नहीं देखा। वकील वावू ने जमीन हथियाकर इतना हरामीपना

किया, फिर भी तुम्हारे लिए वह अच्छा आदमी है और वह लाने का दिन उसी से पुछवा रहे हो?"

"अपने देस-गाँव में हमें इन बातों का कहाँ पता होता है?"

"इसमें पता होना और न होने की क्या बात है?"

उधारचंद कहता है, "तेरा नाराज होना भी जायज है। जवान लड़का है तू। तेरा भी मन चाहता होगा गिरस्थी बसाने का। मैंने तुझे...।"

"ठीक है, तुमने मुझे पाला-पोसा। मैंने भी तो तुम्हारे लिए मेहनत की। अब तुम सब-कुछ संभाल लोगे तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

"वही तो कह रहा हूँ, कि मैं तुम्हारा भी इतजाम कर दूँगा।"

"रहने दो, अब और इतजाम नहीं करना होगा। मुझे टिकने की जगह मिल गयी है। वहाँ अपने लोग भी हैं। मैं अपना इतजाम खुद करूँगा। तुमने जिसका इतजाम भी किया है, देखा है कि उनकी क्या हालत हुई है!"

उधारचंद वकील बाबू के पास जाकर कहता है, "पाँव लागी, हुजूर! शुभ दिन बताइये। अब बीवी लाऊँगा।"

"क्या उम्र हो गयी है उसकी?"

"सोलह साल।"

"पहले नहीं लाया?"

"नहीं हुजूर! परेशानी में था।"

"बीवी तो भगवती-लक्षणा लड़की है न?"

"हाँ हुजूर! मेरे पास कुछ भी तो कहने लायक नहीं। लड़के भी लायक नहीं निकले। शायद इसका लड़का लायक निकले। हुजूर, भगवती-लक्षणा लड़की अच्छे सगुन वाली होती है!"

"हाँ-हाँ, वह तो होती है।"

"लड़का होगा ही और होगा भी बहुत धनी।"

"कल आना। पतरा देखकर बताऊँगा।"

वकील का दिमाग पुराने और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर दौड़ने लगता है। भुजा सिंह पटना गये हैं। वापस आने में दस दिन लग जायेंगे। भुजा

को औरों की कुंवारी बीवियाँ बहुत पसन्द हैं। भुजा सिंह को भगवती-लक्षणा लड़की की भी बहुत जरूरत है। उसके गर्भ से संतान भी चाहता है वह।

उधारचंद दुसाध है। लड़का होने की बात उससे तय की जा सकती है। उसके एवज़ में कुछ ज़मीन दे दी जायेगी। आगे देखा जायेगा।

सगुनी बहू और सगुनी लड़का वकील को भी तो चाहिए। भुजा को भी जरूरत है दोनों की और वकील को भी।

दूसरे दिन वकील उधारचंद से कहता है, "देखो, बहू तुम चार दिन बाद ला सकते हो। लेकिन पतरे में लिखा है कि भगवती-लक्षणा लड़की के लिए दूसरा नियम है।"

"क्या नियम है, हुज़ूर ?"

"वह साधारण लड़की नहीं। पतरे में लिखा है कि दस दिन बाद यानी 18 तारीख से पहले उसके साथ कोई सम्पर्क नहीं करना चाहिए।"

"ऐसा लिखा है ?"

"खुद पढ़कर देख लो। या किसी और विश्वासी आदमी से पढ़वा लो। मैं क्या तुमसे झूठ कहूँगा ?"

"छिः-छिः हुज़ूर ! मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता।"

"देखो न, क्या लिखा है।"

"आप ही कहिये, हुज़ूर !"

"पतरे में लिखा है कि पहली बार रिश्ता क़ायम करते समय बहुत हिसाब से चलना पड़ेगा। नहीं तो पता है, क्या होगा ?"

"क्या होगा ?"

"हिजड़ा पैदा होगा। बहू बांझ हो जायेगी।"

"नहीं हजूर ! आप जैसा कहते हैं, मान लेता हूँ। सालों पहले शादी की थी मैंने और चौदह साल की हो गयी तब भी नहीं लाया उसे। फिर अब क्या करूँ ?"

"क्या करोगे, बहू लाने का इंतज़ाम करो।"

"हाँ हुज़ूर, वही करता हूँ।"

उधारचंद के जाने के तुरन्त बाद ही भुजा सिंह का वैद्य गोविन्द झा

आता है। यह वैद्य और किसी बीमारी का इलाज नहीं करते। नवरतनगढ़ के पहले के राजा और वर्तमान मालिक भुजा सिंह की यौन-तृप्ति करने के रास्ते में आने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए ताकत के नुस्खों का जुगाड़ करते हैं। भुजा सिंह उनको बहुत मानता है। आते ही वैद्य कहता है, "क्या हो रहा है?"

"क्यों ? कुछ भी नहीं।"

"और कितने दिन तक इस दुसाध को पालोगे ?"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"दुसाध वाली जगह मुझे मिल जाये तो आयुर्वेदिक औषधियों की एजेंसी ले लूं।"

"दुकान है तो आपके पास।"

"दुकान तो है, लेकिन गोदाम नहीं है।"

"झा जी, तो समझिये कि वह जगह आपकी हो गयी। मेरे ऊपर विश्वास रखिये।"

"कैसे विश्वास करूँ ?"

"मुझ पर विश्वास किया था तो आपको सरकारी ठेका मिला था या नहीं ? सीमेंट सप्लाई का ठेका भी दिलाया था आपको। उन्हीं से आपने छपरा में अपना मकान बनवाया है।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"आदिवासियों को भगाकर जो जमीन हथियायी थी, वह भी आपको दी कि नहीं ?"

"हाँ, मिली।"

"यह जगह भी आपको मिलेगी।"

"मिलेगी ? काफी अच्छी जगह है।"

"देखिये झा जी, एक सरकारी ठेका और मिलने वाला है।"

"कहिए, कहिए, ऐसी बातें सुनना भी अच्छा लगता है।"

इस तरह उधारचंद का भाग्य निर्धारित होता है। उधारचंद वहाँ से लौटते समय एक सिपाही के पास जाता है अपने पैसों के लिए।

रांका तोहरी जाता है। गोश्त की दुकान पर ...

जानवरों को वेचता है। रुपया लेकर प्रसाद के पास आता है। इतने रुपये लेकर अकेले लौटते समय वह थोड़ा झिझकता है। जाकर देखता है कि लछिमा वहाँ वैठी है। प्रसाद गंभीर चेहरा लिये चारपाई पर वैठा है। लछिमा कहती है, "आ रे राँका ! पूरन की वीवी को अस्पताल में दाखिल करवाया है।"

"काफी वीमार है ?"

"वहुत ज्यादा।"

प्रसाद कहता है, "उसका केस दर्ज करना होगा।"

लछिमा कहती है, "छोड़ो ये वातें।"

"ऐसा और कितने दिन चलेगा ?"

"हमारी औरतों की इज्जत की कोई कीमत नहीं है।"

"केस दर्ज करेगा कौन ?"

"ऐसा केस अदालत में टिकेगा नहीं। मेरे वाल यही सब देखते-देखते सफ़ेद हो गये हैं। मुजरिम के मौजूद होने पर भी नहीं टिकता। इस मामले में तो वदमाश भाग गये हैं।"

"देखा नहीं, वे वदमाश वार-वार आते रहते हैं।"

"आने दो तुम। पहले लड़की को वचने तो दो।"

राँका पूछता है, "क्या वचेगी नहीं ?"

"तुझसे क्या कहूँ, वता !"

"केस दर्ज न किया तो...।"

"मैं अगर मर्द होती, तो दो-तीन आदमियों के साथ ताक में रहती और मौका पाते ही...।"

"यही करना होगा आखिरकार। कानून उनका अपराध कभी देखता ही नहीं।"

"अव चुप हो जा।"

"क्यों ? चुप क्यों हो जाऊँ ?"

"प्रसाद महतो, तुम्हें क्या समझाऊँ ? इतने वेचैन होकर चिल्लाते रहे तो सभी को पता चल जायेगा कि तुम केस दर्ज करने जा रहे हो।"

"पता लग जाने दो।"

"तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

"नहीं, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

"तोहरी अस्पताल में पहरा तो रहता नहीं। अगर कोई अन्दर आकर लड़की को उठा ले जाये और मार डाले तो? ऐसा हुआ नहीं है क्या?"

प्रसाद चुप हो जाता है। फिर कहता है, "ठीक कह रही हो।"

"लछिमा ठीक ही कहती है।"

प्रसाद हंस देता है, लछिमा भी हँसती है। हँसती है तो अभी भी बहुत सुन्दर दिखती है लछिमा। लछिमा कहती है, "क्या खबर है, रौंका?"

"मालिक बीवी लायेंगे।"

"तेरा क्या हाल है?"

"मालिक के बकरा-बकरी बेचाकर आ रहा हूँ।"

"फिर तो काफी रुपया होगा तुम्हारे पास।"

"इतना रुपया लेकर अकेले जाना ठीक रहेगा क्या?"

"प्रसाद साथ में जायेगा।"

"क्यों? मैं क्यों?"

"तुम क्यों नहीं?"

"कोई अच्छा काम हो तो साथ जा सकता हूँ। एक बुड्ढा, उस पर बदमाश! एक बच्ची के साथ शादी की। जिस बहू को अस्पताल में भर्ती करवाया है, यह उधारचंद उसका ससुर लगता है न? मैं नहीं जाऊँगा।"

"यह कैसी बात है? तुम उसके लिए नहीं, तो छोटे रौंका के लिए जाओगे। यह लड़का मारा जायेगा किसी चोर-डाकू के हाथ।"

"रुपया क्यों ले जा रहा है?"

"बंदोबस्त कर रहा है।"

"इसी रौंका के साथ सरसतिया की शादी होने की बात थी।"

"सरसतिया कौन है?"

"जिससे उधारचंद ने शादी की है।"

"तुम रौंका का ब्याह करवा दो।"

"जरूर करवा दूँगी।"

"उसे अपनी टोली में नहीं ले जाओगी ?"

"तुम्हें भी ले जाऊँगी।"

"अब उठो दीदी, राँका का कोई बन्दोबस्त करूँ।"

"डाक्टर से कहना प्रसाद, कि लड़की को जल्दी अच्छा कर दे।"

"कहूँगा। अब उठो।"

प्रसाद सड़क पर आता है तो सामने से एक परिचित की बस जा रही दीखती है। ड्राइवर की बग़ल में राँका को बिठाकर कहता है, "बाद में समय मिले तो इधर आना।"

उन रुपयों से उधारचंद साड़ी, ब्लाऊज़, गिलट के गहने, सिंदूर आदि ख़रीदता है। अपने लिए धोती, चादर, कुर्ता और जूता ख़रीदता है। किराये पर बैलगाड़ी लेकर बीबी को लाने के लिए रवाना होता है।

राँका को बहुत सारा काम करने को कह जाता है। हलवाई की दूकान से मिठाई लानी होगी। बकरियों की देखभाल करनी होगी। मंडुवा पिसाकर रखना होगा, और भी ढेरों काम।

राँका को लगता है कि जैसे कोई काम ही नहीं है। उधारचंद सरसतिया को लाने गया है, इसलिए उसके लिए जैसे अब कोई काम ही नहीं रहा।

## छह

उधारचंद बैलगाड़ी के साथ पहुँचता है तो वाढ़ा गाँव में हल्ला मच जाता है। वाढ़ा-नाढ़ा जैसे गाँवों में सरसतिया जैसियों के गौने कि लिए कभी बैलगाड़ी नहीं आती।

किराये की गाड़ी है, कल ही वापस करनी होगी। गौना आज ही हो तो अच्छा। उधारचंद आकर जल्दी मचाता है। यहाँ पहुँचते ही उधारचंद भाँप जाता है कि एक दिन क्यों, वह अगर एक महीने भी रुके तो कालिया दुसाध खुश ही होगा, क्योंकि वही उनके खाने-पीने की व्यवस्था करेगा।

इसलिए वह जल्दी मचाता है। "चलो, जल्दी करो।"

धनुवा की पत्नी की उम्र चाहे कितनी हो, पर रिश्ते में उधारचंद की वही सलहज लगती है। सामने आकर तीखी आवाज में कहती है, "चलो-चलो कहने से ही सब-कुछ नहीं हो जायेगा। लड़की को नहलायेंगे, नये कपड़े पहनायेंगे। तुम लोगों को खाना खिलायेंगे। इतने दिनों तक तो भूले रहे, आज अचानक याद आ गये हम। माँ के घर से क्या लड़कियाँ आसानी से जाना चाहती हैं?"

"अपनी ननद से कहना अभी गिलट के गहने दिये हैं। बाद में पीतल के दूँगा और फिर चाँदी के बनवा दूँगा।"

"और चाँदी के बाद ?"

तभी कालिया घर में आता है। अब तक वह दूकान पर था। आते ही चिल्लाता है, "और चाँदी के बदले सोना सरसतिया के भाग में है ही। उधारचंद दुसाध, तुम्हारा यह कैसा हरामीपना है ?"

"क्या कह रहे हो, कालिया ?"

"तुमने हरामीपना किया है।"

उधारचंद वकील बाबूओं की बेशर्मी और ठगी को मान लेता है। सिपाही लोग उससे कर्ज लेकर न देते हैं सूद, न असल, पर दुसाधों से उसका अब कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिए वह कालिया के मुँह से हरामीपने की बात सुनकर आगबबूला हो जाता है।

"देखो कालिया, मैंने तुम्हारी लड़की से शादी की है, इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम्हारे बराबर का आदमी हूँ। तुम एकदम भिखारी आदमी हो। व्यापारी दामाद मिला है तुम्हें। इज्जत से बात करो।"

धनुवा बाप को डाँटकर चुप कराता है और कहता है, "दिमाग ठंडा रखो और चुप होकर बैठो।"

फिर वह उधारचंद से कहता है, "आपने भी कोई छोटी-मोटी गाली नहीं दी।" फिर हँसकर कहता है, *"पर गाली को गाली समझूँ तो गाली है, नहीं तो कुछ भी नहीं है।"*

"क्या मतलब ?"

*"जिसके पास कुछ नहीं होता, वह क्या भिखारी होता है ? इस तरह*

तो सभी दुसाध भिखारी हैं। छोड़िये, जाने दीजिये।"

धनुवा की बात में कहीं कुछ खटक है, पर वह समझ नहीं पाता। उसे लगता है कि वह बूढ़ा हो गया है। कहता है, "तुम्हारे बापू ने मुझे हरामी कहा।"

"यह शब्द अच्छा नहीं है, पर बापू को भी गलत नहीं कह सकते। बेचारा गरीब दुसाध है। व्यापारी जैसे शब्दों के उतार-चढ़ाव का उन्हें ज्ञान नहीं है। तिस पर लड़की के बाप हैं, दिल में चोट पहुंची है। आज ही नाई से मुलाकात हुई थी, उसी से पता चला।"

"क्या पता चला?"

"आपका गला क्यों सूख रहा है?"

धनुवा का रुका हुआ गुस्सा अब फूट पड़ता है, "बापू को तो मैं गलत कहता हूँ। माँ तब भी राजी नहीं थी, मैं भी राजी नहीं था, लेकिन बापू अपने दोस्त के साथ शादी करना चाहते थे। थू!"

"जो कहना चाहते हो, साफ-साफ कहो।"

"राँका के साथ शादी होती तो।"

"उसके पास है ही क्या? मेरा नौकर है।"

"आप नये किस्म के दुसाध हैं। साले का लड़का नौकर कैसे बन गया? राँका के पास कुछ नहीं है। किस दुसाध के पास जमीन-जायदाद है? लेकिन वह जवान है। दोनों मिलकर मेहनत-मजदूरी कर सकते थे। भूखे भी रह सकते थे। वैसे हम लोगों के यहाँ तुम्हारे जैसा नहीं चलता। हमारे यहाँ बेटों को व्यापारी बाप के होते हुए अँधेरी रातों को चूहे की तरह छुप-छुप कर नहीं भागना पड़ता और बेटे की बहू को सड़क से उठाकर जंगल टोली के दुसाधों को नहीं बचाना पड़ता और लछिमा को अस्पताल नहीं पहुँचाना पड़ता।"

"बस, बस, और नहीं सुनना चाहता।"

"सुनना तो पड़ेगा ही। आप उस समय भी व्यापारी थे। आपके पास पैसा था और हम लोग वैसे ही थे जैसे कि आप नवरतनगढ़ जाने से पहले थे। सरसतिया का व्याह राँका के साथ होता तो ठीक रहता। लेकिन रुपये का लालच देकर आपने कालिया को राजी कर लिया, मेरी बहन से शादी कर

ली। ऐसा क्यों ? इसी शादी को लेकर अपने लड़कों से भी रिश्ता तोड़ डाला।"

"यह सब मेरे समझने की बातें हैं, तुम्हारे समझने की नहीं।"

"आज नाई से पता चला कि सरसतिया जैसी भगवती-लक्षणा लड़की लाखों बरसों में एक बार जन्म लेती है। ऐसी लड़की का लड़का बड़ा भाग्यवान होता है। उसके पास गाय, रुपया, जमीन—सब-कुछ होता है। यही सोचकर आपने शादी की है सरसतिया से। मेरे बापू को आपने इस बारे में कुछ भी नहीं बताया, इसी कारण बापू ने हरामी कहा है।"

"नाई ने बतला दिया, साले ने कह दिया!"

धनुआ अब आपसे तुम पर उतर आता है और कहता है, "उधारचंद, अब आगे क्या कहोगे तुम ?"

"क्या कहूँगा ?"

"वह लक्षण-वक्षण वाली बात हम नहीं जानते। मैं कहता हूँ, कि इसी समय तुम यहाँ से चले जाओ। अपनी बहन की मैं फिर से शादी करा दूँगा किसी जवान के साथ। बापू ने सोचा था, लड़की को ब्याह कर रुपया मिलेगा। इसी में मन लगा है उनका।"

"ऐसा मत कहो, धनुआ ! तुम्हारी बहन के लिए मैं बहुत आस लगाये बैठा हूँ। कालिया किधर गया ?"

"अब कालिया को क्यों खोज रहे हो, भाई ?" कालिया कहता है, "तुम्हारे संग ही तो बात करनी है।"

"क्या बात करनी है ?"

"अरे कोई बात तो होगी।"

इसके बाद भी बातें होती हैं। कालिया को उधारचंद दस रुपये देता है। एक रुपया और दो बकरी देने का वायदा करता है। तब सरसतिया को बिदाई करवाता है।

धनुआ की बीवी पूछती है, "क्या सोच रही है, सरसतिया ?"

"बहूजी, मैं किस तरह उसके घर में रहूँगी ?"

धनुआ कहता है, "मन न लगे तो यहीं चली आना।"

"वह बुड्ढा तो रांका को भी निकाल रहा है।"

"पाजी है एक नम्बर का, साला बुड्ढा !"

धनुआ कहता है, "मैं उस नाई की ठुकाई करूँगा ।"

वहू कहती है, "तुम्हारे बाप ने ही तो शादी कर दी थी ।"

सरसतिया कहती है, "सोचा था रुपया-पैसा मिलेगा, खाने-पीने को मिलेगा ।"

धनुआ कहता है, "राँका से खबर भिजवाना ।"

धनुआ, उसकी माँ और धनुआ की वहू का दिल भारी हो जाता है। राँका उन सबको पसन्द था ।

विदा के समय सरसतिया अपने-आपको वेसहारा महसूस करती है। जानी-पहचानी दुनिया छोड़कर जाने का दुख ! दुसाध लड़कियाँ मेहनत करके खाती हैं, उनको काफ़ी आजादी मिलती है। लड़ाई-झगड़ा, उद्दाम-आवेग, राग-अनुराग में वे पीहर और ससुराल दोनों जगह पर काफ़ी आज़ाद रहती हैं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि जैसे यह बुड्ढा उसे ख़रीद-कर ले जा रहा हो !

लेकिन राँका से मुलाक़ात की आशा, उसके साथ अपनी शादी की वात की याद उसके मन में जमी वैठी है।

तोहरी में ही उधारचंद उसे तिलवा ख़रीदकर देता है। सरसतिया तिलवा आँचल में बाँध लेती है। थोड़ी देर वाद उधारचंद कहता है, "नवरनतगढ़ आ गया है, मुँह ढँककर वैठो। नहीं तो लोग वातें बनायेंगे ।"

सरसतिया मुँह विचकाती है। गुस्से से कहती है, "वातें बनायेंगे तो बनाने दो ।"

"यहाँ का तो चाल-चलन ही दूसरा है।"

अचानक उधारचंद सिकुड़कर केंचुआ वन जाता है और कहता है, "नीचे उतरो, वकील वावू आ रहे हैं ।प्रणाम करो उन्हें ।"

अभ्यासहीन घूँघट को संभालते हुए सरसतिया एक जोड़ा नागरा को ही प्रणाम कर लेती है।

"अरे देखें, चेहरा तो देखें।"

उधारचंद घूँघट हटाता है। वकील वावू वाज़ जैसी नज़रों से निहारता है। वह रहा लाल मस्सा। चेहरा बुरा नहीं। काली है। काले तो ये लोग

होते ही हैं। इकहरा बदन, गठा हुआ शरीर। मुजा सिंह खुश हो जायेगा।

"यह लो!" छुआ बचाते हुए दूर से ही दो रुपये का नोट फेंकता है वकील। "जो तुमसे कहा है, याद रखना, उधारचंद!"

"हाँ हुजूर!"

वकील चला जाता है। उधारचंद कहता है, "तेरे भाई को कुछ नहीं पता। कितने भाग की बात है कि वकील बाबू ने खुद आकर तुझे देखा है और नकद दो रुपये भी दिये हैं।"

"कौन है यह आदमी?"

"अरे चुप-चुप! धीरे बोल। वह राजा का वकील है। इज्जतदार आदमी है।"

"लेकिन यह आदमी है खराब।"

"क्या कह रही है तू?"

"हाँ, हाँ, उसकी नजर बदतमीजों वाली है।"

"गाँव में रहकर जैसे तुझे सब-कुछ का पता हो गया है।"

"कौन जानना चाहता है यह शहरी चलन! मेरे लिए मेरा गाँव ही अच्छा है।"

"चल, अब घर चल।"

रांका लालटेन लिये खड़ा था। सरसतिया को देखकर उसके दिल का एक कोना जलकर राख हो जाता है। सरसतिया उसकी तरफ देखकर हँसती है और प्रत्याशा-भरी निगाह से देखती है और कहती है, "रांका!"

"आ गये?"

उधारचंद कहता है, "चल, अन्दर चल।"

सरसतिया कहती है, "हाय अम्मा, एक कमरा और इसमें भी इतना सारा सामान क्यों भर रखा है?"

उधारचंद कहता है, "सब ठीक कर देंगे। पहले मैं गाड़ी वापस कर आऊँ।"

रांका कहता है, "मैं वापस कर आऊँ?"

"नहीं, मैं ही जाऊँगा। सिपाही आदमी नाराज हो जायेगा। भिड़ाई तो लेगा नहीं। क्या दूँ उसे?"

"मुझे क्या पता ?"

"मैं हो आता हूँ। तू इतने अँगीठी जला ले।"

उधारचंद के चले जाने पर राँका कहता है, "ठहरो जरा। मैं पहले लकड़ी ले जाऊँ। बस जाऊँगा और आऊँगा।"

वाक़ई बहुत समय नहीं लगाता है वह। आकर देखता है कि सरसतिया ने उसकी पहचानी हुई पुरानी साड़ी पहन रखी है। नयी साड़ी को खोलकर रख दिया है। कहती है, "अँगीठी मैं जलाती हूँ।"

"नहीं, गुस्सा करेगा।"

"छोड़ो, उस बुड्ढे को।"

"यह कैसी बात है ?"

"भैया ने कहा है दिल न लगे तो चली आना।"

"ठीक नहीं कहा है।"

"और भी बहुत कुछ कहा है। बाद में बताऊँगी। क्या बनाना है ?"

"क्या पता ? वही कहता है, जो कुछ भी पकाना हो।"

उधारचंद आकर कहता है, "आज दाल-चावल बनेंगे।"

सरसतिया कहती है, "राँका, मैं बना लूंगी।"

उधारचंद से वह बात नहीं करती। दोनों को खाना परोसती है। खाने के बाद उधारचंद सरसतिया को निश्चित और राँका को परम विस्मय में डालकर ख़ुद राँका के साथ सोने चल देता है। सरसतिया से कहता है, "डर लगे तो बत्ती जला लेना।"

राँका समझ नहीं पाता कि यह उसने कैसा इंतज़ाम किया है। उधारचंद सारी बातें राँका को अच्छी तरह समझाता है।

"वकील बाबू ने तुम्हारे साथ मजाक किया है।"

"तू क्या समझेगा इन बातों को !"

"तुम्हीं समझना। लेकिन मैं अब यहाँ से जाऊँगा।"

"और दो-चार दिन रह जा।"

"क्यों ? और दो-चार दिन क्यों ?"

"मैं कुछ इंतजाम कर लूं।"

"किसका ?"

"बकरियाँ चराने का।"

"तुम चराना।"

"मैं ? मुझसे होगा क्या ?"

"मैं तो भूल ही गया था कि आप उधारचंद बाबू हैं।"

"मज़ाक कर रहा है ?"

"सरसतिया चरायेगी।"

"नहीं, नहीं। वह घर में रहेगी।"

"भुजा सिंह का मकान खरीद लो। नौकर रख लो।"

"क्या बक रहा है तू ?"

"जो भी करना हो, जल्दी करो। मुझे यहाँ रहना अच्छा नहीं लग रहा है।"

"प्रसाद महतो तुझे बहका रहा है।"

"तुम्हें इससे क्या मतलब ?"

"वह आदमी अच्छा नहीं है।"

"इन जैसे आदमियों को तुम कभी नहीं समझोगे।"

"मैं तेरी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ।"

"अरे तुम क्या कहोगे ! तुम्हारा पैसा है और मेरी मेहनत लगी है ! बाहर कहते फिरते हो कि मैं तुम्हारा नौकर हूँ। फिर ये कहते हो कि मैं तुम्हारा अपना आदमी हूँ। लेकिन एक पैसा तक मुझे नहीं देते हो।"

"दूँगा, दूँगा। कहा तो है, दूँगा।"

"मुझसे और कब तक अपना काम चलाते रहोगे ? मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए, छुट्टी चाहिए।"

"रांका, पैसे को इतनी छोटी चीज न समझ।"

"अपने पैसे को तुम नहीं भोग सके। तुम्हारे लड़कों को भी नहीं मिला। सिपाही लोग लूट रहे हैं तुम्हारा पैसा।"

"ऐसा मत कह। दुख होता है।"

"तुम दुखी होओ, मैं तो सोता हूँ।"

रांका सो जाता है। उधारचंद सोचता है कि कहीं से एक टोकरा

तरह के लोग आते हैं। अपनी जाति का कोई छोकरा मिल सकता है। उसकी इतनी वड़ी उम्र हो गयी है। लेकिन अभी भी जिन्दगी का सुहाना समय नहीं आया। सरसतिया के लड़का होगा। फिर वह वड़ा होगा और उस लड़के की वदौलत उसे मिलेगा पैसा, इज्ज़त, सम्पत्ति। क्या वह यह सव-कुछ देखने के लिए जिन्दा रहेगा? मान कहो, इज्ज़त कहो, ज़मीन हो तो यह सव मिलता है। भरत, भगत और पूरन तीनों में से कोई भी नहीं समझा इस वात को। वहीं रहते हुए काम करते वे तीनों तो इलाक़े में जमीन ले सकते थे।

रांका चला जायेगा—यह सोचकर उधारचंद को काफ़ी तकलीफ़ होती है। उससे जितना हो सका उसने उसे उतना प्यार और विश्वास दिया। लेकिन भगत, भरत और पूरन को उससे इतना प्यार या विश्वास नहीं मिला था।

रांका उसे उधारचंद वावू कहता है मज़ाक में। अव वह चला जायेगा। सारा दिन उधारचंद तरह-तरह की तिकड़मों में व्यस्त रहता है। सभी को मान-इज़्ज़त देता है। नवरतनगढ़ का नामी व्यक्ति होने की, उसके मन में वड़ी इच्छा है। लेकिन रांका उसका मज़ाक उड़ाता है। रांका ही सवसे नज़दीकी इंसान है उसका। उसके जानवरों को लेकर जंगल में चला गया था। अपनी जान की परवाह तक नहीं की थी उसने। जानवर वेचता है, पर कभी एक भी पैसा इधर-उधर नहीं करता।

रांका गहरी नींद में सो रहा है। वह चला जायेगा। कितनी ही वातें उसके दिमाग़ में आ-जा रही हैं। सरसतिया के लड़का होगा, उसे जवान होने में वीस साल लगेंगे। उधारचंद होगा उस समय अस्सी साल का। उस लड़के से अगर दौलत-मान-इज्ज़त मिलती भी है तो वह उसे कैसे भोग पायेगा?

फिर भी सुवह होते ही वह तोहरी चला जायेगा। सुवह होगी चौदह तारीख़। चार दिन वाद अट्ठारह तारीख़। सुवह का और कोई काम वह भूल रहा है। हाँ, हाँ, सुवह की दैनिक दिनचर्या। जंगल पास में ही है। यह भी एक सुविधा है। कँटीले तार की वाड़ को लोगों ने कव का उखाड़ फेंका है। सुवह सरसतिया को वह जगह दिखा देनी होगी।

उधारचंद सो जाता है।

उम्र ज्यादा है, नींद जरा देर से खुलती है। उठकर सरसतिया के कमरे में जाकर देखता है कि वह नहीं है।

सरसतिया बाड़ के पास खड़ी है। उधारचंद उसे बुलाता है, "वहाँ क्यों खड़ी हो? इधर आओ।"

सरसतिया वहीं खड़ी रहती है।

कहता है, "इधर आ।"

कमरे में आती है और जमीन पर बैठ जाती है।

उधारचंद कहता है, "तुझे सब-कुछ सिखाना पड़ेगा!"

"क्या?"

"यहाँ का रीति-रिवाज।"

"मैं नहीं रहूँगी यहाँ।"

"फिर कहाँ रहेगी?"

सरसतिया जैसे दीवार से बात कर रही हो। कहती है, "यह शहर! बड़ा अच्छा शहर है तुम्हारा। जैसे पिंजरे में चिड़िया बन्द हो। यहाँ खड़ी मत हो, यहाँ बैठो मत। क्या करूँ, क्या न करूँ—जरा पता तो चले?"

"सुन सरसतिया, मेरी बात सुन!"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।"

"कल आयी है, आज चली जायेगी?"

"फिर क्या करूँ?"

"तुझे गर्मी चढ़ी है, जवानी की गर्मी। तेरी गर्मी मैं उतार सकता हूँ। मेरा नाम है उधारचंद।"

"ओह! बड़ा इज्जतदार आदमी है!"

"अरे तेरे यहाँ रहने पर मुझे कितना लाभ होगा!"

"मैं इतनी रोक-टोक में नहीं रह सकती।"

"पता है, तेरे लिए मैंने कितना खर्चा किया है? तुझसे शादी करने के लिए अपने लड़कों को भी पराया बना दिया।"

"मुझे इससे क्या लेना-देना?"

"तेरा लड़का होगा तो मेरा भाग पलटेगा।"

"बुड्ढे का शौक तो देखो!"

"बुड्ढा हूँ या जवान, तीन दिन बाद पता चलेगा।"

इतने में रांका बकरियों को लेकर वापस आता है। उधारचंद पूछता है, "इतनी जल्दी वापस आ गया?"

"जंगल में लकड़बग्घा घूम रहा है।"

"अरे सर्वनाश! बकरियाँ गिनकर लाया है न?"

"नहीं, लकड़बग्घे को दो-चार खिलाकर आ रहा हूँ।"

"चलो छोड़ो, बकरियों को बाड़े में डाल हाथ-मुँह धो ले। कुछ मिठाई खा ले। हम लोगों को भी दे। मैं तोहरी जाऊँगा।"

"क्यों? नौकर खोजने?"

"कुछ सब्जी भी तो लानी होगी। नाश्ता कर ले, खाना पकाना होगा। बहुत काम है।"

"राजा के सिपाही आ रहे हैं।"

"क्यों?"

"बकरा माँग रहे हैं पकाने के लिए।"

"तुझ से कहा है क्या?"

"तुम्हारे वकील बाबू ने कहा है।"

"ये लोग मुझे कारोबार नहीं करने देंगे?"

"बकरियों को लेकर फिर जंगल में चला जाऊँ?"

"वहाँ लकड़बग्घा है न?"

भुजा सिंह ने इस समय आठ-दस पुराने सिपाही रखे हुए हैं। हज़ार बीघा जमीन, लकड़ी की ठेकेदारी, आदिवासी प्रजा, लकड़ी काटने वाले मज़दूर—सभी कुछ संभालने के लिए सिपाहियों की ज़रूरत होती है। यह सभी हैं बन्दूकबाज। इनके अलावा हैं लठैत और भाले वाले। सभी अपने-अपने काम में निपुण हैं।

रामअवतार सिपाही घर के बाहर लाठी पटककर कहता है, "ऐ उधारचंद दुसाध कहाँ है?"

"यहीं हूँ। अभी आया।"

"एक बकरा ले आओ !"

"उस दिन तो दिया था एक।"

"वह हजम हो गया।"

"अच्छा, देता हूँ।"

एक मोटे-ताजे काले बकरे को सिपाही रामअवतार ले जाता है। उधारचंद गहरी साँस लेकर कहता है, "सरसतिया को भी यहाँ अच्छा नहीं लग रहा है। अपने गाँव ही चला जाऊँगा, सारा कारोबार लेकर। वहाँ इतना जुल्म नहीं है।"

राँका कहता है, "नहीं, तुम गाँव में नहीं रह सकते। तुम यहीं रहोगे, इनका जुल्म सहोगे। फिर गाँव में क्या जमींदार-मालिक नहीं हैं ?"

"इन बातों में क्या फायदा ? आओ मिठाई खाते हैं। बाजार भी जाना है।"

"भात-रोटी या घाटो बनाऊँ ?"

"आज घाटो ही बना।"

"फिर सब्जी की क्या जरूरत है।"

"अच्छा है," कहकर उधारचंद बाहर जाता है।

सरसतिया कहती है, "मैं नहाऊँगी कहाँ ? पानी कहाँ है ?"

"तुम्हारे नहाने के लिए पानी ला दूंगा। दूसरे लोग भी कुएँ से पानी भरते हैं। हमारी जाति का यहाँ कोई नहीं है। दोपहर या शाम से पहले पानी मिलना मुश्किल होता है। पंचायती कुआँ है।"

"अँगीठी जलाऊँ ?"

"मैं सुलगाता हूँ।"

"रुक तो, राँका ! औरत बैठी रहेगी और आदमी खाना पकायेगा ! ऐसा भी कहीं होता है ?"

"अपने घर में कभी खाना पकाया है ?"

"माँ, वह और मैं मिलकर बनाते थे खाना। जब जिसे मौका मिलता था वही करता था। अभी जो पकेगा, वही रात को भी खाओगे और कल सुबह भी, यह कभी बात है ?"

"दो जून चूल्हा जलेगा क्या ?"

"जंगल की लकड़ी और राँका की मेहनत।"

"रहने दे अब।"

कुछ देर बाद सरसतिया कहती है, "दाल और घाटो बस। कोई काम नहीं है तुम्हारे लिए अब?"

"बाड़ बनाने की सोच रहा था।"

"चूल्हे का काम निपटाने दो, फिर दोनों मिलकर बाड़ बनायेंगे।"

"वह कह रहा था कि सरसतिया को यहाँ अच्छा नहीं लग रहा?"

"हाँ, मुझे वह जरा भी पसंद नहीं।"

"ऐसा मत कहो, उसे दुख होगा।"

"तो मैं क्या करूँ?"

"वह बहुत आस लगाये बैठा है।"

"मैं क्या करूँ, राँका? साठ साल की उम्र है उसकी और मेरी सोलह। जब वह अस्सी का होगा तब भी मुझ में ताकत रहेगी। क्या करूँगी तब मैं?"

"मैं क्या कहूँ?"

"तुम कुछ नहीं कह सकते?"

"तो बेईमानी करूँ, सरसतिया?"

"लो, अब सोच में मत पड़ो। दाल-मसाला कहाँ है? मिर्च है?"

इसी तरह सरसतिया नवरतनगढ़ में दो दिन बिताती है। तभी अचानक रहस्मय हो उठती है नवरतनगढ़ की हवा।

भुजा सिंह पटना से वापस आता है। वकील तुरंत भुजा सिंह के घर दौड़ता है। एक अच्छी-ख़ासी ख़बर है। लेडी डॉक्टर को उठवाकर कोठरी में बंद रखकर बाद में खून करके, संदूक में लाश रखकर हावड़ा जाने वाली ट्रेन के डिब्बे में चढ़ा देने वाली ख़बर से भी अच्छी ख़बर।

भुजा सिंह पत्थर जैसी लाल-लाल आँखों को खोले रखकर सब सुनता है और कहता है, "क्या? भगवती-लक्षणा लड़की? कहाँ है?"

"एक दुसाध के घर में।"

"आँ! ऐसा कैसे हो सकता है? दुसाध को बुलाओ।"

"हुज़ूर, सुनिये तो!"

वकील धीरे-धीरे सब-कुछ बताता है। सुनकर भुजासिंह कहता है, "फिर तो समझो हो गया धर्मनास, सत्यानास! उस दुसाध ने क्या अपनी बीवी को अभी तक अछूता छोड़ा होगा? छोटी जात में संयम कहाँ? आज ब्याह कर लाया है, कल ही हम के चूजों की तरह पैंक-रेंक कर रहे होंगे कमरे में बच्चे। कैसे इतने बच्चे पैदा कर डालते हैं यह लोग, भगवान जाने!"

"वह इन्तजाम भी कर रखा है। जरा सुनिये तो।"

सब-कुछ सुनकर भुजा सिंह कहता है, "भगवती-लक्षणा लड़की बता रहे हो न? तुमने खुद उसे देखा है या केवल सुनकर ही कह रहे हो?"

"मैंने खुद उसका चेहरा देखा है। बाकी आप देख लेना।"

"फिर क्या है, मंगवाओ उसे।"

"रात होने दीजिये।"

"आने पर फिर जाने मत देना। जिसे भी छोड़ देता हूँ, वही बात फैलाती है। जाने मत देना अब की बार।"

*"नहीं हुजूर, लड़का होने तक तो यहीं रहेगी।"*

"देखो, दुसाधिनों का काला रंग, बदन से आती सरसों के तेल की महक, मुझे बहुत अच्छी लगती है। कितना गठा हुआ बदन होता है उनका! हमारे घर की लड़कियाँ तो...। थू!"

"यह तो ठीक कह रहे हैं आप।"

"उसका मरद?"

"उसे भी उठवा दूंगा, हुजूर! नीच जाति समझ कर अभी तक दया करता रहा, लेकिन अब लग रहा है कि मैंने ठीक नहीं किया।"

"बिलकुल ठीक। मैं ठहरा राज्यसभा का सदस्य, शायद मंत्री बन जाऊँ। मेरे नाक के नीचे ही दुसाध का मकान ही ठीक नहीं। दूसरे सदस्यों के सामने सिर झुक जाता है शरम के मारे।"

"उसे उठवा दूँ क्या?"

"अगर कोई गड़बड़ मचादी तो?"

"आपके सिपाही, इतना बड़ा जंगल, जंगल में लकड़बग्घा, सोचते क्यों हैं आप?"

"ठीक है।"

सब-कुछ ठीक इसी तरह होता है।

उधारचंद दुसाध को कुछ भी पता नहीं चलता। 18 तारीख़ को वह कहता है, "आज रात को मेरा बिस्तर उस कमरे में लगा देना।"

सरसतिया पूछती है, "क्यों?"

"तुझसे ब्याह करके भी क्या राँका के साथ सोऊँगा? लड़का क्या आसमान से टपकेगा? तू कुछ भी नहीं समझती।"

सरसतिया को कोई जवाब नहीं सूझता। वह राँका की तरफ़ नजर नहीं उठा पाती। केवल सोचती रहती है। बापू ने उसे बेच दिया है। इससे अच्छा था कि वह मर जाती।

राँका भी कुछ नहीं कह पाता। यह तो होना ही था।

राँका ने बेईमानी नहीं करनी चाही। राँका चला जायेगा। राँका का अर्थ है रिक्त, निस्वः, सर्वहारा। राँका को सरसतिया की ज़रूरत थी और सरसतिया को जरूरत थी राँका की। क्या किया जाये? ज़िन्दगी का हिसाब ही टेढ़ा है।

राँका जल्दी खाना खाकर सोने चला जाता है।

सरसतिया ज़मीन पर बैठी रहती है, लालटेन की रोशनी को ताकती हुई। उधारचंद उसकी तरफ़ देखता है। बीड़ी फूँकता जाता है बार-बार। जवानी। उधारचंद ने ख़रीदी है यह जवानी। हवा बोझिल हो जाती है। तभी उसे सुनायी देती है, रामअवतार सिपाही की आवाज़, "उधारचंद दुसाध, दरवाज़ा खोल! साला बकरी पालता है, लेकिन बना रखा है पीलखाना। दरवाज़ा खोल साले!"

मतवाली भयानक आवाज। अनेक सिपाही एक साथ चिल्लाते हैं, "खोल साले, नहीं तो तोड़ते हैं दरवाज़ा।"

सरसतिया छिटककर खड़ी हो जाती है। दौड़कर राँका के कमरे में चली जाती है। राँका भी उठ बैठता है। दोनों पीछे हटते हैं अँधेरे में।

सिपाही लोग अन्दर घुस आते हैं। उधारचंद को पकड़ लेते हैं। रामअवतार चिल्लाता है, "निकाल अपनी बीवी को! हुज़ूर उसे चाहते हैं। कहाँ है तेरी बीवी?"

"मेरी बीवी ?"

"हाँ-हाँ, तेरी मजुनी बीवी। भुआ सिंह की चाहिए। उसमें अब तेरा लड़का नहीं होगा। भुआ सिंह का लड़का होगा। वकील बाबू ने हम लोगों को भेजा है।"

"वकील बाबू ने ?"

वकील बाबू पीछे से चिल्लाते हैं, "क्या हुआ ?"

उधारचंद रो पड़ता है, "वकील बाबू !"

"अरे निकाल दुसाधिन को ! कहाँ गयी वह ?"

रौता मरमतिया का हाथ पकड़ धीरे-धीरे पीछे खिसकता है। खिसकते-खिसकते बाड़ा कूद कर दोनों बाहर निकल जाते हैं और दौड़ने लगते हैं। जंगल में दौड़ते-दौड़ते उन्हें गोली की आवाज सुनायी देती है, फिर वहीं से जोश-भरी आवाजें।

दोनों जमीन पर लेट जाते हैं। रौता कहता है, "मैं देखकर आता हूँ।"

"नहीं।"

"तू आगे बढ़। मैं अभी लौट आऊँगा।"

"नहीं, वे इधर निकल आये तो ?"

"पेड़ पर चढ़कर देखता हूँ।"

रौता पेड़ पर चढ़ता है। काफी देर बाद नीचे उतरता है।

"क्या देखा ?"

"आग लगा दी है घर में।"

"आग ?" मरमतिया रो पड़ती है। मुँह में आँचल ठूँस लेती है।

रौता कहता है, "भागना पड़ेगा।"

"मार डाला ! आग लगा दी !"

"भागना होगा मरमतिया, वे अब इधर आयेंगे।"

रौता जंगल के अन्दर चला जाता है। मरमतिया का हाथ पकड़कर बढ़ता जाता है। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगते हैं। उधारचंद का यह नियति उसने भी नहीं चाही थी।

दूसरे दिन शाम तक वे मछिया की टोली में पहुँच जाते हैं। पूरे की

यह ख़वर आग की तरह फैल जाती है। लछिमा और दूसरे लोगों को पहर को ही यह ख़वर मिल गयी थी। लेकिन पूरी घटना का उन्हें अव क पता नहीं लगा था।

इस घटना को लेकर ज़्यादा शोरगुल भी नहीं हुआ। प्रसाद महतो ने वहुत पूछा, लेकिन नवरतनगढ़ में किसी के मुँह से एक शव्द भी नहीं निकला। वकील वावू झुँझलाये हुए थे। कहने लगे, "जो कुछ हुआ है, पुलिस को वता दिया है मैंने। फिर से आपको नहीं वता सकता।"

"हुआ क्या था?"

"मुझे क्या पता? आग-आग की आवाज़ सुनकर सभी उठ गये थे। देखा कि उधारचंद का घर जल रहा है। अगले दिन न वह दिखा, न उसकी वीवी और न ही उसका नौकर। वकरे-वकरियाँ भी नहीं दिखे। किसे पता कि क्या हुआ?"

"किसी ने उन्हें नहीं देखा?"

"किसी ने नहीं। तीन-तीन इंसान एकदम अदृश्य हो गये।"

"उसकी घर की जगह का क्या हो रहा है?"

"राजवैद्य अपना गोदाम वना रहे हैं वहाँ।"

"पूजा क्यों हो रही है?"

"उस ज़मीन पर दुसाध रहते थे। ज़मीन अपवित्र हो गयी है। ज़ को पवित्र करना होगा। यह सव आप लोगों को क्या पता?"

प्रसाद को लछिमा से पता चलता है। कुछ दिन निकल जाने के कालिया दुसाध जंगल वालों की टोली में पहुँचकर कहता है, "जो था सो हुआ, सरसतिया! अव घर चलें।"

सरसतिया ने कहा, "मैं नहीं जाऊँगी।"

"यहाँ क्या करेगी?"

"ये लोग जो करते हैं, वही करूँगी।"

लछिमा ने कहा, "तुम जाओ। मैं उसे समझा-वुझा कर चल सरसतिया, लकड़ी वटोरने।"

धीरे-धीरे सात महीने निकल जाते हैं। एक दिन वड़ा गाँव की दुसाध टोली में आता है। पूरन की वीवी वाली घट

की मृत्यु आदि दुखद घटनाओं के बावजूद रोका के चेहरे पर कुछ रौनक-सी आ गयी है।

बड़ा रोका जो कुछ कहता है, सभी मान लेते हैं। छोटे रोका और सरमनिया का ब्याह होगा। "ऐसा ही होना चाहिए," सभी ने कहा। अब पता चला है कि सरमनिया गर्भिणी है। क्या पता झूठ है या सच, लेकिन हो तो अच्छा ही है।

रोका ने सरमनिया से कहा, "ऐसा-वैसा लड़का नहीं चाहिए। तुम्हारी कोख से पैदा होने वाला लड़का भुजा सिंह जैसे आवारा, दुश्चरित्र, लम्पट, बदमाश, खूनी को नहीं मिलना चाहिए था। बेशक हमारे पास कुछ नहीं है। हम लोगों को तो चाहिए ताकतवर-तेज-तर्रार लड़का। है न?"

सरमनिया कहती है, "हाँ, तुम्हारी तरह।"

• •



महाश्वेता देवी

बँगला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का जन्म 1926 में ढाका में हुआ था। पिता श्री मनीष घटक सुप्रसिद्ध लेखक थे। प्रारम्भिक पढ़ाई शान्तिनिकेतन में हुई। कलकत्ता यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी-साहित्य में एम० ए० तक की शिक्षा पायी। अब कलकत्ता में अंग्रेजी का अध्यापन करती हैं। महाश्वेता जी वर्षों बिहार और बंगाल के घने कबाइली इलाकों में रही हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में इन क्षेत्रों के अनुभव को अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ उभारा है।

गैर-व्यावसायिक पत्रों में छपने के बावजूद उनके पाठकों की संख्या बहुत बड़ी है। 1979 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।